



भारत का राजपत्र The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 25]

नई दिल्ली, शनिवार, जून 23, 1990 (आषाढ़ 2, 1912)

No. 25]

NEW DELHI, SATURDAY, JUNE 23, 1990 (ASADHA 2, 1912)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके ।
(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

भाग III—खण्ड 4

[PART III—SECTION 4]

सांविधिक निकायों द्वारा जारी की गई विविध अधिसूचनाएं जिसमें कि आदेश, विज्ञापन और सूचनाएं सम्मिलित हैं

[Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies]

भारतीय रिज़र्व बैंक

केन्द्रीय कार्यालय

बैंकिंग परिचालन और विकास विभाग

बंम्बई-400005, दिनांक 28 मई, 1990

सी० एच० 336/एफ० ओ० एल० सी०-102-90---

भारतीय रिज़र्व बैंक अधिनियम, 1934 (1934 का 2) की धारा 42 की उप धारा (6) के खंड (ग) के अनुसरण में भारतीय रिज़र्व बैंक एतद्वारा यह निदेश देता है कि उक्त अधिनियम की दूसरी अनुसूची में निम्नलिखित संशोधन किया जाए,

“मितसूई बैंक लिमिटेड” शब्दों को “मितसूई टइयो कोबे बैंक मिमिटेड” शब्दों से प्रतिस्थापित किया जाए ।

ए० घोष
उप गवर्नर

बंम्बई-400005, दिनांक 1 जून 1990

सं० आई० ई० टी० 809/एन० सी० 184 (एल०)-90---

बैंककारी विनियमन अधिनियम, 1949 की धारा 36 (क) की उप धारा (2) के अनुसरण में भारतीय रिज़र्व बैंक इसके द्वारा अधिसूचित करता है कि कूच बिहार बैंकिंग कॉर्पोरेशन लि० कूच बिहार पश्चिम बंगाल उक्त अधिनियम के अर्थ से बैंकिंग कंपनी नहीं रही है ।

एन० डी० परमेश्वरन,
अपर मुख्य अधिकारी

भारतीय स्टेट बैंक

सूचना

बंबई, दिनांक 1 जून 1990

भारतीय स्टेट बैंक के शेयरधारियों की पैंतीसवीं वार्षिक महासभा सूचना भवन, सेक्रेट्रिगट रोड, भुवनेश्वर-751009, में गुरुवार दिनांक 26 जुलाई, 1990 को अपराह्न 4.00 बजे निम्नलिखित कार्य हेतु होगी :-

1. 31 मार्च, 1990 तक की केन्द्रीय बोर्ड की रिपोर्ट, बैंक का तुलनपत्र और लाभ-हानि लेखा तथा

तुलनपत्र और लेखों पर लेखा परीक्षकों की रिपोर्टें प्राप्त करना, तथा

2. भारतीय स्टेट बैंक अधिनियम की धारा 19 (1) (ग) के प्रावधानों के अंतर्गत बैंक के केन्द्रीय बोर्ड के लिए दो निदेशकों को निर्वाचित करना ।

एम० एन० गोईपोरिया
अध्यक्ष

अनुबन्ध-2

राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक

बम्बई-400018, दिनांक 30 मई 1990

शुद्धि पत्र

सं० एन० बी० एस० ई० सी० वाई०-105/सी-7/90-91:—

क्रम सं०	पृष्ठ सं०	कालम-लाइन	अशुद्ध	शुद्ध
1	2	3	4	5
1.	843	कालम 1, लाइन 2	21 दिसंबर, 1989	नवम्बर, 1989
2.	"	कालम 1, लाइन 13	विका	विकास
3.	"	कालम 1, लाइन 15	लख	लेखे
4.	"	कालम 1, लाइन 22	लनदार	लेनदार
5.	"	कालम 2, लाइन 12	माच	मार्च
6.	"	कालम 2, लाइन 25	सामदार	सामोदार
7.	844	कालम 5, लाइन 1	वष	वर्ष
8.	"	कालम 2, लाइन 7	1000000000	1000000000
9.	"	कालम 1, लाइन 23	शेय	शेष
10.	"	कालम 1, लाइन 23	सूखे	लेखे
11.	845	कालम 1, लाइन 5	बार	बाड
12.	"	कालम 1, लाइन 7	(V)	(IV)
13.	"	कालम 1, लाइन 22	भुनाय	भुनाये
14.	"	कालम 1, लाइन 24	अनुसार लागता, पर	अनुसार, लागत पर
15.	846	कालम 1, लाइन 10	क्रिया	क्रिया
16.	"	कालम 1, लाइन 12	(स्विक्स--V	(स्विक्स-V)
17.	"	कालम 1, लाइन 13	काटा	कांट्रा
18.	"	कालम 1, लाइन 15	चुकोतियों	चुकोतियां
19.	"	कालम 1, लाइन 19	कांटा	कांट्रा
20.	"	कालम 1, लाइन 26	पीछले	पिछले
21.	"	कालम 1, लाइन 27	अवधि	अवधि
22.	"	कालम 1, लाइन 28	अवधि	अवधि
23.	847	कालम 1, लाइन 23	देख	देखें
24.	"	कालम 1, लाइन 25	संस्थाओ	संस्थाओं
25.	848	कालम 1, लाइन 5	गये अंतरण	गये तार अंतरण
26.	"	कालम 1, लाइन 13	लेनवेन	लेनवार
27.	"	कालम 1, लाइन 13	टिप्पणी 9 देखें)	(टिप्पणी 9 देखें)
28.	"	कालम 1, लाइन 20	है	हैं
29.	"	कालम 1, लाइन 33	वित्त लेखा और लेखा	वित्त और लेखा

1	2	3	4	5
30.	848	कालम 1, लाइन 25	ऊन परिसरी	उन परिसरों
31.	849	कालम 1, लाइन 12	कार्यकलाप	कार्यकलाप
32.	"	कालम 5, लाइन 19	एम० के० गाडगील	एम० बी० गाडगील
33.	850	कालम 1, लाइन 27	लिए अध्ययन	लिए शोध अध्ययन
34.	852	कालम 1, लाइन 8	वित्त लेखा और लेखा	वित्त और लेखा
35.	853	कालम 1, लाइन 2	निचे	नीचे
36.	854	कालम 1, लाइन 13	है	है
37.	850	कालम 1, लाइन 5	को	की
38.	854	कालम 1, लाइन 27	पुण	पुणे
39.	"	कालम 1, लाइन 32	कार्यालयों	कार्यालय
40.	"	कालम 1, लाइन 43	हैं भूमि	हैं, में भूमि
41.	"	कालम 1, लाइन 43	पूँजीकरण	पंजीकरण
42.	"	कालम 1, लाइन 43	संबंध	संबंध
43.	"	कालम 2, लाइन 8	द्विए	द्विये
44.	"	कालम 2 लाइन 15	हृषानि]	हानि
45.	"	कालम 2, लाइन 18	दीर्घावधि]]	दीर्घावधि
46.	"	कालम 2 लाइन 22	सांविधिक	सांविधिक
47.	855	कालम 1, लाइन 13	रकना	करना
48.	"	कालम 2 लाइन 11	क्योंकि	क्योंकि]

कर्मचारी राज्य बीमा निगम

नई दिल्ली, दिनांक 30 मई 1990

सं० यू०-16-53/85-चि०-2(पश्चिम बंगाल)—कर्मचारी राज्य बीमा (साधारण) विनियम, 1950 के विनियम 105 के तहत महानिदेशक को निगम की शक्तियां प्रदान करने के संबंध में कर्मचारी राज्य बीमा निगम की दिनांक 25 अप्रैल, 1951 को हुई बैठक में पास किए गए संकल्प के अनुसरण में तथा महानिदेशक के आदेश संख्या 1024 (जी) दिनांक 23 मई, 1983 द्वारा ये शक्तियां आगे मुझे सौंपी जाने पर, मैं इसके द्वारा निम्नलिखित डाक्टरों को कलकत्ता क्षेत्र (क्षेत्रों का आबंटन उप चिकित्सा आयुक्त (पूर्वजोन) द्वारा किया जाएगा। कलकत्ता (पश्चिमी बंगाल) के लिए बीमाकृत व्यक्तियों की स्वास्थ्य परीक्षा करने तथा मूल प्रमाण पत्र की सत्यता संदिग्ध होने पर आगे प्रमाणपत्र जारी करने के प्रयोजन के लिए उनके निम्नलिखित तारीख से 1 वर्ष की अवधि या किसी पूर्णकालिक चिकित्सा निदेशों के कार्यभार ग्रहण करने तक, इनमें जो भी पहले हो, मौजूदा मानकों के अनुसार मासिक पारिश्रमिक की अदायगी पर चिकित्सा प्राधिकारी के रूप में कार्य करने के लिए प्राधिकृत करता हूँ।

1. ले० कर्नल (डा०) एस० के० दास 1-7-90 से 30-6-91
2. डा० एन० एम० मुखर्जी 16-6-90 से 15-6-91
3. डा० एस० के० मुखर्जी 21-7-90 से 20-7-91

डा० कृष्ण मोहन सक्सेना
चिकित्सा आयुक्त

केन्द्रीय भविष्य निधि आयुक्त

नई दिल्ली, दिनांक 31 मई 1990

सं० सम्मेलन, 4 (1) 83-88/13036--अध्यक्ष, केन्द्रीय न्यासी बोर्ड, कर्मचारी भविष्य निधि एतद्वारा कर्मचारी भविष्य निधि स्कीम, 1952 के पैराग्राफ 5 के साथ पठित पैराग्राफ 4 के उप पैरा (i) के अनुसरण में 19 अक्टूबर, 1985 को भारत के राजपत्र भाग-II खंड III, उप खंड (II) में प्रकाशित भारत सरकार, श्रम मंत्रालय की दिनांक 19 अक्टूबर, 1985 के सं० आ० 4914 की अधिसूचना में निम्नलिखित संशोधन करते हैं।

उक्त अधिसूचना के क्रम सं० 9 के बाद निम्नलिखित प्रस्थापित किया जाएगा, अर्थात :—

10. श्री एन० कानन, सचिव, केन्द्रीय न्यासी बोर्ड, कर्मचारी दक्षिण भारतीय नियोक्ता भविष्य निधि के गैर-सरकारी संघ 41 कस्तूरा रंगा सदस्य जो साधारणतः तमिल रोड, अलवरपेट, नाडू राज्य के निवासी है।
मद्रास-600018.

नई दिल्ली, दिनांक 5 जून 1990

सं. 2/1959/डी. एल. आई/एक्जाम/89/भाग-I/3403.—जहां अनुसूची-I में उल्लिखित नियोक्तों ने (जिसे इसमें इसके पश्चात् उक्त स्थापना कहा गया है) कर्मचारी भविष्य निधि और प्रकीर्ण उपबन्ध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) की धारा 17 की उपधारा 2(क) के अन्तर्गत छूट के लिए आवेदन किया है, (जिसे इसमें इसके पश्चात् उक्त अधिनियम कहा गया है)।

श्रीकै. मी, बी. एन. सोम, केन्द्रीय भविष्य निधि आयुक्त इस बात से संतुष्ट हैं कि उक्त स्थापना के कर्मचारी कोई अलग अंशदान या प्रीमियम की अवधारणा किए बिना जीवन बीमा के रूप में भारतीय जीवन बीमा निगम की सामूहिक बीमा स्कीम का लाभ उठा रहे हैं, जोकि ऐसे कर्मचारियों के लिए कर्मचारी निरक्षण सहबद्ध बीमा स्कीम, 1976 के अन्तर्गत स्वीकार्य लाभों से अधिक अनुकूल है (जिसे इसमें इसके पश्चात् स्कीम कहा गया है)।

अतः उक्त अधिनियम की धारा 17 की उपधारा 2(क) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए तथा इसके साथ संलग्न अनुसूची में उल्लिखित शर्तों के अनुसार मी, बी. एन. सोम, प्रत्येक उक्त स्थापना को प्रत्येक के सामने उल्लिखित पिछली तारीख से प्रभावी जिस तिथि से उक्त स्थापना के क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त राजस्थान ने स्कीम की धारा 18(7) के अन्तर्गत ढील प्रदान की है, 3 वर्ष की अवधि के लिए उक्त स्कीम से संचालन की छूट देता है। 28-2-90 तक

अनुसूची—1

क्षेत्र क्षेत्र : राजस्थान

क्र० सं०	स्थापना का नाम और पता	कोड संख्या	छूट की प्रभावी तिथि	के० भ० नि० आ० फा० न०
1.	मैसर्स किशनगढ़ फेब्रिक्स लि०, भीलवाड़ा	आर० जे०/4667	1-1-89	2/2759/90-डी० एल० आई०
2.	मैसर्स गंगापुर को-आपरेटिव स्पिनिंग मिल, भीलवाड़ा।	आर० जे०/4725	1-1-89	2/2760/90-डी० एल० आई०

अनुसूची--II

1. उक्त स्थापना के संबंध में नियोजक (जिसे इसमें इसके पश्चात् नियोजक कहा गया है) संबंधित क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त, को ऐसी विवरणियां भेजेंगे और ऐसे लेखा रखेंगे तथा निरीक्षण के लिए ऐसी सुविधाएं प्रदान करेंगे जो केन्द्रीय भविष्य निधि आयुक्त, समय-समय पर निर्दिष्ट करें।

2. नियोजक, ऐसे निरीक्षण प्रभारों का प्रत्येक मास की समाप्ति के 15 दिन के भीतर संदाय करेंगे जो केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा 17 की उप-धारा (3-क) के ख-क के अधीन समय-समय पर निर्दिष्ट करें।

3. सामूहिक बीमा स्कीम के प्रशासन में, जिसके अंतर्गत लेखाओं का रखा जाना, विवरणियों का प्रस्तुत किया जाना, बीमा प्रीमियम का संदाय, लेखाओं का अंतरण, निरीक्षण प्रभार का संदाय आदि भी है, होने वाले सभी व्ययों का वहन नियोजक द्वारा दिया जाएगा।

4. नियोजक, केन्द्रीय सरकार द्वारा अनुमोदित सामूहिक बीमा स्कीम के नियमों की एक प्रति और जब कभी उनमें संशोधन किया जाए, तब उस संशोधन की प्रति तथा कर्मचारियों की बहु-संख्या की भाषा में उसकी मुख्य बातों का अनुवाद स्थापना के सूचना पट्ट पर प्रदर्शित करेंगे।

5. यदि कोई ऐसा कर्मचारी जो कर्मचारी भविष्य निधि का या उक्त अधिनियम के अधीन छूट प्राप्त किसी स्थापना की भविष्य निधि का पहले से ही सदस्य है, उसको स्थापना में नियोजित किया जाता है तो, नियोजक सामूहिक बीमा स्कीम के सदस्य के रूप में उसका नाम तुरन्त दर्ज करेंगे और उसकी बाबत आवश्यक प्रीमियम भारतीय जीवन बीमा निगम को संदत्त करेंगे।

6. यदि उक्त स्कीम के अधीन कर्मचारियों को उपलब्ध लाभ बढ़ाये जाते हैं, तो नियोजक सामूहिक बीमा स्कीम के अधीन कर्मचारियों को उपलब्ध लाभों में समुचित रूप से वृद्धि किए जाने की व्यवस्था करेंगे जिससे कि कर्मचारियों के लिए सामूहिक बीमा स्कीम के अधीन उपलब्ध लाभों से अधिक अनुकूल हो जो उक्त स्कीम के अधीन अनुज्ञेय है।

7. सामूहिक बीमा स्कीम किसी बात के होते हुए भी यदि किसी कर्मचारी की मृत्यु पर इस स्कीम के अधीन संदेय राशि उस राशि से कम है जो कर्मचारी की उस दशा में संदेय होती जब वह उक्त स्कीम के अधीन होता तो, नियोजक कर्मचारी के विधिक वारिस/नाम निर्देशितों को प्रतिकार के रूप में दोनों राशियों के अन्तर के बराबर राशि का संदाय करेंगे।

8. सामूहिक बीमा स्कीम के उपबंधों में कोई भी संशोधन संबंधित क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त के पूर्व अनुमोदन के बिना नहीं किया जाएगा और जहां किसी संशोधन से कर्मचारियों के हित पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की संभावना हो, वहां क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त अपना अनुमोदन देने से पूर्व कर्मचारियों को अपना दृष्टिकोण स्पष्ट करने का व्यक्तिगत अवसर देगा।

9. यदि किसी कारणवश स्थापना के कर्मचारी भारतीय जीवन बीमा निगम की उस सामूहिक बीमा स्कीम के, जिसे स्थापना पहले अपना चुकी है अधीन नहीं रह जाता है या इस स्कीम के अधीन कर्मचारियों को प्राप्त होने वाले लाभ किसी रीति से कम हो जाते हैं तो यह रद्द की जा सकती है।

10. यदि किसी कारणवश नियोजक उस नियम तारीख से भीतर जो भारतीय जीवन बीमा निगम नियत करे, प्रीमियम का संदाय करने में असफल रहता है और पालिसी को व्ययगत हो जाने दिया जाता है तो छूट रद्द की जा सकती है।

11. नियोजक द्वारा प्रीमियम के संदाय में किए गए किसी व्यतिक्रम की दशा में उन मृत सदस्यों के नाम-निर्देशितों या विधिक वारिसों को जो यदि यह छूट न दी गई होती तो उक्त स्कीम के अंतर्गत होते, बीमा लाभों के संदाय का उत्तरदायित्व नियोजक पर होगा।

12. उक्त स्थापना के संबंध में नियोजक इस स्कीम के अधीन आने वाले किसी सदस्य की मृत्यु होने पर उसके हकदार नाम-निर्देशितों/विधिक वारिसों को बीमाकृत राशि का संदाय तत्पराता से और प्रत्येक दशा में भारतीय जीवन बीमा निगम से बीमाकृत राशि प्राप्त होने के एक माह के भीतर सुनिश्चित करेंगे।

बी. एन. सोम,
केन्द्रीय भविष्य निधि आयुक्त

पाण्डिचेरी विश्व विद्यालय, पाण्डिचेरी

शैक्षिक विषयों के अभिशासन का प्रथम अध्यादेश

अध्याय—1

अध्ययन विद्यालय और विभाग/केन्द्र

[संविधान 16(1) के साथ अनुभाग 4 और 6 पढ़ें]
अध्ययन विद्यालय :

1. विश्वविद्यालय में निम्नलिखित अध्ययन विद्यालय होंगे :—

- श्री अरविन्दो पूर्वी पश्चिमी विचारधारा विद्यालय ।
- श्री सुब्रह्मण्य भारती तमिल भाषा और साहित्य विद्यालय ।
- फ्रेंच अध्ययन विद्यालय,
- सी० बी० रामन भौतिक और रासायनिक विज्ञान विद्यालय ।
- जे० सी० बोस जीवन विज्ञान विद्यालय ।
- समुद्री अध्ययन विद्यालय ।
- वन विज्ञान विद्यालय ।
- विकास विज्ञान विद्यालय ।
- अन्तर्राष्ट्रीय विषय विद्यालय ।

2. विश्वविद्यालय के विशेषाधिकार से सम्बद्ध महा-विद्यालय/संस्थाओं में तथा विश्वविद्यालय के विभागों में निम्नलिखित विषयों में मदद पहुंचाने विश्वविद्यालय में निम्नलिखित अध्ययन विद्यालय होंगे :—

- * 1. मानविकी और समाज विज्ञान विद्यालय ।
- 2. रामानुजम गणित और आभिकलक विज्ञान विद्यालय ।
- 3. कानून विद्यालय ।
- 4. चिकित्सा विद्यालय ।
- 5. अभियांत्रिकी और प्रौद्योगिकी विद्यालय ।
- 6. शिक्षा विद्यालय ।
- 7. कृषि विज्ञान और पशु चिकित्सा विद्यालय ।
- * 8. ललित कला विद्यालय ।
- 9. शरीर व्यायाम शिक्षा विद्यालय ।

अन्य स्कूलों की स्थापना का निर्णय बाद को किया जायेगा ।

* में निम्नलिखित शिक्षण विभाग होंगे :—

अंग्रेजी, अंग्रेजी के भिन्न-भिन्न भाषाओं मानविकी विज्ञान में समाविष्ट होंगी पाठ्यक्रम—दर्शन, मनोविज्ञान, इतिहास, अर्थशास्त्र, राजनीति, भूगोल, पत्रकारी और समाज विज्ञान ।

* में निम्नलिखित शिक्षण विभाग समाविष्ट होंगे :—
रेखा चित्र, चित्रकारी, वास्तुकला, भारतीय संगीत और पश्चिमी संगीत ।

विश्वविद्यालय के विशेष अधिकार से सम्बद्ध महा-विद्यालय/संस्था :

3. पाण्डिचेरी विश्वविद्यालय के विशेष अधिकार से निम्न-लिखित महाविद्यालय/संस्था सम्बद्ध किये गये हैं :—

- 1. टागोर सरकारी आर्ट्स महाविद्यालय, पाण्डिचेरी ।
- 2. डा० बी० आर० अम्बेडकर सरकारी कानून महा-विद्यालय, पाण्डिचेरी ।
- 3. भारतीय वासन सरकारी महिला विद्यालय, पाण्डिचेरी ।
- 4. अरिजरअण्णा सरकारी कानून महाविद्यालय, कारैकाल ।
- 5. अम्बेडकर सरकारी महाविद्यालय, कारैकाल ।
- 6. महात्मा गांधी सरकारी आर्ट्स कालेज, माहे ।
- 7. डा० एस० आर० के० सरकारी आर्ट्स कालेज, यानम ।
- 8. जवाहर लाल नेहरू स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षण व अनुसंधान केन्द्र ।
- 9. पाण्डिचेरु अभियांत्रिकी महाविद्यालय पाण्डिचेरी ।
- 10. पोपजॉन पाल II शिक्षा महाविद्यालय ।

इनके अतिरिक्त एम० एससी० चिकित्सा कूट विज्ञान, और प्राणि विज्ञान में डाक्टरी कार्यक्रम चलाने वाला पाण्डिचेरी विश्वविद्यालय से सम्बद्ध है ।

मद्रास, कालीकट और आन्ध्र विश्वविद्यालयों से पूर्व सम्बद्ध महाविद्यालयों व संस्थाओं में विभिन्न पाठ्यक्रमों का अध्ययन करने वाले छात्रों को अनुभाग 43 के अनुसार उनका शिक्षण और परीक्षाएं चलाई जायेंगी और तत् उपाधि/संनद/प्रमाण-पत्र परीक्षा पूरा करने की अनुमति दी जाएगी ।

4. ये महाविद्यालय/संस्था पाण्डिचेरी विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालय की हैसियत से पाण्डिचेरी विश्वविद्यालय की कार्यकारिणी समिति व शिक्षा परिषद् की पूर्व स्वीकृति के बिना अनुमोदन प्राप्त कोई विषय या चालू पाठ्यक्रम के अध्ययन को निलंबित नहीं कर सकेगा ।

[संरूपध 32 (1) (ज) देखें]

विभाग/अध्ययन केन्द्र विद्यालयों को अभ्यर्पित करना :

5. (1) व्यवस्थापन विद्यालय को निम्नलिखित अध्ययन विभाग अभ्यर्पित किये जायेंगे :

- (अ) व्यवस्थापन अध्ययन विभाग;
- (आ) वाणिज्य विभाग;
- (इ) अर्थ-शास्त्र विभाग और वे विभाग जिनका प्रारम्भ भविष्य में किया जाएगा ।

(2) जीव विज्ञान विद्यालय को निम्नलिखित अध्ययन विभाग अभ्यर्पित किये जायेंगे :—

- (अ) जीव रसायन और जीव भौतिक विभाग ;
- (आ) जीव शिल्प विज्ञान विभाग ;
- (इ) प्राणि विज्ञान विभाग ;
- (ई) वनस्पति विज्ञान/समुद्गीजीव विज्ञान विभाग और वे विभाग जिनका प्रारम्भ भविष्य में किया जाएगा ।

(3) संस्कृत विद्यालय को निम्नलिखित अध्ययन विभाग अभ्यर्पित किये जाएंगे :—

- (अ) संस्कृत विभाग ;
- (आ) आधुनिक भारतीय भाषाओं का विभाग ;
- (इ) अंग्रेजी विभाग और अन्य विदेशी भाषाओं का विभाग तथा वे विभाग जिनका प्रारम्भ भविष्य में किया जाएगा ।
- (ई) विश्वविद्यालय के परिसर (कैंप) जो अन्वमान निकोबार द्वीप में बनेगा, वहाँ वन विज्ञान विद्यालय संपन्न होगा ।

(उ) जो विभाग अन्य विद्यालयों को अभ्यर्पित किये जाएंगे ।

अध्याय—2

विद्यालय मण्डल

[संविधि 16(2)]

संविधान :

1. हर एक विद्यालय का एक विद्यालय मण्डल होना चाहिए। संविधि 16 (2) के अनुसार प्रथम विद्यालय मण्डल की अवधि समाप्त होने पर विद्यालय मण्डल में निम्नलिखित सदस्य होंगे :—

- (i) विद्यालय के अधिष्ठाता (डीन) (पदेन)
- (ii) विद्यालय के विभागाध्यक्ष (पदेन)
- (iii) विद्यालय के सभी प्राचार्य
- (iv) गृह विभाग के एक उपाचार्य और एक प्राध्यापक परिष्ठाता के अनुसार आवर्तन से ।
- (v) अन्तः शास्त्रीय संबंध रखने वाले अन्य विश्वविद्यालयों के विद्या मण्डल से एक प्रतिनिधि उपकुलपति से नामित किये जायेंगे ।
- (vi) अधिक से अधिक दो विषय के विशेषज्ञ उपकुलपति से नामित किये जायेंगे ।
- (vii) अधिक से अधिक पांच विषय के विशेषज्ञ जो विश्व-विद्यालय या सम्बद्ध कालेज के कार्यकर्ता नहीं होंगे, शिक्षा परिषद् से नामित किये जायेंगे ।

2. पदेन सदस्यों को छोड़कर अन्य सदस्यों की पदावधि तीन साल की होगी और वे पुनः नामित होने योग्य हैं ।

पदावधि :

3. विद्यालय का अधिष्ठाता (डीन) मण्डल का अध्यक्ष होगा और वही मण्डल की बैठकें संयोजित करेगा ।

4. विद्यालय मण्डल के कार्य :

- (अ) विद्यालयों को अभ्यर्पित विभागों के अध्ययन और शोध कार्य को समन्वित करना ।
- (आ) ऐसी समितियों की नियुक्ति करना जो विद्यालय के क्षेत्र में न आने वाले विषयों के अध्ययन और शोध कार्यकलाप का निरीक्षण करेगा ।
- (इ) अपने विभाग से संचालित डाक्टरी कार्यक्रम व अन्य पाठ्यक्रमों को अनुमोदन देना ।
- (ई) डाक्टरी व अन्य अनुसंधान उपाधि के लिए शोध प्रबन्ध का मूल्यांकन करने, व परीक्षाओं के नाम कार्य-कारिणी समिति को सिफारिश करना ।
- (उ) विभागों/किन्द्रों से शिक्षण पदों का सर्जन करने या समाप्ति के लिए प्रस्ताव आने पर अनुचितन कर शिक्षा परिषद् को सिफारिश करना ।

अध्याय—3

विभाग

[संविधि 16(5) (सी) के साथ अनुभाग 2 (जी) में]

संविधान :

1. संविधि 16 (5) सी(1) से (4) तक के अनुसार गणित सदस्यों के अतिरिक्त संविधि 16 (5) (सी) (5) के अनुसार निम्नलिखित भी विभाग के सदस्य होंगे :—

विशेषज्ञता और विशेष ज्ञान प्राप्त दो सदस्य जो विश्व-विद्यालय/सम्बद्ध महाविद्यालय/संस्था के कार्यकर्ता नहीं हैं, उप-कुलपति से नामित किये जाते हैं ।

2. विभागाध्यक्ष बैठकें बुलायेंगे और अध्यक्षासन ग्रहण करेंगे ।

3. विभागाध्यक्ष, विद्यालय के अधिष्ठाता के मार्गदर्शन पर :—

- (अ) विभाग के अध्यापन और अनुसंधान कार्य-कलाप की आयोजना करेंगे ।

विभागाध्यक्ष, नियुक्ति और उनका कार्य संविधि 7 से (5) तक :

- (आ) विभाग के अध्यापकों को अध्यापन कार्य का बंटवारा करें और विभाग के उचित संचालन के जरूरत कर्तव्य सौंपें ।

- (इ) निर्दिष्ट विषयों के लिए नियुक्त विभागीय सदस्यों के कार्यकलाप का समन्वय करें।
- (ई) विभाग के अधिष्ठाता, विद्यालय मण्डल, शिक्षा परिषद् कार्यकारिणी समिति या उपकुलपति से अभ्यर्पित कर्तव्यों का निर्वहन करें।
- (ऊ) शिक्षा परिषद् को, अनुसंधान उपाधि प्राप्त करने अधिनिर्णय किये गये अभ्यर्थियों को स्नातकोत्तर विद्या-मण्डल के प्रस्तावों की सिफारिश करना।
- (ऋ) अध्ययन की सामान्य समय-सारिणी बनाना।
- (ए) विद्यालय के विद्यार्थियों के कल्याण कार्य प्रस्ताव पर अनुचितन करना व अमल में लाना।
- (ऐ) अध्यापन और अनुसंधान के स्तर को बढ़ाने, विविध योजनाओं पर विचार करना और तत् सम्बन्धी प्रस्ताव शिक्षा परिषद् को पेश करना।
- (ओ) अधिनियम, संविधि व अध्यादेश में विहित सभी कार्रवाइयां करना तथा कार्यकारिणी समिति शिक्षा परिषद् या उपकुलपति के निर्देश पर विचार करना।
- (औ) अधिष्ठाता (डीन), मण्डल के किसी सदस्य या किसी समिति को सामान्य या कोई निर्दिष्ट अधिकार निर्णयानुसार प्रति निधान करना।

5. मण्डल की बैठकें सामान्य या विशेष हो सकती हैं।

बैठकें :

सामान्य बैठकें वर्ष में दो बार बुलाई जायें जिनमें एक शिक्षण सत्र के प्रथम चतुर्थांश में हो।

6. अधिष्ठाता स्वेच्छा से, उपकुलपति के सुझाव पर या मण्डल के 1/5 सदस्यों की लिखित भांग पर विशेष बैठकें बुला सकता है।

गणपूर्ति :

7. कुल सदस्यता की 1/3 बैठक की गणपूर्ति होगी।

सूचना :

8. सामान्य बैठकों की सूचना नियत तारीख से दस दिन पहले ही दी जाये और विशेष बैठकों की सूचना नियत तारीख से पांच दिन पहले दी जाये।

कार्रवार के नियम :

9. इस सम्बन्ध में जो अधिनियम बनेंगे, तदनुसार बैठकें चलाने के नियम बनेंगे।

अध्याय—4

स्नातकोत्तर अध्ययन-मण्डल

(संविधि 17)

1. हर विभाग का एक स्नातकोत्तर अध्ययन मण्डल होगा।

2. स्नातकोत्तर अध्ययन मण्डल में निम्नलिखित सदस्य होंगे :—

(i) विभागाध्यक्ष

(ii) विभाग के सब आचार्य।

(iii) दो उपाचार्य और दो प्राध्यापिक वरिष्ठता के अनुसार आवर्तन से, उपकुलपति से नियुक्त किये जायेंगे।

(iv) विद्यालयाधीन सामान्य पाठ्यक्रम वाले अन्य विभाग से क्रमेण एक अध्यापक।

(v) अन्य विद्यालयों/सम्बद्ध विद्यालयों/संस्थाओं में सम-वर्गी या संबद्ध विषय पढ़ाने वाले अधिक से अधिक चार अध्यापक उपकुलपति से नामित किये जायेंगे।

(vi) विभाग के पाठ्यक्रम के विशेष ज्ञान रखने वाले अधिक से अधिक तीन विशेषज्ञ जो विश्व विद्यालय या सम्बद्ध महा विद्यालय/संस्थाओं के कार्यकर्ता न हों विद्यालय मण्डल से नामित किये जायेंगे।

(vii) औद्योगिक महा विद्यालयों के प्रधानाचार्य या सम्बद्ध विभागाध्यक्ष, अध्ययन मण्डल का पदेन अध्यक्ष होंगे।

(viii) जब जरूरी हो तब अध्यक्ष को, उपकुलपति के पूर्व अनुमोदन से विशेषज्ञों को संवीक्षक के रूप में, निविष्ट बैठकों के लिए आमंत्रित करने का अधिकार है।

3. अध्ययन मण्डल के सदस्यों की पदावधि तीन साल की होगी और वे पुनः नियुक्ति के योग्य हों।

4. मण्डल का कार्य :

(अ) अनुसंधान विषय और तत् सम्बन्धी अपेक्षाओं का अनुमोदन करना।

(आ) विभाग/सम्बद्ध महाविद्यालय/संस्थाओं से संचालित स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम को, विद्यालय मण्डल को सिफारिश करना।

(इ) विद्यालय मण्डल को विश्व विद्यालय की परीक्षाओं के अभिशासन के विनियम के अनुसार डाक्टरी उपाधि के सेवा, स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के लिए परीक्षकों की सिफारिश करना।

(ई) पूर्व डाक्टरी और अन्य शोध कार्य के प्रार्थना पत्रों पर अनुचितन कर, सम्बद्ध विभागों को सिफारिश करना और अनुसंधान छात्रों के पर्यवेक्षकों की नियुक्ति के लिए विद्यालय मण्डल को सिफारिश करना।

(उ) विभाग/सम्बद्ध महा विद्यालय/संस्थाओं के स्नातकोत्तर अध्ययन और शोध कार्य के स्तर को बढ़ाने की कार्रवाई की सिफारिश विद्या-मण्डल को करना।

(ऊ) विद्या-मण्डल, शिक्षा परिषद् कार्यकारिणी समिति और उप कुलपति से अभ्यर्पित अन्य कर्तव्यों का निर्वहन।

गणपूर्ति :

5. मण्डल कुल सदस्यता की एक तिहाई बैठक की गणपूर्ति होगी।

सूचना :

6. मण्डल की बैठक की नियत तारीख से कम से कम चौदह दिन पहले ही बैठक की सूचना दी जाए।

कारोबार और नियम :

7. बैठकों के संचालन के लिए जो अधिनियम निर्धारित किये जायेंगे तदनुसार बैठकें सम्पन्न होंगी।

अध्याय—5

पूर्व स्नातक अध्ययन मण्डल

[संविधि—17 (1) और (4)]

1. उपाधि स्तर पर सिखाए जानेवाले हर विषय/विद्या शाखा के लिए एक पूर्वस्नातक अध्ययन मण्डल होगा।

2. हर मण्डल में कम से कम नौ सदस्य होंगे। मण्डल का संविधान निम्न प्रकार होगा।

संविधान :

(i) विषय सिखाने वाले विश्व विद्यालय के विभागाध्यक्ष पदेन सदस्य होंगे।

(ii) विभाग के आचार्य।

(iii) वरिष्ठता के अनुसार, आवर्तन से विभाग से एक उपाचार्य।

(iv) वरिष्ठता के अनुसार, आवर्तन से विभाग से एक प्राध्यापक।

(v) सम्बन्ध महा विद्यालय/संस्थानों में सम्बन्ध विषय पढ़ाने वाले दो प्राध्यापक, उपकुलपति से नामित किए जायेंगे।

(vi) विभागाध्यक्ष के परामर्श पर दो बाह्य विशेषज्ञ उपकुलपति से नामित किए जायेंगे।

परन्तु अभियंत्रण, चिकित्सा, कानून शिक्षा आदि विषय/विषय शाखा जो विश्वविद्यालय के विभाग/विद्यालयों में नहीं सिखाए जाते हैं उनका अध्ययन मण्डल निम्न प्रकार होगा।

(i) प्रधानाचार्य या सम्बन्धित विद्या शाखा का विभागाध्यक्ष यथा योग अध्ययन मण्डल का पदेन अध्यक्ष होंगे।

(ii) अन्य विद्यालय/सम्बन्ध महाविद्यालय/संस्थाओं में समवर्गीय या सम्बन्ध विषय पढ़ाने वाले अधिक से अधिक चार अध्यापक उपकुलपति से नामित किए जायेंगे।

(iii) निविष्ट विद्या शाखा के अधिक से अधिक तीन बाह्य विशेषज्ञ उपकुलपति से नामित किए जायेंगे।

पदावधि

3. अध्ययन मण्डल के सदस्यों की पदावधि तीन साल की होगी और वे पुनः नियुक्ति के योग्य हैं।

4. मण्डल के अधिकार और कार्य :

(अ) विश्वविद्यालय की परीक्षा के विनियम के अनुसार हर विषय में उपयुक्त परीक्षक, प्रश्न-पत्र बनाने वालों की नामिका कार्यकारिणी समिति को सिफारिश करना।

अधिकार और कार्य ;

(आ) जहां आवश्यक हो, पाठ्य-पुस्तकों की सिफारिश करना।

(इ) आवश्यकता पड़ने पर विशेषज्ञों का परामर्श लेना, जो मण्डल के सदस्य न हों।

(ई) निविष्ट पाठ्यक्रम के पाठ्य-विवरण और तत् विषयक परीक्षाओं के बारे में शिक्षा परिषद् को सिफारिशें प्रेषण करना।

(उ) पूर्व स्नातक पाठ्यक्रम व विषयाध्ययन के स्तर को बढ़ाने के उपाय विद्या मण्डल को सिफारिश करना तथा कार्यकारिणी समिति शिक्षा परिषद्, विद्यालय के अधिष्ठाता से निविष्ट विषय/सुझाव को प्रेषित करना।

(ऊ) जब जरूरी हो, सब अध्यक्ष को, उपकुलपति के पूर्व अनुमोदन से विशेषज्ञों को संवीकृत के रूप में निविष्ट बैठकों के लिए आमेलित करने का अधिकार है।

बैठक :

5. मण्डलाध्यक्ष मण्डल की बैठकें बुलाएगा।

6. अध्यक्ष स्वेच्छा से विद्यालय के अधिष्ठाता की मांग पर उपकुलपति के सुझाव पर या मण्डल के कम से कम चार सदस्यों की लिखित मांग पर विशेष बैठकें बुला सकता है।

सूचना :

7. कुल सचिव के दफ्तर से बैठक के नियत तारीख से तीन हफ्ते पहले बैठक की सूचना जारी की जाये।

गणपूर्ति :

8. मण्डल के चार सदस्यों की उपस्थिति गणपूर्ति होगी।

कारोबार के नियम :

9. इस सबन्ध में जो विनियम बनेंगे तदनुसार बैठक चलाने के नियम बनेंगे।

अध्याय—6

अध्ययन विद्यालय के अधिष्ठाता

[संविधि—6 (3)]

1. विद्यालय के अधिष्ठाता :

(अ) विभागाध्यक्षों के जरिए विद्यालय के अध्यापन व शोध कार्यकलाप का समन्वय व सामान्य निरीक्षण करना।

(आ) विभागाध्यक्षों के जरिए अध्ययन कक्षाओं में अनुशासन का निर्वहन करना।

(इ) सत्रीय कार्य के मूल्यांकन तथा नियत भाषण, उप शिक्षण या संगोष्ठी का अभिलेख निर्वाहित करना।

(ई) विद्यालय के विद्यार्थियों की विश्वविद्यालय परीक्षा की व्यवस्था, शिक्षा परिषद् के निर्देशानुसार करना।

(उ) विद्यालय मण्डल की बैठकों का आयोजन उनका अध्यक्षान ग्रहण करना और मण्डल के बैठकों के कार्यवृत्त निर्वहन करना।

- (ऊ) शिक्षा परिषद् कार्यकारिणी समिति या उपकुलपति से अभ्यर्पित अन्य कर्तव्यों का पालन करना।

अध्याय—7

विश्वविद्यालय में महाविद्यालय/संस्थाओं की भर्ती

[संविधि 32 के साथ नियम का अनुभाग 5 (17) पढ़ें]

1. (अ) महाविद्यालय माने कोई भी महाविद्यालय या कोई संस्था जो विश्वविद्यालय से निर्वाहित या मान्यता-प्राप्त हो और विश्वविद्यालय की परीक्षाओं के लिए पाठ्यक्रम चलाता हो।
- (आ) सम्बद्ध महा विद्यालय/संस्था याने कोई भी महाविद्यालय/संस्था जो विश्वविद्यालय से सम्बन्ध हो और विश्वविद्यालय से निर्वाहित न हो। जो विशेष अधिकार से विश्वविद्यालय से सम्बद्ध हो और विश्वविद्यालय की उपाधि/सनद/प्रमाण पत्र परीक्षाओं के लिए 1985 अधिनियम के अनुसार पाठ्यक्रम चलाता हो।
- (इ) स्नातकोत्तर महाविद्यालय/संस्था/सम्बद्ध महाविद्यालय संस्था जहां विश्वविद्यालय की स्नातकोत्तर परीक्षा के लिए पाठ्यक्रम के अध्ययन की व्यवस्था हो।
- (ई) सरकारी कालेज याने कोई भी महाविद्यालय/संस्था जो प्रान्तीय सरकार/केन्द्र सरकार या संघ राज्य क्षेत्र प्रशासन से निर्वाहित हो।
- (उ) निजी महाविद्यालय याने कोई भी महाविद्यालय/संस्था जो विश्वविद्यालय से या सरकारी अधिकरण से निर्वाहित हो।
2. स्वायत्त महा विद्यालय/संस्था को स्वायत्त संस्था माने कोई भी महाविद्यालय/संस्था जो विश्वविद्यालय की संविधि से नामोद्विष्ट हो।
3. महाविद्यालय/संस्था को स्वायत्तता संस्था नोद्विष्ट करने या पदनाम का प्रत्याहरण करने की रीति व शर्तों का निर्धारण कार्यकारिणी समिति, शिक्षा परिषद् के परामर्श से करेगा।
4. कार्यकारिणी समिति, शिक्षा परिषद् के परामर्श के बिना किसी संविधि के प्रालेख या संशोधन को प्रस्तुत नहीं करेगा अलावा इसके विश्वविद्यालय से सम्बद्धता प्राप्त स्वायत्त महा-विद्यालय/संस्थाओं के नामोद्विष्टन पर प्रभाव डालने वालों कार्य शिक्षा परिषद् को अभिहित किए बिना नहीं करेगा।
5. (अ) जहां कहीं नए महाविद्यालय के प्रारम्भ का प्रस्ताव किया जाये, पोषक निकाय सरकारी महा विद्यालय है तो सरकार का संबंधित विभाग महाविद्यालय के खोलने के पूर्व-वर्ती वर्ष 15 अगस्त के पहले विहित प्रपत्र पूर्ति कर निवेदित करे तथा उपलब्ध अवसरचना, भौतिक व वित्तीय सुविधाओं, का पूरा विवरण प्रार्थना पत्र के साथ अनुबद्ध कर भेजे।
- (आ) ये महाविद्यालय इस अध्यादेशन के लिए दो वर्गों में विभाजित होंगे यथापूर्व स्नातक महाविद्यालय के विशेषाधिकार से इन दोनों महाविद्यालयों की भर्ती की प्रक्रिया निम्न प्रकार की होगी :
- (इ) यथायोग पूर्व स्नातक महाविद्यालय हो या स्नातक-कोत्तर महाविद्यालय हो विश्वविद्यालय के प्रथम वर्ष

के पाठ्यक्रम के शिक्षण के लिए प्रारंभ में भर्ती किया जाएगा। तदनन्तर परवर्ती वर्षों के पाठ्यक्रम के शिक्षण के लिए विश्वविद्यालय से इस सम्बन्ध में शर्तों के अधीन महाविद्यालय निर्धारित प्रक्रिया भर्ती किए जायेंगे।

- (ई) शिक्षा परिषद् से आयोजित सम्बन्धन समिति प्रार्थना-पत्र के प्राप्त होने पर उसकी संनिरीक्षा करेगी और जहां जरूरी हो पोषक अभिकरण से और भी स्पष्टीकरण मांगेगा। तदनन्तर समिति शिक्षा परिषद् को अपनी सिफारिशें पेश करेगी।
- (उ) संबंधन समिति का प्रतिवेदन प्राप्त होने पर शिक्षा परिषद् निरीक्षण समिति की नियुक्ति करेगी जिसमें कम से कम तीन सदस्य होंगे जिनमें एक शैक्षिक नवोद-भावनव ग्रामीण नव-निर्माण का शिक्षा निर्देशक होगा।
- (ऊ) निरीक्षण समिति प्रार्थनापत्र पर अनुचितन कर, निर्माण स्थल का निरीक्षण कर प्रस्तावित महाविद्यालय की आवश्यकता, साध्यता, स्थल की उपयुक्तता, भौतिक सुविधाओं की पर्याप्तता तथा वित्तीय संसाधन पर विचार कर विश्वविद्यालय को समुचित सिफारिशें पेश करेगा।
- (ऋ) विश्वविद्यालय आदेशिका को पूरा करने की आवश्यक व्यवस्था करेगी और पोषक निकाय/सम्बद्ध सरकारी विभाग/महाविद्यालय/संस्था को सामान्यतः अगले सत्र के प्रारंभ के दो महीने पहले निर्णय सूचित करेगा।
- (ए) महाविद्यालय/संस्था को प्रारम्भ करने के आदेश की प्राप्ति पर, पोषक निकाय, प्रबन्ध निकाय का/सलाहकार समिति का संगठन कर विद्यालय की संरचना, अध्यापकों की न्यूनतम योग्यता, नियुक्ति की प्रक्रिया आदि विश्वविद्यालय की संविधि अध्यादेश वर्ष विनियम के अनुगमन पर कर प्रधानाचार्य व अन्य शैक्षिक कार्यकर्ता की नियुक्ति करेगा, आगे, प्रबन्ध निकाय/सलाहकार समिति निरीक्षण समिति की शर्तों व सिफारिशों को कार्यान्वित करने का प्रबन्ध करेगी।
- (ऐ) जो कोई विश्वविद्यालय से नियम अध्यापक की नियुक्ति की योग्यतायें, शर्तें, व मानक का प्रतिपालन नहीं करेगा, वह प्रधानाचार्य या महाविद्यालय के कार्यकर्ता के पद पर नियुक्त नहीं किया जाएगा। फिर भी असामान्य स्थितियों में पूर्ण योग्यता प्राप्त प्रधानाचार्य तुरन्त प्राप्त होने पर तत्काल महाविद्यालय के अनुभवशी वरिष्ठ अध्यापक उपप्रधानाचार्य नामोद्विष्ट होगा पूर्ण योग्यताप्राप्त प्रधानाचार्य की नियुक्ति पर्यन्त और वह स्थान रिक्त रहेगा।
- (ओ) ताजा पाठ्यक्रम प्रारम्भ करने के विषय में पूर्ववर्ती खण्ड अ ह ई उ ऋ उपबन्ध का पालन होगा।
- (औ) महाविद्यालय/संस्था/सरकारी विभाग के प्रबन्ध निकाय/ सलाहकार समिति यथायोग यथाशीघ्र शैक्षिक सत्र के प्रारम्भ से पंद्रह दिन के अन्दर कार्य की स्थिति का पूरा विवरण

निरीक्षण समिति की शर्तों व सिफारिशों की पूर्ति विश्व विद्यालय को सूचित करेगा।

(अ) संबद्धता समिति का संघटन निम्न प्रकार होगा :—

1. उपकुलपति या उनका नामित सदस्य—अध्यक्ष शिक्षा परिषद में दो नामित सदस्य —अध्यक्ष
2. शिक्षा परिषद में दो नामित सदस्य —सदस्य
3. कुल सचिव या उपकुलपति से नामित अधिकारी—सदस्य सचिव

(क) अन्तःकालीन संबंधन प्रारम्भ में एक महाविद्यालय/संस्था को एक वर्ष के लिए प्रदान किया जायेगा और विश्वविद्यालय उचित और ठीक समझे तो आगे भी बढ़ा सकता है। अन्तःकालीन संबंधन की समाप्ति के तीन महीने पहले नवीकरण की प्रार्थना भेजी जाये।

(ख) विश्व विद्यालय, महा विद्यालय/संस्था की प्रगति के पुनर्विलोकन का प्रबन्ध करेगा। सामान्य रूप से उसके निष्पादन और विशेष रूप से प्रारम्भ किए गए पाठ्यक्रम पर विचार करेगा। फिर नवीकरण स्वीकार कर यह तथ्य शिक्षा परिषद को प्रतिवेदन करेगा।

(ग) किसी भी पाठ्यक्रम के लिए अन्तःकालीन संबंधन प्राप्त महा विद्यालय/संस्था, स्थायी संबंधन के लिए तीन साल के बीच ज्ञान पर निवेदन कर सकता है। इसके लिए नियुक्त निरीक्षण समिति की सिफारिश पर विश्व विद्यालय स्थायी संबंधन प्रदान कर सकता है। निरीक्षण समिति की नियुक्ति के पर्याप्त समय पहले विस्तृत विवरण भेजे ताकि समिति का काम सरल बने। विशिष्ट असामान्य स्थितियों में, शिक्षा परिषद की सिफारिश पर, कार्यकारिणी समिति ये शर्तें ढोला कर, सामान्य कार्य विधि के अनुसार विशेष वर्ग के अधीन, स्थायी संबंधन पहले ही प्रदान कर सकता है।

(घ) किसी भी महाविद्यालय/संस्था का प्रबन्ध निकाय सलाहकार समिति, सम्बन्धन प्राप्त अन्य महाविद्यालयों में विद्यार्थियों की शर्तों के लिए प्रबन्ध किए बिना तथा स्थायी शिक्षक कार्यकर्ताओं की नियुक्ति के वैकल्पिक प्रबन्ध किए बिना व संबंधित सरकारी विभाग एवं विश्व-विद्यालय की पूर्व स्वीकृति लिए बिना और सरकार व विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अनुदान में खरीदी पुस्तकें, प्रयोगशाला किसी उपस्कर के हिसाब का निपटारा किए बिना किसी भी महाविद्यालय संस्था को विघटित या समाप्त करने का अधिकार नहीं है।

शैक्षिक मंत्र के बीच में, किसी भी परिस्थिति में किसी भी विद्यालय/संस्था को विघटित या समाप्त करना बिल्कुल मना है।

(ङ) कार्य कारिणी समिति, संबंधन के लिए कार्यकर्ता मकान, उपस्कर, पुस्तकालय, प्रयोगशाला, वित्त और अन्य सम्बन्धित विषयों की सामान्य व विशेष शर्तें बनाकर, उनको कार्यान्वित करने की तारीख भी नियत कर सकता

है, इनकी पूर्ति न करने पर महाविद्यालय/संस्था विश्व-विद्यालय के विशेषाधिकार के योग से बंझित रहेगा।

(च) महाविद्यालय/संस्था के निरीक्षण समिति का प्रतिवेदन विश्वविद्यालय के अनुचितन तक एक गोपनीय दस्तावेज रहेगा। संबन्धन संबंधी निर्णय लेने के बाद उपकुलपति से किसी कारणवश रोके न जाने पर महाविद्यालय/संस्था, शिक्षा निदेशक, सरकार के संबंधित विभागों को सूचना, मार्ग दर्शन व जरूरी कारवाई के लिए विश्वविद्यालय से प्रतिवेदन की नकल भेजी जाएगी।

निरीक्षण/संबंधन और अक्षय निधियों का सर्जन

6. पोषक निकाय/सरकारी विभाग नए पाठ्यक्रम प्रारम्भ करने या नए महाविद्यालय/संस्था प्रारम्भ करने की अनुमति चाहे तो इस अध्याय के परिशिष्ट एक में निर्धारित दर पर शुल्क अदा करें व अक्षय निधि सर्जन करें।

प्रान्तीय सरकार/केन्द्र सरकार/संघ राज्य क्षेत्रीय शासन से निर्वाहित महा विद्यालय/संस्थाओं के लिए अक्षय निधि सर्जन शर्त लागू न होगा।

7. सम्बद्ध महाविद्यालय/संस्था विश्वविद्यालय की पूर्व सहमति/अनुमोदन से विश्वविद्यालय से समय-समय पर निर्धारित महाविद्यालय/संस्था के देय अध्ययन शुल्क आदि व विश्वविद्यालय को देय विभिन्न शुल्क वसूल कर सकता है।

सम्बन्धन का प्रत्याहरण

8. विश्वविद्यालय के नियम/विनियम/संविधि/अध्यादेश या किसी आदेश या निर्देश का पालन महाविद्यालय संस्था से न होने पर, कुप्रबन्ध से महा विद्यालय/संस्था को सामान्य नित्य उचित कार्य निर्वहण दुस्तर होने पर या किसी मान्य कारण पर, कार्य-कारिणी समिति महाविद्यालय/संस्था को प्रदत्त संबंधन या अनुमति अपहरण कर सकता है।

9. सम्बन्ध महा विद्यालय/संस्था के अध्यापकों का कार्य-भार विनियम से निर्धारित होगा।

10. महा विद्यालय/संस्था के लिए विश्व विद्यालय के विनियम से हर विषय के लिए निर्धारित न्यूनतम अध्ययन घंटा एक हफ्ते के लिए समय-सारिणी में होगा।

11. विश्वविद्यालय के विनियम में महाविद्यालय/संस्था के न्यूनतम कार्यकर्ता की आवश्यकता का विवरण होगा। महा-विद्यालय/संस्था से न्यूनतम आवश्यकता की पूर्ति न होने पर उनको संबंधन प्रदान नहीं किया जाएगा।

12. हर महाविद्यालय/संस्था अध्ययन कक्षा, प्रयोगशाला, पुस्तकालय व प्रशासन के आवास का उचित प्रबन्ध करेगा।

13. विश्वविद्यालय के विनियम से निर्धारित आदेशानुसार हर महाविद्यालय/संस्था में एक सुसज्जित पुस्तकालय का होना जरूरी है।

14. महाविद्यालय/संस्थाओं में विश्वविद्यालय के विनियम से निर्धारित मानक के अनुसार अध्ययन कक्षा का आकार होना जरूरी है।

15. विश्व विद्यालय के अध्यापक के पानन या कार्यान्वित में या उसकी व्याख्या में कोई कष्ट होने पर उपकुलपति को उनका प्रतिनिधित्व कर सकते हैं। उनकी व्याख्या व निर्णय अतिन्त होगा।

अध्याय—8

विश्वविद्यालय के विशेषाधिकार में विश्वविद्यालय/महा-विद्यालय/संस्थाओं में विद्यार्थियों की भर्ती

[अनुभाग 5 (19) और 27 (1) (अ)]

पात्रता और भर्ती :—

1. विश्वविद्यालय में अधिनियम संधि और अन्य नियम पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना तथा विश्वविद्यालय से निर्धारित अर्हता की परीक्षा या परीक्षाओं में उत्तीर्ण हुए बिना कोई भी विद्यार्थी विश्वविद्यालय के पूर्व स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में भर्ती के लिए योग्य न होगा।

2. विश्वविद्यालय की भर्ती के लिए सम्बद्ध विद्यालय के अधिष्ठाता को नियत प्रथम पुरा कर निश्चित अन्तिम तारीख के पहले भेजा जाये।

3. संबंधित विद्यालय/विभाग के लिए, उपकुलपति से संगठित प्रवेश समिति को ये प्रार्थना पत्र अधिष्ठाता से अग्रवर्ति किए जायेंगे।

4. हर पाठ्यक्रम की संबंधित प्रवेश समिति, निर्धारित भर्ती की प्रक्रिया पूरा कर, भर्ती के लिए विचारण की गई विद्यार्थियों की सूची उपकुलपति के अनुमोदन के लिए अग्रवर्ति करेगी।

5. सब प्रवेश पहले अन्तिम होगा और उपकुलपति से निश्चित अन्तिम तारीख के अन्तर विद्यार्थियों की भर्ती सूची परिनिश्चित की जाएगी।

कोई भी विद्यार्थी अधिकार के रूप में भर्ती का दावा नहीं कर सकता।

6. विश्वविद्यालय से प्रवेश के लिए निर्धारित विनियम के अनुसार महाविद्यालय/संस्थाओं में विश्वविद्यालय से स्वीकृत विभिन्न पाठ्यक्रमों के लिए प्रेषित प्रार्थना पत्रों को सम्बन्धित महाविद्यालय/संस्थाओं से आयोजित प्रवेश समिति प्रक्रमण कर परिनिश्चित करेगी।

फ्रांसीसी राष्ट्रों की भर्ती :

7. अर्पण सन्धि के अधीन पांडिच्चेरी संघ राज्य क्षेत्र में उद्गम के फ्रांसीसी राष्ट्रक, जिनको क्षेत्राधि निषाम की अनुमति दी गई है, उनको विश्व विद्यालय के विभिन्न पाठ्यक्रमों के प्रवेश के लिए, विश्व विद्यालय/महाविद्यालय/संस्थाओं में भारतीय राष्ट्रों के समकक्ष माना जाएगा।

विदेशी राष्ट्रों की भर्ती :

8. अनुच्छेद भात में अनुबन्धित राष्ट्रों को छोड़कर, अन्य विदेशी राष्ट्रों का प्रवेश, भारत सरकार से समय-समय पर निर्गत मार्गदर्शन से विनियमित किया जाएगा।

विश्वविद्यालय में विद्यावाचस्पति उपाधि के लिए विद्यार्थियों का नामांकन :

9. विश्वविद्यालय अपने विभिन्न विषय/विद्या शाखाओं में विद्या वाचस्पति उपाधि के लिए वाध्य निबन्धन के अलावा पूर्णकालीन व अंश कालीन पाठ्य-क्रमों के लिए विद्यार्थियों का प्रवेश/नामांकन कर सकता है।

जिनका पूरा विवरण समय-समय पर विभिन्न विनियमों में निर्धारित किया जाएगा।

सामान्यतः विद्या वाचस्पति निबन्धन वर्ष में दो बार, क्रमेण अप्रैल और अक्टूबर महीने में किया जाएगा।

अध्याय—9

मेट्रिकुलेशन रजिस्टर

मेट्रिकुलेशन नामांकन रजिस्टर का अनुरक्षण :

1. विश्वविद्यालय में मेट्रिकुलेशन रजिस्टर का अनुरक्षण करेगा जिसमें निम्नलिखित वर्गों के लोगों का नाम पंजीकृत होगा :

(अ) सम्बन्धित शिक्षा मण्डलों की उच्चतर माध्यमिक मध्यवर्ती, पूर्व उपाधि, प्रथम, माध्यमिक प्रमाणित पत्र परीक्षा या उसके समकक्ष मानी गई, अनुमोदित किसी दूसरी परीक्षा में उत्तीर्ण उम्मीदवार जब विश्व विद्यालय के किसी पाठ्यक्रम में प्रविष्ट होते हैं।

(आ) कोई भी उपाधि पदवी सनद या प्रमाण पत्र का धारक जिनका उपरोक्त परिच्छेद “अ” में विनिवेशन न हो विश्व-विद्यालय के पाठ्य-क्रम के अध्ययन के लिए प्रथम बार जब प्रविष्ट होते हैं।

(इ) उपरोक्त अनुच्छेद “अ” और “आ” में निर्दिष्ट लोगों के अलावा, विश्वविद्यालय को किसी भी परीक्षा में उपस्थिति से मुक्ति प्रमाणक प्राप्त कर या मुक्ति प्रमाणक के बिना जिनको प्रथम बार परीक्षा लिखने की अनुमति दी गई हो।

(ई) उपरोक्त अ, आ, और इ में निर्दिष्ट लोगों के अलावा विश्वविद्यालय के अनुमोदित उपाधि के अभ्यर्थी।

अध्याय—10

विद्यार्थियों का प्रवास और स्थानान्तरण

उपस्थिति का संयोजन :

1. विश्व विद्यालय के क्षेत्रान्तर्गत स्थित एक महाविद्यालय से सत्र के बीच में दूसरे महाविद्यालय में कोई विद्यार्थी प्रवेश पाने चाहते पर, निम्नलिखित शर्तों के पालन पर सम्बन्धित महा-विद्यालय के प्रधानाचार्य स्वमति से प्रवेश दे सकते हैं :

(अ) दोनों महाविद्यालयों में सिखाए जाने वाले विषय और उनका माध्यम समान हो।

(आ) सम्बन्धित महाविद्यालय में, सम्बन्धित पाठ्य-क्रम में स्थान रिक्त हो।

- (इ) विद्यार्थियों से उपस्थिति संयोजन का निर्धारित दर शुल्क वसूल किया जाए।
- (ई) सम्बन्धित महाविद्यालय/संस्था से प्रनापति प्रमाण पत्र प्रस्तुत किया जाए।
- (उ) सम्बन्धित पिछले अध्ययन महाविद्यालय/संस्था के प्रधानाचार्य से उपस्थिति तथा आचरण व्यवहार का प्रमाण पत्र प्रस्तुत किया जाए।

टिप्पणी :

उपस्थिति संयोजन प्रदान नहीं किया जा सकता :

- (अ) आधार पाठ्य क्रम में या भाषा वैकल्पिक विषय में कोई परिवर्तन होने पर।
- (आ) नयी भर्ती से स्वीकृति प्रदत्त संख्या का अतिक्रमण होने पर

2. अन्य विश्वविद्यालय से स्थानान्तरित विद्यार्थी विश्व-विद्यालय के तदनुरूप विभागाखा में निमेक्त शर्तों पर भर्ती किए जा सकते हैं।

- (अ) सम्बन्धित पाठ्य-क्रम की समकक्षता विश्वविद्यालय से अनुमोदित हो।

- (आ) पिछली संस्था के प्रधान से जहाँ अध्ययन किया हो, निम्नोक्त प्रस्तुत किए जाए :

- (1) पिछले महाविद्यालय/संस्था से प्रकाश लेते समय सम्बन्धित विश्वविद्यालय के निदेशानुसार आवश्यक उपस्थिति व प्रगति अर्जित करने का प्रमाण पत्र।

- (2) स्थानान्तरण का प्रमाण पत्र और

- (3) आचरण प्रमाण पत्र

(इ) मातृ (मूल) विश्व विद्यालय से निर्धारित पाठ्यक्रम की अवधि व पाठ्यक्रम की परीक्षाएँ पास की हों और उसके लिए प्रलेखी साक्ष्य, भर्ती के प्रार्थना पत्रों के साथ प्रस्तुत किया जाए।

(ई) उनको विश्व विद्यालय को स्थानान्तरित होने का निर्धारित शुल्क अदा करना चाहिए।

(उ) अवशिष्ट अवधि के पाठ्य क्रम का अध्ययन कर विश्व विद्यालय से निर्धारित परीक्षाएँ पास करें और विश्व विद्यालय से निविष्ट अन्य निर्धारित आवश्यकताओं की पूर्ति करें।

वे सम्बद्ध विश्व विद्यालय की परीक्षाओं में वर्गीकरण या श्रेणी निर्धारण के पास नहीं है।

अध्याय—11

शिक्षा का माध्यम

[अनुभाग—27 (1) (सी)]

भाषा का अध्ययन तथा भाषा के अनुसन्धान को छोड़कर, विश्वविद्यालय के विशेषाधिकार से सम्बन्धित सभी विद्यालयों/महा विद्यालयों/संस्थाओं में संचालित सभी पाठ्यक्रमों का माध्यम अंग्रेजी होगी।

लेकिन विश्वविद्यालय के उपकुलपति अपनी स्वमति से, किसी भी विद्यार्थी को अंग्रेजी, प्रान्तीय भाषा या विद्यार्थी की मातृ-भाषा में लिखने की अनुमति दे सकते हैं।

अध्याय—12

विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों व सम्बन्धित महाविद्यालयों व संस्थाओं से देय शुल्क

[विभाग 27 (I) (ई)]

शुल्क :

1. विभिन्न विषयों के लिए विश्वविद्यालय के विद्यालय व सम्बन्धित महाविद्यालय तथा संस्थाओं से देय शुल्क, परिशिष्ट—II में निर्धारितनुसार होगा और कार्यकारिणी समिति से वे समय समय पर आशोधित होंगे।

नियत दिनांक और भुगतान की विधि :

2. (1) विद्यार्थी शिक्षा शुल्क दो किस्तों में क्रमेण प्रथम भर्ती के अवसर और वित्तीय फरवरी 10 तारीख के पहले अदा कर सकते हैं।

विशेष शुल्क और अन्य निक्षेप कोई अदा करना है, तो वह भर्ती के अवसर पर एक ही किस्त में अदा किया जाए।

परीक्षा शुल्क, नियत तारीख पर उसके पहले अदा किया जाए।

(2) विश्वविद्यालय से निर्धारित विधि के अनुसार शुल्क नकद/मनि आर्डर/रेखित बैंक ड्राई या अन्य किसी तारीख से भी वित्तीय अधिदारी, पांडिचेरी विश्वविद्यालय के नाम पर अदा कर सकते हैं।

(1.3) यदि किसी विद्यार्थी ने नियत समय पर शुल्क अदा नहीं किया हो तो विलम्ब शुल्क, भुगतान के समय निम्न प्रकार वसूल किया जाएगा।

(अ) प्रथम 10 दिनों के लिए प्रतिदिन पचास पैसे के हिसाब से

(आ) तदन्तर शुल्क अदा करने के अन्तिम तारीख तक प्रतिदिन दो रुपए के हिसाब से

(2) विशेष प्रकरण में उपकुलपति या उनकी ओर से प्रत्या-योजित कोई भी अधिकारी, शुल्क अदा करने की शर्तों को ढीला कर सकता है।

(3) व्यक्तिगतियों का नाम अनुवर्ती महीने की पहली तारीख से, विश्वविद्यालय की नामावली से काट दिया जाएगा।

(4) उपरोक्त खण्ड के अधीन जिस विद्यार्थी का नाम विश्व-विद्यालय की नामावली से काट दिया जाये, सम्बन्धित विद्यालय के अधिष्ठाता की सिफारिश पर, पूरा शुल्क का बकाया व अन्य देय अदा करने पर और दस रुपए का पुनः प्रवेश शुल्क भुगतान पर पुनः प्रवेश शुल्क भुगतान दिया जा सकता है।

(5) जब कभी कोई विद्यार्थी, विश्व विद्यालय से अपना नाम प्रत्याहरण करना चाहे तो संबंध महाविद्यालय के अधिष्ठाता का विभाग/केन्द्र के अध्यक्ष के जरिए अपने प्रत्याहरण की तिथि

सूचित करते हुए एक प्रार्थना पत्र लिखना चाहिए। यदि वह चुक गया तो शिक्षा शुल्क अदा किए महीने के अनुवर्ती महीने तक अधिकतम उसका नाम नामावली में रहेगा। उसको इस अवधि के सब प्रकार के देय शुल्क/प्रभार अदा करना आवश्यक होगा।

अन्धे विद्यार्थियों को छूट

4. अन्धे विद्यार्थियों को शिक्षा शुल्क अदा करने से छूट दी जाएगी।

शुल्क में रियायत विश्व विद्यालय स्तर की समिति का संगठन

5. (1) निम्नलिखित सदस्यों से संगठित समिति, विश्व-विद्यालय अनुदान आयोग समय पर इस सम्बन्ध में निर्धारित मार्ग दर्शन पर एक निश्चित प्रतिशत निःशुल्क प्रदान करने की सिफारिश करेगी।

(i) उपकुलपति से नामित विश्व विद्यालय का कोई अधिष्ठाता —अध्यक्ष

(ii) कार्यकारिणी समिति से नामित तीन विभाग/केन्द्र के प्रदान —सदस्य

(iii) उपकुलपति से नामित विश्व विद्यालय के तीन विद्यार्थी

—सदस्य

(2) निःशुल्कता के आवेदकों की संख्या, प्राप्य निःशुल्कता की संख्या से अधिक है, तो उपखंड (1) में उल्लिखित समिति, यह सुनिश्चित करते हुए कुछ आवेदकों को, अर्द्ध शुल्क मुक्ति सिफारिश करेगी, ताकि निश्चित निःशुल्कता कही संख्या का अतिक्रमण न होगा।

(3) शुल्क रियायत के लिए नियत प्रपत्र पूरा कर विभाग/केन्द्र के प्रधान के जरिए विद्यालय के अधिष्ठाता को अगस्त, 31 को, या अधिष्ठाता से निविष्ट तारीख को निवेदित करना होगा। इसके बाद प्राप्त होने वाले आवेदन पत्र, साधारणतः ग्रहण नहीं किए जायेंगे।

(4) हर विद्यालय इस तरह प्राप्त आवेदन पत्रों को कुल सचिव को अग्रसारित करेगा, और कुल सचिव उनकी प्रक्रिया कर, आवश्यक सिफारिश कारवाई के लिए खंड 5 (1) में निविष्ट समिति को भेजेगा।

(5) विद्यार्थियों के आवेदन पत्रों पर सिफारिश करते समय, शुल्क मुक्ति प्रदान करने, निम्नलिखित बातों पर ध्यान दिया जायः

(i) विद्यार्थियों का शैक्षिक वृत्ति

(ii) उनकी वित्तीय स्थिति

(iii) विद्यार्थी या उसके जनक/संरक्षक की वित्तीय स्थिति से सम्बन्धित कोई अन्य घटक।

रियायत प्रदत्त छात्रों के नाम की सूची साधारणतः सितम्बर 30 को अधिसूचित किया जायेगा।

(6) पूर्ववर्ती शैक्षणिक वर्ष प्रदत्त शुल्क-मुक्ति को अनु-गामी वर्ष स्वतः नवीकरण नहीं किया जायेगा। ऐसी रियायतें चाहने वाले छात्र प्रतिवर्ष ताजा प्रार्थना पत्र प्रस्तुत करें, जिन पर उस वर्ष प्राप्त अन्य आवेदन पत्रों के साथ विचार किया जायेगा।

(7) विद्यार्थी को प्रदत्त यह शुल्क-मुक्ति, उसके आचरण या अध्ययन प्रगति सन्तोषजनक न होने पर, उसकी वित्तीय स्थिति सुधारने पर या इसे निःशुल्कता की आवश्यकता न होने पर रद्द किया जाएगा।

शुल्क की वापसी प्रतिभूति निक्षेप आदि

6 (i) प्रतिभूति निक्षेप पुस्तकालय जमानत विद्यार्थी विश्व विद्यालय से अवकाश लेते समय, उनसे प्रार्थना पत्र प्राप्त होने पर उनकी बनाया रकम की कटौती कर दिए जायेंगे।

(ii) यदि किसी विद्यार्थी के विश्व विद्यालय से अवकाश लेते समय, अपने जमा की रकम, पचास वर्ष के अन्दर वापसी करने के लिए, अभ्यर्थन नहीं किया हो तो छत्र सहायता निधि के लिए विद्यार्थी से उपहृत समझा जाएगा। संबंधित विद्यार्थी के परीक्षा फल के प्रकाशन तिथि से एक वर्ष की अवधि या विश्व विद्यालय की नामावली से नाम कटने के दिन से एक वर्ष की अवधि के लिए गिना जाएगा।

व्याख्या

(iii) यदि कोई छात्र, शुल्क अदा करने के बाद अपनी भर्ती रद्द करना चाहे तो शिक्षा शुल्क प्रवेश, मैट्रिकुलेट और मान्यता शुल्क को छोड़कर अन्य शुल्क और निक्षेप, सम्बन्ध शिक्षाभ्रम के शुरू होने के पांच दिन पहले या भर्ती प्रक्रिया पूरा होने के पांच दिन बाद वापसी के लिए प्रार्थना पत्र, प्राप्त होने पर वापस किया जाएगा।

(iv) यदि कोई छात्र, शुल्क अदा करने के बाद विश्व-विद्यालय में भर्ती नहीं हुआ हो तो, खल कूब शुल्क और प्रतिभूति निक्षेप वापस किया जाएगा। बशर्ते कि वापसी के आवेदन पत्र कुल सचिव को सम्बद्ध शैक्षिक सत्र के प्रारम्भ होने के पन्द्रह दिन के अन्दर प्राप्त हुआ हो।

(ज) शैक्षिक सत्र के प्रारम्भ से पन्द्रह दिन की समाप्ति पर प्राप्त होने वाले आवेदन पत्रों को प्रतिभूति निधि जमानत धन ही पाने का अधिकार होगा।

(ज) यदि किसी छात्र ने विश्व विद्यालय की संपत्ति को कोई क्षति पहुंचाई हो और उसके लिए कोई रकम विश्व विद्यालय को देय है, तो बकाया शिक्षा शुल्क और अन्य जुर्माना कोई है तो उन्हें उसका देय प्रतिभूति निधि से काटा जाएगा।

(ज) बकाया रकम व निर्धारित परीक्षा शुल्क अदा किए बिना और बेबाली प्रमाण पत्र प्रस्तुत किए बिना, किसी भी विद्यार्थी को प्रवेशपत्र नहीं दिया जाएगा और परीक्षा लिखने की भी अनुमति नहीं दी जाएगी।

अध्याय 13

अध्याय—14

छात्रवृत्ति, अधि छात्रवृत्ति, अध्येता वृत्ति, पदक, पुरस्कार,
अक्षय निधियां प्रदान करना

विद्यार्थियों का अनुशासन
(संविधि 30 और 31)

[(अनुभाग (14)]

सराहनीय सुयोग्य छात्रों को वित्तीय खिचाव के बिना विश्व विद्यालय में, पाठ्यक्रम के अध्ययन करने और शोध कार्य कलाप जारी रखने प्रोत्साहित करने, विश्व विद्यालय पर्याप्त छात्रवृत्तियां अधि छात्रवृत्तियां अध्येता वृत्तियां व शुल्क-मुक्ति का आयोज करेगा तथा अन्य केन्द्रीय विश्व विद्यालय में वर्तमान तरीके पर पदक और पुरस्कार प्रदान करने का भी प्रबन्ध करेगा।
छात्रवृत्ति प्रदान करना

2. विश्व विद्यालय व सम्बद्ध महाविद्यालयों के छात्रों को छात्रवृत्तियां प्रदान करने विश्व विद्यालय हर विषय में छात्रवृत्तियां संस्थापित करेगा।

निःशुल्कता

विश्व विद्यालय अनुदान आयोग से निर्धारित प्रतिमान पर, विद्यालय और अध्ययन विभागों में पूर्ण निःशुल्कता और अर्द्ध शुल्कता की शुल्क रियायत होगी।

योग्यता आधारित छात्रवृत्ति योजना के अन्दर हर विषय के प्रथम और द्वितीय श्रेणी धारकों को समय पर विश्व विद्यालय से निश्चित द्रव्य के परिमाण पर छात्र वृत्ति दी जाएगी। अध्याय 12 में निर्देशितानुसार उपकुलपति से संगठित, विश्व विद्यालय स्तर की एक समिति से, सब प्रकार की छात्र वृत्तियां और निः शुल्कता प्रशासित होगी।

अध्येतावृत्ति

3. अध्ययन या अनुसन्धान के लिए विश्व विद्यालय अनुदान आयोग के प्रतिमान पर या अन्य निधायन अभिकरण के मानक पर अध्येता वृत्ति समय पर संस्थापित होगा।

अधि छात्रवृत्ति

4. विश्व विद्यालय/सम्बद्ध महा विद्यालय/संस्था के उत्तम योग्यता वाले छात्रों को विश्व विद्यालय की विभिन्न परीक्षाओं में श्रेष्ठ निष्पादन के लिए पदक देने की योजना है।

अक्षय निधियां

अनुभाग 5 (25) देखें

5. पाण्डिच्चेरी विश्व विद्यालय के अधिनियम के अनुसार समय-समय पर अक्षय निधियों को संस्थापित करने का अधिकार पाण्डिच्चेरी विश्व विद्यालय को है।

हर अक्षय निधि के प्रशासन और उसके उद्देश्य को कार्यान्वित करने, उपकुलपति से एक समिति संगठित होगी।

कार्य कारिणी समिति, विश्व विद्यालय में सृजित अक्षय-निधि के प्रशासन का, विस्तृत मार्ग दर्शन, समय-समय पर करेगी।

विश्वविद्यालय छात्र

1. विश्व विद्यालय के विद्यार्थियों संबंधित अनुशासन और अनुशासनिक कार्रवाई का पूरा पूरा अधिकार उपकुलपति को होगा।

2. महा विद्यालय/संस्था जो विश्व विद्यालय से निर्वाहित न हो उनके अनुशासन और अनुशासनिक कार्रवाई का पूरा पूरा अधिकार महाविद्यालय के प्रधानाचार्य या संस्था के प्रधान को होगा।

सम्बद्ध महा विद्यालय और संस्था के विद्यार्थी

3. विश्वविद्यालय के छात्रों पर सब प्रकार की अनुशासनिक कार्रवाइयां समय-समय पर अधिनियम व विनियम से निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार होगी।

4. सम्बद्ध महाविद्यालय/संस्था के छात्र विश्व विद्यालय की परीक्षा या विश्वविद्यालय की किसी भी कार्रवाई से समय विश्वविद्यालय के अनुशासन क्षेत्राधीन होंगे और यदि किसी छात्र ने अनुशासन भंग का कोई कार्य किया हो तो विश्व विद्यालय के सक्षम अधिकारी से अधिरोपित शास्ति के अधीन होंगे।

5. विश्वविद्यालय/महाविद्यालय/संस्था के किसी भी विद्यार्थी ने कोई अशोभनीय कार्य किया हो तो वह अनुशासनिक कार्रवाई का भागी होगा।

6. उपकुलपति से संस्थापित एक अनुशासन समिति होगी जो समय-समय पर, उपकुलपति से प्रतिनिहित कार्य व अधिकार का प्रयोग करेगी।

7. प्रधानाचार्य या संस्था के प्रधान निम्नलिखित बंध देगे :

- (1) निलंबन
- (2) निष्कासन
- (3) निश्चित अवधि के लिए विनिष्कासन
- (4) सम्बद्ध महा विद्यालय/संस्था में, पाठ्यक्रम में प्रवेश इनकार करना।
- (5) विश्व विद्यालय/महाविद्यालय/संस्था से निर्वाहि छात्रवास में प्रवेश इनकार करना।
- (6) छात्रवृत्ति या निःशुल्कता का प्रत्याहरण।
- (7) आवेश से जुमनि की रकम निश्चित करना या कोई भी रकम परिस्थिति को ध्यान में रखकर सक्षम अधिकारी उपयुक्त व उचित समझे।

अध्याय 15

परीक्षाएँ

[अनुभाग 27 (जी)]

1. वाचस्पति परीक्षा को छोड़कर विश्व विद्यालय की अन्य परीक्षाएँ नियमित विद्यार्थियों को खुला होगा याने जिन छात्रों ने विश्व विद्यालय या विश्व विद्यालय के विशेषाधिकार से सम्बद्ध महाविद्यालय/संस्था में नियमित पाठ्यक्रम का अध्ययन, निर्धारित अवधि में किया हो।

उपस्थिति काम को माफ करना

2. निम्नलिखित आवश्यकताओं की पूर्ति करने पर, छात्रों ने पाठ्यक्रम का नियमित अध्ययन निर्धारित काल में किया समाप्ता जाएगा।

(अ) मानविकी विज्ञान/वाणिज्य और कानून विद्याशाखा में आवेदक ने 75 प्रतिशत तथा चिकित्सा व प्रौद्योगिकी पाठ्यक्रम में 80 प्रतिशत अर्द्ध वर्ष/वर्ष में उपस्थिति यथा योग अर्जित किया हो।

उपस्थिति का परिगणन, कुल कार्य दिन के हिसाब से होगा पाठ्य विषय को लेकर नहीं।

(आ) सम्बद्ध महाविद्यालय के प्रधानाचार्य/संस्था के प्रधान विश्वविद्यालय के विभाग के अध्यक्ष, छात्रों को अधिकतम 15 प्रतिशत हर अर्द्ध वर्ष/वर्ष की उपस्थिति की कमी को यथायोग माफ कर सकते हैं, बल्कि यह माना जाएगा कि महाविद्यालय/संस्था ने अर्द्ध वर्ष में 90 दिन और पूरे वर्ष में 180 दिन यथायोग कार्य किया हो।

उपस्थिति कमी को माफ करने का शुल्क महाविद्यालय के प्रधानाचार्य, संस्था के प्रधान, विश्वविद्यालय के विद्यालयों का अधिष्ठाता और विभागों के अध्यक्ष यथायोग वसूल करेंगे और विश्व विद्यालय को अदा कर देंगे।

(इ) सब अभ्यर्थियों को परीक्षा लिखने की अनुमति के पूर्व उपस्थिति प्रमाण पत्र, सन्तोष जनक आचरण प्रमाण पत्र, प्रगति प्रमाण पत्र तथा विद्यालय के अधिष्ठाता, महाविद्यालय के प्रधानाचार्य और संस्था के प्रधान से देय निकासी पत्र प्रस्तुत करना चाहिए।

3. निम्नलिखित अभ्यर्थियों को भी संबद्ध पाठ्यक्रमों में भर्ती के लिए पात्र होने पर निजी अध्ययन के बाद निर्धारित छूट शुल्क अदा करने पर परीक्षा लिखने की अनुमति दी जा सकती है।

1. यथार्थ अध्यापक

उम्मीदवार जिनको तत्सम्बन्धी वर्ष जुलाई 31 को तीन वर्ष के पूर्णकालीन अध्यापन का अनुभव है और जो—

(i) पाण्डिचेरी के पाण्डिचेरी विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त महाविद्यालयों में काम करते हों।

(ii) प्रान्तीय सरकार के प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च और उच्चतर माध्यमिक या उच्चतर माध्यमिक या प्राच्य पाठशालाओं में काम करते हों

या

(iii) प्रान्तीय सरकार के मान्यताप्राप्त अवर प्राविधिक पाठशाला, प्राविधिक उच्चतर माध्यमिक पाठशाला या बहुल्ला विद्यालय में काम करते हैं

या

(iv) नई दिल्ली के केन्द्रीय मण्डल के मान्यता प्राप्त माध्यमिक पाठशालाओं जो विश्वविद्यालय के क्षेत्राधिकार के अन्दर स्थित हों।

(v) नई दिल्ली के भारतीय पाठशाला प्रमाण पत्र परीक्षा परिषद से मान्यताप्राप्त पाठशालाएँ जो विश्व विद्यालय के क्षेत्राधिकार के अन्दर स्थित हों।

1. यथार्थ पुस्तकाध्यक्ष :

पुस्तकाध्यक्षता में मद्रास विश्व विद्यालय के प्रमाणपत्र या सनद धारक अथवा विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त समकक्ष योग्यता और उपरोक्त अनुभाग (1) में उल्लिखित संस्थाओं में व पाण्डिचेरी के केन्द्रीय व शाखा पुस्तकालयों में नियुक्त व उपरोक्त पाण्डिचेरी विश्व विद्यालय के क्षेत्राधिकार में स्थित संस्थाओं में पूर्णकालीन पुस्तकाध्यक्ष के रूप में काम करने वाले, जिनको तत्सम्बन्धी वर्ष जुलाई 31 को तीन वर्ष का पूर्ण कालीन अध्यक्षता का अनुभव हो।

2. सुरक्षा सेवा कर्मिक

भारतीय सैनिक शिक्षा दल में काम करने वाले अध्यापक और भारतीय संघ के किसी भी स्थल में नियुक्त, सुरक्षा विभाग के कार्यकर्ता (नियुक्ति के स्थल के विचार किए बिना) जिन्होंने भारतीय सैनिकशिक्षा दल या सुरक्षा विभाग में जुलाई 31 को न्यूनतम तीन साल (36 महीने) का सेवा काल पूरा किया हो।

उपरोक्त तीन वर्गों के उम्मीदवार बी० ए०, बी० एस० सी०, बी० काम०, एम० ए०, एम० एस० सी०, एम० काम० परीक्षाओं के लिए (जिनके लिए प्रायोगिक) प्रयोगशाला कार्य जरूरी नहीं हो निजी अध्ययन से उपस्थिति छूट पत्र के लिए, प्रार्थना-पत्र भेज सकते हैं।

(ज) यथार्थ अन्धे उम्मीदवार:

सक्षम चिकित्साधिकारी से यथार्थ अन्धे प्रामाणित किए गए उम्मीदवार जो विश्वविद्यालय के क्षेत्राधीन साधारतः न्यूनतम तीन साल के निवासी हो बी० ए०, बी० एस० सी०, एम० ए० के सम्बद्ध पाठ्य विषयों में पात्रता के शताधीन (जिनके लिए) प्रायोगिक/प्रयोगशाला कार्य जरूरी नहीं हो उपस्थिति छूट पत्र के लिए प्रार्थना पत्र भेज सकते हैं। इस वर्ग के उम्मीदवारों को निम्नलिखित प्रमाण पत्र/दस्तावेज प्रस्तुत करना होगा।

(अ) अर्हता परीक्षा का प्रमाण पत्र

(आ) परीक्षा के आवेदक को यथार्थ अन्धे प्रामाणित करते हुए चिकित्साधिकारी से एक प्रमाण-पत्र जो विधिल सर्जन की श्रेणी के नीचे न हों।

(इ) आवेदक के, पाण्डिचेरी विश्वविद्यालय क्षेत्र में, म्यूनतम तीन साल के स्थानिक होने की वास्तविकता प्रमाणित करते हुए, राजस्व विभाग के अधिकारी से एक प्रमाण-पत्र जो तहसीलदार की श्रेणी के नीचे न हों।

ऐसे अन्धे उम्मीदवारों का परीक्षा में प्रश्नों के उत्तर लिखने, एक लेखक की सुविधा दी जाएगी जो अन्य विश्व-विद्यालयों में व्यवहार में है।

4. भेजने की विधि की शर्तें, प्रमाण-पत्र/शंसा पत्र जिन्हें आवेदन पत्र के साथ भेजना है, छूट, परीक्षा शुल्क आदि समय-समय पर निर्धारित किए जायेंगे।

5. परीक्षा लिखने की अनुमति का आवेदन पत्र नियत समय पर, शुल्क व शंसा पत्र आदि के साथ निवेदित किया जाय। जो भी उम्मीदवार परीक्षा लिख नहीं पाता, उसे परीक्षा शुल्क वापस पाने का अधिकार नहीं है।

6. जिस उम्मीदवार के आवेदनपत्र की स्वीकार किया जाता है, उसे प्रवेश-पत्र दिया जायेगा। उपरोक्त प्रवेश-पत्र की प्रस्तुति पर ही परीक्षा भवन में अनुमति दी जायेगी।

7. निम्न लिखित शर्तों पर, सभी प्रश्न-पत्र अंग्रेजी भाषा में होंगे और उनका उत्तर अंग्रेजी भाषा में लिखा जायेगा।

भाषा की सभी परीक्षाओं का प्रश्नपत्र सम्बद्ध भाषा में होगा और उत्तर भी उसी भाषा में लिखा जायेगा।

अंग्रेजी को छोड़कर, अन्य भाषा की परीक्षा लिखने वाले उम्मीदवार, प्रश्न पत्र का एक हिस्सा अंग्रेजी में और बाकी संबद्ध भाषा में लिख सकते हैं।

परन्तु उपकुलपति, छात्रों को कोई भी परीक्षा अंग्रेजी, प्रांतीय भाषा या विद्यार्थी की मातृभाषा के माध्यम से लिखने की अनुमति दे सकते हैं।

8. विश्व विद्यालय की क्षेत्रीय सीमाओं के अन्दर विश्व-विद्यालय में अनुमोदित केन्द्रों में विश्व विद्यालय की परीक्षाएँ चलाई जायेंगी।

9. परीक्षाओं की अनुसूची, परीक्षाओं का संभव दिनांक, परीक्षा फल प्रकाशन तिथि आदि परिशिष्ट III में निर्दिष्ट किया गया है।

अध्याय—16

परीक्षक

[अनुभाग 27 (जी)]

नियुक्ति

1. कार्यकारिणी समिति समय समय पर कार्यकारिणी समिति से विनिर्मित नियमानुसार परीक्षकों का चुनाव व नियुक्ति करेगी।

2. कार्यकारिणी समिति किसी भी समय परीक्षक की नियुक्ति को निरस्त कर सकता है।

3. कार्यकारिणी समिति से नियुक्त परीक्षक, निम्नलिखित वर्गों के होंगे :

(i) विभिन्न परीक्षाओं के लिए प्रश्न पत्र बनाने वाले परीक्षक (प्रश्न पत्र बनाने वाले)

(ii) उत्तर पुस्तकें मूल्यांकन करने वाले परीक्षक।

(iii) उसके कर्तव्य होंगे —

मुख्य परीक्षक

(अ) मूल्यांकन का काम बांटना।

(आ) मूल्यांकन का स्तर निर्धारित करना।

(इ) उत्तर पुस्तकें मूल्यांकन करना।

(ई) प्रायोगिक परीक्षा का प्रश्न पत्र बनाना व प्रायोगिक परीक्षा चलाना।

(उ) परीक्षा फल के प्रतिवेदन समर्पित करना।

(ऊ) परीक्षकों के कार्य का निरीक्षण करना।

(अ) कार्य कारिणी समिति से उनको अभ्यपित अन्य कार्य का निर्वहन।

मण्डल

4. परीक्षकों के दो मण्डल होंगे जिनमें एक प्रश्नपत्र बनाने व संयत करने (प्रश्न-पत्र बनानेवाले की लम्बाई) और दूसरा उत्तर पुस्तकें मूल्यांकन व सारणीकरण करने होंगे मूल्यांकन करनेवालों का मण्डल) हर मण्डल का एक अध्यक्ष परीक्षकों का मण्डल, परीक्षा नियंत्रक को संहत परीक्षा फल, अग्रसरित करेगा। परीक्षा नियंत्रक, प्राप्त संहत परीक्षा फल, परीक्षा समिति को प्रस्तुत करेंगे।

प्रश्न पत्र बनाने वाले

5. साधारणतः प्रश्न पत्र बनाने वाले विश्वविद्यालय क्षेत्र के बाहर के होंगे। और जिस/जिन विषय/विषयों के प्रश्न पत्र बनाने होंगे, उन्हें वे सम्बद्ध महाविद्यालय/संस्थाओं में पढ़ाते नहीं होंगे।

प्रश्न पत्र बनाने वाले एक वर्ष के लिए नियुक्त होंगे और वे पुनः नियुक्ति के लिए पात्र होंगे।

लोग जो परीक्षक बनने के पात्र नहीं

6. निम्नलिखित लोग परीक्षक नियुक्त होने के पात्र नहीं हैं।

(अ) महा विद्यालय/संस्थान में मानविकी और विज्ञान विषयों के अध्यापन में चार वर्ष से कम अनुभव वाले, किसी भी मानविकी और विज्ञान-विषय के परीक्षक नहीं बन सकते।

(आ) महाविद्यालय/संस्थाओं में से वर्ष से कम अध्यापन अनुभव वाले और जिन्हें मानविकी व विज्ञान मण्डल, संचालन का पूर्वानुभव नहीं हो।

(इ) कार्यकारिणी समिति के सदस्यों से विशेष परिस्थिति में, विशेष कारण से अभिलिखित हों परीक्षक एक वर्ष के लिए नियुक्त होंगे और पुनः नियुक्ति के लिए पात्र होंगे।

हर वर्ष कुल सचिव/परीक्षा नियंत्रक से पूर्ववर्ती पांच वर्ष के प्रश्न पत्र बनाने वाले वे परीक्षकों की सूची विद्या शाखा/विषयानुसार बनायी जायेगी।

7. इस अध्याय के खंड 1 के अधीनस्थ परीक्षक और मण्डल के अध्यक्षों को देय पारिश्रमिक और भत्ता, परिशिष्ट iv में यथा निर्धारित व कार्य कारिणी समिति से समय समय पर आशोधित होगा।

पारिश्रमिक

जुलाई से जून तक के शैक्षणिक वर्ष कुल मिलाकर एक व्यक्ति को परीक्षा कार्य के लिए अधिकतम 2000 रुपए पारिश्रमिक और न्यूनतम तीस रुपए पारिश्रमिक मिलेंगे।

उपरोक्त अधिकतम रकम में प्रश्न-पत्र बनाने का पारिश्रमिक समाविष्ट नहीं है, अधिकतम स्वीकार्य रकम में अध्यक्ष शुल्क की गणना नहीं की जाएगी।

सब परीक्षक, कार्यकारिणी समिति समय समय पर जारी करने वाले निर्देशों का पालन करेंगे।

अध्याय 17

परीक्षा समिति

[अनुभाग—32 (1)]

संविधान और रचना

1. विश्व विद्यालय में एक परीक्षा समिति होगी।
2. समिति में निम्नलिखित व्यक्ति होंगे :
 - (i) उपकुलपति या उनका नामित अध्यक्ष
 - (ii) अध्ययन, शैक्षिक, नवोदभावन और ग्रामीण पुनर्निर्माण निदेशक।
 - (iii) शरीर व्यायाम, खेलकूद विद्यालय, राष्ट्रीय सेवा और विद्यार्थी कल्याण के निदेशक सदस्य
 - (iv) विद्यालयों के तीन अधिष्ठाता जो उपकुलपति से नियुक्त होंगे सदस्य
 - (v) महा विद्यालय/मंस्थाओं के तीन प्रधानाचार्य जो उपकुलपति से नामित होंगे। सदस्य
 - (vi) शिक्षा परिषद में दो व्यक्ति नियुक्त होंगे सदस्य
 - (vii) परीक्षा नियंत्रक सदस्य सचिव

पदावधि

3. नामित सदस्य और शिक्षा परिषद से नियुक्त सदस्यों की दफ्तर की पदावधि तीन साल की होगी और वे पुनः नामित होने और पुनर्नियुक्ति के लिए पात्र हैं।

गणपूर्ति अधिकार और कार्य

4. समिति की बैठक के लिए चार सदस्यों की उपस्थिति गणपूर्ति होगी।

5. विभिन्न परीक्षक मण्डलों से अग्रसारित संहत परीक्षा फल पर विचार कर, उसका अनुमोदन कर, विश्व विद्यालय में परीक्षा फल प्रकाशन का प्रबन्ध करेंगी।

6. इस विषय के लिए विनिर्दिष्ट नियमानुसार सुयोग्य छात्रों को, रियायती अंक देने का अधिकार समिति को होगा।

7. समिति, शिक्षा परिषद को प्रतिवर्ष विश्व विद्यालय की परीक्षाओं के कार्य संपादन पर एक प्रतिवेदन प्रस्तुत करेगी और उसकी प्रगति को प्रभावी बनाने की सिफारिशें पेश करेगी।

8. परीक्षाओं में छात्रों के अनुचित तरीकों के उपयोग पर और परीक्षा प्रणाली के संचालन के नियमों का किसी भी प्रणाली से उल्लंघन करने पर, अनुशासनिक कारवाई लेने के विषय में समिति सिफारिश करेगी।

9. समिति, शिक्षा परिषद से अभ्यर्कृतियों और कार्यों का भी पालन करेगी।

परीक्षा समिति, ऊपर उल्लिखित अपने कोई या समूचे अधिकार, विश्व विद्यालय के किसी भी अधिकारी को प्रत्योजित भी कर सकती है।

अध्याय—18

उपाधि, सनद प्रमाण पत्र और अन्य विशिष्टता प्रदान करना

[गंविधि 28 के साथ अनुभाग 5 (5), अनुभाग 27 (1) (डी) भी पढ़ें]

1. शिक्षा परिषद योग्यता प्राप्ति के लिए प्रमाणित छात्रों को उपाधि सनद प्रमाण पत्र और अन्य अवशिष्टता विश्व विद्यालय से प्रदान किया जायेगा।

2. कार्यकारिणी समिति, शिक्षा परिषद की सिफारिश पर और दो तिहाई (2/3) सदस्यों की उपस्थिति और मतदान से अभ्यागत (दर्शक) को सम्मानार्थ उपाधि प्रदान करने का प्रस्ताव दे सकती है।

आपातक मामले में कार्यकारिणी समिति स्वयं अपनी तरफ से प्रस्ताव पेश कर सकती है निम्नलिखित सम्मानार्थ उपाधि किसी व्यक्ति की विशिष्ट प्रतिष्ठा व उपलब्धियों के लिए या शिक्षा या समाज के लिए विशिष्ट योगदान के बल पर उपयुक्त व्यक्ति को प्रदान किया जा सकता है :

विधि वारिधि (एल० एल० डी०)

साहित्य वारिधि (डी० लिट्)

विज्ञान वारिधि (डी० एस० सी०)

3. दीक्षान्त समारोह में ही सम्मानार्थ उपाधि प्रदान की जाएगी और यह उपस्थिति में या अनुपस्थिति में लिया जा सकता है।

अध्याय 19

शुल्क

उपाधि प्रदान करने वाला दीक्षान्त समारोह
(संविधि 33)

वार्षिक दीक्षान्त समारोह

1. साधारणतः साल में एक बार उपाधियाँ प्रदान करने कुलपति के अनुमोदन से उपकुलपति दीक्षान्त समारोह का दिनांक और स्थान निश्चित करेंगे।

विशेष दीक्षान्त समारोह

2. कार्यकारिणी समिति से निश्चित समय पर सम्मानार्थ उपाधि प्रदान करने विशेष दीक्षान्त समारोह का भी आयोजन होगा।

3. दीक्षान्त समारोह में विश्व विद्यालय का निगमित निगाह सम्मिलित होगा।

4. कुलपति उपस्थित होंगे तो, वे दीक्षान्त समारोह की अध्यक्षता ग्रहण करेंगे।

सूचना

5. दीक्षान्त समारोह की बैठकों के लिए कुल सचिव से चार हफ्ते की सूचना दी जाएगी।

6. दीक्षान्त समारोह के हर सदस्य को, कुलसचिव सूचना के साथ वहाँ के कार्यक्रम की कार्यविधि के पालन का विवरण देंगे।

7. दीक्षान्त समारोह जिस वर्ष के लिए चलाया जाता है, उस वर्ष की परीक्षा में उत्तीर्ण उम्मीदवार, दीक्षान्त समारोह में भर्ती होने के पात्र होंगे।

यह विधि प्रथम दीक्षान्त समारोह को लागू नहीं होगी जिसमें पूर्व वर्षों के सब उम्मीदवार अपनी उपाधि प्राप्त करने भर्ती किए जायेंगे।

अगर किसी विशिष्ट वर्ष, दीक्षान्त समारोह आयोजित नहीं हुआ हो तो, जिस वर्ष दीक्षान्त समारोह आयोजित होगा, तदसवर सभी पात्र उम्मीदवार जिन्होंने निर्धारित शुल्क अदा किया हो उन्हें, सम्बद्ध उपाधि, अनुपस्थिति में प्राप्त करने, भर्ती प्राधिकृत करने उपकुलपति सक्षम होंगे।

आवेदन

8. दीक्षान्त समारोह में उपाधि "स्वयं", प्राप्त करने निर्धारित शुल्क के साथ प्रार्थना पत्र, उम्मीदवार को नियत तारीख के पहले कुल सचिव को निवेदित करना चाहिए।

9. उम्मीदवार जो स्वयं दीक्षान्त समारोह में उपस्थित नहीं हो सके, कुलपति उन्हें अनुपस्थिति में उपाधि पाने की अनुमति दे सकते हैं और निर्धारित शुल्क के साथ निवेदित करने पर, कुल सचिव उनकी उपाधि दे सकते हैं।

10. दीक्षान्त समारोह में "स्वयं" उपाधि पाने का शुल्क समय-समय पर निर्धारित होगा।

सम्मानार्थ उपाधि

11. सम्मानार्थ उपाधि दीक्षान्त समारोह में ही दिया जाएगा और वह स्वयं या अनुपस्थिति में प्राप्त कर सकते हैं।

12. विश्व विद्यालय के सम्बद्ध विद्यालय के अधिष्ठाता या सम्बद्ध संस्था के प्रधान या सम्बद्ध महा विद्यालय के प्रधानाचार्य, दीक्षान्त समारोह में सम्मानार्थ उपाधि प्राप्त करने वालों को प्रस्तुत करेंगे।

13. कार्य कारिणी से निर्देशित यथोचित होगा (गणवेश) बिल्फल (हड्ड) उम्मीदवार दीक्षान्त भवन में धारण करेंगे। विश्व-विद्यालय में नियत समुचित शैक्षिक परिधान में जो कोई उम्मीदवार नहीं हो, उन्हें दीक्षान्त समारोह में अनुमति नहीं दी जाएगी।

दीक्षान्त समारोह कार्य विधि

14. दीक्षान्त समारोह में उपाधि पाने उपस्थिति उम्मीदवारों को औपचारिक रूप से कुलपति को प्रस्तुत किए जायेंगे, कुलपति की अनुपस्थिति में उपकुलपति को अपनी उपाधि प्राप्त करने के लिए निम्न प्रकारण प्रस्तुत किए जायेंगे। स्नातकोत्तर विभाग के विभिन्न अध्यक्ष कला संकाय के निष्ठात (मास्टर आफ आर्ट्स) और विज्ञान संकाय के निष्ठात (मास्टर आफ साइन्स) उम्मीदवारों को प्रस्तुत करेंगे। उपकुलपति से मनोनीत सम्बद्ध महा विद्यालय/संस्था के प्रधानाचार्य विधिस्नातक (एल० एल० बी०) शिक्षा स्नातक (बी० एड)० कला स्नातक (बी० ए०) प्रवीण व उत्तीर्णता, विज्ञान स्नातक (बी० एस० सी०) प्रवीण व उत्तीर्णता प्राप्त उम्मीदवारों को निम्नोक्तक्रम से उपाधि प्राप्त करने प्रस्तुत करेंगे।

पदक और पुरस्कार प्राप्त करने वालों का नाम, कुल सचिव पढ़ेंगे।

कुल सचिव या उसके लिए नियुक्त व्यक्ति अनुपस्थिति में उपाधि प्राप्त करने वाले उम्मीदवारों को प्रस्तुत करेंगे।

उपाधि प्रमाण पत्र, उम्मीदवारों को उपकुलपति से निर्धारित रीति से दीक्षान्त समारोह के उपरान्त प्रदान किया जाएगा।

15. कुलपति, मुख्य कुलपति सचिव, मुख्य अतिथि, उपकुलपति, निर्देशक, कुलसचिव, वित्तीय अधिकारी, विद्यालयों के अधिष्ठाता, विश्व विद्यालय के सदस्य व अधिकारी लोग विश्व विद्यालय से निर्धारित विशेष परिधान धारण करेंगे और कार्य कारिणी के आदेश से दीक्षान्त समारोह के निर्वहण की प्रक्रिया निर्धारित करेंगे।

अध्याय 20

या

विश्वविद्यालय के अध्यापक और अन्य शैक्षिक कार्यकर्ताओं का वर्गीकरण परिलब्धियां, योग्यताओं और सेवा के अन्य निबंधन और शर्तें

[संविधि 24 (1) के साथ, अनुभाग 27(1) (एन) पढ़ें]

विश्वविद्यालय के अध्यापक

1. आचार्य, उपाचार्य प्राध्यापक और शिक्षा के अध्यापन के लिए नियुक्त अन्य लोग या विश्वविद्यालय में (शोध कार्यक्रमों का संचालन करने) या विश्वविद्यालय से विरहित किसी महा विद्यालय या संस्था शोध कार्य कलाप का संचालन करने नियुक्त व्यक्ति और विश्वविद्यालय से नामोहिध्य अध्यापक विश्वविद्यालय के अध्यापक के माने हैं।

योग्यताएं

2. आचार्य, उपाचार्य और प्राध्यापक के पद पर विश्व विद्यालय के विविध विद्या (मानविकी) समाज विज्ञान, वाणिज्य, व्यवस्थापन अध्ययन और विज्ञान के संकाय/विद्यालयों में नियुक्त होने की न्यूनतम योग्यताएं:

(1) आचार्य

एक विशिष्ट विज्ञान, जिनके श्रेय में उच्चस्तरीय प्रकाशन कृतियां और या अनुसंधान में सक्रिय भाग लेते हों। अध्यापन और अनुसंधान में दस वर्ष का अनुभव रखते हों व आचार्य-पाधि स्तर पर, अनुसंधान के मार्गदर्शन का अनुभव हो।

या

ख्याति सुगुस्थापित एक उत्कृष्ट विद्वान जिन्होंने ज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान किया हो।

(2) उपाचार्य

आचार्योपाधि के साथ एक उन्नत शैक्षिक अभिलेख, प्रकाशित कृतियां व शोधकार्य अध्यापन विधियों में नवोद-भावन तथा अध्यापन सामग्रियों के उत्पादन में सक्रिय भाग लेने का प्रमाण

या

अध्यापन और अनुसंधान में पाँच वर्ष का अनुभव जिनमें तीन साल प्राध्यापक की हैसियत से हो या किसी समकक्ष हैसियत में हो

अध्यापन और शोधकार्य में उत्कृष्ट अभिलेख रखने वाले उम्मीदवारों के विषय में यह शर्त डीला किया जा सकता है।

व्याख्या

उत्कृष्ट अभिलेख निर्धारित करने के लिए निम्नलिखित कसौटी अपनाया जाएगा।

उपाचार्य

(अ) आचार्योपाधि उम्मीदवार ने दूसरी श्रेणी में एम० ए० पास की हो

(आ) जो उम्मीदवार आचार्योपाधि धारी नहीं उच्च दूसरी श्रेणी में एम० ए० उपाधि परीक्षा पास की हो

या

(इ) जो उम्मीदवार आचार्योपाधि धारी नहीं लेकिन एम० ए० उपाधि परीक्षा दूसरी श्रेणी में पास की हो और स्नातक उपाधि परीक्षा पहली श्रेणी में पास की हो।

3. विश्व विद्यालय में प्राध्यापक नियुक्त होने के लिए निर्धारित न्यूनतम योग्यताएं :

सामान्य :

(अ) आचार्योपाधि या समान उच्च स्तरीय प्रकाशित अनुसंधान कृति।

(आ) भारतीय विश्व विद्यालय या विदेशी विश्व विद्यालय से संगत विषय में स्नातकोत्तर उपाधि में दूसरी श्रेणी (सात अंक अपनी में "सी") के साथ एक अच्छा शैक्षिक अभिलेख। "अ" और "आ" में उक्त अन्तः शास्त्रीय (अन्योन्यत्रित) संगत विषय/विषयों के पाठ्यक्रम के विकास में अभिरुचि रखता हो।

उम्मीदवार के शोध प्रबंध या प्रकाशित कृति उच्च स्तरीय होने पर और उपकुलपति अपनी दृष्टि में योग्यताओं की डीला कर उपकुलपति उम्मीदवार को साक्षात्कार के लिए बुला सकते हैं।

अगर आचार्योपाधि या समकक्ष अनुसंधान कृति वाले प्राप्य नहीं है या यथोपयुक्त नहीं समझा जाय, तो एक अच्छे शैक्षिक अभिक्षधारी का (पूर्व आचार्योपाधि, समकक्ष उपाधि या विशिष्ट शोध कार्य के लिए सम्यक् भरिता देकर) नियुक्त किया जा सकता है, बशर्ते कि उसने दो साल का अनुसंधान कार्य पूरा किया हो या शोध प्रयोगशाला या संस्था में व्यावहारिक अनुभव रखता हो और आचार्योपाधि आठ साल के अन्तर अर्जित करें या नियुक्ति की आठ साल की अवधि के अन्तर उच्च स्तरीय कृति प्रकाशित करने का प्रमाण दें-- इन शर्तों के भंग होने पर वह भविष्य की वेतन वृद्धि के लिए पात्र नहीं होगा।

व्याख्या:

एक श्रेयस्कर शैक्षिक अभिलेख के निर्धारण के लिए निम्नलिखित मान दण्ड किया जाय:

(1) आचार्योपाधि धारक ने न्यूनतम दूसरी श्रेणी में एम० ए० की उपाधि उत्तीर्ण की हो।

(2) जो आचार्योपाधिधारी नहीं हो, उन उम्मीदवारों ने एम० ए० की उपाधि परीक्षा उच्च दूसरी श्रेणी में पास की हो

4. "शिक्षा" विद्या शाखा में प्राध्यापक नियुक्त होने की न्यूनतम योग्यताएं :

(अ) शिक्षा में आचार्योपाधि या समकक्ष उच्च स्तरीय अनुसंधान कार्य।

(आ) भारतीय विश्वविद्यालय या विदेशी विश्वविद्यालय से संगत विषय में स्नातकोत्तर उपाधि में दूसरी श्रेणी (सात अंक अपनी में "सी") के साथ एक अच्छा शैक्षिक अभिलेख श्रेय में हो।

या

(अ) उच्च स्तरीय अनुसंधान कृति के साथ, किसी भी विद्याशाखा में आचार्योपाधि

(आ) एक अच्छे शैक्षिक अभिलेख के साथ सेवा काल में ही भारतीय विश्वविद्यालय या विदेशी विश्वविद्यालय से "शिक्षा में" पूर्व आचार्योपाधि प्राप्त की हो।

अन्तःशास्त्रीय कार्यक्रमों में अभिरुचि दिखाने के साथ, उपरोक्त "अ" और "आ" की एक उपाधि संगत विषय में हो और दूसरा शिक्षा में हो।

उम्मीदवार के शोध प्रबंध या प्रकाशित कृति उच्च स्तरीय होने पर और उपकुलपति अपनी दृष्टि में उसे पर्याप्त समझने पर, उपरोक्त "आ" में उल्लिखित योग्यताओं को ढीला कर, उपकुलपति उम्मीदवार को साक्षात्कार के लिए बुला सकते हैं।

अगर आचार्योपाधिवारी या समकक्ष अनुसंधान कृति वाले प्राप्य नहीं या उपयुक्त नहीं हो तो एक अच्छे शैक्षिक अभिलेख धारी को (पूर्व आचार्योपाधि समकक्ष उपाधि या विशिष्टशोध कार्य के लिए सम्यक् भारिता देकर) नियुक्त किया जा सकता है बशर्ते कि उसने दो साल का अनुसंधान कार्य किया हो या शोध प्रयोगशाला या संस्था में व्यावहारिक अनुभव रखता हो और आचार्योपाधि आठ वर्ष की अवधि के अन्दर अर्जित करे या नियुक्ति की आठ साल की अवधि के अन्दर उच्च स्तरीय कृति प्रकाशित करने का प्रमाण दे—इन शर्तों के भंग होने पर वह भविष्य की बेतन वृद्धि के लिए भागी नहीं होगा।

5. भंगीन और ललित कला विद्या शाखा में प्राध्यापक नियुक्त होने की न्यूनतम योग्यताएं :

(अ) एक अच्छे अभिलेख के साथ संगत विषय में स्नातकोत्तर उपाधि में (सात अंक अपनी में "सी") के साथ दूसरी श्रेणी या विश्वविद्यालय से मान्यताप्राप्त समकक्ष उपाधि या सनद।

और

(आ) दो साल का अनुसंधान या व्यावसायिक अनुभव या अपने विशिष्टीकरण क्षेत्र के सर्जनात्मक कार्य का प्रमाण और उपलब्धियों या सयुक्त अनुसंधान और कलाकार के क्षेत्र में उत्कृष्ट कुशलता में तीन साल का व्यावसायिक अनुभव या

संगत विषय में अत्यन्त सराहनीय व्यावसायिक उपलब्धिवारी व्याख्या:

एक "श्रेयस्कर शैक्षिक अभिलेख" के निर्धारण के लिए, निम्नलिखित मानदण्ड का पालन होगा।

(i) आचार्योपाधिवारी नहीं हो, उन उम्मीदवारों ने एम०ए० की उपाधि परीक्षा उच्चतर दूसरी श्रेणी में पास की हो और स्नातक उपाधि परीक्षा दूसरी श्रेणी में पास की हो।

(ii) जो आचार्योपाधिवारी नहीं हो, उन उम्मीदवारों ने एम०ए० की उपाधि दूसरी श्रेणी में और स्नातक उपाधि परीक्षा पहली श्रेणी में पास की हो।

(iii) आचार्योपाधिवारी ने न्यूनतम दूसरी श्रेणी में एम०ए० की उपाधि उत्तीर्ण की हो।

6. शारीरिक शिक्षा विद्या शाखा में प्राध्यापक नियुक्त होने की न्यूनतम योग्यताएं :

पूर्व आचार्योपाधि या स्नातकोत्तर उपाधि के ऊपर कोई मान्यता प्राप्त उपाधि या उम्मीदवार के स्वतन्त्र अनुसंधान कुशलता को प्रमाणित करने वाली प्रकाशन कृति।

भारतीय विश्वविद्यालय या विदेशी विश्वविद्यालय से शारीरिक विद्या में स्नातकोत्तर उपाधि में दूसरी श्रेणी (सात अंक अपनी में "सी") के साथ एक अच्छा शैक्षिक अभिलेख उनके श्रेय में हो।

वांछनीय :

संगत विषय में आचार्योपाधि या समकक्ष उच्च स्तरीय अनुसंधान कार्य उम्मीदवार के शोध प्रबंध या प्रकाशित कृति उच्च स्तरीय होने पर उपरोक्त "आ" में उल्लिखित योग्यताओं को ढीला कर उपकुलपति उम्मीदवार को साक्षात्कार के लिए बुला सकते हैं।

अगर शारीरिक विद्या को छोड़ अन्य किसी विद्या शाखा के प्राध्यापक को अध्यापनार्थ शारीरिक विद्या संकाय में नियुक्त करना है, तो मूल विद्या शाखा के संगत विषय में नियुक्त के लिए निर्धारित योग्यताओं पर जोर दिया जाएगा।

अगर कोई पूर्व आचार्योपाधिकधारी या समकक्ष अनुसंधान कार्य किया कोई उम्मीदवार प्राप्य नहीं "ही" या उपयुक्त नहीं है, तो एक अच्छे अभिलेख धारी को नियुक्त किया जा सकता है बशर्ते कि उसने न्यूनतम एक साल का अनुसंधान कार्य किया हो या शोध प्रयोगशाला या संस्था में व्यावसायिक अनुभव रखता हो और बशर्ते कि पूर्व आचार्योपाधि या समकक्ष मान्यता प्राप्त स्नातकोत्तर परीक्षा से ऊपर की कोई परीक्षा पाम करे। नियुक्ति के आठ साल की अवधि के अन्दर उच्च स्तरीय कृति प्रकाशित करने का प्रमाण दे—इन शर्तों के भंग होने पर वह भविष्य की बेतन वृद्धि के लिए भागी नहीं होगा।

व्याख्या :

एक श्रेयस्कर शैक्षिक के निर्धारण के लिए निम्नलिखित मानदण्ड का पालन होगा :

(i) आचार्योपाधिवारी ने न्यूनतम दूसरी श्रेणी में एम०ए० की उपाधि उत्तीर्ण की हो।

(ii) जो आचार्योपाधिवारी नहीं हो, उन उम्मीदवारों ने एम०ए० की उपाधि दूसरी श्रेणी में और स्नातक उपाधि परीक्षा दूसरी श्रेणी में पाम की हो।

(iii) जो आचार्योपाधिवारी नहीं हो, उन उम्मीदवारों ने एम०ए० की उपाधि दूसरी श्रेणी में और स्नातक उपाधि परीक्षा पहली श्रेणी में पास की हो।

7. अंग्रेजी में प्राध्यापक नियुक्त होने की न्यूनतम योग्यताएं :

(अ) आचार्योपाधि या समकक्ष उच्च स्तरीय अनुसंधान कार्य

(आ) भारतीय विश्व विद्यालय या विदेशी विश्व विद्यालय से संगत विषय की स्नातकोत्तर उपाधि में दूसरी श्रेणी (सात अंक अपनी में "सी") के साथ एक अच्छा शैक्षिक अभिलेख उनके श्रेय में हो।

(इ) अंतःशास्त्रीय कार्यक्रमों में अभिरूचि दिखाने के साथ उपरोक्त "अ" की उपाधि संगत विषय में हो।

उम्मीदवार के शोध प्रबंध या प्रकाशित कृति उच्चस्तरीय होने पर और उपकुलपति अपनी दृष्टि से उसे पर्याप्त समझने पर उपरोक्त "आ" में उल्लिखित योग्यताओं को हीलाकर, उपकुलपति उम्मीदवार को माक्षात्कार के लिए बुला सकते हैं।

अगर, आचार्योपाधिकारी या समकक्ष अनुसंधान कृतिवाले प्राप्त नहीं हो" या उपयुक्त नहीं हो तो एक अच्छे शैक्षिक अभिलेख-धारी को (पूर्व आचार्योपाधि समकक्ष उपाधि या विशिष्ट शोध कार्य के लिए सम्यक भारिता देकर) नियुक्त किया जा सकता है, बशर्ते कि उसने दो साल का अनुसंधान कार्य किया हो या शोध प्रयोगशाला या संस्था में व्यावहारिक अनुभव रखता हो और आचार्योपाधि आठ वर्ष की अवधि के अन्दर अर्जित करे या नियुक्ति की आठ साल की अवधि के अन्दर उच्च स्तरीय कृति प्रकाशित करने का प्रमाण दे—इन शर्तों के भंग होने पर वह भविष्य की वेतन-वृद्धि के लिए भागी नहीं होगा।

व्याख्या :

एक श्रेयस्कर "शैक्षिक अभिलेख" के निर्धारण के लिए, निम्न-लिखित मानदण्ड का पालन होगा।

(i) आचार्योपाधिधारी ने न्यूनतम दूसरी श्रेणी में एम०ए० की उपाधि प्राप्त की हो।

(ii) जो आचार्योपाधिधारी नहीं हो, उन उम्मीदवारों ने एम० ए० की उपाधि परीक्षा दूसरी श्रेणी में पास की हो।

(iii) जो आचार्योपाधिधारी नहीं हो, उन उम्मीदवारों ने एम०ए० की उपाधि दूसरी श्रेणी में और स्नातक उपाधि परीक्षा पहली श्रेणी में पास की हो।

8. विदेशी भाषाओं में प्राध्यापक नियुक्त होने की न्यूनतम योग्यताएं :

(अ) आचार्योपाधि या समकक्ष उच्च स्तरीय अनुसंधान कार्य

(आ) भारतीय विश्व विद्यालय या विदेशी विश्व विद्यालय से संगत विषय की स्नातकोत्तर उपाधि परीक्षा में दूसरी श्रेणी (सात अंक सामग्री में "सी") के साथ एक अच्छा शैक्षिक अभिलेख उनके श्रेय में हो।

अगर आचार्योपाधिकारी या समकक्ष अनुसंधान कृति वाले प्राप्त नहीं हो, या उपयुक्त नहीं "हों" तो एक शैक्षिक अभिलेख धारक को नियुक्त किया जा सकता है, बशर्ते कि उसने संबंधित विदेशी

भाषा के अध्यापन में विश्व विद्यालय से स्नातकोत्तर मानव प्राप्त किया हो और आठ साल की अवधि के अन्दर उच्च स्तरीय कृति प्रकाशित करने का प्रमाण दे—इन शर्तों के भंग होने पर वह भविष्य की वेतन वृद्धि के लिए भागी नहीं होगा।

व्याख्या :

एक श्रेयस्कर शैक्षिक अभिलेख के निर्धारण के लिए, लिखित मानदण्ड का पालन होगा :

(i) आचार्योपाधिधारी ने न्यूनतम दूसरी श्रेणी में एम० ए० की उपाधि उत्तीर्ण की हो।

(ii) जो आचार्योपाधिधारी नहीं हो, उन उम्मीदवारों ने एम० ए० की उपाधि दूसरी श्रेणी में और स्नातक उपाधि परीक्षा, पहली श्रेणी में पास की हो।

9. व्यवस्थापन विद्यालय/व्यवस्थापन अध्ययन संकाय में प्राध्यापक नियुक्त होने की योग्यताएं :

व्यवस्थापन प्रणामन स्नातकोत्तर उपाधि में पहली श्रेणी या अभियांत्रिकी प्रौद्योगिकी में एम० टेक पहली श्रेणी के साथ पास की हो और आठ साल की अवधि के अन्दर आचार्योपाधि अर्जित करे।

एम० बी० ए० और एम० टेक के अलावा औद्योगिक मनोविज्ञान, व्यक्तिगत व्यवस्थापन, व्यवसाय सांख्यिकी लागत लेखा जैसे संगत विषयों में प्राध्यापक की नियुक्ति के मन्दर्भ में वही योग्यताएं लागू होंगी जो अन्य विद्यालय विद्याशास्त्र/विश्वविद्यालय (मानविकी) समाज विज्ञान के अलावा वाणिज्य और विज्ञान संकाय में प्राध्यापकों की नियुक्ति के लिए योग्यताएं निर्धारित हैं।

10. विश्व विद्यालयों के कानून विभाग/संकाय में प्राध्यापकों की नियुक्ति के लिए निर्धारित न्यूनतम योग्यताएं :

एक अच्छे शैक्षिक अभिलेख के साथ एल० एल० एम० की उपाधि।

टिप्पणी :

अंशकालीन प्राध्यापक की नियुक्ति के मन्दर्भ में पेशेवर वकील को नियुक्ति करने समय इन योग्यताओं पर जोर न दिया जाये।

व्याख्या :

एक श्रेयस्कर शैक्षिक अभिलेख के निर्धारण के लिए, निम्न-लिखित मानदण्ड का पालन होगा।

(i) आचार्योपाधिधारी ने न्यूनतम दूसरी श्रेणी में एम०ए० की उपाधि उत्तीर्ण की हो।

(ii) जो आचार्योपाधिधारी नहीं हो, उन उम्मीदवारों ने एम० ए० की उपाधि दूसरी श्रेणी में और स्नातक उपाधि परीक्षा दूसरी श्रेणी में उत्तीर्ण की हो।

जो आचार्योपाधिधारी नहीं हो, उन उम्मीदवारों ने एम० ए० की उपाधि परीक्षा पहली श्रेणी में उत्तीर्ण की हो।

11. विश्व विद्यालय के विद्या शाखा के अध्यापकों के वर्गीकरण और परिलब्धि निम्न प्रकारेण होगा जो समय-समय पर आरोधन और पुनरीक्षण के अधीन होगा।

परिलब्धि :

आचार्य—रू० 1500-60-1800-100-2000-125-2 500/-

उपाचार्य—रू० 1200-50-1300-60-1900

प्राध्यापक—रू० 700-40-1100-50-1600

उपरोक्त वेतन के अलावा अध्यापकों की परिलब्धि में समय-समय पर ग्राह्य समाविष्ट होंगे।

विश्व विद्यालय के अध्यापकों को अपनी प्रथम नियुक्ति में निवेश प्रकरण में प्रवरण समिति की सिफारिश पर और कार्य-कारिणी समिति विश्व विद्यालय अनुदान आयोग के अनुमोदन पर पदधारी को अग्रिम वृद्धि दे सकती है।

उपरोक्त अध्यापकों के अलावा, विश्व विद्यालय के अधिनियम में नियुक्त अध्यापक पदाधिकारियों की परिलब्धि शिक्षा परिषद की सिफारिश पर कार्यकारिणी समिति निर्धारित करेगी।

12. अध्यापकों को पूर्णकालिक कर्मचारी बनने :

विश्व विद्यालय में नियुक्त होने वाले अध्यापकों की सेवा की शर्तें :—

विश्व विद्यालय के पूर्णकालीन वेतन प्राप्त अध्यापक कार्य-कारिणी समिति की अनुमति के बिना, प्रत्यक्ष रूप से या अन्य कोई भी धन्धा स्वीकार न करें, जिनके लिए पारिश्रमिक या मानदेय दिया जाये।

लेकिन विश्व विद्यालय, विद्वत संस्था या लोक सेवा आयोग से आयोजित परीक्षाएँ या साहित्यिक कार्य, आकाशवाणी भाषण विस्तार व्याख्यान या कोई भी शैक्षिक कार्य उपकुलपति की अनुमति से स्वीकार किया जा सकता है।

व्याख्या :

इस अध्यादेश के लिए अध्यापक के माने हैं। विश्व विद्यालय का पूर्णकालीन वेतन प्राप्त अध्यापक में अवैतनिक आमन्त्रित या अंशकालीन अध्यापक सम्मिलित नहीं है।

कर्तव्य का स्वरूप :

13. शिक्षा के आयोजन, अध्यापन अनुसंधान विश्व विद्यालय की परीक्षाएँ, विद्यार्थी अनुशासन तथा विद्यार्थी कल्याण के लिए विश्व विद्यालय से विनिर्मित अधिनियम, संविधि और अध्यादेश व मानान्यतः विश्व विद्यालय के अधिकारियों से निर्देशित कार्य का पालन हर अध्यापक को करना होगा।

14. आचार्य, उपाचार्य और प्राध्यापक साधारणतः चौबीस महीने की अवधि के लिए परीक्षाधीन नियुक्त होंगे।

(अ) परीक्षाधीन की शर्तों को कार्यकारिणी समिति व्यक्तिगत-प्रकरणों में मूल्यांकन पर डीला कर सकता है।

(आ) कार्यकारिणी समिति अध्यापकों को स्थायी बना सकती है, या स्थायी नहीं करने का भी निर्णय कर सकती है या परीक्षाधीन अवधि को बढ़ा भी सकती है, लेकिन चौबीस महीने की अवधि का अतिक्रमण न करे। अगर कार्यकारिणी समिति बारह महीने की समाप्ति के पहले या बड़ाई परीक्षाधीन अवधि के अन्दर अध्यापक को स्थायी बनाने के पक्ष में नहीं है तो उस अवधि की समाप्ति के तीन दिन पूर्व लिखित रूप से संबंधित अध्यापक को सूचित किया जाय।

लेकिन अध्यापक को स्थायी नहीं बनाने के निर्णय के लिए, कार्यकारिणी समिति के उपस्थित सदस्यों के दो तिहाई बहुमत और मतदान जरूरी है।

(इ) संविधि 20 और 21 के अधीन कार्यकारिणी समिति से नियुक्त अध्यापक उसके कार्यभार ग्रहण करने की तारीख से ही स्थायी समझे जायेंगे।

16. कार्यकारिणी समिति के प्रस्ताव या उपकुलपति के निर्देशांकन या संबंधित अध्यापक को अपने मामले की लिखित रूप से प्रतिनिधित्व करने का मौका दिये बिना वेतन वृद्धि रोकना जायगा और हर अध्यापक अपने वेतन मान में वेतन वृद्धि पाएगा।

परीक्षाधीन :

परिशिष्ट 'ज' में उल्लिखित संविधि 20 और 21 के अन्दर लिखित संविधा कार्य के लिए कार्यकारिणी समिति से नियुक्त अध्यापकों को परीक्षाधीन की शर्तें लागू नहीं होंगी।

व्याख्या :

अध्यापकों की नियुक्ति के नौ महीने के बाद चौबीस महीने के बाद, चौबीस महीने की समाप्ति के पहले ही कार्यकारिणी समिति को उसे स्थायीकरण की उपयुक्तता पर मूल्यांकन करने का अधिकार है।

स्थायीकरण :

15. (अ) परीक्षाधीन अध्यापकों के स्थायीकरण के लिए निर्धारित परीक्षा अवधि की समाप्ति के चालीस दिन पहले अध्यापकों का नाम स्थायीकरण के लिए कार्यकारिणी समिति को प्रस्तुत करना कुल सचिव का कर्तव्य होगा।

संविधि के अनुसार विश्व विद्यालय की सेवा में स्थायीकृत हर अध्यापक साठ उम्र पूरा करने तक विश्व विद्यालय की सेवा में रहेंगे।

सेवा निवृत्ति की उम्र

स्वस्थ स्वास्थ्य वाले साठवर्ष पूरा किये संतोषप्रद कर्तव्य करने वाले अध्यापकों को उपकुलपति की सिफारिश पर, कार्यकारिणी समिति संतुष्ट होने पर कार्यकारिणी समिति से निर्धारित शर्तों व उपबन्ध पर प्रथम बार "सर्वग बाहुय्य नियुक्ति" कर सकती है बशर्ते कि उसकी सेवा विश्व विद्यालय

के हित में हो और पुनर्नियुक्ति तीन साल की अवधि का अतिक्रमण न करे।

पैंसठ साल पूरा करके लिये किसी भी अध्यापक के संविदा की सेवा वधि को बढ़ायी जायेगी और उसे पुनः संविदा भी नहीं दी जायेगी।

सेवा की शर्तों में अन्तर:

18. विश्व विद्यालय के तत्काल चालू संविधि अधिनियम और अध्यादेश का पालन करना हर अध्यापक के लिए बाध्य है।

अध्यापकों की नियुक्ति के बाद पदनाम, वेतनमान, वेतन वृद्धि, निर्वाह निधि, निवृत्ति लाभ, सेवा निवृत्ति की उम्र, परीक्षा, स्थायीकरण, छुटी वेतन, और सेवा से निष्कासन आदि बातों की शर्तों में कोई परिवर्तन नहीं किया जाएगा जिनमें कोई प्रतिकूल प्रभाव पड़े।

त्याग पत्र :

19. (अ) स्थायी अध्यापक कार्यकारिणी समिति को लिखित रूप से तीन महीने की सूचना देकर अपने कार्यभार को समाप्त कर सकता है।

(आ) अन्य अध्यापकों के लिए सूचना की अवधि एक महीने है। लेकिन कार्यकारिणी समिति अपनी स्वमति से इस सूचना की अपेक्षा को ढीला कर सकती है।

20. पेंशन प्रदत्त अधिकारी, अंशधारी भविष्य निधि में सेवा निवृत्त, प्रान्तीय सरकार रेलवे व सुरक्षा स्थापनों से सेवा निवृत्त, प्रान्तीय सरकार रेलवे व सुरक्षा स्थापनों से सेवा निवृत्त विश्व विद्यालयों पुनर्नियुक्त पेंशन भोगियों का वेतन, जिस पद के लिए नियुक्त हुए हों, उस पद के लिए निर्धारित वेतनमान के न्यूनतम मान पर निश्चित किये जायेंगे। उसके अलावा उसे मिलने वाला पेंशन या अंशधारी भविष्य निधि, आनुतोषिक, संरायिरकृत पेंशन का मूल्य आदि अन्य सेवा निवृत्त लाभ आहरण करने की अनुमति दी जायेगी, वशत कि कुल मिलने वाला न्यूनतम निश्चित वेतन और स्थूल राशि मिलाकर या अन्य सेवा निवृत्त समकक्ष लाभ निम्नोक्त का अतिक्रमण न करे :

(i) पूर्व सेवा निवृत्त वेतन

(ii) महीने तीन हजार पांच सौ रुपये (3500) इनमें से जो भी कम हो।

टिप्पणी :

इसमें जिस किसी पर भी अतिक्रमण होने पर पेंशन या अन्य लाभ पूरा-पूरा दिया जाएगा और तदनुसार वेतन में समायोजन किया जाएगा ताकि कुल वेतन और पेंशन लाभ जोड़ने पर वह निर्धारित सीमा के अन्दर रहे।

वेतन न्यूनतम या उच्चतर अवस्था में निश्चित करने के बाद, वेतन में समायोजन के कारण वार्षिक वेतन वृद्धि प्रति वर्ष की सेवा के लिए वेतनमान के अनुसार दी जाने से कभी-कभी वेतन के नीचे की उच्चतर अवस्था में प्रकरणानुकूल निश्चित किया जाता है।

1. सेवा निवृत्ति के पहले की आखिरी अदायगी विशेष वेतन और सेवा निवृत्ति के पहले लगातार एक वर्ष के लिए दिया गया स्थानापन्न वेतन जोड़कर मूल पद वेतन हिमाव लगाया जाएगा।

जिस पद के लिए अधिकारी नियुक्त हुआ हो, उस पद का न्यूनतम वेतन आखिरी अदायगी से अधिक होने पर, पदाधिकारी को संबंधित पद के लिए निर्धारित वेतनमान पर न्यूनतम वेतन पेंशन या उसके समकक्ष अन्य सेवा निवृत्ति लाभ को घटाकर दिया जाएगा।

उपरोक्त मानदण्ड पर पुनर्नियुक्त पेंशन भोगियों का प्रारम्भिक वेतन निश्चित किये जाने पर निर्धारित वेतनमान के अनुसार पदाधिकारी को सामान्य वार्षिक वेतन वृद्धि दी जायेगी वशत कि वेतन, मूल पेंशन व समकक्ष अन्य जोड़े जाने पर प्रतिमास 3500 (तीन हजार पांच सौ रुपये) का अतिक्रमण न करे।

छुटियां :

किसी पदाधिकारी का वेतन उपरोक्त उपलब्ध से ऊपर किसी उच्च अवस्था में निश्चित करने का प्रस्ताव है तो उसे शिक्षा मंत्रालय विश्वविद्यालय अनुसंधान आयोग के अनुमोदन प्राप्त करने के लिए अप्रसहित करता है। सेवा निवृत्त होकर विश्व विद्यालय में पुनर्नियुक्त होने वाले शैक्षिक और गैर शैक्षिक पदाधिकारी जिनका वेतन सामान्य चाल विधियों के अनुसार निर्धारित किया जाता है, उन्हें उपरोक्त वेतनप्रणाली के अनुसार, अनुमोदनार्थ प्रस्तुत करना आवश्यक नहीं है।

परिशिष्ट II में उल्लिखित विभिन्न प्रकार की छुटियां विश्व विद्यालय के अध्यापकों को प्राप्ति है।

22. परिशिष्ट-III की संविधि 24 का खण्ड (2) में दिए गए प्रपत्र के रूप में विश्व विद्यालय और अध्यापकों के बीच में संविदा होनी चाहिए या यथा संभव तदनुसार होनी चाहिए।

संविदा :

23. अध्यादेश में किसी भी बात के होते हुए भी परिशिष्ट 'ड' में दी गई संविदा के प्रपत्र, के अनुरूप कार्य कारिणी समिति विशेष प्रकरणों में स्वयं उपयुक्त समझने वाली शर्तों पर अध्यापकों की नियुक्ति कर सकती है। लेकिन इस खण्ड के अंदर की गयी नियुक्तियां पांच वर्ष की अवधि का अतिक्रमण नहीं करे।

भारत सरकार के मानव संसाधन

विकास मंत्रालय के अनुमोदन पत्र तारीख 10 नवंबर, 1988 की पत्र संख्या एल आर० सं० एफ० 21-10, 1987 डेस्क (ज) सिद्धांति

1. व्याप्ति (समावेशन)

भारत सरकार नई दिल्ली के स्वास्थ्य और परिवार कल्याण (स्वास्थ्य विभाग) मंत्रालय से स्वास्थ्य निर्देशिक

को जारी किए गए भारत सरकार के पत्र संख्या ए० 11018/1/1887 एम० (एफ० और एम०)/एम० ई० (पी० जी०) के अधीन जियमर के गैर चिकित्सा विभाग से विश्व-विद्यालय की नियमित सेवा में आमेहित विद्यमान वेतन-भागी और व्यवस्थापन विद्यालय के अन्ना कार्यकर्ता जिनको वेतन पुनरीक्षण नहीं हुआ है और जो विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से दिनांक 20-6-1987 की पत्र संख्या एफ० 1-3/1987 (पी० एस० सेल) कार्मिकी और कोशिली मेल) से जारी की गई सूचना पत्र से समावेसित नहीं है, उन सब को छोड़कर विश्वविद्यालय के समूचे अध्यापकों को ये अध्यादेश लागू होंगे।

पांडिचेरी विश्वविद्यालय के 1985 के अधिनियम 53 अनुभाग 2 (आर) में उल्लिखित माने विश्वविद्यालय के अध्यापकों के लिए होंगे।

2. परिलब्धि :

अध्यापकों की परिलब्धियां निम्न प्रकार से होंगी
(i) 1986 जनवरी, पहली तारीख से पुनरीक्षित वेतनमान पर उनको वेतन दिया जाएगा।

प्राध्यापक—	2200-75-2800-100-4000
प्राध्यापक (वेतनमान ज्योट) 3000-100-3500-125-5000	
प्राध्यापक (बटीय वेतनमान) 3700-125-4950-150-5700	
उपाचार्य	3700-125-4950-150-5700
आचार्य	4500-150-5700-200-7300

अध्यापकों की परिलब्धियों में वेतन के अलावा महंगाई भत्ता तथा अन्य भत्ते शामिल होंगे जो तत्समान पद को केन्द्र सरकार के कर्मचारियों के लिए दी जाती है।

हर पद के लिए निर्धारित न्यूनतम वेतनमान पर अध्यापकों की प्रत्यक्ष नियुक्ति होगी। लेकिन प्रवरण समिति और कार्यकारिणी समिति के अनुमोदन पर अध्यापकों को निर्धारित वेतन पर उच्चतर प्रारंभिक वेतन दिया जा सकता है।

लेकिन उस तरह दी जानेवाली वेतन वृद्धि संख्या विश्व-विद्यालय अनुदान आयोग से निर्धारित अधिकतम संख्या का अतिक्रमण न करे।

3. नियुक्ति और योग्यतायें :

1. अखिल भारतीय विज्ञापन और प्रवरण के आधार पर और योग्यता क्रम पर प्राध्यापक उपाचार्य और आचार्यों की नियुक्ति होगी।

2. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से निर्धारित न्यूनतम योग्यताएं क्रमेण प्राध्यापक उपाचार्य और आचार्यों की नियुक्ति के लिए लागू होंगी।

3. प्राध्यापक :

प्राध्यापक की नियुक्ति की योग्यता एक अच्छे शैक्षिक अभिलेख के साथ सम्बद्ध विषय में स्नातकोत्तर उपाधि में

55 प्रतिशत के साथ उत्तीर्णता या उसका समकक्ष पदक्रम होगी।

4. प्राध्यापक के पद पर वे हीने नियुक्त हो उपयुक्त होंगे जिन्होंने न्यूनतम शैक्षिक योग्यताएं उपलब्ध की हो और इस पद के लिए विशेष रूप से नियत व्यापक परीक्षा पास की हो। इस परीक्षा में परिचय, विषय, प्रशंसन आदि व्यापक प्रणाली विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से निर्धारित क्रम पर होगी।

5. स्नातकोत्तर परीक्षापरान्त शोध कार्य में अभिलेख को प्रोत्साहित करने प्राध्यापक के पद में नियुक्त होते वक्त, आचार्योपाधि या पूर्व आचार्योपाधि उपलब्ध उम्मीदवारों को क्रमेण तीन और एक अग्रिम वार्षिक वेतन वृद्धि 2000-4000 वेतनमान पर दी जाएगी तथा तत्समान वार्षिक अनुदान का लाभ भी पदोन्नति में दिया जाएगा। विद्यमान प्राध्यापक, जिन्होंने शोधोपाधि प्राप्त नहीं की हो और भविष्य में इस वर्ग के अन्दर नियुक्त होने वाले उम्मीदवार, अनुसंधान उपाधि प्राप्त करने पर पदोन्नति के लिए पात्र होंगे, लेकिन अग्रिम वार्षिक वृद्धियों के लाभ के लिए अर्हता प्राप्त नहीं होंगे। विद्यमान प्राध्यापक भी जिन्होंने अनुसंधान उपाधि प्राप्त की हो वैसे लाभ के लिए पात्र होंगे।

6. उपाचार्य :

आचार्योपाधि के साथ एक उन्नत शैक्षिक अभिलेख प्रकाशित कृतियों व शोधकार्य, अध्यापन विधियों में नवोदभावन तथा अध्यापन सामग्रियों के उत्पादन में सत्रिय भाग लेने का प्रमाण।

या

अध्यापन और अनुसंधान में पांच वर्ष का अनुभव, जिनमें तीन साल प्राध्यापक की हैसियत से हो या कोई समकक्ष हैसियत से हो।

अध्यापन और शोधकार्य में उत्कृष्ट अभिलेख रखने वाले उम्मीदवारों के विषय में यह शर्त ढीला किया जा सकता है।

व्याख्या :

उत्कृष्ट अभिलेख निर्धारित करने के लिए निम्नलिखित कसौटी अपनायी जाएगी :-

उपाचार्य :

(i) आचार्योपाधिधारी उम्मीदवार ने न्यूनतम दूसरी श्रेणी में स्नातकोत्तर परीक्षा पास की हो।

या

(ii) जो उम्मीदवार आचार्योपाधिधारी नहीं उच्च दूसरी श्रेणी में स्नातकोत्तर उपाधि परीक्षा पास की हो।

या

(iii) जो उम्मीदवार आचार्योपाधिधारी नहीं लेकिन स्नातकोत्तर उपाधि परीक्षा दूसरी श्रेणी में पास की हो और स्नातक परीक्षा पहली श्रेणी में पास की हो।

(7) ज्येष्ठ वेतनमान पातेवाला कोई भी प्राध्यापक 3700-5700 वेतनमान में उपाचार्या की पदोन्नति के लिए पात्र होगा, धर्शने कि उसने

(अ) ज्येष्ठ वेतनमान में आठ वर्ष का सेवा काल पूरा किया हो, लेकिन यह शर्त उन लोगों के लिए ही ला किया जाएगा जिन्होंने प्राध्यापक पद में सोलह वर्ष का सेवा काल पूरा किया हो ।

(आ) आचार्योपाधि प्राप्त की हो, या समकक्ष उच्च स्तर का शैक्षिक अभिलेख उसके श्रेय में हो ।

(इ) विद्वता और अनुसंधान के क्षेत्र में स्वमूल्यांकन निर्देशी (रेफरी) प्रतिवेदन उच्च स्तरीय प्रकाशन शैक्षिक नवोद्भावन में योगदान नये पाठ्य व पाठ्य चर्चा के परिकल्प में सक्रिय भाग और योगदान आदि

(ई) ज्योष्ठवेतन मान में स्थापन के बाद विश्व विद्यालय अनुदान आयोग से निर्देशित चार हफ्ते की अवधि के दो पुनश्चर्चा पाठ्य क्रम/श्रीमकालीन संस्था में भाग ग्रहण किया हो या उसके समानुक्ल तुलनात्मक स्तर की अनुवर्ती शिक्षा में भाग ग्रहण किया हो ।

(उ) संगत (अविरुद्ध) अच्छे निष्पादन के मूल्यांकन (आगणन) का प्रतिवेदन

(8) विश्वविद्यालय की संविधि/अधिनियम के अधीन उपाचार्य का चयन (चुनाव) प्रवरण समिति के माध्यम से होगा ।

(9) ज्येष्ठ वेतनमान के वे प्राध्यापक जिन्हें आचार्योपाधि नहीं हो या जिनके श्रेय में समकक्ष प्रकाशन कृति नहीं हो और उपाचार्य पद के लिए निर्धारितविवक्षा व शोध स्तर की शर्त की पूर्ति नहीं की हो लेकिन अनुच्छेद सात में उल्लिखित मानदण्ड की पूर्ति करते हों और शिक्षण में एक अच्छा अभिलेख शासित करते और या विस्तार कार्यकलापों में भाग ग्रहण करने पर अनुच्छेद आठ में निर्दिष्ट समिति की सिफारिश पर 3700-5700 वेतनमान पर नियुक्त किए जा सकें हैं । वे वरीय वेतनमान के प्राध्यापक नामादिष्ट किए जाएंगे । विद्यमान पदों को उच्चोक्त कर वरीय वेतन मान के पदों का सृजन किया जाएगा तदन्तर आचार्योपाधि हासिल करने पर और अन्य वांछित योग्यताओं की पूर्ति करने पर और उनके उपयुक्त होने पर उनका ताजा मूल्यांकन कर उन्हें उपाचार्य की उपाधि प्रदान की जा सकती है ।

(10) अध्यापकों के व्यावसायिक विकास के लिए समुचित अनुवर्ती शिक्षा कार्यक्रम में नियमित अन्तराल में भाग ग्रहण अभिन्न अंग समझा जाता है । औपचारिक कार्यक्रमों में भाग ग्रहण के लिए कठोरता बरती न जाने पर भी, विश्व विद्यालय अनुदान आयोग से स्वीकृत अनुवर्ती कार्यक्रम में प्रतिबद्धता का प्रमाण व्यावसायिक उन्नति के लिए अनिवार्य अपेक्षा है ।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से दर्शायी योग्यता तथा मान दण्ड इस कार्यक्रम को कार्यान्वित करने तक, एक निश्चित अवधि के लिए निविष्ट प्रवर्ग के पदों का भाग ग्रहण में शिथिलीकरण, संबंध विश्वविद्यालय से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग निर्दिष्ट होने वाले मार्गदर्शन पर दिया जाएगा ।

11. शिक्षा व्यवस्थापन में अध्यापकों के निष्पादन का नियमित व व्यवस्थित मूल्यांकन अनिवार्य अंश है । उसके सक्रियात्मक होने तक वर्तमान छान बीन/क्रियाविधि/चयन कार्य विधि या संबंध विश्व विद्यालय या प्रान्तीय सरकार से तत्काल के लिए निर्धारित मानदण्ड उपरोक्त स्थानन/पदोन्नति के लिए लागू होगी ।

12. आचार्या :

एक विशिष्ट विद्वानों जिनके श्रेय में उच्च स्तरीय प्रकाशन कृतियां हों और अनुसंधान में सक्रिय भाग लेते हों । अध्यापन और/या अनुसंधान में सक्रिय भाग लेते हों । अध्यापन और अनुसंधान में दस वर्ष का अनुभव रखते हों व आचार्योपाधि स्तर पर, अनुसंधान के मार्गदर्शन का अनुभव हो ।

या

ख्याति सुस्थापित एक उत्कृष्ट विद्वानों जिन्होंने ज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया हो ।

13. व्यवसाय उन्नति

(i) हर प्राध्यापक 3000-5000 के ज्येष्ठ वेतन मान में स्थानन (श्रेणी करण) के लिए पात्र है, अगर उसने :—

(अ) नियमित के बाद आठ वर्ष का सेवा काल पूरा किया हो, इसके लिए शिथिलीकरण उपरोक्त अनुच्छेद 3 (5) में उल्लिखितानुसार दिया जाएगा ।

(आ) विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से निर्देशित चार हफ्ते की अवधि के दो पुनश्चर्चा पाठ्यक्रम/श्रीमकालीन संस्था में भागग्रहण किया हो या उसने समानुक्ल तुलनात्मक स्तर की अनुवर्ती शिक्षा में भाग ग्रहण किया हो ।

(ई) संगत (अविरुद्ध) अच्छे निष्पादन के मूल्यांकन (आगणन) का प्रतिवेदन

14. परीक्षा :

अध्यापकों की परीक्षा की अवधि चौबीस महीने की अवधि का अतिक्रमण न करेगी । परीक्षा पर नियुक्त प्राध्यापक के स्थायीकरण के लिए समुचित (यथोचित) प्रत्येकालीन पुनश्चर्चा पाठ्यक्रम में भाग ग्रहण किया हो और उसके निष्पादन का मूल्यांकन-प्रतिवेदन संतोषजनक हो । 1988-89 में और तदन्तर नियुक्त प्राध्यापकों को पुनश्चर्चा पाठ्यक्रम में भाग ग्रहण करने की सुविधा के लिए विश्व विद्यालय अनुदान आयोग उसका प्रबंध करेगा ।

उन सुविधाओं के सुनिश्चित होने तक, पुनरीक्षण की पूर्ति के लिए विद्यमान प्रक्रिया का पालन होगा।

15. अधिघषिता और पुनर्नियुक्ति

अध्यापकों की अधिघषिता की उम्र साठ (60) वर्ष होगी और तत्पश्चात् सेवावधि नहीं बढ़ायी जाएगी। फिर भी स्वमति से विश्वविद्यालय सेवा निवृत्ति लोगों को पैंसठ (65) वर्ष तक विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से विनिर्मित दिशा निर्देश पर पुनर्नियुक्त कर सकता है।

16. शिकायत और उसके निवारण प्रक्रिया (तंत्र)

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से अध्यापकों की शिकायतें व उनके निवारण के लिए जारी किए जाने वाले समुचित प्रक्रिया (तंत्र) की स्थापना, विश्वविद्यालय में की जाएगी।

17. सेवा की सामान्य शर्तें :

1. विश्वविद्यालय का कोई भी अध्यापक कार्यकारिणी समिति की अनुमति के बिना प्रत्यक्ष रूप से या अप्रत्यक्ष रूप से किसी भी तरह का कारोबार, व्यापार, गृह शिक्षण या अन्य कोई भी धनदायी स्वीकार न करें जिनके लिए पारिश्रमिक या मानदेय दिये जाए। लेकिन विश्वविद्यालय, विद्वान संस्था या लोक सेवा आयोग से आयोजित परीक्षाएं या साहित्यिक कार्य, आकाशवाणी भाषण, विस्तार व्याख्यान या कोई भी शैक्षिक कार्य, उपकुलपति की अनुमति से स्वीकार किया जा सकता है।

2. शिक्षा के आयोजन, अध्यापन अनुसंधान विश्वविद्यालय की परीक्षाएं, विद्यार्थी अनुशासन तथा विद्यार्थी कल्याण के लिए विश्वविद्यालय से विनिर्मित अधिनियम, विधि और अध्यादेश व सामान्यतः विश्वविद्यालय के अधिकारियों से निर्देशित कार्य का पालन हर अध्यापक को करना होगा।

18. वार्षिक नीति की संगीता :

सब अध्यापक विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से निर्दिष्ट होने वाली वार्षिक नीति की संहिता से शासित होंगे।

19. स्थायीकरण

1. (अ) परीक्षाधीन अध्यापकों के स्थायीकरण के लिए निर्धारित परीक्षा अवधि की समाप्ति के चालीस (40) दिन पहले अध्यापकों का नाम स्थायीकरण के लिए कार्यकारिणी समिति को प्रस्तुत करना कुलसचिव का कर्तव्य होगा।

(आ) कार्यकारिणी समिति अध्यापकों को स्थायी कर सकती है या स्थायी नहीं करने का भी निर्णय कर सकती है या परीक्षा अवधि को छे या बारह महीने (6 या 12) के लिए बढ़ा सकती है।

लेकिन परीक्षा अवधि, बढ़ाई गई अवधि को भी मिलाकर अड़तालीस (48) महीने की अवधि का अतिक्रमण न करें अगर कार्यकारिणी समिति चौबीस (24) महीने की समाप्ति के पहले या बढ़ाई परीक्षा अवधि के अन्दर, अध्यापक को स्थायी बनाने के पक्ष में नहीं है, तो उस अवधि की समाप्ति तीस (30) दिन पूर्व लिखित रूप से संबंधित अध्यापक को सूचित किया जाए।

लेकिन अध्यापक को स्थायी नहीं बनाने के निर्णय के लिए, कार्यकारिणी समिति के उपस्थिति सदस्यों के दो तिहाई (2/3) बहुमत और मतदान जरूरी है।

(इ) संविधि 20 और 21 के अधीन, कार्यकारिणी समिति में अनुपस्थित अध्यापक, उसके कार्यभार ग्रहण करने की तारीख से ही स्थायी समझे जायेंगे।

2. विश्वविद्यालय से किसी पद के लिए नियुक्त अध्यापक परीक्षा अवधि काल में ही नियुक्त पद के लिए अनुपस्थित समझे जाने पर परीक्षा अवधि को संतोष जनक पूरा नहीं करने पर नियुक्ति प्राधिकारी :

(i) पदोन्नति में नियुक्त अध्यापक को नियुक्ति के पूर्व पद पर प्रत्योवर्ति करेगा।

(ii) प्रत्यक्ष नियुक्ति के अध्यापकों को सूचना जारी किए बिना सेवा की समाप्ति करेगा।

20. कार्यकारिणी समिति के प्रस्ताव या उपकुलपति के निर्देशांकन या संबंधित अध्यापक को, अपने मामले को लिखित रूप से प्रतिनिधित्व करने का मौका दिए बिना वेतन वृद्धि रोकाने जाएगा और हर अध्यापक वेतन बढ़ि पाने पात्र है।

21. त्याग पत्र :

(अ) स्थायी अध्यापक कार्यकारिणी समिति को लिखित रूप से तीन महीने की सूचना देकर अपने कार्यभार को समाप्त कर सकता है।

(आ) अन्य अध्यापकों के लिए सूचना की अवधि एक महीना है।

लेकिन कार्यकारिणी समिति अपनी स्वमति से इस सूचना की अपेक्षा को ढीला कर सकती है।

22. पुनर्नियुक्ति पेंशन भागी का वेतन निश्चित करना 1986 के स्वीकृत केन्द्रीय सिविल (अनैतिक) सेवा के आदेशानुसार पुनर्नियुक्ति अध्यापकों का प्रारम्भिक वेतन विनियमित किया जाएगा।

23. छुट्टी :

भारत सरकार के (शिक्षा विभाग के) मानव संसाधन विकास मंत्रालय की पत्र संख्या एफ-21-10/87 डेस्क (यु०), दिनांक 07-12-1987 से अनुमोदित शैक्षिक विषयों के प्रथम आदेशानुसार परिशिष्ट-II में उल्लिखित, विभिन्न प्रकार की छुट्टियों व अन्य व्यवस्थाएं विश्वविद्यालय के अध्यापकों को ग्राह्य है।

24. संविदा :

भारत सरकार के शिक्षा विभाग के मानव संसाधन विकास मंत्रालय की पत्र संख्या एफ-21-10/87 डेस्क (य०), दिनांक 07-12-1987 से अनुमोदित शैक्षिक विषयों के प्रथम आदेशानुसार, परिशिष्ट-II की संविधि 20 का खण्ड (2) में दिए गए प्रपत्र के रूप में विश्वविद्यालय और अध्यापकों के बीच में संविदा होनी चाहिए।

25. विशेष संविदा :

भारत सरकार के (शिक्षा विभाग के) मानव संसाधन विकास मंत्रालय की पत्र सं० एफ 21-10-1987 डेस्क (यू०), दिनांक 07-12-1987 से अध्यादेश में किसी भी बात के होते हुए भी परिशिष्ट II दी गई संविदा के प्रपत्र के अनुरूप कार्यकारिणी समिति में विशेष प्रकरणों में स्वयं उपयुक्त समझनेवाली शर्तों पर अध्यापकों को नियुक्ति कर सकती है।

लेकिन इस खण्ड के अन्दर की गई नियुक्तियों पांच (5) वर्ष की अवधि का अतिक्रमण नहीं करेगी।

26. पुस्तकाध्यक्ष उपे पुस्तकाध्यक्ष, सहायक पुस्तकाध्यक्ष और शरीर व्यायाम विद्यालय के कार्यकर्ताओं की लागू होने वाली नियुक्ति की शर्तों और वेतनमान प्रथम अनुलग्नक में दिया गया है।

अध्याय— 21

विश्व विद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालय/संस्थाओं के अध्यापकों का वर्गीकरण परिलब्धियों, योग्यतायें और सेवा के अन्य निबंधन और शर्तें

संविधि-32 (2)

(अ) सरकारी महाविद्यालयों/संस्थाएं

(1) सम्बद्ध महाविद्यालय/संस्थाओं के सरकारी अधिकरण के (प्रांतीय केन्द्रीय या संघ शामिल क्षेत्र के) अध्यापक निम्न-प्रकार से वर्गीकृत होंगे :

(अ) संस्था का प्रधान :

सरकारी अधिकरण से नामोद्घिष्ट प्रधानाचार्य/ निर्देशक

(आ) आचार्यगण :

सम्बद्ध महाविद्यालय/संस्था के विभाग के अध्यक्ष जो सरकारी अधिकरण से नामोद्घिष्ट हों।

(ई) सहायक आचार्य/प्राध्यापक जो समय समय पर सरकारी अधिकरण से नामोद्घिष्ट हों।

(उ) सम्बद्ध सरकारी अधिकरण से नामोद्घिष्ट अनुषंगिक प्रदर्शक (निर्देशक) आदि अन्य अध्यापन पद के अध्यापक जो अध्यापन (और प्रयोगशाला के कार्य में लगे हुए हों।

2. सम्बद्ध सरकारी अधिकरण से समय समय पर निर्धारित किया जाएगा।

3. सम्बद्ध सरकारी अधिकरण से समय समय पर निर्धारित किया जाएगा।

4. विविध कला (मानविकी) और विज्ञान के विषय :

(अ) आचार्य :

एक विशिष्ट विद्वान जिनके श्रेय में उच्च स्तरीय प्रकाशन कृतियाँ हैं और या अनुसंधान में सक्रिय भाग लेते हैं। अध्यापन

और अनुसंधान में दस वर्ष का अनुभव रखते हों वा आचार्योपधि स्तर पर अनुसंधान के मार्गदर्शन का अनुभव हो।

या

क्याति सुस्थापित एक उत्कृष्ट विद्वान जिन्होंने ज्ञान क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान किया हो।

(आ) उपाचार्य सामान्य

आचार्योपधि के साथ एक उन्नत शैक्षिक अभिलेख प्रकाशित कृतियाँ व शोध कार्य अध्यापन विषयों में नवोद भावन तथा अध्यापन सामग्रियों के उत्पादन में सक्रिय भाग लेने का प्रमाण

अध्यापन और अनुसंधान में पाँच वर्ष का अनुभव जिनमें तीन साल प्राध्यापक को हैसियत से हो या किसी समकक्ष हैसियत से हो।

अध्यापन और शोध कार्य में उत्कृष्ट अभिलेख रखने वाले उम्मीदवारों के विषय में यह शर्त ढीला किया जा सकता है।

(इ) प्राध्यापक सामान्य

(क) पूर्व आचार्योपधि या स्नातकोत्तर उपाधि के ऊपर कोई मान्यता प्राप्त उपाधि या उम्मीदवार के स्वतन्त्र अनुसंधान कुशलता को प्रमाणित करने वाली प्रकाशन कृति।

(ख) भारतीय विश्व विद्यालय या विदेशी विश्व विद्यालय से सगन विषय में स्नातकोत्तर उपाधि में दूसरी श्रेणी (सात अंक अपनी में 'सी') के साथ एक अच्छा अभिलेख उनके श्रेय में हो।

उम्मीदवार के शोध प्रबंध या प्रकाशित कृति उच्च स्तरीय होने पर और उपकुलपति अपनी दृष्टि में उसे पर्याप्त समझने पर, उपरोक्त "ख" में उल्लिखित योग्यताओं को ढीलाकर उपकुलपति उम्मीदवार को साक्षात्कार के लिए बुला सकते हैं।

अगर उपरोक्त "क" में निर्धारित योग्यताओं के उम्मीदवार प्राप्य नहीं है या यथोपयुक्त नहीं समझा जाय तो एक अच्छे शैक्षिक अभिलेखाधारी की प्रवर्णन समिति की सिफारिश पर पूर्व आचार्योपधि या उसके समकक्ष कोई स्नातकोत्तर उपाधि अर्जित करने पर या उच्च स्तरीय प्रकाशन कृति आठ (8) साल के अन्दर की शर्त पर महाविद्यालय नियुक्त कर सकता है, लेकिन उक्त योग्यताएं प्राप्त करने तक वह भविष्य की वेतन वृद्धि के लिए पात्र नहीं होगा।

व्याख्या :

एक श्रेयस्कर अभिलेख के निर्धारण के लिए निम्नलिखित मानक का पालन होगा।

(i) पूर्व आचार्योपधि या मान्यता प्राप्त स्नातकोत्तर उपाधि से उच्च किसी उपाधि में न्यूनतम दूसरी श्रेणी।

या

(ii) जिन उम्मीदवारों को पूर्व आचार्योपधि या मान्यता-प्राप्त स्नातकोत्तर उपाधि से उच्च कोई उपाधि प्राप्य नहीं है, उन्हें स्नातकोत्तर परीक्षा में उच्चतर दूसरी श्रेणी और बी०ए०,

बी०एस०सी०, बी० काम०, जैसी प्रथम उपाधि परीक्षा में दूसरी श्रेणी प्राप्त करनी चाहिए।

या

(iii) जिन उम्मीदवारों को पूर्व आचार्योपाधि या मान्यता-प्राप्त स्नातकोत्तर उपाधि से उच्च कोई उपाधि प्राप्य नहीं है, उन्हें स्नातकोत्तर परीक्षा में दूसरी श्रेणी और बी०ए०, बी०एस०सी०, बी० काम०, जैसी प्रथम उपाधि परीक्षा में पहली श्रेणी प्राप्त करनी चाहिए।

विश्वविद्यालय की परीक्षा में दूसरी श्रेणी में उत्तीर्णता के लिए निर्धारित अंक के मध्य बिन्दु से ज्यादा और पहली श्रेणी में उत्तीर्णता के लिए न्यूनतम निर्धारित अंक प्राप्त लोक विश्व-विद्यालय की परीक्षा में उच्चतर दूसरी श्रेणी में उत्तीर्ण समझे जायेंगे।

5. शिक्षा (विध्या शाखा) में प्राध्यापक नियुक्त होने की न्यूनतम योग्यताएं :

(i) जिन उम्मीदवारों को पूर्व आचार्योपाधि या मान्यता-प्राप्त स्नातकोत्तर उपाधि से उच्च कोई उपाधि प्राप्त हो।

या

(ii) जिन उम्मीदवारों को पूर्व आचार्योपाधि या मान्यता-प्राप्त स्नातकोत्तर उपाधि से उच्च कोई उपाधि नहीं है, उन्हें स्नातकोत्तर परीक्षा में उच्च दूसरी श्रेणी और बी०ए०, बी०एस०सी०, बी० काम०, जैसी प्रथम उपाधि परीक्षा में दूसरी श्रेणी प्राप्त करनी चाहिए।

(iii) जिन उम्मीदवारों को पूर्व आचार्योपाधि या मान्यता-प्राप्त स्नातकोत्तर उपाधि से उच्च कोई उपाधि नहीं है, उन्हें स्नातकोत्तर परीक्षा में दूसरी श्रेणी और बी०ए०, बी०एस०सी०, बी० काम०, जैसी प्रथम उपाधि परीक्षा में पहली श्रेणी प्राप्त करनी चाहिए।

विश्व विद्यालय की परीक्षा में दूसरी श्रेणी में उत्तीर्णता के लिए निर्धारित अंक के मध्य बिन्दु से ज्यादा और पहली श्रेणी में उत्तीर्णता के लिए न्यूनतम निर्धारित अंक प्राप्त लोक विश्व विद्यालय की परीक्षा में उच्च दूसरी श्रेणी में उत्तीर्ण समझे जायेंगे।

6. संगीतकला और ललित कला विध्या शाखा में प्राध्यापक नियुक्त होने की न्यूनतम योग्यताएं :

(अ) एक अच्छे अभिलेख के साथ संगत विषय में स्नातकोत्तर उपाधि में (सात अंक अपनी में "सी" के साथ) दूसरी श्रेणी या विश्व विद्यालय से मान्यता प्राप्त समकक्ष उपाधि या सनद और

(आ) दो साल का अनुसंधान या व्यावसायिक अनुभव या अपने विशिष्टकरण क्षेत्र के सज्जात्मक कार्य का प्रमाण और उपलब्धियों या संयुक्त अनुसंधान और कलाकार के क्षेत्र में उत्कृष्ट कुशलता में तीन साल का चार सक्षि अनुभव

या

संगत विषय में अत्यन्त सराहनीय परम्परागत या व्यावसायिक का उपलब्धि धारी

व्याख्या—

एक श्रेयस्कर शैक्षिक अभिलेख के निर्धारण के लिए, निम्न-लिखित मान दण्ड का पालन होगा।

(i) आचार्योपाधिधारी ने न्यूनतम दूसरी श्रेणी में एम०ए० की उपाधि उत्तीर्ण की हो।

(ii) जो आचार्योपाधिधारी नहीं हो, उन उम्मीदवारों ने एम०ए० की उपाधि परीक्षा उच्चतर दूसरी श्रेणी में पास की हो और स्नातक उपाधि परीक्षा दूसरी श्रेणी में पास की हो।

(iii) आचार्योपाधिधारी नहीं हो उन उम्मीदवारों ने एम०ए० की उपाधि दूसरी श्रेणी में और स्नातक उपाधि परीक्षा पहली श्रेणी में पास की हो।

7. शारीरिक शिक्षा विद्या शाखा में प्राध्यापक नियुक्त होने की न्यूनतम योग्यताएं :

(अ) पूर्व आचार्योपाधि या स्नातकोत्तर उपाधि के ऊपर कोई मान्यता प्राप्त उपाधि या उम्मीदवार के स्वतन्त्र अनुसंधान कुशलता को प्रमाणित करने वाली प्रकाशन कृति और

(आ) भारतीय विश्व विद्यालय या विदेशी विश्व विद्यालय से शारीरिक विध्या में स्नातकोत्तर उपाधि में दूसरी श्रेणी (सात अंक अपनी में "सी") के साथ एक अच्छा शैक्षिक अभिलेख उनके श्रेय में हो।

उम्मीदवार के शोध प्रबंध या प्रकाशित कृति उच्च स्तरीय होने पर और कार्यकारिणी समिति अपनी दृष्टि में उसे पर्याप्त समझने पर उपरोक्त "आ" में उल्लिखित योग्यताओं को ढीला कर सकती है।

अगर शारीरिक विध्या को छोड़कर, अन्य किसी विध्या शाखा के प्राध्यापक को अध्यापनार्थ शारीरिक विध्या संकय में नियुक्त करना है तो मूल विध्या शाखा के संगत विषय में नियुक्ति के लिए निर्धारित योग्यताओं पर जोर दिया जाएगा।

अगर उपरोक्त "अ" में निर्धारित योग्यताओं के उम्मीदवार प्राप्य नहीं है या यथोपयुक्त नहीं समझा जाय तो एक अच्छे शैक्षिक अभिलेख धारी को प्रवरण समिति की सिफारिश पर पूर्व आचार्योपाधि या उसके समकक्ष कोई स्नातकोत्तर उपाधि अर्जित करने पर या उच्च स्तरीय प्रकाशन कृति आठ (8) साल के अन्दर, प्रकाशित करने की शर्त पर महाविद्यालय नियुक्त कर सकता है, लेकिन उक्त योग्यताएं प्राप्त करने तक भविष्य की वेतन वृद्धि के लिए पात्र नहीं होगा।

व्याख्या :

एक श्रेयस्कर अभिलेख के निर्धारण के लिए निम्नलिखित मानदण्ड का पालन होगा।

(i) पूर्व आचार्योपाधि या मान्यता प्राप्त स्नातकोत्तर उपाधि से उच्च परीक्षा ने न्यूनतम दूसरी श्रेणी

या

(ii) जिन उम्मीदवारों को पूर्व आचार्योपाधि या मान्यता प्राप्त स्नातकोत्तर परीक्षा से उच्च कोई उपाधि प्राप्य नहीं है,

उन्हें स्नातकोत्तर परीक्षा में उच्चतर दूसरी श्रेणी और बी०ए०, बी०एस० सी०, बी०काम०, जैसी प्रथम उपाधि परीक्षा में दूसरी श्रेणी प्राप्त करनी चाहिए।

या

(iii) जिन उम्मीदवारों को पूर्व आचार्योपाधि या मान्यता प्राप्त स्नातकोत्तर उच्च उपाधि प्राप्त नहीं है, उन्हें स्नातकोत्तर उपाधि परीक्षा में दूसरी श्रेणी और बी०ए०, बी०एस० सी०, बी०काम०, जैसी प्रथम उपाधि परीक्षा में पहली श्रेणी प्राप्त करनी चाहिए।

विश्व विद्यालय की परीक्षा में दूसरी श्रेणी में उत्तीर्णता के लिए निर्धारित अंक के मध्य बिन्दु से ज्यादा और पहली श्रेणी में उत्तीर्णता के लिए न्यूनतम निर्धारित अंक प्राप्त लोग विश्वविद्यालय की परीक्षा में उच्चतर दूसरी श्रेणी में उत्तीर्ण समझे जाएंगे।

8. अंग्रेजी के प्राध्यापक नियुक्त होने के लिए निर्धारित न्यूनतम योग्यताएं

(अ) पूर्व आचार्योपाधि या स्नातकोत्तर उपाधि के ऊपर कोई मान्यता प्राप्त अंग्रेजी शिक्षण में उपाधि या उम्मीदवार के संयंत्र अनुसंधान कुशलता को प्रमाणित करने वाली प्रकाशन कृति।

(आ) भारतीय विश्व विद्यालय या विदेशी विश्व विद्यालय से संगत विषय में स्नातकोत्तर उपाधि में दूसरी श्रेणी (सात अंक अपनी में सी) के साथ एक अच्छा अभिलेख उनके श्रेय में हो। उम्मीदवार के शोध प्रबंध या प्रकाशित कृति उच्च स्तरीय होने पर और कार्य कारिणी समिति अपनी दृष्टि में उसे पर्याप्त समझने पर उपरोक्त "अ" में उल्लिखित योग्यताओं को ढीला कर सकती है।

अगर उपरोक्त "अ" में निर्धारित योग्यताओं के उम्मीदवार प्राप्य नहीं है या यथोपयुक्त नहीं समझा जाए, तो एक अच्छे शैक्षिक अभिलेखधारी को प्रवर्ण समिति की समिति की सिफारिश पर पूर्ण आचार्योपाधि या उसके समकक्ष स्नातकोत्तर उपाधि उच्च प्राप्त अध्यापन में कोई उपाधि सनद या स्तरीय प्रकाशन कृति आठ (8) वर्ष के अन्दर उपलब्ध करने की शर्त पर महाविद्यालय नियुक्त कर सकता है। लेकिन उक्त योग्यताएं प्राप्त करने तक वह भविष्य की वेतन वृद्धि के लिए नहीं होगा।

व्याख्या

(i) पूर्व आचार्योपाधि या मान्यता प्राप्त स्नातकोत्तर परीक्षा से उच्च उपाधि में न्यूनतम दूसरी श्रेणी

या

जिन उम्मीदवारों को पूर्व आचार्योपाधि या मान्यता प्राप्त स्नातकोत्तर उपाधि से उच्च कोई उपाधि प्राप्त नहीं है, उन्हें स्नातकोत्तर परीक्षा में उच्चतर दूसरी श्रेणी और बी०ए०, बी०एस० सी०, बी०काम०, जैसी प्रथम उपाधि परीक्षा में दूसरी श्रेणी प्राप्त करनी चाहिए।

या

जिन उम्मीदवारों को पूर्व आचार्योपाधि या मान्यता प्राप्त स्नातकोत्तर उपाधि से उच्च कोई उपाधि प्राप्य नहीं है, उन्हें स्नातकोत्तर उपाधि परीक्षा में दूसरी श्रेणी और बी०ए०, बी०एस० सी०,

बी०काम०, जैसी प्रथम उपाधि परीक्षा में पहली श्रेणी प्राप्त करना चाहिए।

विश्व विद्यालय की परीक्षा में दूसरी श्रेणी में उत्तीर्णता के लिए निर्धारित अंक के मध्य बिन्दु से ज्यादा और पहली श्रेणी में उत्तीर्णता के लिए न्यूनतम निर्धारित अंक प्राप्त उम्मीदवार विश्वविद्यालय की परीक्षा में उच्चतर दूसरी श्रेणी में उत्तीर्ण समझे जाएंगे।

9. विदेशी भाषाओं में प्राध्यापक के पद पर नियुक्त होने निर्धारित न्यूनतम योग्यताएं

(अ) पूर्व आचार्योपाधि या स्नातकोत्तर उपाधि से ऊपर एक वर्ष की अवधि का उसके समकक्ष मान्यता प्राप्त संबंध विषय में कोई उपाधि या सनद या उम्मीदवार के स्वतन्त्र अनुसंधान कुशलता को प्रमाणित करने वाली प्रकाशन कृति और

(आ) एक अच्छे अभिलेख के साथ भारतीय विश्व विद्यालय या विदेशी विश्व विद्यालय की स्नातकोत्तर परीक्षा में (सात अंक अपनी में "सी" के साथ) दूसरी श्रेणी

उम्मीदवार के शोध प्रबंध या प्रकाशित कृति स्तरीय होने पर और कार्यकारिणी समिति अपनी दृष्टि में उसे पर्याप्त समझने पर उपरोक्त "आ" में उल्लिखित योग्यताओं को ढीला कर सकती है।

अगर उपरोक्त "अ" में निर्धारित योग्यताओं के उम्मीदवार प्राप्त नहीं है या यथोपयुक्त नहीं समझा जाए तो एक अच्छे शैक्षिक अभिलेखाधिकारी को अगर समिति की सिफारिश पर पूर्व आचार्योपाधि या उसके समकक्ष एक वर्ष की अवधि की स्नातकोत्तर उपाधि से उच्च मान्यता प्राप्त कोई उपाधि अर्जित करने पर या उच्च स्तरीय कृति नियुक्ति से आठ साल (8) के अन्दर प्रकाशित करने की शर्त पर, महा विद्यालय नियुक्त कर सकता है, लेकिन उक्त योग्यताएं प्राप्त करने तक वह भविष्य की वेतन वृद्धि के लिए पात्र नहीं होगा।

व्याख्या :

एक श्रेयस्कर अभिलेख के निर्धारण के लिए निम्नलिखित मानवण्ड का पालन होगा :

(i) पूर्व आचार्योपाधि या मान्यता प्राप्त स्नातकोत्तर उपाधि परीक्षा से उच्च परीक्षा में न्यूनतम दूसरी श्रेणी

या

(ii) जिन उम्मीदवारों को पूर्व आचार्योपाधि या मान्यता प्राप्त स्नातकोत्तर उपाधि से उच्च परीक्षा में उत्तीर्णता प्राप्त नहीं है, उन्हें स्नातकोत्तर परीक्षा में उच्चतर दूसरी श्रेणी और बी०ए०, बी०एस० सी०, बी०काम०, जैसी परीक्षा प्रथम उपाधि में दूसरी श्रेणी प्राप्त करनी चाहिए।

या

(iii) जिन उम्मीदवारों को पूर्व आचार्योपाधि या मान्यता प्राप्त कोई स्नातकोत्तर से उच्च उच्च उपाधि प्राप्त नहीं है उन्हें स्नातकोत्तर उपाधि परीक्षा में दूसरी श्रेणी और बी०ए०, बी०एस० सी०, बी०काम० जैसी प्रथम उपाधि परीक्षा में पहली श्रेणी प्राप्त करनी चाहिए।

विश्वविद्यालय की परीक्षा में दूसरी श्रेणी में उत्तीर्णता के लिए निर्धारित अंक मध्य बिन्दू से ज्यादा और पहली श्रेणी में उत्तीर्णता के लिए न्यूनतम निर्धारित अंक प्राप्त उम्मीदवार विश्व-विद्यालय की परीक्षा में उच्चतर दूसरी श्रेणी में उत्तीर्ण समझे जायेंगे।

व्यावसायिक महाविद्यालय

10. (अ) चिकित्सा महाविद्यालय के प्राध्यापक :

चिकित्सा विद्यालय के प्राध्यापकों की योग्यताएं समय-समय पर चिकित्सा परिषद से निर्धारित की जायेंगी।

(आ) चिकित्सा विभाग के अपेक्षित मान्यताप्राप्त स्नातकोत्तर उपाधि के साथ, उपाचार्य की हैसियत से सम्बद्ध विभाग में चार (4) साल का अनुभव और समय-समय पर चिकित्सा परिषद से निर्धारित की जाने वाली उच्चतर योग्यताएं।

(इ) उपाचार्य संयुक्त आचार्य

अपेक्षित मान्यताप्राप्त स्नातकोत्तर उपाधि के साथ प्राध्यापक की हैसियत से चिकित्सा विद्यालय में पांच साल का अध्यापन अनुभव और समय-समय पर चिकित्सा परिषद से निर्धारित की जाने वाली उच्चतर योग्यताएं।

(ई) प्राध्यापक/महायक आचार्य

अपेक्षित मान्यताप्राप्त स्नातकोत्तर उपाधि और समय-समय पर चिकित्सा परिषद से निर्धारित की जाने वाली योग्यताएं।

(उ) अनुशिक्षक/कुल सचिव/प्रदर्शक/स्थानिक (आवासी) एम०बी०बी०एस०

11. अभियांत्रिकी महाविद्यालयों के प्राध्यापक :

अभियांत्रिकी महाविद्यालयों के प्राध्यापकों की योग्यताएं समय-समय पर निर्धारित की जाएंगी।

12. कानून महाविद्यालय के प्राध्यापक :

एक अच्छे अभिलेख के साथ एल० एल० एम० उपाधि।

टिप्पणी :—

अंशकालीन कानून अध्यापक की नियुक्ति के लिए उपरोक्त योग्यताओं पर आग्रह नहीं किया जाएगा।

व्यावसायिक महाविद्यालय के प्रधानाचार्य (चिकित्सक)

13. प्रधानाचार्य/संकायध्यक्ष/निदेशक

उम्मीदवार मूल व्यावसायिक और शैक्षिक योग्यताओं के साथ आचार्य संयुक्त आचार्य/उपाचार्य की हैसियत से न्यूनतम दस (10) साल के अध्यापन का अनुभव रखता हो जिसमें पांच (5) साल का अनुभव एक विभाग के आचार्य की हैसियत से हो।

14. विविध कला (मानविकी) समाज विज्ञान, विज्ञान आदि विभिन्न विषयों के सम्बद्ध महाविद्यालयों के प्रधानाचार्य की नियुक्ति के लिए निर्धारित योग्यताएं :

सम्बद्ध महाविद्यालयों के प्रधानाचार्यों की नियुक्ति के लिए जहां विविध कला (मानविकी) समाज विज्ञान और विज्ञान आदि विषयों में स्नातकोत्तर अध्यापन/अनुसंधान कार्यक्रम चलता है उन्हें महाविद्यालय के प्राध्यापकों के लिए निर्धारित योग्यताओं के अलावा उपाधि/स्नातकोत्तर उपाधि स्तर पर दस साल का अध्यापन अनुभव होना चाहिए जिसमें चार साल विभागाध्यक्ष की हैसियत से हो।

15. कानून (विधि क) अध्ययन का प्रधानाचार्य/निदेशक :

विधि कानून

कानूनी विद्यालय के प्राध्यापकों के लिए निर्धारित योग्यताओं के साथ दस (10) साल के अध्ययन का अनुभव।

(आ) महाविद्यालय/संस्थाएं जो विश्वविद्यालय से सम्बद्ध हों और किसी सरकारी अधिकरणों से निर्वाहित नहीं हों।

वर्गीकरण

1. उक्त महाविद्यालयों के अध्यापक निम्न प्रकार से वर्गीकृत होंगे :

(अ) संस्था का प्रधान :

महाविद्यालय/संस्था के प्रधानाचार्य/निदेशक या जो कोई भी नाम विश्वविद्यालय के अनुमोदन से शासी निकाय में नामो-दिष्ट किया जाए।

(आ) आचार्य :

सम्बद्ध महाविद्यालय/संस्था कि व्यवस्थापन समिति से नामो-दिष्ट किए जायेंगे।

(ई) सम्बद्ध महाविद्यालय/संस्था के अध्यापन कार्य में लगे अनुशिक्षक और प्रयोगशाला के कार्य में लगे प्रदर्शक शासी निकाय के द्वारा के अनुसार नामो-दिष्ट किए जायेंगे।

परिलब्धिया :

विश्वविद्यालय के पूर्व अनुमोदन से समय-समय पर सम्बद्ध महाविद्यालय/संस्था से समय-समय पर निर्धारित किया जाएगा।

टिप्पणी :

महाविद्यालयों/विश्वविद्यालय के अध्यापकों की परिलब्धियों, न्यूनाधिक तत्समान संवर्ग के अध्यापकों के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग स्तर पर होगी।

योग्यताएं सामान्य :

3. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अधिनियम, 1956 के अनुभाग (2) के खण्ड (1) के अन्दर सामान्यतः विश्व-विद्यालय या मान्यताप्राप्त/होने वाला महाविद्यालय या किसी भी संस्था या संघटक या सम्बद्ध महाविद्यालयों में यथोचित विषयों के लिए निर्धारित योग्यताओं की पूर्ति नहीं करने पर, नियुक्त नहीं किए जायेंगे।

उपरोक्त अधिनियम अनुभाग (2) खण्ड (1) के अन्तर विश्वविद्यालय के या मान्यताप्राप्त/मान्यताप्राप्त होने वाले महा विद्यालय या किसी संघटक के यथाचित विषय के लिए निर्धारित योग्यताओं को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के पूर्व अनुमोदन से ही ढीला किया जा सकता है ।

4. आचार्य, उपाचार्य और प्राध्यापकों की नियुक्ति के लिए निर्धारित न्यूनतम योग्यताएँ :

सम्बन्ध महाविद्यालय/संस्थाओं के विविध कला (मानविकी) समाज विज्ञान, वाणिज्य व्यवस्थापन आदि के संकाय/विभाग जो सरकारी अभिकरण से निर्वाहित नहीं हो ।

आचार्य :

एक विशिष्ट विज्ञान जिनके क्षेत्र में उच्च स्तरीय प्रकाशन कृतियाँ हों और अनुसंधान में सक्रिय भाग लेते हों । अध्यापन और/या अनुसंधान में सक्रिय भाग लेते हो । अध्यापन और अनुसंधान में दस वर्ष का अनुभव रखते हों व आचार्योपाधि स्तर पर अनुसंधान के मार्गदर्शन का अनुभव हो ।

या

ख्याति सुस्थापित एक उत्कृष्ट विज्ञान जिन्होंने ज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान किया हो ।

उपाचार्य :

आचार्योपाधि के साथ एक उन्नत शैक्षिक अभिलेख, प्रकाशित कृतियाँ व शोधकार्य अध्यापन विधियों में नवोदभावन तथा अध्यापन सामग्रियों के उत्पादन में सक्रिय भाग लेने का प्रमाण ।

अध्यापन और अनुसंधान में पांच वर्ष का अनुभव जिन में तीन साल प्राध्यापक की हैसियत से हो ।

अध्यापन और शोध कार्य में उत्कृष्ट अभिलेख, रखने वाले उम्मीदवारों के विषय में यह शर्त ढीला किया जा सकता हो ।

व्याख्या :

उत्कृष्ट अभिलेख, निर्धारित करने के लिए निम्न-लिखित कसौटी अपनायी जाएगी ।

(i) आचार्योपाधिधारी उम्मीदवार ने न्यूनतम दूसरी श्रेणी में स्नातकोत्तर उपाधि परीक्षा पास की हो ।

या

(ii) जो उम्मीदवार आचार्योपाधिधारी नहीं लेकिन स्नातकोत्तर उपाधि परीक्षा पास की हो ।

या

(iii) जो उम्मीदवार आचार्योपाधिधारी नहीं, लेकिन स्नातकोत्तर उपाधि परीक्षा दूसरी श्रेणी में पास की हो

और स्नातक परीक्षा पहली श्रेणी में पास की हो ।

विश्वविद्यालय के प्राध्यापक :

(अ) आचार्योपाधि या समान उच्च स्तरीय प्रकाशित अनुसंधान कृति

(आ) भारतीय विश्वविद्यालय या विदेशी विश्व-विद्यालय से संगत विषय में स्नातकोत्तर उपाधि में दूसरी श्रेणी (सात अंक मामनी में 'सी') के साथ एक अच्छा शैक्षिक अभिलेख ।

"अ" और "आ" में उक्त अन्त शास्त्रीय (अन्योन्याग्रित) संगत विषय-विषयों के पाठ्यक्रम के विकास में अभिनवि रखता हो ।

उम्मीदवार के शोध प्रबंध या प्रकाशित कृति उच्च स्तरीय होने पर और प्रवरण समिति अपनी दृष्टि में उसे पर्याप्त समझने पर उपरोक्त "आ" में उल्लिखित योग्यताओं को ढीला कर सकती है ।

अगर आचार्योपाधिकारी या समकक्ष अनुसंधान कृति वाले प्राप्य नहीं है या यथोपयुक्त नहीं समझा जाए तो एक अच्छे शैक्षिक अभिलेखधारी को (पूर्व आचार्योपाधि समकक्ष उपाधि या विशिष्ट शोध कार्य के लिए समयक भारत देकर) नियुक्त किया जा सकता है, बशर्ते कि उसने दो साल का अनुसंधान कार्य पूरा किया हो या शोध प्रयोगशाला या संस्था में व्यावहारिक अनुभव रखता हो और आचार्योपाधि आठ साल के अन्दर अर्जित करे या नियुक्ति की आठ (8) साल की अवधि के अन्दर उच्च स्तरीय कृति प्रकाशित करने के प्रमाण दे—इत शर्तों के भंग होने पर वह भविष्य की वेतन वृद्धि के लिए पात्र नहीं होगा ।

महाविद्यालयों के प्राध्यापक :

(अ) पूर्व आचार्योपाधि या स्नातकोत्तर उपाधि के उच्च कोई मान्यताप्राप्त उपाधि या उम्मीदवार के स्वतंत्र अनुसंधान कुशलता को प्रमाणित करने वाली प्रकाशन कृति ।

(आ) भारतीय विश्वविद्यालय या विदेशी विश्व-विद्यालय से संगत विषय में स्नातकोत्तर उपाधि में दूसरी श्रेणी (सात अंक अपनी में 'सी') के साथ एक अच्छी अभिलेख उनके श्रेय में हो ।

(i) उम्मीदवार के शोध प्रबंध या प्रकाशित कृति उच्च स्तरीय होने पर और प्रवरण समिति अपनी दृष्टि में उसे पर्याप्त समझने पर, उपरोक्त "आ" में उल्लिखित योग्यताओं को ढीला कर अगर उपरोक्त "अ" में निर्धारित योग्यताओं के उम्मीदवार प्राप्य नहीं है या यथोपयुक्त नहीं समझा जाए तो एक अच्छे शैक्षिक अभिलेखधारी को प्रवरण समिति की सिफारिश पर पूर्व आचार्योपाधि या उसके समकक्ष कोई स्नातकोत्तर उपाधि अर्जित करने पर या उच्च स्तरीय प्रकाशन कृति आठ (8) साल के अन्दर प्रकाशित करने की शर्त पर, महाविद्यालय नियुक्त कर

सकता है, लेकिन उक्त योग्यताएं प्राप्त करने तक वह अभिव्यक्ति के दृष्टि वृद्धि के लिए पास नहीं होगा।

(ii) जिन उम्मीदवारों को पूर्व आचार्योपाधि या मान्यताप्राप्त स्नातकोत्तर उपाधि से उच्च कोई उपाधि प्राप्य नहीं है, उन्हें स्नातकोत्तर परीक्षा में उच्चतर दूसरी श्रेणी और बी. ए., बी. एससी., बी. काम., जैसी प्रथम उपाधि परीक्षा में दूसरी श्रेणी प्राप्त होनी चाहिए।

(iii) जिन उम्मीदवारों को पूर्व आचार्योपाधि या मान्यताप्राप्त स्नातकोत्तर उपाधि से उच्च कोई उपाधि प्राप्य नहीं है उन्हें स्नातकोत्तर परीक्षा में दूसरी श्रेणी और बी. ए., बी. एससी., बी. काम., जैसी प्रथम उपाधि परीक्षा में पहली श्रेणी प्राप्त करनी चाहिए।

विश्वविद्यालय की परीक्षा में दूसरी श्रेणी में उत्तीर्णता के लिए निर्धारित अंक के मध्य बिन्दु से ज्यादा और पहली श्रेणी में उत्तीर्णता के लिए न्यूनतम निर्धारित अंक प्राप्त लोग विश्वविद्यालय की परीक्षा में उच्चतर दूसरी श्रेणी में उत्तीर्ण समझे जाएंगे।

5. शिक्षा (विद्या शाखा) में प्राध्यापक नियुक्त होने की न्यूनतम योग्यताएं :

महाविद्यालय के प्राध्यापक :

1. जिन उम्मीदवारों को पूर्व आचार्योपाधि या मान्यताप्राप्त स्नातकोत्तर उपाधि से उच्च कोई उपाधि प्राप्त हो।

व्याख्या :

एक श्रेयस्कर अभिलेख के निर्धारण के लिए निम्नलिखित मानदण्ड का पालन होगा :

(i) पूर्व आचार्योपाधि या मान्यताप्राप्त स्नातकोत्तर उपाधि से उच्च किसी उपाधि में न्यूनतम दूसरी श्रेणी।

(ii) जिन उम्मीदवारों को पूर्व आचार्योपाधि या मान्यताप्राप्त स्नातकोत्तर उपाधि से उच्च कोई उपाधि प्राप्त नहीं है, उन्हें स्नातकोत्तर परीक्षा में उच्च दूसरी श्रेणी और बी. ए., बी. एससी., बी. काम., जैसी प्रथम उपाधि परीक्षा में दूसरी श्रेणी प्राप्त करनी चाहिए।

(iii) जिन उम्मीदवारों को पूर्व आचार्योपाधि या मान्यताप्राप्त स्नातकोत्तर उपाधि से उच्च कोई उपाधि प्राप्य नहीं है, उन्हें स्नातकोत्तर परीक्षा में दूसरी श्रेणी और बी. ए., बी. एससी., बी. काम., जैसी प्रथम उपाधि परीक्षा में पहली श्रेणी प्राप्त करनी चाहिए।

विश्वविद्यालय की परीक्षा में दूसरी श्रेणी में उत्तीर्णता के लिए निर्धारित अंक के मध्य बिन्दु से ज्यादा और पहली श्रेणी में उत्तीर्णता के लिए न्यूनतम निर्धारित अंक प्राप्त लोग विश्वविद्यालय की परीक्षा में उच्च दूसरी श्रेणी में उत्तीर्ण समझे जाएंगे।

6. संगीतकला और ललितकला विद्या शाखा में प्राध्यापक नियुक्त होने की न्यूनतम योग्यताएं :

(अ) एक अच्छे अभिलेख के साथ संगत विषय में स्नातकोत्तर उपाधि में (सात अंक मामनी में "सी" के साथ) दूसरी श्रेणी या विश्वविद्यालय से मान्यताप्राप्त समकक्ष उपाधि; और

(आ) दो साल का अनुसन्धान या व्यावसायिक अनुभव या अपने विशिष्टकरण क्षेत्र के सृजनात्मक कार्य का प्रमाण और उपलब्धियों या संयुक्त अनुसन्धान और बसाकार के क्षेत्र में उत्कृष्ट कुशलता में तीन साल का व्यावसायिक अनुभव।

या

संगत विषय में अत्यन्त मराहनीय परम्परागत या व्यावसायिक उपलब्धिधारी।

व्याख्या :

एक श्रेयस्कर अभिलेख के निर्धारण के लिए निम्नलिखित मानदण्ड का पालन होगा।

(i) आचार्योपाधिधारी ने न्यूनतम दूसरी श्रेणी में एम. ए. की उपाधि उत्तीर्ण की हो।

(ii) जो आचार्योपाधिधारी नहीं हो, उन उम्मीदवारों ने एम. ए. की उपाधि परीक्षा उच्चतर दूसरी श्रेणी में पास की हो और स्नातक उपाधि परीक्षा दूसरी श्रेणी में पास की हो।

(iii) जो आचार्योपाधिधारी नहीं हो, उन उम्मीदवारों ने एम. ए. की उपाधि परीक्षा दूसरी श्रेणी में और स्नातक उपाधि परीक्षा पहली श्रेणी में पास की हो।

7. शारीरिक शिक्षा विद्या शाखा में प्राध्यापक नियुक्त होने की न्यूनतम योग्यताएं :

(अ) पूर्व आचार्योपाधि या स्नातकोत्तर उपाधि से उच्च कोई मान्यता प्राप्त उपाधि या उम्मीदवार के स्वतन्त्र अनुसन्धान कुशलता को प्रमाणित करने वाली प्रकाशन कृति; और

(आ) भारतीय विश्वविद्यालय या विदेशी विश्वविद्यालय से शारीरिक विद्या में, स्नातकोत्तर उपाधि में दूसरी श्रेणी (सात अंक मामनी में "सी") के साथ एक अच्छा शैक्षिक अभिलेख उनके श्रेय में हो।

उम्मीदवार के शोध प्रबन्ध या प्रकाशित कृति उच्च स्तरीय होने पर और प्रवरण समिति अपनी दृष्टि में पर्याप्त और उच्च स्तरीय समझने पर उपरोक्त "आ" में उल्लिखित योग्यताओं को ढीला कर सकती है।

अगर शारीरिक विद्या को छोड़, अन्य किसी विद्या शाखा के प्राध्यापक को, अध्यापनार्थ शारीरिक विद्या संकाय में नियुक्त करना है तो मूल विद्या शाखा के संगत विषय में नियुक्ति के लिए निर्धारित योग्यताओं पर जोर दिया जाएगा।

अगर उपरोक्त "अ" में निर्धारित योग्यताओं के उम्मीदवार प्राप्य नहीं है या यथोपयुक्त नहीं समझा जाए तो एक अच्छे शैक्षिक अभिलेखधारी को प्रवरण समिति की सिफारिश पर पूर्व आचार्योपाधि या उसके समकक्ष कोई स्नातकोत्तर उपाधि अर्जित करने पर या उच्च स्तरीय प्रकाशन कृति आठ (8) साल के अन्दर प्रकाशित

करने की शर्त पर महाविद्यालय नियुक्त कर सकता है, लेकिन उक्त योग्यतायें प्राप्त करने तक, वह भविष्य की वेतन वृद्धि के लिए पात्र नहीं होगा।

व्याख्या :

एक श्रेयस्कर अभिलेख के निर्धारण के लिए निम्नलिखित मानदण्ड का पालन होगा :—

(i) पूर्व आचार्योपाधि या मान्यताप्राप्त स्नातकोत्तर परीक्षा से उच्च उपाधि परीक्षा में न्यूनतम दूसरी श्रेणी।

या

(ii) जिन उम्मीदवारों को पूर्व आचार्योपाधि या मान्यताप्राप्त स्नातकोत्तर परीक्षा से उच्च कोई उपाधि प्राप्य नहीं है, उन्हें स्नातकोत्तर परीक्षा में उच्चतर दूसरी श्रेणी प्राप्त करनी चाहिए।

या

(iii) जिन उम्मीदवारों को पूर्व आचार्योपाधि या मान्यताप्राप्त स्नातकोत्तर उपाधि से कोई उपाधि प्राप्य नहीं है, उन्हें स्नातकोत्तर उपाधि परीक्षा में दूसरी श्रेणी और बी० ए०, बी० एससी०, बी० काम०, जैसी प्रथम उपाधि परीक्षा में पहली श्रेणी प्राप्त करनी चाहिए।

विश्वविद्यालय की परीक्षा में दूसरी श्रेणी में उत्तीर्णता के लिए निर्धारित अंक के मध्य बिन्दु से ज्यादा और पहली श्रेणी में उत्तीर्णता के लिए न्यूनतम निर्धारित अंक प्राप्त लोग विश्वविद्यालय की परीक्षा में उच्चतर दूसरी श्रेणी में उत्तीर्ण समझे जायेंगे।

8. अंग्रेजी के प्राध्यापक नियुक्त होने के लिए निर्धारित न्यूनतम योग्यतायें :

महाविद्यालय के प्राध्यापक :

(अ) पूर्व आचार्योपाधि या स्नातकोत्तर उपाधि से उच्च कोई मान्यताप्राप्त अंग्रेजी शिक्षण में उपाधि या उम्मीदवार के स्वतन्त्र अनुसन्धान कुशलता को प्रमाणित करने वाली प्रकाशन कृति।

(आ) भारतीय विश्वविद्यालय या विदेशी विश्वविद्यालय से संगत विषय में स्नातकोत्तर उपाधि में दूसरी श्रेणी (सात अंक माममी में "सी") के साथ एक अच्छा अभिलेख उनके श्रेय में हो।

उम्मीदवार के शोध प्रबन्ध या प्रकाशित कृति उच्च स्तरीय होने पर और प्रवरण समिति अपनी दृष्टि में उसे पर्याप्त समझने पर, उपरोक्त "आ" में उल्लिखित योग्यताओं को ढीला कर सकती है।

अगर उपरोक्त "अ" में उल्लिखित योग्यताओं के उम्मीदवार प्राप्य नहीं हैं या यथोपयुक्त नहीं समझे जायें तो एक अच्छे शैक्षिक अभिलेखधारी को प्रवरण समिति की सिफारिश पर पूर्व आचार्योपाधि या उसके समकक्ष स्नातकोत्तर उपाधि से उच्च मान्यताप्राप्त शिक्षा में कोई उपाधि या सनद या उच्च स्तरीय प्रकाशन कृति आठ (8) वर्ष के अन्दर उपलब्ध करने की शर्त पर महा-

विद्यालय/संस्था नियुक्त कर सकता है, लेकिन उक्त योग्यतायें प्राप्त करने तक, वह भविष्य की वेतन वृद्धि के लिए पात्र नहीं होगा।

व्याख्या :

एक श्रेयस्कर अभिलेख के निर्धारण के लिए निम्नलिखित मानदण्ड का पालन होगा।

(i) पूर्व आचार्योपाधि या मान्यता प्राप्त स्नातकोत्तर परीक्षा से उच्च उपाधि में न्यूनतम दूसरी श्रेणी

या

(ii) जिन उम्मीदवारों को पूर्व आचार्योपाधि या मान्यताप्राप्त स्नातकोत्तर उपाधि से उच्च कोई प्राप्य नहीं है, उन्हें स्नातकोत्तर परीक्षा में उच्चतर दूसरी श्रेणी और बी० ए०, बी० एससी०, बी० काम०, जैसी प्रथम उपाधि परीक्षा में दूसरी श्रेणी प्राप्त करनी चाहिए।

या

(iii) जिन उम्मीदवारों को पूर्व आचार्योपाधि या मान्यताप्राप्त स्नातकोत्तर उपाधि से उच्च कोई उपाधि प्राप्य नहीं है उन्हें स्नातकोत्तर उपाधि परीक्षा में दूसरी श्रेणी और बी० ए०, बी० एससी०, बी० काम०, जैसी प्रथम उपाधि परीक्षा में दूसरी श्रेणी प्राप्त नहीं करनी चाहिए।

विश्वविद्यालय की परीक्षा में दूसरी श्रेणी में उत्तीर्णता के लिए निर्धारित अंक के मध्य बिन्दु से ज्यादा और पहली श्रेणी में उत्तीर्णता के लिए न्यूनतम निर्धारित अंक प्राप्त उम्मीदवार विश्वविद्यालय की परीक्षा में उच्चतर दूसरी श्रेणी में उत्तीर्ण समझे जायेंगे।

9. विदेशी भाषाओं में प्राध्यापक के पद पर नियुक्त होने के लिए निर्धारित न्यूनतम योग्यतायें :

महाविद्यालय के प्राध्यापक :

(अ) पूर्व आचार्योपाधि या स्नातकोत्तर उपाधि से उच्च एक वर्ष की अवधि का उसके समकक्ष मान्यताप्राप्त संबद्ध विषय में कोई उपाधि या सनद या उम्मीदवार के स्वतन्त्र अनुसन्धान कुशलता को प्रमाणित करने वाली प्रकाशन कृति; और

(आ) एक अच्छे अभिलेख के साथ भारतीय विश्वविद्यालय या विदेशी विश्वविद्यालय की समकक्ष स्नातकोत्तर परीक्षा में (सात अंक माममी में "सी") के साथ दूसरी श्रेणी प्राप्त करनी चाहिए।

उम्मीदवार के शोध प्रबन्ध या प्रकाशित कृति उच्च स्तरीय होने पर और प्रवरण समिति अपनी दृष्टि में उसे पर्याप्त समझने पर उपरोक्त "आ" में उल्लिखित योग्यताओं को ढीला कर सकती है।

अगर उपरोक्त "अ" में निर्धारित योग्यताओं के उम्मीदवार प्राप्य नहीं हैं या यथोपयुक्त नहीं समझे जायें तो एक अच्छे शैक्षिक अभिलेखधारी को प्रवरण समिति अपनी दृष्टि में उसे पर्याप्त समझने पर उपरोक्त "आ" में उल्लिखित योग्यताओं की

सिफारिश पर पूर्व आचार्योपाधि या उसके समकक्ष एक वर्ष की अवधि की स्नातकोत्तर उपाधि से उच्च कोई मान्यता प्राप्त उपाधि अर्जित करने पर या उच्च स्तरीय कृति नियुक्ति से आठ (8) साल के अन्तर प्रकाशित करने की शर्त पर महाविद्यालय संस्था नियुक्त कर सकता है, लेकिन उक्त योग्यतायें प्राप्त करने तक वह भविष्य की वेतन वृद्धि के लिए पात्र नहीं होगा।

व्याख्या:

एक श्रेयस्कर अभिलेख के निर्धारण के लिए निम्नलिखित मानदण्ड का पालन होगा :

(i) पूर्व आचार्योपाधि या मान्यताप्राप्त स्नातकोत्तर उपाधि परीक्षा से उच्च परीक्षा में स्नूनतम दूसरी श्रेणी

या

(ii) जिन उम्मीदवारों को पूर्व आचार्योपाधि या मान्यताप्राप्त स्नातकोत्तर उपाधि से उच्च परीक्षा में उत्तीर्णता प्राप्त नहीं है, उन्हें स्नातकोत्तर परीक्षा में उच्चतर दूसरी श्रेणी और बी० ए०, बी० एससी०, बी० काम०, जैसी प्रथम उपाधि परीक्षा में दूसरी श्रेणी प्राप्त करनी चाहिए।

या

(iii) जिन उम्मीदवारों को पूर्व आचार्योपाधि या मान्यताप्राप्त स्नातकोत्तर से उच्च उपाधि प्राप्त नहीं है, उन्हें स्नातकोत्तर उपाधि परीक्षा में दूसरी श्रेणी और बी० ए०, बी० एससी०, बी० काम०, जैसी प्रथम उपाधि परीक्षा में पहली श्रेणी प्राप्त करनी चाहिए।

विश्वविद्यालय की परीक्षा में दूसरी श्रेणी में उत्तीर्णता के लिए, निर्धारित अंक के मध्य बिन्दु से ज्यादा और पहली श्रेणी में उत्तीर्णता के लिए न्यूनतम निर्धारित अंक प्राप्त उम्मीदवार विश्वविद्यालय की परीक्षा में उच्चतर दूसरी श्रेणी में उत्तीर्ण समझे जायेंगे।

अध्याय-22

अनुसन्धान और शिक्षण के लिए अतिरिक्त परिसर, विशेष केन्द्र, विशिष्ट प्रयोगशालायें और अन्य इकाइयों की स्थापना की प्रक्रिया

(कार्य विधि)

[अनुभाग 5 (13) और 27 (के)]

1. विश्वविद्यालय आवश्यक समझने पर विश्वविद्यालय के उत्कर्ष के लिए अनुसन्धान और शिक्षण के लिए, अतिरिक्त परिसर, विशेष केन्द्र, विशिष्ट प्रयोगशालायें और अन्य इकाइयों की स्थापना करेगी।

2. उपरोक्त अनुच्छेद 1 में उल्लिखित परिसर, केन्द्र आदि की स्थापना के लिए, कार्यकारिणी समिति, शिक्षा परिषद में परामर्श लेकर निर्णय करेगी।

3. ऐसे परिसर, केन्द्रों आदि की स्थापना के पूर्व आवश्यक त्रसम्बन्धी अधिनियम बसाये जायेंगे।

अनुलग्नक

विश्वविद्यालय के पुस्तकालयध्यक्ष और शारीरिक विद्यालय के कार्यकर्ताओं के वेतनमान का पुनरीक्षण—पत्र संख्या एक 1-21/187 यू 1 तारीख 22 जुलाई, 1988।

1. शर्तें :

निम्नोक्त अनुच्छेदों में निर्देशितों के सिवा विश्वविद्यालय के अध्यक्षों के वेतन पुनरीक्षण के लिए जी शर्तें लागू हैं, वे ही शर्तें विश्वविद्यालय के पुस्तकालयध्यक्ष और शारीरिक विद्यालय के कार्यकर्ताओं के वेतनमान के पुनरीक्षण के लिए लागू होंगी।

2. वेतनमान:

क्रमेण अनुलग्नक "अ" और "आ" में 1-1-86 से पुस्तकालयध्यक्ष और शारीरिक विद्यालय के कार्यकर्ताओं को कार्यान्वित होने वाला पुनरीक्षित वेतनमान दिया गया है।

3. नियुक्ति और योग्यतायें :

अखिल भारतीय विज्ञापन और प्रवर्णन के आधार पर और योग्यता क्रमपर सहायक पुस्तकालयध्यक्ष, उप-पुस्तकालयध्यक्ष और पुस्तकालयध्यक्ष, उप-पुस्तकालयध्यक्ष तथा शारीरिक विद्या के सहायक निदेशक, उप-निदेशक और निदेशक विश्वविद्यालय में नियुक्ति किए जायेंगे। लेकिन सहायक पुस्तकालयध्यक्ष और शारीरिक विद्या के सहायक निदेशक जो इसके पश्चात् निर्धारित भाषा-दण्ड की पूर्ति करते हैं, वे क्रमेण उप-पुस्तकालयध्यक्ष और उप-शारीरिक विद्या निदेशक के पद पर पदोन्नति के लिए पात्र हैं। विश्वविद्यालय में पुस्तकालयध्यक्ष और उप-शारीरिक विद्या निदेशक के पद पर पदोन्नति के लिए पात्र हैं। विश्वविद्यालय में पुस्तकालयध्यक्ष और शारीरिक विद्या निदेशक/प्रशिक्षक की नियुक्ति अखिल भारतीय विज्ञापन और योग्यताक्रम पर होगी।

4. उपरोक्त अनुच्छेद तीन में उल्लिखित पदों की नियुक्ति की न्यूनतम योग्यतायें समय-समय पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से निर्धारित मानदण्ड पर होगी।

5. सहायक पुस्तकालयध्यक्ष शारीरिक विद्या सहायक निदेशक की नियुक्ति के प्रकरण में, वे ही नियुक्त होने के पात्र जिन्होंने न्यूनतम शैक्षिक योग्यतायें उपलब्ध की हों और इस पद के लिए विशेष रूप से नियत व्यापक परीक्षा पास की हों-इस परीक्षा का परिकल्प विषय, प्रशासन आदि व्यापक प्रणाली विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से निर्धारित क्रम पर होगी।

6. विश्वविद्यालय में सहायक पुस्तकालयध्यक्ष और सहायक शारीरिक विद्या निदेशक के पद पर नियुक्त पूर्व आचार्योपाधि या आचार्योपाधि उपलब्ध उम्मीदवारों को क्रमशः एक और तीन अग्रिम वेतन वृद्धि 2200-4000 वेतनमान पर दी जाएगी तथा तत्समान वार्षिक अनुभव का लाभ भी पदोन्नति में दिया जाएगा। विद्यमान पदधारी जिन्होंने अनुसन्धान की उपाधि प्राप्त नहीं की हो और भविष्य में इस वर्ग के अन्दर नियुक्त होने वाले उम्मीदवार, शोधोपाधि प्राप्त करने पर पदोन्नति के लिए अर्हता प्राप्त नहीं होंगे। विद्यमान पदधारी भी जिन्होंने अनुसन्धान उपाधि प्राप्त की हो वैसे लाभ के लिए पात्र होंगे।

वसाय उन्नति :

विश्वविद्यालय के हर सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष और सहायक शरीर विद्या निदेशक जो 2200—4000 वेतन मान पर हैं, वे 3000—5000 ज्येष्ठ वेतनमान में स्थापन (श्रेणीकरण) के लिए पात्र हैं,

अगर उसने :—

(अ) नियमित नियुक्ति के बाद आठ (8) वर्ष का सेवा काल पूरा किया हो, लेकिन इसके लिए शिथिलीकरण उपरोक्त अनुच्छेद छ: में निर्दिष्टानुसार होगा।

(आ) विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से निर्देशित चार हफ्ते की अवधि के दो पुनश्चर्या पाठ्यक्रम/ग्रीष्म कालीन संस्था में भाग ग्रहण किया हो। उसके समानुक्रम तुलनात्मक स्तर की अनुवर्ती शिक्षा में भाग ग्रहण किया हो।

(इ) संगत (अवरुद्ध) अच्छे निष्पादन के मूल्यांकन (आम-जन) का प्रतिवेदन

8. ज्येष्ठ वेतनमान पाने वाला हर सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष और सहायक शरीर विद्या के निदेशक क्रमेण, उपपुस्तकालयाध्यक्ष और उप शरीर विद्या निदेशक के पद पर 3700—5700 वरीय वेतनमान में पदोन्नति के लिए पात्र होंगे, बशर्ते कि उसने

(अ) ज्येष्ठ वेतनमान में आठ वर्ष का सेवाकाल पूरा किया हो, लेकिन यह शर्त उन लोगों के लिए ढीला किया जाएगा, जिन्होंने सोलह वर्ष का सेवाकाल पूरा किया हो।

(आ) विश्व विद्यालय में पुस्तकालय सेवा के विकास/शरीर विद्या क्षेत्र में स्वमूलायंकन, निर्देशी (रेफरी) प्रतिवेदन, पुस्तकालय सेवा शरीर विद्या कार्यकलाप में यथास्थिति व्यावसायिक उन्नति।

(इ) ज्येष्ठ वेतन मान में स्थानन के बाद विश्व विद्यालय अनुदान आयोग से निर्देशित चार हफ्ते की अवधि के दो पुनश्चर्या पाठ्यक्रम/ग्रीष्मकालीन संस्था में भाग ग्रहण किया हो या उसके समानुक्रम तुलनात्मक स्तर की अनुवर्ती शिक्षा में भाग ग्रहण किया हो।

(ई) संगत (अवरुद्ध) अच्छे निष्पादन के मूल्यांकन (आगणान) का प्रतिवेदन

9. उपाचार्य के पद के चयन के लिए, सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष और सहायक शरीर विद्या निदेशक की पदोन्नति प्रवरण समिति के माध्यम से होगी।

10. ज्येष्ठ वेतनमान के सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष और सहायक शरीर विद्या निदेशक जिन्हें आचार्योपाधि या जिनके श्रेय में समकक्ष प्रकाशन कृति नहीं हो, लेकिन उपरोक्त अनुच्छेद आठ में उल्लिखित मानवण्ड की पूर्ति करने हो तो अनुच्छेद नौ में निर्दिष्ट समिति की सिफारिश पर 3700—5700 वेतनमान में स्थापन किए जायेंगे। वे क्रमेण वरीय वेतनमान के सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष और सहायक शरीर विद्या निदेशक नामोद्विष्ट किए जायेंगे।

विश्वविद्यालय में 1-1-1986 से पुस्तकालयाध्यक्षों का पुनरीक्षित वेतनमान

क्रम संख्या	पदनाम	विद्यमान वेतनमान	पुनरीक्षित वेतनमान
1	2	3	4
1.	सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष/ प्रलेखन अधिकारी	700— 1600	2200—75— 2800—100— 4000
2.	सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष/ प्रलेखन अधिकारी (ज्येष्ठ वेतनमान)	विद्यमान नहीं	3000—100— 3500—125— 5000
3.	सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष/ प्रलेखन अधिकारी (वरीय वेतनमान)	विद्यमान नहीं	3700—125— 4950—150— 5700
4.	उप-पुस्तकालयाध्यक्ष	1200— 1900	3700—125— 4950—150— 5700
5.	पुस्तकालयाध्यक्ष	1500— 2500	4500—150— 5700—200— 7300

विश्व विद्यालय में 1-1-1986 से शरीर विद्या कर्मचारियों का पुनरीक्षित वेतनमान

क्रम संख्या	पदनाम	विद्यमान वेतनमान	पुनरीक्षित वेतनमान
1	2	3	4
1.	शरीर विद्या सहायक निदेशक	700— 1600	2200—75— 2800—100— 4000
2.	शरीर विद्या सहायक निदेशक (ज्येष्ठ वेतनमान)	विद्यमान नहीं	3000—100— 3500—125— 5000
3.	शरीर विद्या सहायक निदेशक (वरीय वेतनमान)	विद्यमान नहीं	3700—125— 4950—150— 5700
4.	शरीर विद्या उपनिदेशक	1200—1900	3700—125— 4950—150— 5700
5.	शरीर विद्या निदेशक	1500— 2500	4500—150— 5700—200— 7300

निरीक्षण समिति शुल्कसम्बद्धता शुल्क, अक्षय निधि आदि हर सवस्य के लिए 1000 रुपए के हिसाब से निरीक्षण समिति की शुल्क अक्षय निधि ;

नए महाविद्यालयों को खोलने या नए पाठ्यक्रम महाविद्यालयों में प्रारम्भ करने अक्षय निधियों के सृजन जो करते हैं उनका विवरण निम्न प्रकार से होगा।

अ. विविधकला (मानविकी) और विज्ञान
(उपाधि स्तर पर नए महाविद्यालय खोलने)

अक्षय निधि :

दस लाख रुपए की अक्षय निधि का प्रबन्ध किया जाए जिसमें पांच लाख रुपए पाण्डिचेरी विश्वविद्यालय के कुल सचिव और महाविद्यालय के प्रबन्धक के संयुक्त नाम पर राष्ट्रीय-कृत बैंक या अनुसूचित बैंक में सावधि जमा के रूप में जमा और शेष रकम पाँच लाख रुपए परिसम्पत्ति के रूप में महाविद्यालय के प्रबन्धक से दिखाया जाय। यह भाररहित परिसम्पत्ति के रूप में हो जिससे प्रतिवर्ष 60,000 रुपए की वार्षिक आमदनी हो वार्षिक ब्याज जो अवधि जमा से मिले और हर रहित चार संपत्ति से मिलने वाला वार्षिक आय दोनों, महाविद्यालय के अनुरक्षण के लिए खर्च किया जाये। यह अक्षय निधि प्रमुख स्तर के विविधकला के तीन पाठ्यक्रम और विज्ञान व वाणिज्य में दो या तीन पाठ्यक्रम के संरक्षण के लिए पर्याप्त होगा।

भूमि :

विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त शहरी क्षेत्र में स्थिति महाविद्यालय परिसर कुल 20 एकड़ का हो और ग्रामीण क्षेत्र में स्थिति, विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त पुरुषों के महाविद्यालय का परिसर कुल 30 एकड़ का हो और महिला महाविद्यालय 20 एकड़ का हो।

अतिरिक्त पाठ्यक्रमों के लिए अपेक्षित अक्षय निधियाँ:—

महाविद्यालय के प्रबन्धक से निवेदन प्राप्त होने पर पूर्व स्नातक पाठ्यक्रमों की अक्षय निधियाँ दो किस्तों में और स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों की अक्षय निधियाँ चार किस्तों में भुगतान करने की सुविधा दी जाए।

बी० ए० कोई भी प्रमुख विषय	रुपए	50,000
बी० एम० सी कोई भी प्रमुख विषय		1,00,000
बी० काम० उपाधि पाठ्यक्रम		50,000
एम० ए० कोई भी विषय		1,00,000
एम० एससी० कोई भी विषय		2,00,000
एम० काम० उपाधि पाठ्यक्रम		1,00,000

सुस्थापित महाविद्यालय वह है जो निम्नोक्त मानक की पूर्ति करे :

अ. पच्चीस साल से स्थित कोई भी महाविद्यालय।

आ. कोई महाविद्यालय जिसकी न्यूनतम छात्र संख्या 1000 हो।

द. पूर्व स्नातक और स्नातकोत्तर विभाग मिलाकर कुल न्यूनतम 10 विभाग जिस महाविद्यालय में हो।

ई. महाविद्यालय जिसकी परिसम्पत्ति 20 लाख रुपए से ज्यादा हो

भा. व्यावसायिक

(i) चिकित्सिक

नए चिकित्सात्मक महाविद्यालय प्रारम्भ करना

अक्षय निधि :

50 लाख रुपए की अक्षय निधि का प्रबन्ध किया जाए जिसमें 25 लाख रुपए पाण्डिचेरी विश्वविद्यालय के कुल सचिव व महाविद्यालय के प्रबन्धक के संयुक्त नाम पर राष्ट्रीयकृत बैंक या अनुसूचित बैंक में सावधि जमा के रूप में महाविद्यालय के प्रबन्धक से दिखाया जाए। यह भाररहित की परिसंबन्धी के रूप में हो जिसमें प्रतिवर्ष 3 लाख रुपए की वार्षिक आमदनी हो। वार्षिक ब्याज जो समाविधि जमा से मिले और भार सहित परिसम्पत्ति से मिलने वाला वार्षिक आय दोनों महाविद्यालय के अनुरक्षण खर्च किया जाएगा।

हर स्नातकोत्तर उपाधि/सनद/कंपकयरेंट उपाधि/सनद उच्चतर विशिष्ट कार्य के लिए अक्षय निधि 10 लाख रुपए होगी

भूमि :

विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त शहरी क्षेत्र में स्थित महाविद्यालय परिसर कुल 100 एकड़ का हो और ग्रामीण क्षेत्र में स्थित विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त महाविद्यालय के परिसर कुल एकड़ का हो।

अभियांत्रिकी :

नये अभियांत्रिकी महाविद्यालय प्रारम्भ करने

अक्षय निधि :

50 लाख रुपए की अक्षय निधि का प्रबन्ध किया जाए जिसमें 20 लाख रुपए पाण्डिचेरी विश्वविद्यालय के कुल सचिव व महाविद्यालय के प्रबन्धक के संयुक्त नाम पर राष्ट्रीय बैंक या अनुसूचित बैंक में सावधि जमा के रूप में और शेष रकम 25 लाख रुपए परिसम्पत्ति के रूप में महाविद्यालय के प्रबन्धक से दिखाया जाए यह भाररहित परिसम्पत्ति के रूप में हो जिससे प्रतिवर्ष 3 लाख रुपए की वार्षिक आमदनी हो। वार्षिक ब्याज जो समाविधि जमा से मिले और भार सहित परिसम्पत्ति से मिलने वाला वार्षिक आय दोनों, महाविद्यालय के अनुरक्षण के लिए खर्च किया जाएगा।

अतिरिक्त पाठ्यक्रमों के लिए अपेक्षित

अक्षय निधियाँ :

(i) पूर्व स्नातक स्तर की प्रतिशाखा के लिए 2 लाख

(ii) स्नातकोत्तर प्रति शाखा के लिए रुपए 2.50 लाख

भूमि:

विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त शहरी क्षेत्र में स्थित महा-विद्यालय परिसर कुल 100 एकड़ का हो और ग्रामीण क्षेत्र में स्थित विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त महा विद्यालय के परिसर कुल 150 एकड़ का हो।

(iii) नए दन्त महाविद्यालय प्रभोज महा विद्यालय उपाध्याय महाविद्यालय, विधि (कानून) महाविद्यालय—

अक्षय निधि:

20 लाख रुपए की अक्षय निधि का प्रबन्ध किया जाए जिसमें 10 लाख रुपए पाण्डिचेरी विश्व विद्यालय के कुल सचिव व महा-विद्यालय के प्रबन्धक के संयुक्त नाम पर राष्ट्रीय बैंक या अनुसूचित बैंक में सावधि जमा के रूप में और शेष रकम 10 लाख रुपए परिसम्पत्ति के रूप में हो जिससे प्रति वर्ष 1.20 लाख रुपए की वार्षिक आमदनी हो। वार्षिक व्यय जो समावधि जमा से मिले और भार सहित परिसम्पत्ति से मिलनेवाला वार्षिक आय, दोनों महाविद्यालय के अनुरक्षण के लिए खर्च किया जाएगा। नया महा-विद्यालय/ शिक्षण संस्थान जिसमें शिक्षण उपाधि (बी०ई०डी०) का पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया जाए:

अक्षय निधि:

6 लाख रुपए की अक्षय निधि का प्रबन्ध किया जाए जिसमें 3 लाख रुपए पाण्डिचेरी विश्व विद्यालय के कुल सचिव व महा-विद्यालय के प्रबन्धक के संयुक्त नाम पर राष्ट्रीय बैंक या अनुसूचित बैंक में सावधि जमा के रूप में और शेष रकम 3 लाख रुपए परिसम्पत्ति के महाविद्यालय के प्रबन्धक से दिखाया जाए। यह भार सहित परिसम्पत्ति के रूप में हो जिससे प्रतिवर्ष 36,000 रुपए की वार्षिक आमदनी हो। वार्षिक व्यय जो समावधि जमा से मिले और भार सहित परिसम्पत्ति से मिलने वाला वार्षिक आय दोनों, महा विद्यालय के अनुरक्षण के लिए खर्च किया जाएगा।

शिक्षण में स्नातकोत्तर उपाधि (एम० ई० डी०) उपाधि प्रारम्भ करने अपेक्षित अक्षय निधि 2 लाख रुपए होंगे।

भूमि:

विश्व विद्यालय से मान्यता प्राप्त शहरी क्षेत्र में स्थित महाविद्यालय परिसर कुल 20 एकड़ का हो और ग्रामीण क्षेत्र में स्थित विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त महा विद्यालय से मान्यता प्राप्त महाविद्यालय के परिसर कुल 30 एकड़ का हो।

नया शरीर विद्या महा विद्यालय जिसमें एक पूर्व स्नातक (बी०पी०ई०डी०) पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया जाए:

अक्षय निधि:

10 लाख रुपए की अक्षय निधि का प्रबन्ध किया जाए जिसमें 5 लाख रुपए पाण्डिचेरी विश्वविद्यालय के कुल सचिव व महा-विद्यालय के प्रबन्धक के संयुक्त नाम पर राष्ट्रीय बैंक या अनुसूचित बैंक में सावधि जमा के रूप में और शेष रकम 5 लाख रुपए परिसम्पत्ति के रूप में महाविद्यालय के प्रबन्धक से दिखाया जाए।

यह भार सहित परिसम्पत्ति के रूप में हो जिसके प्रति वर्ष 60,000 रुपए की वार्षिक आमदनी हो। वार्षिक व्यय जो समावधि जमा से मिले और भार सहित परिसम्पत्ति से मिलनेवाला वार्षिक आय, दोनों, महाविद्यालय के अनुरक्षण के लिए खर्च किया जाएगा।

स्नातकोत्तर उपाधि (एम०पी०ई०डी०) पाठ्यक्रम प्रारम्भ करने अपेक्षित अक्षय निधि 2 लाख रुपए होंगे।

भूमि:

विश्व विद्यालय से मान्यता प्राप्त शहरी क्षेत्र में स्थित महा-विद्यालय परिसर कुल 80 एकड़ का हो और ग्रामीण क्षेत्र में स्थित विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त महाविद्यालय के परिसर कुल 120 एकड़ का हो।

टिप्पणी

पूर्व स्नातकोत्तर स्तर पर गृह विज्ञान के प्रारम्भ के प्रकरण में हर शाखा, अक्षय निधि के मामले के लिए अलग अलग पाठ्यक्रम माना जाए। सुस्थापित महाविद्यालयों को नए पाठ्यक्रम शुरू करने, अक्षय निधि की अपेक्षा से छूट दी जाएगी, बशर्ते कि नए पाठ्यक्रमों के संचालनों के लिए पर्याप्त आय दिखाया जाय।

परिसम्पत्ति की व्याख्या:

महाविद्यालय भवन, कर्मचारी आवास, छात्रावास, खेती भूमि आदि भार सहित परिसम्पत्ति हैं।

परिशिष्ट—II

विभिन्न परीक्षाओं और अन्य विभिन्न सामान्य विषयों के लिए निर्धारित शुल्क की अनुसूची—

पाण्डिचेरी विश्वविद्यालय से संचालित विविध कला (मान-विकी), विज्ञान, अभियांत्रिकी, कानून (विधि), शिक्षण, चिकित्सा, प्रमाण पत्र और सनद पाठ्य क्रम आदि विभिन्न विद्या शाखाओं की परीक्षाओं के लिए निर्धारित परीक्षा शुल्क:

अ. विविध कला (मानविकी) और विज्ञान पाठ्यक्रम

1. बी० ए०, बी० एस० सी०, बी० काम, उपाधि परीक्षा [अर्धवार्षिक (सत्रान्त) और वार्षिक (गैरसत्रान्त) परीक्षा]	
प्रति लिखित पत्र	रुपये 20
प्रति प्रायोगिक	रुपये 25
2. एम० ए०, एम० एस० सी०, एम० काम और एम० सी० ए० उपाधि पाठ्यक्रम—	
प्रति लिखित पत्र	रुपये 40
प्रति प्रायोगिक	रुपये 50
शोध निबंध/परियोजना	रुपये 75

आ अभियांत्रिकी पाठ्यक्रम—

1. अभियांत्रिकी परीक्षाएँ	
प्रति लिखित पत्र	रुपए 30
प्रति प्रायोगिक	रुपए 50
परियोजना कार्य	रुपए 60

इ. कानून (विधि) पाठ्य क्रम		डी०पी०एम०	भाग एक	—	100
1. एल०एम०बी० (वार्षिक, गैर सत्रान्त)	रुपए 20	डी०पी०	भाग दो	—	130
प्रति लिखित पत्र		डी०पी०हेत्र	भाग एक	—	130
2. पूर्वकानून (पाँचवर्षीय पाठ्यक्रम)			भाग दो	—	130
प्रति लिखित पत्र	रुपए 20				
3. एल०एम०एम० (वार्षिक और अर्द्ध वार्षिक)					
प्रति लिखित पत्र	रुपए 75				
शोध निबन्ध	रुपए 100				
ई. अध्यापन पाठ्य क्रम:					
1. बी०ई०डि० (व. वार्षिक)					
प्रति पत्र	रुपए 50				
प्र.योगिक	रुपए 75				
2. एम०ई०डि० (व. वार्षिक)					
प्रति पत्र	रुपए 75				
प्र.योगिक	रुपए 150				
उ. चिकित्सा पाठ्य क्रम :					
1. डी०एम०/एम०सी० हेत्र (उच्चतर विशिष्टीकरण)	रुपए 800				
2. एम०सी० हेत्र (पंच वर्षीय-पाठ्यक्रम)					
भाग 1 (एक पत्र, मौखिक और)	रुपए 300				
भाग 2 (एक पत्र और मौखिक)	रुपए 300				
भाग 3 (दो पत्र मौखिक, तैद्यनिक और शोधनिबन्ध)	रुपए 500				
3. एम०डी०/एम०एस०					
प्रति पत्र	रुपए 200				
शोध निबन्ध	रुपए 200				
4. चिकित्सा संकाय में एम०एस० सी० (विज्ञान के स्नातकों के लिए)					
पूर्वाह्न संपूर्ण परीक्षायें	रुपए 200				
पूर्वाह्न प्रति पत्र	रुपए 100				
अन्तिम	रुपए 200				
5. सन्ध परीक्षायें					
डी० जी० ओ०, डी० सी० हेत्र, डी० टी०					
सी० डी०, डी० वी० डी० डी०, डी० अ. रत०,					
डी० सी० पी०, भौतिक में और चिकित्सा में सनद कृष्टरोग में सनद और मधमेह में सनद	रुपए 160				
डी०एम०अ.र०डी०, डी०एम०आर०टी०,					
डी०एम०प्रो० भाग एक	—	60			
डी०एम० ओ० भाग दो	—	100			
6. एम०बी०बी०एस० प्रति पत्र	—	60			
7. डी०एम० आर० एस० सी० प्रति पत्र चिकित्सा प्रयोगशाला प्रयोगशाला में डी०एस०सी० खोती पत्र या प्रति पत्र या प्रति प्रायोगिक	—	40			
8. चिकित्सा कीट विज्ञान में एक०एस०सी० प्रति लिखित पत्र	—	40			
9. चिकित्सा कीट विज्ञान एम०एम०सी० प्रति लिखित पत्र	—	49			
प्रति प्रायोगिक	—	50			
ऊ. व्यवसाय प्रबन्ध में स्नातकोत्तर उपाधि:					
प्रति लिखित पत्र	रुपए 150				
परियोजन, प्रतिवेदन और मौखिक	रुपए 300				
अ. अनुसन्धान पाठ्य क्रम					
पूर्व आचार्योपाधि					
प्रति लिखित पत्र	रुपए 75				
शोध निबन्ध	रुपए 200				
ए. प्रमाण पत्र और सनद परीक्षाएँ					
1. भाषाओं में प्रमाण पत्र प्रति लिखित पत्र	रुपए 30				
2. भाषाओं में सनद प्रतिलिखित पत्र और प्रायोगिक	रुपए 30				
3. सन्ध शुल्क (जिन उम्मीदवारों को अनुसन्धान सम्मति प्रदान किया गया हो और जिन्हें पुरस्कार और पदक मिला हो उन्हें पदवीदान समारोह में प्रमाण-पत्र प्राप्त करने)	रुपए 15				
4. सनद शुल्क (उस महा विद्यालय से उपाधि प्राप्त करने जहाँ पाठ्यक्रम का अध्ययन किया हो)	रुपए 25				
5. अनुपस्थिति में लेने सनदशुल्क (जिन उम्मीदवारों में विश्व विद्यालय से उपाधि प्राप्त करने का विकल्प दिया हो)	रुपए 25				
6. कानून (विधि) में स्नातकोत्तर सनद प्रति लिखित पत्र	रुपए 40				
7. (अ) अनुसन्धान छात्र और अध्येता जिन्हें विश्व विद्यालय के संकायों में काम करने की अनुमति दी गई हो उन में देय शुल्क					

अनुसंधान छात्र और अध्यापक (वृत्ति-
काग्रही और अवैतनिक) जिन्हें विश्व-
विद्यालय के संकायों में भर्ती दी गई हो,
वे निम्नोक्त शुल्क अदा करेंगे
विविधकला (मानविकी) संकाय में
कार्य करने वाला—

(गणित इस विषय के लिए विविध कला
के अन्तर् आएगा) प्रति महीने रूपए 300
विज्ञान विभागों में कार्य करनेवाले, ,, , , रूपए 500

आ. मेट्रिकुलेशन, सनद पाठ्यक्रम आदि के
लिए देय शुल्क

1. मान्यता प्राप्त किसी महा विद्यालय, विश्व विद्यालय
के विभाग या किसी संस्था में विश्व विद्यालय के पाठ्यक्रम का
अध्ययन करने। विश्व विद्यालय की परीक्षा के लिए प्रस्तुत
करने या विश्व विद्यालय का अनुसंधान कार्य करने पंजीकरण
के लिए देय शुल्क :

- (i) पूर्व स्नातक पाठ्यक्रम के लिए रूपये 25
(ii) स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के लिए रूपये 35

2. मेट्रिकुलेशन विवरणी का उद्धरण
(उम्र का उद्धरण) रूपये 25

3. एम० लिट्ट या पी० एच० डी० उपाधि के
लिए उम्मीदवार के रूप में पंजीकरण करने रूपये 200

4. एम० डी० एम० एस०, डी० एम०,
एम० सी० एच०, चिकित्सा में स्नातकोत्तर
सनद शस्य कम और दन्त चिकित्सा की
उपाधि के लिए पंजीकरण शुल्क शुल्क 300

5. पी० एच० डी० के लिए अनुसंधान शुल्क
विविधकला (मानविकी) प्रतिवर्ष रूपये 300
विज्ञान " रूपये 500
शोध निबन्ध का मूल्यांकन (रूपरेखा शुल्क) रूपये 250

6. पी० एच० डी० शोध निबन्ध प्रस्तुत करने
निम्नोक्त प्रकारेण भास्ति शुल्क (जुर्माना)
अदा करने पर समस्या भविष्य बढ़ावी
जाएगी।

पी० एच० डी० शोध निबन्ध प्रस्तुत करने का
निर्धारित समय व्ययपगत हो जाने पर
निर्धारित समय से छः महीने के अन्दर
प्रस्तुत करने समयावधि को बढ़ाने का
शास्त्र शुल्क रूपये 50

निर्धारित समय से बारह महीने के अन्दर,
पी० एच० डी० शोध निबन्ध प्रस्तुत करने
समयावधि को बढ़ाने का शास्त्र शुल्क रूपये 100

निर्धारित समय से अठारह महीने के अन्दर
पी० एच० डी० शोध निबन्ध प्रस्तुत करने
समयावधि को बढ़ाने का शास्त्र शुल्क रूपये 150

निर्धारित समय से चौबीस महीने के अन्दर,
पी० एच० डी० शोध निबन्ध प्रस्तुत करने
समयावधि को बढ़ाने का शास्त्र शुल्क रूपये 200

पी० एच० डी० उपाधि के लिए पहले ही पंजीकृत
उम्मीदवारों को निर्धारित समय से चौबीस
महीने के बाद शोध निबन्ध प्रस्तुत करने की
समयावधि को बढ़ाने का शास्त्र शुल्क रूपये 300

7. पूर्व आचार्योपाधि (एम० फिल) और
स्नातकोत्तर शिक्षण (एम० ई०) डी० के शोध निबन्ध
देर से विद्यार्थियों से प्रस्तुत करने का शास्त्र शुल्क रूपये 150

8. पी० एच० डी० शोध निबन्ध की रूप रेखा
के प्रस्तुतीकरण के बाद अवृत्ति हो जाने के
बाद शोध निबन्ध प्रस्तुत करने :

रूप रेखा प्रस्तुत करने के बाद छः महीने के
विलम्ब के लिए रूपये 100

आगे के छः महीने के विलम्ब के लिए रूपये 150

एक वर्ष के विलम्ब के लिए रूपये 150

एक वर्ष के उपरान्त उम्मीदवार को पुनः
पंजीकृत करना होगा

9. पूर्व आचार्योपाधि (एम० फिल) के लिए
उम्मीदवार के रूप में पंजीकृत करने रूपये 100

10. पूर्व आचार्योपाधि (एम० फिल), रूपए 800
के अध्ययन के लिए (पूर्ण कालीन और अंश कालीन)
विविध कला (मानविकी के लिए प्रति वर्ष विज्ञान के
लिए) प्रयोगशाला शुल्क भी निहित है) प्रतिवर्ष रूपये 1,000

11. वाणिज्य, प्रशासन में स्नातकोत्तर उपाधि
भर्ती के लिए आवेदन पत्र पंजीकृत करने
प्रति वर्ष रूपये 50

पाठ्यक्रम के अध्ययन के लिए (पूर्णकालीन) रूपये 1,000

पाठ्यक्रम के अध्ययन के लिए (अंश कालीन) —

इ अन्य शुल्क :

1. (i) उपस्थिति में कमी का भर्षण रूपये 50

(ii) बी० ए०, बी० एस० सी०, बी० काम०,
एच० ए० एम० एच० सी०, एम० काम०,
की परीक्षाओं के निजी अध्ययन (कृता
ध्ययन) करने के लिए प्रदान करने का
नियत शुल्क :

(i) पूर्व स्नातक के लिए रूपये 100

(ii) स्नातकोत्तर के लिए रूपये 100

(iii) तमिलनाडु, आन्ध्र प्रदेश या
अन्य प्रांतीय सरकार से चलाई
जाने वाली उच्चतर माध्य-
मिक परीक्षा (पी० डिग्री)
परीक्षाओं को मान्यता
देने का नियत शुल्क रूपये 50

(iv) भारत के प्रत्यायित संविधिक अभिकरणों से या विश्वविद्यालय से संचालित उच्चतर माध्यमिक परीक्षा या उसके समकक्ष परीक्षाओं को मान्यता प्रदान कर इस विश्व-विद्यालय के पाठ्यक्रम का अध्ययन करने की अनुमति देने के लिए नियत शुल्क रुपये 100

(v) भारत के बाहर स्थित विश्व-विद्यालय या प्रत्यायित अभिकरणों से संचालित परीक्षाओं को मान्यता प्रदान कर इस विश्व-विद्यालय के पाठ्यक्रम के अध्ययन करने की अनुमति देने के लिए नियत शुल्क रुपये 250

2. (अ) विविध कला (मानविकी) और वैज्ञानिक पाठ्यक्रम के अध्ययन के लिए :

(i) अध्ययनावधि के बीच में (स्थानान्तरण) के कारण इस विश्वविद्यालय से सम्बद्ध दो विभिन्न महा विद्यालयों में पाठ्यक्रम के अध्ययन करने पर संबद्ध महाविद्यालयों में अर्जित उपस्थिति के समन्वयीकरण के लिए नियत शुल्क रुपये 100

(ii) इस विश्वविद्यालय के क्षेत्र के बाहर स्थिति भारत के विश्वविद्यालयों से सम्बद्ध महाविद्यालय में अध्ययन कर, अध्ययनकाल के बीच विश्वविद्यालय में उस पाठ्यक्रम में भर्ती होने पर, अर्जित उपस्थिति के समन्वयीकरण के लिए नियत शुल्क रुपये 400

(iii) इस विश्वविद्यालय ऐसे सम्बद्ध किसी महाविद्यालय के दिवस महाविद्यालय में अध्ययन कर उसी पाठ्यक्रम में सायंकालीन महाविद्यालय में अध्ययनकाल विपर्यय (विपरीतक्रम पर) अर्जित उपस्थिति समन्वयरण के लिए नियत शुल्क रुपये 200

(iv) विविध कला या वैज्ञानिक पाठ्यक्रम में अध्ययन विराम होने पर उसे वर्षक देकर पुनः भर्ती देने के लिए नियत अनुमति शुल्क रुपये 200

(आ) व्यावसायिक पाठ्य में के लिए :

(i) इस विश्वविद्यालय से सम्बद्ध दो महाविद्यालयों में (जो एक ही शहर में स्थिति नहीं हों) उम्मीदवार से अर्जित समन्वयीकरण के लिए नियत शुल्क रुपये 400

(ii) भारत में स्थित किसी अन्य विश्व विद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालय से स्थानान्तरित होकर इस विश्व विद्यालय में अपनी पढ़ाई चालू रखने के उम्मीदवारों के लिए नियत शुल्क रुपये 1000

(iii) इस विश्वविद्यालय से सम्बद्ध किसी महाविद्यालय के दिवस महाविद्यालय में अध्ययन कर उसी पाठ्यक्रम में सायंकालीन महाविद्यालय में अध्ययन जारी रखने या विपर्यय के लिए उम्मीदवारों से देय शुल्क (कानूनी पाठ्यक्रम जहां सायंकालीन महाविद्यालयों में चालू है) रुपये 400

(iv) भारत के बाहर स्थित विश्वविद्यालय से संबद्ध महाविद्यालयों से स्थानान्तरित लेकर भारत के इस विश्वविद्यालय में अपनी पढ़ाई आगे चालू रखने के उम्मीदवारों के देय शुल्क रुपये 1500

(v) व्यवहारिक पाठ्यक्रम में अध्ययन विराम होने पर उसे वर्षक देकर पुनः भर्ती देने के लिए नियत अनुमति शुल्क रुपये 500

3. (1) विश्वविद्यालय के अभिलेखों और प्रमाण-पत्र सन्दर्भों में नाम परिवर्तन के लिए नियत शुल्क रुपये 50
- (2) कार्यकर्ताओं की गलती या अन्य कारणों से जन्म तिथि में गलत प्रविष्टि होने पर उसे दुरुस्त कर पृष्ठांकित रुपये 50
- (3) सन्दर्भ या प्रमाण पत्र की अनुलिपि प्राप्त करने के लिए नियत शुल्क रुपये 100
- (4) तात्कालिक प्रमाण-पत्र के लिए नियत शुल्क रुपये 30
- (5) प्रयोजन प्रमाणक (प्रवास प्रमाण पत्र) के लिए नियत शुल्क रुपये 25
- (6) प्रयोजन प्रमाणक की अनुलिपि के लिए नियत शुल्क रुपये 50
- (7) विश्व विद्यालय की परीक्षाओं की अनुसूची की अनुलिपि प्राप्त करने नियत शुल्क रुपये 30
- (8) प्रति परीक्षा की प्रति उपस्थिति के लिए प्राप्त उपस्थिति के लिए प्राप्त अंक की अंक सूची देने के लिए नियत शुल्क रुपये 5
- (9) विगन वर्षों की अंक सूची की अनुलिपि देने के लिए नियत खोज शुल्क रुपये 10
- (10) उम्मीदवार के विश्वविद्यालय की परीक्षाओं की प्रति पत्र में प्राप्त अंक के जोड़ के परीक्षण के लिए नियत शुल्क रुपये 50
- (11) श्रेणी प्रमाण-पत्र के निकासी के लिए नियत शुल्क रुपये 25
- (12) परीक्षा की अन्तिम तिथि सूचित करने वाले पत्र की निकासी के लिए नियत शुल्क रुपये 50
- (13) आवेदन पत्र का मूल्य रुपये 5
- (14) यदि किसी भाषा के पाठ्यक्रम के अध्ययन की व्यवस्था किसी कालेज में नहीं है तो विश्वविद्यालय से अनुभाषित एक अध्यापक से उस भाषा के अध्ययन करने के लिए उम्मीदवार को अनुमति देने का शुल्क रुपये 100
- (15) ए० एम० ए० ई० जैसी व्यवसायिक परीक्षाओं को, विश्वविद्यालय की व्यवसायिक विषयों की उपाधि के समकक्ष मान्यता प्रदान करने के लिए नियत शुल्क रुपये 100

परिशिष्ट-III

विभिन्न परीक्षाओं की अनुसूची (सारणी) संभावित तारीख, परीक्षा फल का प्रकाशन आदि

क्रम सं०	बी० एस० टी० (एम० एन० टी०)	I सत्रान्त (ठेमाहि) 1 वर्ष	II सत्रान्त (ठेमही) बकाया अवशेष
1	2	3	4
1.	प्रथम वर्ष का आवेदन पत्र प्राप्त करने की अंतिम तारीख	1 अक्टूबर	15 फरवरी
2.	महा विद्यालयों से उपस्थिति प्रमाण पत्र प्राप्त करने की अंतिम तारीख	20 नवम्बर	10 अप्रैल
3.	परीक्षा के प्रारम्भ होने की संभावित तारीख	1 दिसम्बर	20 अप्रैल
4.	परीक्षा फल के प्रकाशन की संभावित तिथि	जनवरी का प्रथम सप्ताह	जून का तीसरा सप्ताह
बी० एस० आर० एस० सी० :			
1.	प्रथम वर्ष का आवेदन पत्र प्राप्त करने की अंतिम तारीख	1 अक्टूबर	15 फरवरी,
2.	महा विद्यालयों से उपस्थिति प्रमाण-पत्र प्राप्त करने की तारीख	20 नवम्बर	20 अप्रैल
3.	परीक्षा के प्रारम्भ होने की संभावित तारीख	1 दिसम्बर	1 मई
4.	परीक्षा फल के प्रकाशन की संभावित तिथि	जनवरी का प्रथम सप्ताह	जून का तीसरा सप्ताह
एम० बी० बी० एस० प्रथम वर्ष :			
1.	प्रथम वर्ष का आवेदन पत्र प्राप्त करने की अंतिम तारीख	1 अक्टूबर	1 फरवरी
2.	महा विद्यालयों से उपस्थित प्रमाण पत्र प्राप्त करने की अन्तिम तारीख	20 नवम्बर	5 फरवरी
3.	परीक्षा के प्रारम्भ होने की संभावित तारीख	15 अप्रैल	1 दिसम्बर
4.	परीक्षा के प्रारम्भ होने की संभावित तारीख	मई का आखिरी हफ्ता	जनवरी का आखिरी हफ्ता

एम० डी०/एम० एस० :

गैर सत्रान्त	प्रथम सत्र 1 वर्ष	दूसरा सत्र बकाया परीक्षा में
1	2	3
1. प्रथम वर्ष का आवेदन पत्र प्राप्त करने की अंतिम तारीख .	10 जनवरी	1 सितम्बर
2. महा विद्यालयों से उपस्थिति प्रमाण पत्र प्राप्त करने की अंतिम तारीख	5 मार्च,	20 सितम्बर
3. परीक्षा के प्रारम्भ होने की संभावित तारीख	15 मार्च	1 अक्टूबर
4. परीक्षा फल के प्रकाशन की संभावित तिथि	मई का तीसरा सप्ताह	दिसम्बर का दूसरा सप्ताह
चिकित्सा स्नातकोत्तर सनद (गैर-सत्रान्त)		
1. प्रथम वर्ष का आवेदन पत्र प्राप्त करने की अंतिम तारीख .	10 अगस्त	20 जनवरी
2. महा विद्यालयों से उपस्थिति प्रमाण पत्र प्राप्त करने की अंतिम तारीख	20 मार्च	5 दिसम्बर
3. परीक्षा के प्रारम्भ होने की संभावित तारीख	1 अप्रैल,	15 अक्टूबर
4. परीक्षा फल के प्रकाशन की संभावित तिथि	मई का आखिरी हफ्ता	दिसम्बर का आखिरी हफ्ता

1	2	3
एम० एस० सी० जीव रसायन शास्त्र (गैर सत्रान्त)		
1. प्रथम वर्ष का आवेदन पत्र प्राप्त करने की अंतिम तारीख	1 सितम्बर	15 फरवरी
2. महाविद्यालयों से उपस्थिति प्रमाण पत्र प्राप्त करने की अंतिम तारीख	5 अप्रैल	
3. परीक्षा के प्रारम्भ होने की संभावित तारीख	15 अप्रैल	1 अक्तूबर, (अनुपूरक)
4. परीक्षा फल के प्रकाशन की संभावित तिथि	जून का प्रथम सप्ताह	नवम्बर का आखिरी सप्ताह
बी० टेक		
1. प्रथम वर्ष का आवेदन पत्र प्राप्त करने की अंतिम तारीख	1 अक्तूबर	1 मार्च
2. महा विद्यालयों से उपस्थिति प्रमाण पत्र प्राप्त करने की अंतिम तारीख	1 दिसम्बर	1 मई
3. परीक्षा के प्रारम्भ होने की संभावित तारीख	10 दिसम्बर	11 मई
4. परीक्षा फल के प्रकाशन की संभावित तिथि	फरवरी का प्रथम सप्ताह	जून का तीसरा सप्ताह
एम० सी० ए० और डी० सी० ए०		
1. प्रथम वर्ष का आवेदन पत्र प्राप्त करने का अंतिम तारीख	1 अक्तूबर	1 मार्च
2. महा विद्यालयों से उपस्थिति प्रमाण पत्र प्राप्त करने की अंतिम तारीख	1 दिसम्बर	1 मई
3. परीक्षा के प्रारम्भ होने की संभावित तारीख	10 दिसम्बर	11 मई
4. परीक्षा फल के प्रकाशन की संभावित तिथि	फरवरी का प्रथम सप्ताह	जून का तीसरा सप्ताह
कानून प्रथम वर्ष		
1. प्रथम वर्ष का आवेदन पत्र प्राप्त करने की अंतिम तारीख	1 अक्तूबर	1 मार्च
2. महा विद्यालयों से उपस्थिति प्रमाण पत्र प्राप्त करने की अंतिम तारीख	5 दिसम्बर	5 मई
3. परीक्षा के प्रारम्भ होने की संभावित तारीख	15 दिसम्बर	15 मई
4. परीक्षा फल के प्रकाशन की संभावित तिथि	फरवरी का प्रथम सप्ताह	जून का तीसरा सप्ताह
बी० जी० एल० प्रथम वर्ष		
1. प्रथम वर्ष का आवेदन पत्र प्राप्त करने की अंतिम तारीख	1 अक्तूबर	1 मार्च
2. महा विद्यालयों से उपस्थिति प्रमाण पत्र प्राप्त करने की अंतिम तारीख	5 दिसम्बर	5 मई
3. परीक्षा के प्रारम्भ होने की संभावित तारीख	15 दिसम्बर	15 मई
4. परीक्षा फल के प्रकाशन की संभावित तिथि	फरवरी का प्रथम सप्ताह	जून का तीसरा सप्ताह
बी० जी० एल० प्रथम वर्ष		
1. प्रथम वर्ष का आवेदन पत्र प्राप्त करने की अंतिम तारीख	1 अक्तूबर	1 मार्च
2. महा विद्यालयों से उपस्थिति प्रमाण पत्र प्राप्त करने की अंतिम तारीख	5 दिसम्बर	5 मई
3. परीक्षा के प्रारम्भ होने की संभावित तिथि	15 दिसम्बर	15 मई
4. परीक्षा फल के प्रकाशन की संभावित तिथि	फरवरी का प्रथम सप्ताह	जून का तीसरा सप्ताह

1	2	3	4
एम० एल० (गैर-सत्रान्त)			
1.	प्रथम वर्ष का आवेदन पत्र प्राप्त करने की अंतिम तारीख	25 मार्च	
2.	महा विद्यालयों से उपस्थिति प्रमाण पत्र प्राप्त करने की अंतिम तारीख	25 मई	
3.	परीक्षा के प्रारम्भ होने की संभावित तारीख	5 जून	
4.	परीक्षा फल के प्रकाशन की संभावित तिथि	जुलाई का दूसरा सप्ताह	
बी० ए०, बी० एस. सी०, बी० काम :			
(गैर-सत्रान्त)			
1.	प्रथम वर्ष का आवेदन पत्र प्राप्त करने की अंतिम तारीख	10 जनवरी	5 जुलाई
2.	महाविद्यालयों से उपस्थिति प्रमाणपत्र प्राप्त करने की अंतिम तारीख	25 मार्च	
3.	परीक्षा के प्रारम्भ होने की संभावित तारीख	5 अप्रैल	15 सितम्बर (अनुपूरक)
4.	परीक्षा के प्रारम्भ होने की संभावित तारीख	5 अप्रैल	15 सितम्बर (अनुपूरक)
5.	परीक्षा फल के प्रकाशन की संभावित तारीख	जून का दूसरा सप्ताह	अक्टूबर का आखिरी सप्ताह
एम० फिल (गैर-सत्रान्त)			
1.	प्रथम वर्ष का आवेदन पत्र प्राप्त करने की अंतिम तारीख	1 अक्टूबर	
2.	महा विद्यालयों से उपस्थिति प्रमाणपत्र प्राप्त करने की अंतिम तारीख	5 दिसम्बर	
3.	परीक्षा के प्रारम्भ होने की संभावित तारीख	15 दिसम्बर	
4.	परीक्षा फल के प्रकाशन की संभावित तिथि	फरवरी का आखिरी सप्ताह	

टिप्पणी : (1) पाण्डिचेरी विश्व विद्यालय से संचालित एम० बी० ए० पाठ्य क्रम की सत्रान्त परीक्षा (अर्ध वार्षिक परीक्षा) और जिस पर संस्था से संचालित प्रेंच का प्रमाण पत्र/सनद/और उच्चतर मनव पाठ्यक्रम की परीक्षाएँ तत् तत् पर विद्यालय/संस्था से आन्तरिक रूप से चलाई जायेंगी।

(2) बी० सी० आर० सी० से संचालित एम० एस० सी० चिकित्सा कीट विज्ञान (निमाही) की अन्तिम परीक्षाओं की तारीख संस्था से अधिसूचित की जायेंगी।

परिशिष्ट- IV

उत्तर पुस्तकों की जाँच और प्रश्न पत्र बनाने का शुल्क

क्रम संख्या	वर्ग	जाँच का शुल्क	प्रश्न पत्र बनाने का शुल्क
1	2	3	4
		रु० पै०	रु० पै०
1.	विविध कला (मानविकी) विज्ञान, वाणिज्य और व्यावसायिक पूर्व स्नातक परीक्षाओं के लिए	4.00	100.00
2.	चिकित्सा के सिवा सब प्रमाण पत्र और सनद (डिप्लोमा) के लिए	4.00	60.00

1	2	3	4
3.	अ) विविध कला (मानविकी) वाणिज्य की स्नातकोत्तर परीक्षाओं के लिए आ) स्नातकोत्तर सनद (डिप्लोमा) के अलावा व्यावसायिक पाठ्य क्रम में स्नातकोत्तर परीक्षाएँ	5.00 5.00	125.00 125.00
4.	शिक्षित्वा पूर्वस्नातक शिक्षित्वा के विशेष विशिष्टीकरण के अलावा स्नातकोत्तर परीक्षाएँ	प्रतिपत्र के लिए रु० 12 के हिसाब से सभी परीक्षकों को बांटा जाएगा, लेकिन प्रति परीक्षक को न्यूनतम रुपए 30 दिया जाएगा प्रति पत्र के लिए रु० 25 के हिसाब से सभी परीक्षकों को बांटा जाएगा, लेकिन प्रति परीक्षक को न्यूनतम रुपया 30 दिया जाएगा ।	रुपये 250 के हिसाब से प्रति प्रश्न पत्र बनाने वाले को न्यूनतम रु० 125 दिया जाएगा । रुपए 250 के हिसाब में प्रति प्रश्न पत्र बनाने वाले को न्यूनतम रु० 125 दिया जाएगा ।
	पूर्व आचार्योपाधि/पूर्व पी० एच० डी०	5.00.	125.00

	बी० ए० और बी० एस० सी०	प्रयोगिक
1.	कार्य निर्धारण एक दल के लिए एक दल से ज्यादा होने पर (नियुक्त परीक्षकों को आपस में बराबर बांटा जाए)	50.00 50.00 (प्रति दल के लिए)
2.	(अ) तैयारी प्रत्येक उम्मीदवार के लिए प्रत्येक परीक्षक को (कुल जितने उम्मीदवारों ने पंजीकृत किया हो ।)	1.50
	(आ) मूल्यांकन प्रत्येक उम्मीदवार के लिए प्रत्येक परीक्षक को (जिन उम्मीदवारों की वास्तविक परीक्षा की गई हो) प्रमुख अभिलेखों का मूल्यांकन	4.00 1.50 (प्रत्येक अभिलेख के लिए प्रत्येक परीक्षक)
	एम० ए० एम० एस० सी०,	प्रायोगिक
1.	एक दल के लिए (एक दल से ज्यादा होने पर नियुक्त परीक्षकों को आपस में बराबर बांटा जाए)	50.00 50.00 (प्रति दल के लिए)
2.	(अ) तैयारी प्रत्येक उम्मीदवार के लिए प्रत्येक परीक्षक को (कुल जितने उम्मीदवारों ने पंजीकृत किया हो)	2.00
	(आ) मूल्यांकन प्रत्येक उम्मीदवार के लिए प्रत्येक परीक्षक को (जिन उम्मीदवारों की वास्तविक परीक्षा की गई हो)	5.00
	(इ) एम० ए० और एम० एस० सी० अभिलेखों के मूल्यांकन के लिए	5.00 (प्रत्येक अभिलेख के लिए प्रत्येक परीक्षक को)

अभियांत्रिकी (गैर अभियांत्रिकी और विषयों के लिए)

(i) कार्य निर्धारण

रुपये 50 प्रति दल के लिए (नियुक्त परीक्षकों को आपस में बराबर बांटा जाय)

(ii) तैयारी

रुपये 2 प्रत्येक उम्मीदवार के लिए प्रत्येक परीक्षक को (पंजीकृत उम्मीदवार)

(iii) अभिलेख

रुपये 4 प्रत्येक अभिलेख के लिए प्रत्येक परीक्षक को

चिकित्सा

प्रायोगिक (प्रत्येक उम्मीदवार के लिए प्रत्येक परीक्षक को)

पूर्व स्नातक—स्नातकोत्तर

मौखिक " " " "

रुपये 10, रुपये 30, रुपये

नैदानिक " " " "

रुपये 5 परीक्षक प्रत्येक दिन के लिए न्यूनतम रुपये 150

परीक्षक के प्रत्येक दिन के लिए न्यूनतम रुपये 150

शोध प्रबन्ध का मूल्यांकन :

क्रम सं०	वर्ग	शोध प्रबन्ध	मौखिक
(1)	(2)	(3)	(4)
1.	एम० ए०, एम० एस० सी०, एम० काम एम० सामूहिक कार्य और एम० बी० ए०	रुपये 20 प्रति शोध प्रबन्ध के लिए रुपये 2 प्रति उम्मीदवार के लिए प्रति परीक्षक को प्रति परीक्षक को	
2.	चिकित्सा में पूर्व स्नातक और स्नातकोत्तर उपाधि /मनद	मनद के लिए रुपये 100 उपाधि के लिए रुपये 150	---
	एम० पी० ई० डी० एम० फिल, एम० ई०, और एम० ई० डी०,	रुपये 50 प्रति शोध प्रबन्ध के लिए रुपये 3 प्रति उम्मीदवार के लिए प्रति परीक्षक को प्रति परीक्षक को	
3.	एम० टी० पी०/पी०एच० डी०	शोध प्रबन्ध और मौखिक के लिए प्रति परीक्षक को रुपये 200	---
4.	एम० एस० सी० चिकित्सा कीट विज्ञान और जीव रसायन शास्त्र	रुपये 100 (सिर्फ बाह्य परीक्षक के लिए)	---

प्रश्न पत्र बनाने के लिए अध्यक्ष शुल्क :

क्र० सं०	वर्ग	पारिश्रमिक
(1)	(2)	(3)
		रुपये 50
1.	19 प्रश्न पत्र तक	
2.	39 प्रश्न पत्र तक	
3.	39 प्रश्नपत्र से ज्यादा	(संख्या की परिगणना के बिना)
4.	मंडल का अध्यक्ष जो प्रश्न पत्र नहीं बनाता हो या उत्तर पुस्तकों की जांच नहीं करता हो	

जांच के लिए अध्यक्ष शुल्क :

क्र० सं०	वर्ग	पारिश्रमिक
(1)	(2)	(3)
1.	बी० ए०, इतिहास, अर्थशास्त्र और अंग्रेजी	
2.	अन्य विषयों के लिए	
3.	बी० एस० सी० के सब विषयों के लिए	
4.	भूविज्ञान	
5.	एम० ए०, एम० एस० सी०, सत्रान्त (छः माहों)	
6.	एम० एस०, एम० एस० सी० (गैर सत्रान्त)	
7.	पूर्व आचार्योपाधि	
8.	बी० जी० एल०, एल० एल० बी०	
9.	बी०ई० डी०, एम० ई० डी०, बी० पी० ईडी०, एम० पी० ईडी०,	
10.	बी०ई०	
11.	अल्पकालीन बी० ई०	
12.	एम० बी० बी० एस०	
13.	एम० बी०/एम० एस०/एम० सी० हेच०	
14.	एम० एस० सी० (अभियांत्रिकी), एम० टेक	
15.	अन्य पाठ्य क्रम	

अध्यक्ष को लिपिक सहायता

1.	एम० बी० बी० एस०	रुपये 15
II. और III.	एम० बी० बी० एस०	रुपये 15
अंतिम वर्ष	एम० बी० बी० एस०	रुपये 50

प्रमुख परीक्षक को अनुदेश शुल्क :

बी० ए०, बी० एस० सी०, बी० काम परीक्षा के प्रति पत्र के लिए	रुपये 50
---	----------

जांच, मौखिक और प्रायोगिक के लिए परीक्षक को देय न्यूनतम पारिश्रमिक

क्रम सं०	वर्ग	न्यूनतम
(1)	(2)	(3)
1.	एल० एल० एम०, एम० ई० डी०, कानून में स्नातकोत्तर सनद	रुपये 100
2.	एम० फिल/पूर्व आचार्योपाधि	रुपये 50
3.	शिक्षिता के सब पूर्व स्नातक और स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के लिए परीक्षक को सामान्य न्यूनतम रकम अगर वह परीक्षक को सामान्य न्यूनतम रकम अगर वह परीक्षा के सैद्धान्तिक या प्रायोगिक पक्ष में किसी से सम्बन्ध हो	रुपये 150
4.	अन्य परीक्षाओं के लिए	रुपये 30

लिखित परीक्षाओं की पाण्डुलिपि बनाने तीन प्रति-लिपियों की एक कुल (सेट) के लिए रु० 5 के हिमाव से दिया जाएगा।

प्रश्न पत्रों के अनुवाद के लिए प्रति पत्र के लिए रु० 35 के हिसाब से दिया जाएगा।

परीक्षाओं का संचालन

1. प्रमुख अधीक्षक/संवीक्षक रु० 30 (प्रति सत्र के लिए)
2. अन्तरीक्षक रु० 15 (प्रति सत्र के लिए)
3. संघी की सिलाई के लिए रु० 1 (प्रति संघी के लिए)

केन्द्रीय जांच (मूल्यांकन)

भोजन भत्ता:— रु० 10 प्रति दिन प्रति परीक्षक की

इसके प्रतिरिक्त प्रति दिन रु० पांच के हिसाब से पूर्वाह्न और अपराह्न जलपान के लिए रु० पांच तक खर्च किया जाएगा। (कार्य कारिणी समिति के प्रस्ताव सं 88-178 तारीख 18-6-88 से संशोधित)

परिशिष्ट-IV

लिखित संविदा का प्रमाण पत्र

पहले भाग में करार का श्रापन जो एक हजार तो सो—वर्ष—महीने—दिनांक में—और—के बीच में किया गया है (इस में इसके पश्चात अध्यापक कहा गया है) दूसरे भाग में 1985 पाण्डुचेरी विश्व विद्यालय अधिनियम (1985 की संख्या 53) में संगठित नियमित निकाय होने की वजह से उसमें इसके पश्चात् विश्व विद्यालय कहा गया है) निम्नोक्त प्रकारेण यह अनुबंध/इकरार किया गया है:

1. विश्व विद्यालय एतद्वारा ———को विश्व विद्यालय के अध्यापक कार्यवर्ता के रूप में उक्त व्यक्ति के कार्यभार ग्रहण की तिथि से और उक्त ———इसके द्वारा, आबंध की स्वीकृति देकर शिक्षा के आयोजन, अध्यापन अनुसंधान विश्व विद्यालय परिक्षाएं विद्यार्थी अनुशासन तथा विद्यार्थी कल्याण के लिए विश्व विद्यालय से विनिर्मित अधिनियम संविधि और अध्यादेश व सामान्यतः विश्व विद्यालय के अधिकारियों से निर्देशित कार्यकलापों में भाग ग्रहण करेगा।

2. (घ) अध्यापक 12/24 महीने की अवधि के लिए परीक्षाधीन नियुक्त होंगे, जिसको अधिकतम 24 महीने तक बढ़ाया जा सकता है, लेकिन यदि अवधिकाल 24 महीने का अतिक्रमण न करे।

(घा) उप अनुच्छेद (1) में अन्तर्विष्ट उपबंध को होना कर नियुक्ति की तारीख से 12/24 महीने के परी-वीक्षणावधि काल के पहले ही, लेकिन न्यूनतम नौ महीने के पूर्व नहीं, स्थायीकरण के लिए अध्यापक का उपयुक्तता के मूल्यांकन का अधिकार विश्व विद्यालय को है।

(इ) विश्व विद्यालय अध्यापक की उपयुक्तता में सुतृप्त है तो नियुक्त पद पर परीवीक्षणावधि के उपरान्त स्थायीकरण कर सकता है।

(ई) अगर विश्व विद्यालय अध्यापक को 12/24 महीने की परीवीक्षणावधि के उपरान्त या बढ़ाई गई परीवीक्षणावधि के पूर्व अध्यापक को स्थायीकृत नहीं करने का इरादा करता है तो उक्त अवधि की समाप्ति के 30 दिन पहले लिखित रूप से संबंध अध्यापक को सूचित किया जाए और परिणाम स्वरूप वह अध्यापक परीक्षावधि के उपरान्त सेवाभ्युक्त हो जाएगा।

3. उपरोक्तको विश्व विद्यालय का पूर्ण कालीन अध्यापक होना चाहिये और कार्य कारिणी समिति से या अध्यापक से संविदा की समाप्ति करने तक 60 वर्ष की उम्र की पूर्ति तक वे विश्व विद्यालय की सेवा में रहेंगे

4. विश्व विद्यालय को उसके कर्तव्य निर्वहणकाल में उसकी सेवा के उपलक्ष्य में पारि-श्रमिक के रूप में वेतन रूपये.....प्रति महीनेवाषिक वृद्धि के साथ अधिकतम रूपये का वेतन प्रति महीने दिया जायेगा।

तब कभी अध्यापक की प्रकृति में कोई परिवर्तन होता है या परिलब्धि में कोई परिवर्तन होता है तो परिवर्तन के विवरण दोनों पक्षों के हस्ताक्षराधीन इसके साथ अनुलग्न अनुसूची में अभिलिखित किया जायेगा और करार के निबन्धन यथाचित परिवर्तनों सहित नये पदज के लिये संलग्न शर्तों व अनुबन्धन दोनों पक्षों के लिये लागू होगा।

कोई भी वार्षिक वेतन वृद्धि उपकुलपति के निर्देश पर कार्यकारिणी समिति अपने प्रस्ताव से अध्यापक को अपना प्रतिनिधित्व लिखित रूप से करने पर्याप्त अवकाश दिये बिना रोका न जाये और स्थापित भी किया न जाये।

5. विश्व विद्यालय के तत्काल चालू संविधि, अधिनियम और अध्यादेश का पालन करना हर अध्यापक के लिये बाध्य है। अध्यापकों की नियुक्ति के बाद पदनाम, वेतनमान, वेतनवृद्धि, निर्वाह निधि, निवृत्ति लाभ, सेवा निवृत्ति की उम्र, परीवीक्षण, स्थायीकरण, छुट्टी, छुट्टी वेतन और सेवा से निष्कासन आदि बातों की शर्तों में कोई परिवर्तन नहीं किया जाये जिन से उन पर कोई प्रतिकूल प्रभाव पड़े।

6. विश्व विद्यालय की सेवा में अध्यापक अपना सम्पूर्ण समय लगाव और विश्व विद्यालय की अनुमति के बिना प्रत्यक्ष रूप से किसी भी तरह का कारोबार, व्यापार, गृह शिक्षण या अन्य कोई भी धंधा स्वीकार न करे जिनके लिये पारिश्रमिक या मानदेय दिया जाये लेकिन विश्व विद्यालय, विद्वत संस्था या लोक सेवा आयोग से आयोजित परीक्षाये या साहित्यिक कार्य, आकाश वाणी भाषण, विस्तार व्याख्यान या कोई भी शैक्षिक कार्य उपकुलपति की अनुमति से स्वीकार किया जा सकता है।

7. आगे यह माना गया कि संविधि 26 (जो नीचे उद्धृत है) का खण्ड 1, 2, 3, 4, 5 और 6 के आधार पर और उसमें निर्दिष्ट प्रक्रिया को छोड़कर, विश्व विद्यालय स्वयमेव वचन बन्ध हुआ बन्ध का निर्णय नहीं कर सकता :

1. अगर किसी अध्यापक के प्रति अवचार (घुब्यवहार) का अभिकथन है तो उपकुलपति उचित समझने पर लिखित रूप से अध्यापक का निलम्बन कर सकते हैं, लेकिन कार्य कारिणी समिति को तत्काल उक्त आदेश के निर्गम के निम्नलिखित परिस्थिति का पूरा पूरा विवरण दिया जाना चाहिये।

अगर कार्य कारिणी समिति परिस्थिति का अध्ययन कर अध्यापक का निलम्बन अनावश्यक समझने पर उस आदेश प्रतिसंहत कर सकती है।

2. सेवा की संविधा या नियुक्ति की शर्तों में किसी भी बात के होते हुए भी कार्यकारिणी समिति को अवचार (घुब्यवहार) के आधार पर किसी भी अध्यापक को नौकरी से हटाने का अधिकार है।

3. समुचित कारण दिये बिना या तीन महीने की पूर्व सूचना लिखित रूप से दिये बिना या उसके तीन महीने का वेतन दिये बिना उपरोक्त प्रकार से किसी भी अध्यापक को नौकरी से हटाने का अधिकार कार्यकारिणी समिति को नहीं है।

4. किसी भी अध्यापक के प्रति जो कारवाई की जाने वाली है तत्सम्बन्ध में अध्यापक को अपना प्रतिनिधित्व करने पर्याप्त अवकाश दिये बिना खण्ड (2) या (3) के अधीन नौकरी से नहीं हटाया जा सकता।

5. अध्यापक के विश्व विद्यालय की सेवा से हटायें जाने के लिये कार्यकारिणी समिति के उपस्थित सदस्यों के दो तिहाई बहुमत और मतदान जरूरी है।

6. अध्यापक के सेवा से हटाने की तारीख, हटाने के आदेश के बालू तारीख से प्रभावी होगी।

7. अगर कोई अध्यापक सेवा से हटाने समय निलम्बन में है तो निलम्बन जारी की गई तारीख से हटायें का आदेश प्रभावी होगा।

नीचे उद्धृत अधिनियम की धारा (31) का भाग (2) के आधार पर संविधा पर पैदा होने वाले विवादों का समाधान होगा।

कार्यकर्ता और विश्व विद्यालय के बीच में पैदा होने वाले विवाद, कार्यकर्ता के अनुरोध पर विवाचन न्यायाधिकरण के विचारार्थ भेजा जाये जिसका एक सदस्य कार्यकारिणी समिति से नियुक्त होंगे, एक सदस्य कार्यकारिणी समिति से नियुक्त होंगे। एक सदस्य सम्बन्ध कर्मचारियों से मनोनीत एक सदस्य संबन्ध कर्मचारियों से मनोनीत होंगे और एक अधि निर्णायक (पंच) कुलाध्यक्ष से नियुक्त होंगे। न्यायाधिकरण का निर्णय अन्तिम होगा और उन विषयों पर दीवानी

न्यायालय में कोई बाद दाखिला नहीं होगा। उपरोक्त अधिनियम की धारा के उपबन्ध के अधीन विवाचन विधि 1940 के अनुसार सब अनुरोध न्यायाधिकरण को समर्पित समझा जायेगा।

9. अध्यापक जब चाहे तब कार्य कारिणी समिति को लिखित रूप से तीन महीने की सूचना देकर अपने कार्य भार को समाप्त कर सकता है, लेकिन कार्य कारिणी समिति स्वमति से इस सूचना की अपेक्षा को ठीला कर सकती है।

10. अपने कार्य भार को समाप्ति कर, कार कुछ भी हो, अध्यापक से विश्व विद्यालय को वेतन सब पुस्तकें, लाघित अभिलेख और विश्व विद्यालय के अन्य उपकरण और वस्तुयें विश्व विद्यालय को सौंप देना चाहिये।

जिसके साक्षी स्वरूप पक्षकार अपना हस्ताक्षर और मुहर लगावें।

1. हस्ताक्षर

पदनाम

की उपस्थिति में

1. हस्ताक्षर

पदनाम

हस्ताक्षर

पदनाम

विश्व विद्यालय की ओर से कार्य कारिणी समिति के प्राधिकार से हस्ताक्षर और मुहरबन्द किया जाता है।

1. हस्ताक्षर

पदनाम

की उपस्थिति में

1. हस्ताक्षर

पदनाम

2. हस्ताक्षर

पदनाम

अनुसूची

पूर्णतः अध्यापक का नाम

पता

पदनाम

वेतन रूपया

वेतन मान

टिप्पणी : वेतनमान, वेतन या पदनाम पर कोई परिवर्तन होने पर उनका विवरण संक्षेप में दिया जाये।

पदनाम या कार्यकारिणी परिवर्तन अध्यापक विश्व वेतनमान में समिति के जिस तारीख का विद्यालय परिवर्तन अनुमोदन से प्रभावी हस्ताक्षर के अधिकारी की तारीख हो का हस्ताक्षर

परिशिष्ट ज

विश्वविद्यालय के अध्यापकों को छुट्टी

(अ) स्थाई अध्यापक

1. ग्राह्य छुट्टी के प्रकार

(i) स्थाई अध्यापकों को निम्नोक्त प्रकार की

छुट्टियों ग्राह्य हैं :

आकस्मिक अवकाश

विशेष आकस्मिक अवकाश

कर्त्तव्य छुट्टी

(ii) कर्त्तव्य निर्वहन से अर्जित छुट्टी

अर्जित छुट्टी

अर्द्ध वेतन छुट्टी

राशीकृत छुट्टी

(iii) कर्त्तव्य से जो छुट्टी अर्जित नहीं

असाधारण छुट्टी

छुट्टी जो देय नहीं

(iv) छुट्टी जो अवकाश लेखा में जमा न हुआ हो

(घ) शैक्षिक अनुसरण की छुट्टी

अध्ययन की छुट्टी

मबाटिकल छुट्टी

(अ) स्वास्थ्य के आधार पर छुट्टी

प्रसूति अवकाश

विशेष विकलांगता अवकाश

संगरोधावकाश

विशिष्ट मामलों में कारणों को अभिलेखकर कार्य करिणी समिति किसी भी अन्य प्रकार की छुट्टी उचित समझे जाने पर प्रदान कर सकती है।

2. (i) आकस्मिक अवकाश :

कर्त्तव्य निर्वहन से आकस्मिक अवकाश अर्जित नहीं किया जाता। एक शैक्षिक वर्ष एक अध्यापक को प्रवर्तन छुट्टी कुल दस दिन से ज्यादा न हो।

(ii) आकस्मिक अवकाश को विशेष आकस्मिक अवकाश अर्जित नहीं किया जाय। रविवार और अन्य सार्वजनिक छुट्टियों के साथ आकस्मिक अवकाश मिलाया जा सकता है। आकस्मिक अवकाश के बीच में आने वाले रविवार और सार्वजनिक छुट्टियों की गणना आकस्मिक अवकाश के साथ नहीं की जायेगी।

विशेष आकस्मिक अवकाश :

3. (i) एक अध्यापक को एक शैक्षिक वर्ष कुल 10 दिनों का आकस्मिक अवकाश ज्यादा प्रदान किया जा सकता है।

(अ) विश्वविद्यालय, लोक सेवा आयोग, मण्डल की परीक्षाएँ या अन्य अभिकरण या संस्थाओं के परीक्षाओं के संचालन के लिये

(आ) कानूनी मण्डल से संलग्न शैक्षिक संस्थाओं का निरीक्षण करने

(इ) विश्वविद्यालय के अधिकारियों से मान्यता प्राप्त साहित्यिक, वैज्ञानिक या शैक्षिक सम्मेलन, परि-संवाद संगोष्ठी या सांस्कृतिक या व्यायाम कार्य-कलाप में भाग ग्रहण करने

(ई) उपकुलपति से अनुमोदित कोई भी शैक्षिक कार्यकलाप करने

टिप्पणी:—(i) ग्राह्य 10 दिनों की छुट्टी की संगणना करते समय सम्मेलन कार्यकलाप के स्थल हो आने के वास्तविक यात्रा के दिन अप-वर्जित किये जायेंगे।

(ii) इसके अलावा, निम्नोक्त संभवनीय मात्रा में विशेष आकस्मिक अवकाश प्रदान किया जा सकता है।

(iii) इसके अलावा, निम्नोक्त संभवनीय मात्रा में विशेष आकस्मिक अवकाश प्रदान किया जा सकता है।

(अ) रोरिवर कल्याण योजना के अन्दर ग्रन्थ्यकरण शाल्य कर्म कर लेने (वासिटोमी या सालपिन लेकटोमी) के लिये छुट्टी छः कार्य दिन तक समिति की जायेगी।

(आ) एक अध्यापिका जो गैर प्र्यूमेथ्यरेल ग्रन्थ्यकरण कर लेती है —इस मामले में लिये छुट्टी 14 दिन तक सीमित की जायेगी।

(इ) विशेष आकस्मिक अवकाश का संचयन नहीं कर सकते इस आकस्मिक अवकाश को छोड़कर अन्य अवकाशों के साथ सम्मिलित नहीं किया जा सकता। इसे छुट्टियों के साथ मिलाया जा सकता है।

कर्त्तव्य अवकाश : (1) कर्त्तव्य अवकाश निम्नोक्त के लिये प्रदान किया जा सकता है —

(अ) विश्वविद्यालय की पूर्ण अनुमति से, विश्वविद्यालय के उपलक्ष्य निमंत्रण पत्र स्वीकार करके में सम्मेलन महा सम्मेलन/विचार संवाद/संगोष्ठी या तत्समान अन्य कार्य कलापों में भाग ग्रहण करने

(आ) विश्वविद्यालय को प्राप्त और उपकुलपति से स्वीकृत निमंत्रण पत्रों पर अन्य विश्वविद्यालय और संस्थाओं में भाषण प्रसूदित करने

(इ) विश्वविद्यालय से प्रतिनियुक्ति करने पर या विश्वविद्यालय के उपलक्ष्य में अन्य भारतीय या विदेशी विश्वविद्यालय अभिकरण, संस्था या संगठनों में कर्त्तव्य पालन करने

(ई) केन्द्र सरकार, प्रान्तीय सरकार, विश्व विद्यालय अनुदान आयोग या डी० एस० टी० सी० एस० ए० के०, ऐसी० ए० आ०, ए० सी० एम० आर० या अन्य विश्वविद्यालय, शैक्षिक संस्था या सार्वजनिक संस्थाओं से नियुक्त समितियों में काम करने (कार्यकारिणी समिति के प्रस्ताव सं० 88-267 दिनांक 19-11-1988 से संशोधित)

(उ) सांस्कृतिक और द्विपक्षीय विनयमि कार्यक्रम में विदेशों को प्रतिनियुक्त अध्यापक जो कर्त्तव्य अवकाश की शर्त पर प्रतिनियुक्त हुए हों।

(क) भारत में क्षेत्रकार्य में भाग लेने एक सत्र काल में अधिकतम 5 हफ्ते और तत्समान कार्य में विदेशों में भाग लेने शैक्षिक वर्ष के लिये अधिकतम 5 हफ्ते अगर किसी संकाय सदस्य को सम्मेलन में भाग ग्रहण करने कर्त्तव्य अवकाश दिया गया है और वह संकाय सदस्य कर्त्तव्य अवकाश के साथ क्षेत्र कार्य को पहले या बाद को जोड़ना चाहता है तो कुल अवकाश एक सत्र के लिये भारत सत्र के लिये कर्त्तव्य अवकाश प्रदान नहीं किया जायेगा, तदनुसार विदेशों में उक्त अवकाश कस उपयोग करने वालों को उक्त सत्र के लिये कर्त्तव्य अवकाश प्रदान नहीं किया जायेगा।

(i) विश्व विद्यालय के सामान्य शैक्षिक कार्य क्रमों को मद्दे नजर रखकर हर प्रकरण में अवकाश की अवधि का समय, मुजुरी देने वाले प्राधिकारी से विचार किया जाय लेकिन वह यह अधिकतम एक साल की अवधि का अतिक्रमण न करे।

(ii) अवकाश सबेत्तन दिया जाय, लेकिन किसी अध्यापक को अध्येतावृत्ति प्राप्य है या मानवेय या कोई वित्तीय सहायता प्राप्य है जो साधारण कार्य की जरूरत से ज्यादा है तो इस सम्बन्ध में उस कर्त्तव्य अवकाश विश्वविद्यालय के अधिनियम के अधीन घटाये वेतन और भत्ते पर प्रदान किया जायेगा।

(iii) कर्त्तव्य अवकाश को अर्जित अवकाश, असाधारण अवकाश के अर्द्धवेतन अवकाश के साथ सम्मिलित किया जा सकता है।

टिप्पणी—जहाँ छः माही सत्र का अध्ययन चालू है वहाँ सम्मेलन, क्षेत्र कार्य आदि में अध्यापकों को भाग ग्रहण का अवकाश दो हफ्ते से ज्यादा न दिया जाय और जहाँ गैर-सत्र का अध्यापन चालू है वहाँ चार हफ्ते के अवकाश का अतिक्रमण न करे।

अर्जित अवकाश

5. अर्जित अवकाश जो अध्यापकों को ग्रहण है :

(अ) दीर्घावकाश (ग्रीष्मावकाश) को मिलाकर वास्तविक सेवा का 1/30, अधिक

(आ) दीर्घावकाश में यदि उसे कोई कर्त्तव्य सौंपा गया है तो उस काल का 1/3

टिप्पणी: वास्तविक सेवा के संगणन के लिये आकस्मिक अवकाश, विशेष आकस्मिक आर कर्त्तव्य अवकाश को वर्जित कर अवधि का संगणन किया जाय।

(ii) अध्यापक के श्रेय में जो अर्जित छुट्टी है उसका संचयन 180 दिन का अतिक्रमण न करे। एक समय पर अधिकतम 120 दिन की अर्जित छुट्टी ही मंजूर किया जाय। फिर भी 120 दिन से ज्यादा अर्जित छुट्टी उच्च शिक्षा प्रशिक्षण, अस्वस्थता के आधार पर और चाहे तो संपूर्ण अवकाश या उसका एक अंश (भाग) विदेशों में व्यतीत करने संस्वीकृत किया जाय।

टिप्पणी:—1. जब कोई अध्यापक ग्रीष्मावकाश (दीर्घावकाश) का अर्जित छुट्टी के साथ सम्मिलित करता है तब पूरी अवधि को अवकाश गिना जाय और औसत वेतन की परिगणना तदनुसार की जाय।

2. जब अवकाश का एक अंश ही (भाग ही) भारत के बाहर व्यतीत किया जाय तब 120 दिन से अधिक मंजूर किये गये अवकाश में, भारत में व्यतीत किया गया अवकाश कुल 120 दिन का अतिक्रमण न करे।

आधे वेतन पर छुट्टी:—

6. सेवा पूरा किये प्रति वर्ष के लिये एक स्थाई अध्यापक को 20 दिन का अवकाश आधे वेतन पर ग्राह्य है उसे अस्वस्थता के आधार पर, निजी कार्य कलाप के लिये या शैक्षिक विषय के लिये मंजूर किया जाय।

टिप्पणी:—सेवा का सुपूरित वर्ष का मतलब है विश्व-विद्यालय में निश्चित निरन्तर सेवा जिसमें कर्त्तव्य सेवा काल तथा असाधारण अवकाश भी सम्मिलित होगा।

परिवर्तित/स्थानान्तरित छुट्टी

7. स्थाई अध्यापक को स्वास्थ्य के आधार पर निम्न-लिखित शर्तों पर रूपान्तरित छुट्टी उतना ही मंजूर किया जाय जो आधे वेतन की छुट्टी की आधी रकम से अधिक न हो।

(i) जब रूपान्तरित छुट्टी मंजूर किया जाता है तब उस तरह की छुट्टी की कुलीन रकम आधे वेतन की छुट्टी के हिसाब में नामे लिखा जाय।

(ii) इस अधिनियम के अधीन रूपान्तरित छुट्टी सक्षम अधिकारी से तभी मंजूर किया जायेगा, जब उसको पूरा विश्वास हो कि अध्यापक छुट्टी के अवसान पर कर्त्तव्य पर वापस आ जायेगा।

(iii) जब किसी अध्यापक को रूपान्तरित छुट्टी मंजूर किये जाने पर वही अध्यापक इस्तीफा देता है या कर्त्तव्य पर वापस आये बिना, स्वयमेव सेवानिवृत्त होने का अनुरोध करता है तो रूपान्तरित छुट्टी को आधे वेतन की छुट्टी में

परिवर्तित किया जायेगा और दोनों छट्टियों के याने आधे वेतन और रूपान्तरित छुट्टी के अन्तर को वसूल किया जायेगा।

बीमारी की हालत में आगे अपने कर्त्तव्य के निष्पादन में मक्षम न होने पर सेवानिवृत्ति मांगा जाय या उस अध्यापक के मौत हो जाने पर उससे उस तरह की वसूली नहीं की जायेगी।

(iv) डाक्टरी प्रमाण पत्र प्रस्तुत किये बिना अपने सम्पूर्ण सेवा काल के लिये अधिकतम 180 दिन की आधे वेतन की छुट्टी विश्वविद्यालय के हित में विश्वविद्यालय से अनुमोदित पाठ्यक्रम के अध्ययन के लिये, छुट्टी मंजूर करने वाले प्राधिकारी से प्रदान की जाय।

टिप्पणी:—अर्जित छुट्टी अध्यापक के श्रेय में होने पर भी, उनके अनुरोध पर रूपान्तरित छुट्टी मंजूर किया जाय।

असाधारण छुट्टी:—

8. (i) स्थाई अध्यापक को असाधारण छुट्टी मंजूर किया जाय।

(अ) जब उसको कोई अन्य छुट्टी ग्राह्य नहीं है या

(आ) जब अन्य छुट्टी उसे ग्राह्य होने पर भी, अध्यापक के लिखित रूप में असाधारण छुट्टी मंजूर करने की प्रार्थना पर प्रस्तुत करने पर

निम्नोक्त उपखण्ड एक से चार तक के अधीन विश्व-विद्यालय से बाहर अधी छान्त्रवृत्ति पाने वाले या नौकरी करने वाले (पदधारण करने वाले) अध्यापकों को असाधारण छुट्टी मंजूर नहीं की जायेगी।

(ii) सरकार के अधीन विश्वविद्यालय में अनुसन्धार में केन्द्र में या समकक्ष प्रमुख संस्थान में पद ग्रहण करने या अधी-छान्त्र वृत्ति पाने के लिये कार्यकारिणी समिति की राय पर वह विश्वविद्यालय के हित के प्रतिकूल न होने पर अध्यापक के अनुरोध पर और सम्बद्ध संस्था से निवेदित किये जाने पर कार्यकारिणी समिति असाधारण छुट्टी को मंजूरी कर सकती है यह अवकाश उन्हीं अध्यापकों को दिया जा सकता है जो स्थाई बन चुके हो और जिन्होंने विश्व-विद्यालय में न्यूनतम दो वर्ष का सेवा काल पूरा किया हो इस उपखण्ड में और उपखण्ड (iii) में निर्देशित शर्तों पर ही यह अवकाश मंजूर किया जायेगा।

इस अवकाश के लिये प्रार्थना पत्र सम्बद्ध संकायध्यक्ष के द्वारा भेजे और वहीं अध्यक्ष तद्विषयक अध्यापन कार्यकर्त्ताओं की संख्या के हिसाब में लेकर अपनी सिफारिश देंगे। विशेष प्रकरणों को छोड़कर एक केन्द्र के कुल अध्यापकों की संख्या के 20% से ज्यादा अध्यापकों को असाधारण छुट्टी पर केन्द्र से अनुपस्थित होने न दें।

छुट्टी के अवसान पर तुरन्त कर्त्तव्य पर लौटने से चूक जाने पर जिस दिन से उसे छुट्टी की मंजूरी दी गई है उसे

दिन से उसकी सेवा की समाप्ति की जा सकती है। उसने विश्वविद्यालय से अवकाश की अवधि में (और उसके आगे अन्य कोई अवकाश लेने पर (जो वेतन और भत्ता प्राप्त किया हो, उसे विश्वविद्यालय को लौटा देना होगा।

कार्यकारिणी समिति स्वमति से एक स्थाई अध्यापक को असाधारण अवकाश किसी विश्वविद्यालय में अध्यापन या अनुसन्धान अथ पूरा के लिए चुने जाने पर या अनुसन्धान संस्था के लिये या उसके समकक्ष प्रमुख संस्था के लिये चुने जाने पर यदि निवेदन पत्र विश्वविद्यालय के जरिये अग्रेवित किये जाने पर और अध्यापक से दो वर्ष का सेवा काल पूरा किये जाने पर, कार्य कारिणी समिति एक स्थाई अध्यापक को असाधारण छुट्टी मंजूर कर सकती है। ऐसे मामलों में छुट्टी की अवधि दो वर्ष से ज्यादा न हो। अन्य किसी भी प्रकार का अवकाश अध्यापक को देय होने पर भी भारत के बाहर जिस अवधि के लिये पद ग्रहण करता है वह पूरी अवधि वेतन बिना ही होगी। वह सेवा काल, सेवा में ज्येष्ठता के लिये गिना जायेगा। पेशनिक फायदे/अंशदायी भविष्य निधि फायदे के लिये सभी उसकी गणना की जायेगी जब पेशनिक अंश दायी भविष्य निधि का अंशदान सम्बद्ध अध्यापक या विदेशी नियोजक से अदा किया जायेगा।

मंजूर की गई असाधारण छुट्टी के अवसान पर विश्व-विद्यालय में अध्यापक के अपने कर्त्तव्य पर लौटने से चूक जाने पर वह अध्यापक विश्वविद्यालय से पद-त्याग किया माना जायेगा।

(iv) निम्नोक्त उप खण्ड (vii) के अधीन, उप-रोक्त उप खण्ड (ii) और (iii) के अन्दर अध्यापक को मंजूर की गई असाधारण छुट्टी उसके सुपूर्ण सेवा काल में पांच वर्ष का अतिक्रमण न करे। विश्वविद्यालय के जिन अध्यापकों को व्यवसाय पंचाट प्रदत्त है पंचाट काल के लिये उपरोक्त उप खण्ड के अलावा असाधारण छुट्टी के लिए पात्र होंगे बशर्ते कि वे पंचाट काल में विश्वविद्यालय में पंचाट काल में रहें।

(v) साधारण छुट्टी हमेशा वेतन बिना ही होगी। असाधारण छुट्टी के समय के भत्ते के भुगतान, तत्सम्बन्धी नियमों से शासित होंगे।

(vi) निम्नोक्त को छोड़कर, असाधारण छुट्टी वार्षिक वेतन वृद्धि के लिये नहीं गिना जायेगा।

(अ) डाक्टरी प्रमाण पत्र पर ली गई छुट्टी

(आ) नागरिक संशोधन के कारण कार्य भार ग्रहण करने में मुसीबत होने पर या प्राकृतिक विपदाओं के कारण कार्य भार ग्रहण करने में मुसीबत होने पर या प्राकृतिक विपदाओं के कारण कार्य भार ग्रहण करने में मुसीबत होने पर, अध्यापक के हिसाब में अन्य किसी तरह की छुट्टी न होने पर उप कुलपति से यह विश्वास और तृप्त होने पर कि उपरोक्त सम्बन्धों में अध्यापक से ली गई छुट्टी अध्यापक के नियंत्रण के बाहर है।

- (इ) उच्च शिक्षा जारी रखने की गई छुट्टी।
- (ई) अध्यापन पद, अधिछात्र वृत्ति, शोध व अध्यापन पद, टेक्निकी और शैक्षिक प्रमुखता वाले अभ्यार्पण (निषिष्ट कार्य) स्वीकार करने मंजूर की गई, छुट्टी।
- (vii) आकस्मिक अवकाश और विशेष आकस्मिक अवकाश के सिवा अन्य छुट्टियों के साथ, असाधारण छुट्टी सम्मिलित की जा सकती है, डाक्टरी प्रमाण पत्र को छोड़कर कर्तव्य सेवा से निरन्तर अनुपस्थिति जब दीर्घावकाश (ग्रीष्मकालीन अवकाश) के साथ मिलाकर लिया जाता है तब वह अवधि तीन साल का अतिक्रमण न करे। अध्यापकों के सेवा काल में कर्तव्य सेवा से निरन्तर अनुपस्थिति कुल मिलाकर पांच वर्ष का अतिक्रमण न करे।
- (viii) छुट्टी मंजूर करने अधिकृत अधिकारी छुट्टी के बिना लिये गये भूतलक्षी अनुपस्थिति काल को, असाधारण छुट्टी में रुपान्तरित (परिवर्तित) कर सकते हैं।

छुट्टी शेष नहीं:—

- (i) स्थाई अध्यापक को उपकुलपति अपनी स्वमति में उसके सम्पूर्ण सेवा काल के लिये 360 दिन तक छुट्टी शेष नहीं मंजूर कर सकते हैं। उसमें एक समय 90 दिन और 180 या उससे ज्यादा दिन डाक्टरी प्रमाण पत्र पर मंजूर कर सकते हैं। यह छुट्टी तत्पश्चात् अर्जित आधे वेतन छुट्टी के हिसाब में नामे डाला जायेगा।
- (ii) छुट्टी शेष नहीं उपकुलपति से तभी मंजूर की जायेगी जब उसे परिपूर्ण विश्वास हो कि वह अध्यापक छुट्टी के अवसान पर अपनी कर्तव्य सेवा पर लौट आयेगा और प्रदत्त छुट्टी तत्पश्चात् अर्जित कर लेगा।
- (iii) जिस अध्यापक के लिये छुट्टी शेष नहीं मंजूर किया जाता है उसे छुट्टी लेखा के नामे बाकी के अर्जित होने तक सेवा से त्याग पत्र देने की अनुमति नहीं दी जायेगी। उस अनर्जित छुट्टी की अवधि के निपटान के लिये सक्रिय सेवा करनी चाहिये या उस अनर्जित अवधि के लिये आहूत वेतन और भत्ते आपस करना होगा। यदि असंभव्यता के कारण सेवा निवृत्ति अपरिहार्य है तो कार्य कारिणी समिति पूर्ववर्ती सेवा की असमर्थता पर विश्वास कर छुट्टी वेतन की वापसी की शर्त को ढीला कर सकती है।

कार्यकारिणी समिति असामान्य परिस्थितियों में वास्तविक कारणों को अभिलिखित कर अनर्जित छुट्टी वेतन की वापसी को छूट दे सकती है।

अध्ययनार्थ छुट्टी:—

10(अ) विशेष शाखा के अध्ययन/अनुसन्धान/विश्व-विद्यालय संगठन और शिक्षण विधियों के विशेष अध्ययन करने और उक्त पाठ्यक्रम के अध्ययन से या शोध परियोजना

से विश्वविद्यालय के हित होने पर तीन वर्षों के अनवरत सेवा काल पूरा किये पूर्णकालीन आचार्य/सहयुक्त आचार्य को "अध्ययनार्थ" छुट्टी विश्वविद्यालय मंजूर कर सकती है।

तीन वर्षों के अनवरत सेवा काल की शर्त को विशेष परिस्थिति में कार्यकारिणी समिति ढीला कर सकती है।

(आ) दो वर्षों का अनवरत सेवा काल जिस सहायक आचार्य के हिसाब में हो, उसे विशेष शाखा के अध्ययन के लिये विश्वविद्यालय संगठन में अपने क्षेत्र से सम्बद्ध विषय में और शिक्षा विधि में अनुसन्धान करने अपनी परियोजना प्रस्तुत करने पर अध्ययनार्थ छुट्टी मंजूर कर सकता है।

ब्याख्या:

सेवा काल की संगणना करते समय परिवीक्षण काल या अनुसन्धान सहायक के काम में लगे हुए काल को गिना जाये—परन्तु यदि कि

(अ) निवेदन करते समय उम्मीदवार अध्यापन कार्य में लगा हुआ हो।

(आ) सेवा भंग (सेवा में व्यवधान) न हो।

(ii) एक विभाग/विद्यालय के अध्यापक को अध्ययनार्थ छुट्टी विद्यालय के सम्बद्ध मण्डल की सिफारिश पर मंजूर किया जा सकता है। अध्ययनार्थ छुट्टी दो वर्षों से ज्यादा मंजूर न किया जाय। असाधारण मामलों में कार्य कारिणी समिति के तृप्य होने पर शिक्षा के लिये विश्वविद्यालय के हित के लिये आवश्यक समझे जाने पर अवधि बढ़ाई जा सकती है। किसी भी कारण से अध्ययनार्थ छुट्टी तीन साल का अतिक्रमण न करे।

अध्ययनार्थ छुट्टी के अवसान पर सेवा में शामिल होने वाले अध्यापक जिन्हें पूर्ववर्ती सेवा काल तीन वर्षों कम है उस अवधि के दौरान में सेवा निवृत्त होने वाले अध्यापकों को उक्त छुट्टी मंजूर नहीं की जाय।

(iv) प्रथम अध्ययनार्थ छुट्टी के उपयोग के उपरान्त या विश्रान्ती अवकाश के उपरान्त पांच वर्षों का सेवा काल पूरा किये जाने पर ही द्वारा अध्ययनार्थ छुट्टी मंजूर की जा सकती है। पूर्ववर्ती छुट्टी के लिये निवेदन करते समय पूर्ववर्ती छुट्टी के समय प्रस्तावित कार्य का विवरण सविस्तार दिया जाना होगा।

(v) कार्य कारिणी समिति की अनुमति के बिना तत्काल पाठ्यक्रम या अनुसन्धान परियोजना को परिष्कृत नहीं किया जा सकता। पाठ्यक्रम की अवधि, अध्ययनार्थ छुट्टी से कम होने पर, पाठ्यक्रम की अवधि अध्ययनार्थ छुट्टी से कम होने पर, पाठ्यक्रम के अध्ययनोपरान्त अध्यापक को कर्तव्य सेवा में शामिल हो जाना चाहिये और कमी की उस अवधि को सामान्य अवधि भरने जरूरी या अनुमोदन कार्य कारिणी समिति से प्राप्त किया जाना चाहिये।

(vi) (अ) निम्नोक्त उप खण्ड (vii) और (viii) उप खण्डों के अधीन अध्ययनार्थ छुट्टी सर्वेतेन प्रथम वर्ष के लिये अर्धवेतन के साथ द्वितीय वर्ष के लिये और तदुपरान्त किसी भी तरह का वेतन आचार्य और उपचार्यों को ग्राहण नहीं है। 250 रुपये का निर्वाह खर्च भत्ते के सिवा अध्ययनार्थ छुट्टी पंजीकृत अध्यापक, उस अवधि के लिये सुपूर्ण वेतन, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के संकाय सुधार योजना के अन्दर अधिछात्रवृत्ति प्राप्त अध्यापकों की समता पर पाने के हकदार होंगे।

टिप्पणी:—

वेतन शब्द का निर्देशन औसत वेतन के प्रति है और छुट्टी नियमावली में निर्दिष्टानुसार उसकी संगणना की जायेगी।

(अ) अध्यापक, अध्ययनार्थ छुट्टी के लिये मकान किराया भत्ता या नगरप्रतिकार भत्ता पाने सामान्यतः हकदार नहीं होंगे। लेकिन उष्णकूलपति उक्त भत्ता अंशतः या पूर्ण रूप से विशेष परिस्थितियों में मंजूर कर सकते हैं।

(vii) सर्वेतेन अध्ययनार्थ छुट्टी प्रदत्त अध्यापक छात्र-वृत्तियां अधिछात्रवृत्ति या अन्य वित्तीय सहायता पाने बाधक नहीं होंगे, लेकिन उनके वेतन और भत्ते अध्ययनार्थ छुट्टी काल के लिये नियत करने इन छात्रवृत्तियों को हिसाब में लिया जायेगा।

(viii) अध्ययनार्थ छुट्टी प्राप्त अध्यापक को, किसी अंश-कालीन नौकरी के लिये देय पारिश्रमिक उस अवधि में प्राप्त होने पर, सामान्यतः उसे अध्ययनार्थ छुट्टी वेतन प्रदान नहीं किया जायेगा। लेकिन अंशकालीन नौकरी के लिये देय पारिश्रमिक अपर्याप्त समझे जाने पर, कार्यकारिणी समिति हर प्रकरण का अध्ययन कर उन्हें देय वेतन का इरादा कर सकती है।

टिप्पणी:—

किसी भी रूप में किसी भी व्यक्ति या संस्था से प्राप्त वित्तीय सहायता को तुरन्त विश्वविद्यालय को सूचित करना अध्ययनार्थ छुट्टी प्राप्त अध्यापकों का कर्तव्य है।

(ix) अधिकतम अनुमति तीन वर्ष के अध्ययनार्थ छुट्टी, अर्जित छुट्टी, अर्जित छुट्टी, अर्धवेतन छुट्टी, प्रसाधारण छुट्टी या दीर्घावकाश (ग्रीष्मावकाश) के साथ सम्मिलित किया जा सकता है, परन्तु यह तब जब अध्ययनार्थ छुट्टी के प्रारम्भ में अध्यापक के हिसाब में जो अर्जित छुट्टी है उसका उपयोग किया जाय। लेकिन ग्रीष्मावकाश के क्रम में जब अध्ययनार्थ छुट्टी ली जाती है, तब उसका प्रारम्भ दीर्घावकाश अवसान से प्रारम्भ होगा।

(x) अध्ययनार्थ छुट्टी प्रदत्त अध्यापकों का वार्षिक वेतन वृद्धि जब कभी देय हो, दी जायेगी। फिर भी उपरोक्त उपखण्ड (vii) और (viii) के अधीन अध्ययनार्थ छुट्टी उपयोग करने वाले अध्यापकों की परिलब्धि में कमी कर दी जायेगी।

(xi) पेंशन (निवृत्तिक), अंशदेय निर्वाह निधि के लिए अध्ययनार्थ छुट्टी संगणित की जायेगी, बशर्ते कि अध्ययनार्थ छुट्टी के अवसान पर विश्वविद्यालय में अपने कर्तव्य पर लग जायें और बन्धन पर में निष्पादित अवधि के लिये विश्व-विद्यालय में सेवा करें।

(xii) मंजूरी दी जाने के दिन से बारह महीने के अन्दर अध्ययनार्थ छुट्टी का उपयोग नहीं किये जाने पर निरस्त कर दी जायेगी, ऐसी हालत में आगे अध्ययनार्थ छुट्टी के लिये अध्यापक को ताजा प्रार्थना पत्र प्रस्तुत करना होगा।

(xiii) अध्ययनार्थ छुट्टी उपयोग करने वाले अध्यापक को छुट्टी का कुल अवधि काल या तीन वर्ष के लिये, जो भी कम हो, विश्वविद्यालय की अनवरत सेवा करने का लिखित बंधन बंध देना होगा, अध्यापक के अध्ययन छुट्टी के अवसान पर

(xiv) एक अध्यापक

(अ) जो अध्ययनार्थ प्रदत्त छुट्टी में अपना अध्ययन पूरा करने में सक्षम नहीं है।

(आ) अध्ययनार्थ छुट्टी के उपरान्त जो विश्वविद्यालय में कार्य ग्रहण करने में सक्षम नहीं है।

(इ) जो विश्वविद्यालय में पुनः कार्य ग्रहण करने के बाद बंधन पत्र में निष्पादित अवधि पूरा करने से पहले अपनी सेवा से अलग हो जाता है।

(ई) जो उक्त अवधि के दौरान में वियुक्त किया जाता है या जो विश्वविद्यालय की सेवा से हटाया जाता है उन्हें छुट्टी, वेतन और भत्ते तथा अन्य खर्च जो अध्यापक के लिए व्यय हुआ या उसे दिया गया या उसकी ओर से विश्व-विद्यालय से उसके पाठ्यक्रम के अध्ययन के लिए दी गयी उन्हें विश्वविद्यालय को वापस अदा करना होगा।

बंधन-पत्र में निष्पादित अवधि के अर्द्ध भाग से अधिक काल यदि किसी अध्यापक ने विश्वविद्यालय की सेवा की है तो उपरोक्त अध्यापक के अध्ययन के लिए संगणित रकम का आधा भाग विश्वविद्यालय को बिना वेतन व भत्ते की छुट्टी दी गई तो अन्तिम चार महीने के वेतन व भत्ते के समकक्ष और अन्य व्यय जो हुआ उन्हें विश्वविद्यालय को अदा कर देना चाहिए।

व्याख्या :—

अध्यापक से अध्ययन छुट्टी बढ़ाये जाने की प्रार्थना पर और उसे मंजूर नहीं किए जाने पर और मंजूर की गई वास्तविक छुट्टी के अवसान पर सेवा में शामिल नहीं होने पर अधिनियम के अधीन विश्वविद्यालय को देय रकम की वमूली के लिए यह माना जाएगा कि छुट्टी कि अवसान पर वह अध्यापक अपने कर्तव्य पद में शामिल नहीं हुआ

(अ) उपरोक्त के होते हुए भी कार्यकारिणी समिति आदेश दे सकती है कि यह अधिनियम उन अध्यापकों के लिए लागू नहीं होगा जो बंधन-पत्र में निष्पादित निर्दिष्ट

सेवाकाल के बीच में अस्थिरता के आधार पर सेवा निवृत्त में अनुमित किये जायें। परन्तु यह तब जब कि इस खण्ड के अधीन कार्यकारिणी समिति विशिष्ट मामलों में कारणों को अभिलिखित कर विश्वविद्यालय को देय रकम से अध्यापक को छूट दे सकती है या उसे घटा सकती है।

(xv) अध्ययनार्थ छुट्टी मंजूर किए जाने के बाद, उसका उपभोग करने के पहले अनुलग्नक (iii) में दिए गये बंधपत्र के प्रपत्र में उपरोक्त उपखण्ड xiii और xiv में उल्लिखित शर्तों को विश्वविद्यालय के पक्ष में अपने को आवद्ध कर उप खण्ड 14 के अधीन विश्वविद्यालय को प्रतिदाय धनराशि के लिए, वित्तीय अधिकारी के समानार्थ अचल संपत्ति की प्रतिभूति, बीमा कम्पनी के विश्वस्था बंध पत्र, अनुसूचित बैंक से प्रत्यभूति या दो स्थायी अध्यापकों से प्रत्याभूति प्रस्तुत करना चाहिए।

(xvi) अध्यापक से अपने निरीक्षक/संस्था के अध्यक्ष से छः मासिक प्रगति प्रगतिवेदन कुलसचिव को प्रस्तुत किया जाना चाहिए। अध्ययनार्थ छुट्टी के प्रति छः महीने के अवसान के एक महीने यह प्रतिवेदन प्रस्तुत किया जाना चाहिए। निर्दिष्ट समय के अन्दर कुलसचिव को यह प्रतिवेदन समर्पित नहीं किये जाने पर, उक्त प्रतिवेदन की प्राप्ति तक अदायगी (संदाय) आस्थगित की जाएगी।

विश्रान्ति छुट्टी :

(i) विश्वविद्यालय के हित के लिए, तीन वर्ष का सेवा काल पूरा किये विश्वविद्यालय के स्थायी अध्यापकों को अध्ययन, अनुसंधान या अन्य शैक्षिक प्रगति या अपने क्षेत्र के विषय की प्रवीणता बढ़ाने, विश्राम अवकाश मंजूर किया जा सकता है। विश्वविद्यालय से सेवा निवृत्त होने से एक वर्ष से कम सेवाकाल ही जिन अध्यापकों को है, उन्हें यह छुट्टी मंजूर की जाएगी।

(ii) प्रथम विश्रान्ति अवकाश से आने के उपरान्त अध्यापक के विश्वविद्यालय में छः या बारह (छः माही) सत्र के वास्तविक सेवा काल के अनुपात में, छुट्टी की अवधि एक या दो सत्र की होगी। पूर्व अध्ययनार्थ छुट्टी या किसी प्रशिक्षण के उपरान्त छः सत्र के अवसान हुए बिना विश्राम अवकाश मंजूर नहीं किया जाएगा।

(iii) निर्धारित शर्तों के पूरा किये जाने पर विश्राम अवकाश में जाने के पहले के लागू दर पर वेतन और भत्ता अध्यापकों को विश्राम अवकाश की अवधि के लिए मंजूर किया जाएगा। लेकिन विश्वविद्यालय उस अवधि के लिए अतिरिक्त खर्च उठाकर उसके रिक्त स्थान की पूर्ति या वैकल्पिक व्यवस्था नहीं करेगा।

(iv) विश्राम अवकाश का उपयोग करनेवाला अध्यापक उस छुट्टी के अवसर पर कोई नियमित मियुक्ति भारत में स्थित अन्य किसी भी संगठन या संस्था में ग्रहण नहीं करे। उच्च अध्ययन संस्था में नियमित नियुक्ति को छोड़कर, अधिछात्रवृत्ति अनुसंधान छात्रवृत्ति, तदर्थ अध्यापन, मानदेय के साथ शोध कार्य या किसी भी तरह की वित्तीय सहायता

पाने की अनुमति दी जा सकती है। ऐसे मामलों में कार्य-कारिणी समिति चाहने पर, विश्राम अवकाश घटाये वेतन व भत्ते पर मंजूर कर सकती है।

(v) अध्यापक को विश्राम अवधि काल में नियत तारीख को वेतन वृद्धि पाने की अनुमति दी जाएगी। पेंशन अंश देय निर्वाह निधि के लिए यह छुट्टी संगणित की जाएगी बशर्ते कि यह अध्यापक छुट्टी के अवसान पर अपना कार्य ग्रहण करे।

टिप्पणी :

(1) विश्राम अवकाश के पाठ्यक्रम की योजना, विश्वविद्यालय, छुट्टी मंजूरी करने के अनुमोदन के लिए प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

(2) छुट्टी के वापस आने पर विश्वविद्यालय को छुट्टी के अवसर के अध्ययन की प्रवृत्ति, शोध, संग्रहीत कार्य आदि का प्रतिवेदन अध्यापक प्रस्तुत से किया जाना चाहिए।

प्रसूति अवकाश :

12. (i) एक अध्यापिका को प्रारंभ की तारीख से 90 दिन की प्रसूति छुट्टी सवेतन मंजूर की जा सकती है।

(ii) गर्भ च्युति, गर्भस्त्राव के लिए भी छः हफ्ते की छुट्टी की मंजूरी दी जा सकती है, बशर्ते कि डाक्टरों प्रमाण पत्र से छुट्टी का प्रार्थना पत्र समर्थित किया जाये।

(iii) प्रसूति अवकाश को अर्जित छुट्टी अर्द्ध वेतन छुट्टी व असाधारण छुट्टी के साथ सम्मिलित किया जा सकता है, लेकिन प्रसूति छुट्टी के आगे कोई भी छुट्टी तभी मंजूर की जाएगी जब उसका समर्थित डाक्टरों प्रमाण पत्र से हो।

(iv) खण्ड 12 (iii) के उपबंध के होते हुए भी कोई भी छुट्टी (प्रसूति छुट्टी के आगे निवेदित 60 दिन तक हि रूपांतरित छुट्टी) डाक्टरों प्रमाण पत्र से समर्थन किये जाने पर मंजूर की जा सकती है।

(v) खण्ड 12 (iv) के उपबंध के अधीन विश्वविद्यालय को प्रसूति छुट्टी के आगे डाक्टरों प्रमाण पत्र के समर्थन से अस्वस्थता के आधार पर छुट्टी सम्मोदित की जा सकती है। नवजात शिशु की अस्वस्थता के अवसर पर रुग्ण बच्चे की सेवा के लिए माता का व्यक्तिगत के ध्यान, घनिष्ट सेवा शुश्रूषा अत्यावश्यक समझे जाने पर डाक्टरों प्रमाण पत्र के समर्थन पर उक्त छुट्टी सम्मोदित की जा सकती है।

विशेष अपंगता छुट्टी :

(अ) साशय (जान बुझकर) पहुंचाई चोट के लिए विशेष अपंगता छुट्टी —

13. (i) दफ्तरी कर्तव्य के निष्पादन में दफ्तरी पद ग्रहण के परिणामस्वरूप किसी अध्यापक को साशय पहुंचाई या उत्पादित चोट के लिए विशेष अपंगता छुट्टी अध्यापकों को सम्मोदित की जा सकती है।

(ii) अपंगता की घटना से तीन महीने के अन्दर अपंग अध्यापक से सत्वरता के साथ सूचित नहीं किये जाने पर उक्त छुट्टी मंजूर नहीं की जाएगी।

जिस दुर्घटना के परिणामस्वरूप अध्यापक की अपंगता हुई उसका समाधान, सक्षम सम्मोदन अधिकारी को होने पर, तीन महीने के भीत जाने पर भी छुट्टी की अभ्यर्थना मंजूर की जा सकती है।

(iii) सम्मोदित छुट्टी की अवधि 24 महीने का अतिक्रमण न करे और प्राधिकृत चिकित्सीय परिचर से प्रमाणित किया जाये।

(iv) किसी अन्य प्रकृति की छुट्टी के साथ विशेष अपंगता छुट्टी सम्मिलित की जा सकती है।

(v) एक से अधिक बार दुर्घटना के होने पर अपंगता की स्थिति गंभीर होने पर परवर्ती किसी दिन तदनु रूप दुर्घटना के होने पर अपंगता के लिए सम्मोदित की जाने वाली विशेष अपंगता की छुट्टी 24 महीने का अतिक्रमण न करे।

(vi) पेंशन (निवृत्तिक) के लिए विशेष अपंगता छुट्टी कर्तव्य के रूप में संगणित की जा सकती है। इस अधिनियम के उपखण्ड vii के खण्ड "अ" के अधीन सम्मोदित छुट्टी के सिवा अन्य छुट्टी, छुट्टी के हिसाब के नामे लिखा जायेगा।

(vii) उस अवकाश के समय छुट्टी का वेतन :

(अ) किसी भी अवधि के प्रथम 120 दिनों के लिए उपखण्ड (v) के अन्तर दिया जाने वाला वेतन अर्जित छुट्टी के उपभाग के वेतन के बराबर का होगा।

(आ) छुट्टी के अवशेष अवकाश के लिए अर्द्धवेतन छुट्टी के बराबर का वेतन दिया जायेगा। कार्यकर्ता को अपने विकल्प पर उपखण्ड "अ" के अधीन छुट्टी का वेतन आगे 120 दिनों के लिए दिया जा सकता है, लेकिन ऐसे मामलों में वह छुट्टी उसके अर्द्ध वेतन हिसाब के नामे लिखा जाएगा।

(viii) आकस्मिक आघात (अनिष्ट) के लिए विशेष अपंगता छुट्टी :

दफ्तरी कर्तव्य निष्पादन के परिणामस्वरूप, शासकीय स्थिति के फलस्वरूप किसी कर्तव्य निष्पादन से बीमारी या रुग्णावस्था की स्थिति गंभीर होने पर, निर्वाहित पद के मामूली जोखिम से परे होने पर, आकस्मिक घटना से आहत अध्यापकों को उपरोक्त भाग "अ" में उल्लिखित उपबन्ध लागू होगा।

(ix) विशेष अपंगता की छुट्टी ऐसे मामलों में आगे की शर्त के अधीन मंजूर की जाएगी।

(अ) अपंगता किसी रोगवश होने पर जिस निर्दिष्ट कर्तव्य-निष्पादन से अपंगता हुई उसे प्राधिकृत चिकित्सीय परिचर से प्रमाणित किया जाना चाहिए ;

(आ) सेवाकाल में रोगग्रस्त होकर अपंग हो जाने पर, विविष्ट परिस्थितियों में, सम्मोदन अधिकारी को उसका समाधान होने पर; और

(इ) प्राधिकृत चिकित्सीय परिचर से मिफारिश की गई अनुपस्थिति केवल काल अंशतः अधिनियम में शामिल हो और अवशेष छुट्टी के अन्य किसी अधिनियम से शासित हो और विशेष अपंगता के लिए मंजूरीकृत छुट्टी वेतन, अर्जित छुट्टी वेतन के अनुमित के बराबर हो और वह किसी भी अवस्था में 120 दिन का अतिक्रमण न करे।

14(i) अध्यापक की गृहस्थी में या परिवार में संक्रामक रोग के फलस्वरूप कर्तव्य से अनुपस्थिति की अनुमति अपरिहार्य होने पर ली जाने वाली छुट्टी संगरोध छुट्टी है।

(ii) संगरोध छुट्टी डाक्टर की प्रमाण पत्र 21 दिन तक के लिए दी जा सकती है। असामान्य स्थितियों में काल सीमा को 30 दिन तक बढ़ायी जा सकती है। उपरोक्त अवधि से अतिरिक्त छुट्टी संक्रामक रोग के कारण आवश्यक होने पर वह मामूली छुट्टी मानी जाएगी। संगरोध छुट्टी को अर्जित छुट्टी, अर्द्धवेतन छुट्टी या असाधारण छुट्टी के साथ सम्मिलित किया जा सकता है।

(iii) जो अध्यापक संगरोध छुट्टी पर है, वह कर्तव्य से अनुपस्थिति में नहीं माना जाएगा और उसका वेतन भी प्रभावित नहीं होगा।

दीर्घावकाश :

15(i) आकस्मिक अवकाश और विशेष आकस्मिक अवकाश दीर्घावकाश से सम्मिलित नहीं किया जाए और दीर्घावकाश को अन्य किसी छुट्टी के आदि और अन्त दोनों तरफ से नहीं जोड़ा जाये।

(ii) विशेष परिस्थितियों को छोड़कर दीर्घावकाश और अर्जित छुट्टी दोनों मिलाये जाने पर एक सत्र (छः महीने) का अतिक्रमण न करे।

(iii) जब दीर्घावकाश दो छुट्टियों के बीच में आता है जिसके परिणाम स्वरूप सारी अवधि में कर्तव्य से अनुपस्थित रहने की स्थिति है, तो ऐसे दीर्घावकाश छुट्टी का अंश माना जाए।

(iv) कर्तव्य काल में जो वेतन मिले वही वेतन दीर्घावकाश में भी पाने अध्यापक हकदार (अधिकारी) होंगे। अध्यापक के त्याग पत्र दीर्घावकाश के दौरान में प्रस्तुत किया जाने पर और सूचना अवधि का अवसान उसी अवधि के दौरान में या ग्रीष्मावकाश में समाप्त तारीख से 30 दिन के अन्दर होने पर उस अवकाश के लिए अर्द्ध वेतन पाने के लिए ही अध्यापक हकदार होंगे।

(आ) परीक्षा में नियुक्त अध्यापक :

मौलिक रिक्त स्थान पर परीक्षा की शर्तों पर परीक्षाधीन नियुक्त अध्यापक, परीक्षावधि में मौलिक स्थान के लिए ग्राह्य छुट्टी पाने योग्य है। परीक्षाधीन नियुक्त

अध्यापक को किसी कारणवश सेवानिवृत्त करने का प्रस्ताव है तो परिवीक्षावधि के उपरान्त या पूर्वतर तारीख को कार्य-कारिणी समिति के आवेग से पवच्युत किये जाने वाले अध्यापकों को परिवीक्षावधि के उपरान्त या उसके पहले के मामलों में सेवानिवृत्त होने के बाद कोई भी छुट्टी सम्मोचित नहीं की जाए। इसके मुकाबल कोई अध्यापक परिवीक्षाधीन नियुक्त होने पर और जिस पद के लिए नियुक्त हुआ हो मौलिक रिक्त स्थान न होने पर और वह सेवा के लिए उपयुक्त मूल्यांकित किये जाने पर उस अध्यापक की मौलिक किसी पद पर नियुक्ति होने पर्यन्त छुट्टी के सम्मोचन के मामले में अस्थायी अध्यापक समझा जाएगा। विश्वविद्यालय के कोई स्थायी अध्यापक उच्च पद पर परिवीक्षाधीन नियुक्त होने पर उस परिवीक्षाधीन में उसके अपने स्थायी पद के लिए लागू छुट्टी के विधि लाभ से वंचित नहीं रहेगा।

(इ) सेवा निवृत्त होकर पुनर्नियुक्त अध्यापक :—

सेवा निवृत्ति के बाद प्रथम अवसर पुनर्नियुक्त होने पर अध्यापक के उपबंध लागू होंगे। पुनर्नियुक्त पेंशन भोगी (निवृत्तिक) जिन्हें छुट्टी के मामले में नयी नियुक्ति के समान माना जाता है, निम्नोक्त खण्ड 21 के उपखण्ड 12 के अधीन सेवान्त छुट्टी सम्मोचित की जाएगी लेकिन सेवान्त छुट्टी के दौरान, पुनर्नियुक्ति काल में पेंशन आस्थगित रखे जाने पर सेवान्त छुट्टी में पेंशन आहरण करने के अधिकारी नहीं होंगे।

(ई) अस्थायी अध्यापक :

18. निम्नोक्त शर्तों व अपवाद पर अस्थायी अध्यापक भाग "अ" के उपबंध से शामिल होंगे।

(i) अर्जित छुट्टी :

(क) अस्थायी अध्यापक स्थायी अध्यापकों के जैसे निम्नोक्त छुट्टियों के लिए अधिकारी होंगे।

(j) वीर्षावकाश को (दीर्घावकाश) मिलाकर वास्तविक सेवा का 1/30 (अधिक, वन,)

(ii) दीर्घावकाश में यदि उसे कोई कर्तव्य सौंपा गया है तो उस काल का 1/3 (एक तिहाई)

(2) अर्द्ध वेतन छुट्टी :

छुट्टी सम्मोचित करनेवाले सक्षम अधिकारी को यथायोग्य छुट्टी के अवसान पर लौटने का समाधान होने पर ही अध्यापक को अर्द्धवेतन छुट्टी मंजूर का जाए।

(3) परिवर्तित/रूपान्तरित छुट्टी :

अर्द्धवेतन छुट्टी के किसी भी अंश को अस्थायी अध्यापक रूपान्तरित करने का हकदार नहीं।

(4) असाधारण छुट्टी :

अस्थायी अध्यापकों की असाधारण छुट्टी की अवधि निम्नोक्त सीमाओं का अतिक्रमण नहीं करें :—

(क) एक समय पर तीन महीने

(ख) डाक्टरी प्रमाण पत्र से छुट्टी के आवेदन पत्र का समर्थन दिये जाने पर तीन वर्ष के सतत सेवा काल की पूर्ति के लिए छः महीने।

(ग) क्षयरोग, कर्कटरोग, कोढ़ रोग के लिए मान्यता प्राप्त अस्पताल में चिकित्सा लेने 18 महीने की छुट्टी।

(घ) निवेदित अध्यापक के असाधारण छुट्टी के प्रारम्भ विन तीन वर्ष का सतत सेवा काल पूरा किये जाने पर और वह विश्वविद्यालय के हित में प्रमाणित किये जाने पर उच्च शिक्षा का अध्ययन जारी रखने 24 महीने की असाधारण छुट्टी सम्मोचित की जा सकती है। जहां इस शर्त की पूर्ति नहीं होती वहां अन्य देय अभ्यर्थित छुट्टियों के साथ असाधारण छुट्टी को सम्मिलित किया जा सकता है उक्त छुट्टी के अवसान पर अगर अध्यापक ने तीन वर्ष का सेवाकाल पूरा किया हो तो उपरोक्त "अ" के अधीन तीन महीने का असाधारण अवकाश मंजूर किया जा सकता है।

(ii) सम्मोचित अधिकतम छुट्टी के उपरान्त, जब कोई अस्थायी अध्यापक कर्तव्य में लगने से बूक जाते हैं या (i) के अधीन जब किसी अध्यापक को कम दिनों की छुट्टी दी जाने पर कर्तव्य से अनुपस्थित रहे और अनुपस्थिति काल की गणना करने पर वह कुल अवधि (i) के अधीन असाधारण छुट्टी से मिलाये जाने पर अनुमति छुट्टी की सीमा का अतिक्रमण करने पर, कार्यकारिणी समिति से विशेष परिस्थितियों में उसकी गणना नहीं किए जाने पर, उससे स्थगित पत्र समर्पित समझा जाएगा और विश्वविद्यालय सेवा में अस्तित्व हीन समझा जाएगा।

5. छुट्टी शेष नहीं अध्ययनार्थ छुट्टी और विश्रान्ति अवकाश :

अस्थायी अध्यापक छुट्टी शेष नहीं अध्ययनार्थ छुट्टी और विश्रान्ति अवकाश के हकदार (अधिकारी) नहीं हैं।

6. वीर्षावकाश (दीर्घावकाश) :

(i) अस्थायी आधार पर नियुक्त अध्यापक शैक्षणिक वर्ष के प्रारंभ से दो महीने के अन्तर और सत्र के अन्तिम दिन तक सतत और संतोष प्रद कर्तव्य करने पर ही वीर्षावकाश का उपयोग करने के अधिकारी होंगे।

(ii) अन्य मामलों में अध्यापक से अंशतः या पूरा शैक्षणिक वर्ष सेवा किये जाने पर और शैक्षणिक वर्ष के प्रारंभ और सत्र के अन्तिम दिन कार्य निष्पादन किये जाने पर वीर्षावकाश का वेतन दिया जायेगा।

(उ) 19 संविदा में नियुक्त अध्यापक :

संविदा पर नियुक्त अध्यापकों की संविदा की शर्तों के अनुसार छुट्टी मंजूर का जाएगी।

(ऊ) अवैतनिक और अंशकालीन अध्यापक :

विश्वविद्यालय के पूर्णकालीन अध्यापकों की जिन शर्तों पर छुट्टियां लागू हों, उन्हीं शर्तों पर अंशकालीन अध्यापक भी छुट्टी पाने के हकदार होंगे।

(क) सामान्य

(i) सामान्य शर्तें :

21 (i) छुट्टी कैसे अर्जित की गई

कर्तव्य निष्पदान से ही छुट्टी अर्जित की जाती है। विदेश सेवा काल के लिए अंशदान दिये जाने पर विदेश सेवा काल के लिए अंशदान दिये जाने पर विदेश सेवा का अवधि कर्तव्य सेवा मानी जाएगी।

(2) छुट्टी का अधिकार

(अ) साधिकार छुट्टी का दावा नहीं किया जाए। प्रारंभ की जानेवाली कारवाई, छुट्टी सम्मोदन करने वाले सक्षम अधिकारी से विश्वविद्यालय के हित में समझौते जाने पर कारण दिए बिना, किसी भी प्रकार की छुट्टी को इनकार या प्रतिसंहृत किया जा सकता है।

(आ) किसी सक्षम अधिकारी से किसी अध्यापक को नियुक्त करने, निकालने या सेवा निवृत्त करने का ह्रादा किये जाने पर या निलंबन में रहने वाले अध्यापकों को किसी भी प्रकार की छुट्टी प्रदान नहीं की जाएगी।

(उ) कर्तव्य में अनुपस्थित रहने, अधिकतम छुट्टी।

(अ) पांच वर्ष से ज्यादा लगातार किसी भी प्रकृति की छुट्टी किसी भी अध्यापक को मंजूर नहीं की जाए।

(आ) पांच वर्ष की लगातार की छुट्टी के बाद जब किसी अध्यापक के अपने पद का ग्रहण नहीं करने पर विदेश में या विलंबन में रहने पर छुट्टी की अवधि पांच साल से ज्यादा हो जान पर, कार्यकारिणी समिति से विशिष्ट परिस्थितियों में उसकी गणना नहीं की जाने पर निर्धारित प्रक्रिया का अनुसरण कर अध्यापक को सेवा से निकाला जा सकता है।

(4) छुट्टी का आवेदन पत्र :

आपातक और समाधानप्रद कारणों को छोड़कर, अन्य मामलों के लिए उपयोग के पहले अग्रिम रूप में छुट्टी के सम्मोदनार्थ आवेदन पत्र सक्षम अधिकारी को प्रस्तुत किया जाए।

टिप्पणी : छुट्टी सम्मोदन आदेश जारी किये जाने कोई भी संकाय सदस्य अपने गृह नहीं छोड़े।

5. छुट्टी का प्रारंभ और अंत :

(अ) छुट्टी के उपभोग का दिन उसके प्रारंभ का दिन और

(आ) सक्षम सम्मोदक अधिकारी की अनुमति से रविवार और अन्य छुट्टी के दिन अवकाश के प्रारंभ या अंत में जोड़े जा सकते हैं। अध्यादेश के उपबंध 5, 8 और 14 के अधीन दीर्घवकाश को अन्य छुट्टियों के साथ सम्मिलित किया जा सकता है।

6. छुट्टी के अवसान के पहले कर्तव्य सेवा में सम्मिलित होना :

(अ) छुट्टी मंजूर करने वाले अधिकारी से अनुमति प्राप्त किये बिना छुट्टी के अवकाशमान के पहले कोई भी अध्यापक अपनी सेवा में सम्मिलित नहीं हो सकते।

(आ) उपरोक्त "अ" में किसी भी बात के होने हुई भी सेवा निवृत्ति पूर्व छुट्टी में जानेवाले अध्यापक को कार्य-कारिणी समिति कह सम्मति सेवा से निवृत्ति का अनुरोध के प्रत्याहरण से और कर्तव्य में लगने से रोका जाएगा।

7. चिकित्सा आधार पर ली जाने वाली छुट्टी डाक्टरी प्रमाण पत्र से समर्थित किया जाए।

जब कोई अध्यापक अस्वस्थता का आधार पर छुट्टी पर जाना चाहता है तब उसे विश्वविद्यालय के प्राधिकृत चिकित्सा-अधिकारों से डाक्टरी प्रमाण पत्र लेकर अपना छुट्टी का समर्थन करे और जहाँ ऐसे डाक्टरों की नियुक्ति नहीं हुई हो वहाँ पंजीकृत चिकित्साधिकारी से प्रमाण पत्र लेकर छुट्टी पत्र का समर्थन करे। सम्बन्धित अध्यापक को, चिकित्सा मण्डल के समक्ष प्रस्तुत होने, छुट्टी मंजूर करने वाले सक्षम अधिकारी में चाहे जाने पर उसके लिए भा प्रस्तुत रहना चाहिए।

चिकित्साधिकारी या चिकित्सा मण्डल से आगे की सेवा के लिए योग्यताहीनघोषित किए बिना, किसी भी अध्यापक को डाक्टरी प्रमाण पत्र पर अपनी छुट्टी बढ़ाने की मंजूरी दी जाएगी।

9. छुट्टी में नियोजन :

छुट्टी का उपभोग करने वाला कोई भी अध्यापक विश्व-विद्यालय की लिखित अनुमति के बिना प्रत्यक्ष रूप से या अप्रत्यक्ष रूप से किसी भी तरह का कारोबार, व्यापार, गृह शिक्षण या अन्य कोई भी धंधा स्वीकार न करे जिन के लिए पारिश्रमिक या मानदेय दिया जाए। लेकिन विश्व-विद्यालय, विद्वत संस्था, लोक सेवा आयोग, शिक्षा मण्डल या समान अधिकरण/संस्था से आयोजित परीक्षाएँ, साहित्यिक कार्य/प्रकाशन, आकाशवाणी भाषण, विस्तार व्याख्यान या कोई भी शैक्षिक कार्य उपकुलपति की अनुमति से स्वीकार किया जा सकता है।

छुट्टी वेतन में नियोजन स्वीकार करने अनुमित अध्यापक छुट्टी वेतन, कार्यकारिणी समिति से निर्धारित प्रतिबंधों पर आधारित होगा।

10. अवकाश पत्र के बिना अनुपस्थिति होना छुट्टी से अधिक ठहरना :

जब कोई अध्यापक मंजूरी दी गई छुट्टी के उपरान्त भी कर्तव्य पर नहीं आवे और अनुपस्थित रहने पर, उस अनुपस्थिति काल के लिए वह अवकाश भत्ता या वेतन पाने अधिकारी (हकदार) नहीं है। उस अवधि को छुट्टी मंजूर करने वाले सक्षम अधिकारी से बढ़ाये बिना उसके छुट्टी के हिसाब में "बिना वेतन के छुट्टी में" लिखा जायेगा। जान बुझकर कर्तव्य से अनुपस्थिति दुराचरण समझा जाएगा।

11. सेवा निवृत्ति के दिन के बाद की छुट्टी :

आनिवार्य सेवा निवृत्ति के बाद किसी भी अध्यापक को कोई भी छुट्टी मंजूर नहीं की जाएगी। सेवा निवृत्ति या अधिवर्षिता के पर्याप्त समय के पहले अध्यापक को देय छुट्टी या सेवा निवृत्ति पूर्व छुट्टी अभ्यर्थित किये जाने पर, विश्व-विद्यालय के हित में कोई भी छुट्टी पूर्णरूपेण या अंशतः अंगीकार किये जाने पर सेवा निवृत्ति के उपरान्त अधिवर्षिता के दिनांक से अध्यापक को देय छुट्टी प्रदान किया जाए, जो अधिकतम 120 दिन से अधिक अर्जित छुट्टी मंजूर किया जाता है। तब भारत में ध्येयत किया अवकाश संपूर्णयोग 120 दिन का अतिश्रमण न करे। अधिवर्षिता के दिन और सेवा निवृत्ति के बाद अध्यापक को देय जो छुट्टी अंगीकृत की जाती है तब वह सेवा निवृत्ति के पूर्व के छुट्टी के संपूर्ण योग से ज्यादा न हो। सेवा निवृत्ति पूर्व निवेदित अर्द्धवेतन छुट्टी विश्वविद्यालय सेवा की अत्यावश्यकता के कारण इनकार किया जाने पर अधिवर्षिता या सेवा निवृत्ति के बाद अर्जित अर्द्ध वेतन अर्जित अर्द्ध छुट्टी में परिवर्तित किया जा सकता है।

(आ) परन्तु यह और कि अध्यापक :

निलंबन में रहने पर यथाक्रम 120 या 180 दिन के अन्दर नौकरी बहाल की जाने पर, सेवा निवृत्ति या अधिवर्षिता के पहले की सेवा निवृत्ति पूर्व छुट्टी निलंबन में रहने के कारण छुट्टी निवेदित करने से रोके जाने पर, उस छुट्टी का उपभोग करने अनुमित किया जाएगा जैसे सामान्य परिस्थितियों में छुट्टी इनकार किये जाने पर तदुपरान्त उपभोग करने की अनुमित दी जाती है, परन्तु यह और कि वह छुट्टी अधिकतम संख्या 120 या 180 दिन का अतिश्रमण न करे, नौकरी बहाल की जाने की तारीख और सेवा निवृत्ति के दिनांक के बीच की अवधि को इस अधिकतम छुट्टी से घटाया जाएगा।

(ii) निलंबन में अधिवर्षिता की उम्र तक पहुँचने पर, सेवा निवृत्ति पूर्व छुट्टी निवेदित करने समय नहीं होने पर, अपने जमा की छुट्टी का उपभोग करते अनुमित किये जायेंगे, बशर्ते कि वह यथाक्रम 120 या 180 दिन से ज्यादा न हो और नौकरी बहाल की जाने आदेश जारी करने वाले सक्षम अधिकारी से उपरोक्तानुसार इनकार किया माना जाएगा, अध्यापक का निलंबन अन्यायसंगत और वह निर्देश माना जाएगा।

(इ) परन्तु यह और कि विश्वविद्यालय के हित में जब किसी अध्यापक का सेवाकाल अधिवर्षिता के दिन के उपरान्त बढ़ाया जाए तब निम्न प्रकार से अवकाश मंजूर किया जाए :—

(i) किसी अवकाश को बढ़ाये जाने पर, यदि बढ़ाये जाने की अवधि के लिए कोई छुट्टी देय है तो निश्चित अधिवर्षिता के दिन सेवा निवृत्ति होने पर अध्यापक को जो छुट्टी ग्राह्य है वह आवश्यक पूर्णतम मात्रा में उपखण्ड “अ” के अधीन मंजूर किया जाएगा।

व्याख्या : अर्जित छुट्टी का परिणाम निर्धारित करते समय, बढ़ाई गई अवधि में संचयित छुट्टी के साथ उपखण्ड “अ” के अधीन ग्राह्य छुट्टी भी मिलाया जायेगा।

(ii) बढ़ायी गयी छुट्टी के अवसान पर :

(अ) अधिवर्षिता के दिनांक सेवा निवृत्त होने पर, उपरोक्त उपखण्ड “अ” के अधीन जो छुट्टी मंजूर की जाएगी उससे बढ़ायी गई अवधि में उपभोग की गई छुट्टी कम कर दी जाएगी।

(आ) बढ़ायी गयी अवधि में जो अर्जित छुट्टी अर्जित की गई है उसकी मंजूरी के लिए सेवा की समाप्ति के अंतिम दिन पर्याप्त समय के पहले निवेदित किये जाने पर विश्व-विद्यालय से विश्वविद्यालय के हित के लिए अस्वीकृत की गई छुट्टी।

टिप्पणी 5 :

अधिवर्षिता के दिन के बाद या बढ़ायी गई छुट्टी के अवसान पर, जब कोई अध्यापक अस्वीकृत की गई छुट्टी का उपभोग करे तब वह अस्वीकृत छुट्टी पेंशनिक अंशदेय निर्वाहनिधि लाभ और गहन (लियन) को छोड़कर अन्य विषयों के लिए गिना जाएगा। अधिवर्षिता के दिन वह सेवा निवृत्त होगा, आगे सेवा को तदुपरान्त बढ़ाये जाने पर सब देय पेंशनिक (निवृत्तिक) लाभ के लिए प्राप्त होगा।

12. जिस अध्यापक की सेवा आगे जरूरी नहीं उन्हें देय छुट्टी (सेवान्त छुट्टी)

(i) जो अध्यापक संविदा पर नियुक्त नहीं हो जिसकी सेवा विश्वविद्यालय ने छंटनी के कारण समाप्त की हो, जिस अध्यापक के अधिवर्षिता तक पहुँचने के पहले पक्ष की समाप्ति की गई हो निवेदन नहीं करने पर भी विश्व-विद्यालय के हित में इनकार किया गया हो उन्हें उप-कुलपति अपनी स्वमति से उन्हें देय छुट्टी (120 दिन का अतिश्रमण न करे) सेवान्त लाभ के रूप में मंजूर कर सकते हैं। सूचना की अवधि के अवसान के पहले किसी अध्यापक को भारमुक्त किये जाने पर, वह सूचना या उसका अन्तिम भाग मंजूर की गई छुट्टी के साथ-साथ चले।

(ii) किसी अध्यापक के त्याग पत्र समर्पित करने पर, सामान्यतः उसके प्रस्तुतीकरण पूर्व या प्रस्तुतीकरणोपरान्त कोई भी छुट्टी मंजूर नहीं की जाएगी। त्यागपत्र स्वास्थ्य के कारण, नियंत्रण से परे के कारण, प्रस्तुत किये जाने पर, उपकुलपति अपनी स्वमति से उसके हिसाब के अर्जित छुट्टी 120 दिन तक मंजूर कर सकते हैं। त्याग पत्र के अन्य कारणों के लिए उसके हिसाब के अर्जित अवकाश की आधी राशि (रकम) अधिकतम 60 दिन तक उपकुलपति अपनी स्वमति से मंजूर कर सकते हैं।

जहाँ कहीं एक निर्धारित सूचना दी जाने की जरूरत है, उस सन्दर्भ में छुट्टी इस प्रकार मंजूर की जाएगी कि यथासंभव सूचना की अवधि भी उसमें अन्तर्निहित आच्छादित हो जाए।

(iii) बियुक्त और पृथक् किये गये अध्यापक कोई भी छुट्टी पाने में सफल नहीं होंगे।

(iv) सेवा काल में अस्वस्थता से या अकाल मृत्यु होने वाले अध्यापकों के हिसाब की छुट्टी :

अर्जित छुट्टी में जाने पर अध्यापकों को जो रकम देय है वह उसके अस्वस्थता के कारण मृत्यु या अकाल मृत्यु होने पर उसके भरणपर्यन्त जो छुट्टी लेने पाव और देय है।

(अधिकतम 180 दिन तक सीमित हो) उसको सीकमत किया जाकर उसके परिवार को दी जाएगी। वह नकद-समतुल्य निवृत्ति (पेंशन) मृत्यु उपादान के निवृत्ति तुल्य होने से घटाया नहीं जाएगा।

टिप्पणी :

1. उपरोक्त व्यवस्था पुनर्नियुक्त निवृत्तिकों को भी लागू होगी। उनके मामले में निवृत्ति मृत्यु उपादान के निवृत्ति तुल्य से पुनर्नियुक्त सेवाकाल के लिए कोई नकद तुल्य घटाया नहीं जाएगा। उस काल में अर्जित छुट्टी के नकद तुल्य पुनर्नियुक्त कालोपरान्त का सेवाकाल व अन्तिम अहरित वेतन का हिसाब लगाकर (निवृत्ति और निवृत्ति तुल्य अन्य सेवा निवृत्ति लाभ छोड़कर) निर्धारित किया जाएगा।

2. अंश देय निर्वाह निधि से शासित अध्यापक के मामले में छुट्टी वेतन के नकद तुल्य से कोई रकम घटायी नहीं जाय चूँकि विश्वविद्यालय अंशदेय निधि का योगदान देता है।

13. एक प्रकार की छुट्टी को दूसरे प्रकार में परिवर्तित करना :

संबंधित अध्यापक से निवेदित किये जाने पर विश्व-विद्यालय पूर्वगामी प्रभाव से कोई भी अनुमति छुट्टी, असाधारण छुट्टी ही क्यों न हो वस्तुतः छुट्टी लेते समय फायदेमंद किसी भी अन्य छुट्टी में परिवर्तित कर, छुट्टी मंजूर कर सकता है, लेकिन हकदार के रूप में उसके परिवर्तन का दावा नहीं किया जा सकता है।

(अ) छुट्टी की प्रकृति का परिवर्तन किये जाने पर छुट्टी वेतन की राशि और अनुमति भत्ते की पुनर्गणना की जाएगी और छुट्टी वेतन के लिए प्रवृत्त बकाया और अत्याहरित राशि यथाक्रम प्रत्याप्त (वसूल) की जाएगी।

14. छुट्टी के दौरान वेतन वृद्धि :

सामान्य वेतन वृद्धि की तारीख पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना वेतन की वृद्धि आकस्मिक छुट्टी, विशेष आकस्मिक छुट्टी, कर्तव्यावकाश अध्ययनार्थ छुट्टी, विश्रान्ति अवकाश और जो छुट्टी वेतन वृद्धि के लिए गिना नहीं जाएगा उनको छोड़कर अन्य अवकाशों में वेतन वृद्धि अध्यापक के पद ग्रहण के दिनांक से प्रभावशील होगा।

15. छुट्टी वर्ष

इन अध्यापकों के मामले में, जब तक अन्यथा निर्दिष्ट न हो “वर्ष” शब्द का मतलब शैक्षिक वर्ष होगा जो शैक्षिक वर्ष से प्रारंभ होकर उस सत्र के अन्त तक चलता है”।

(ii) छुट्टी मंजूर करने के अधिकृत अधिकारी

निम्नांकित सूची के खान (स्तंभ) 2 में दिये गये अधिकारी, उसके बाद खान 3 में निर्दिष्ट सीमा (विस्तार) तक छुट्टी मंजूर कर सकते हैं। इन सीमाओं से अधिक छुट्टी के मामले और जो छुट्टियाँ निम्नांकित नहीं हैं उन्हें कार्यकारिणी समिति को प्रस्तुत किया जाए। छुट्टी मंजूर करने के पहले मंजूर करने वाले प्राधिकारी से यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि अभ्यर्षित छुट्टी नियमानुसार ग्राह्य है और संबंधित अध्यापक के जमा में है।

अवकाश की प्रकृति	मंजूरी देनेवाला प्राधिकारी	छुट्टी की सीमा (विस्तार)
(i) आकस्मिक अवकाश/ विशेष आकस्मिक अवकाश		
(अ) विद्यालयों के संकायाध्यक्ष	उपकुलपति	पूरा
(आ) विभाग/केन्द्र के अध्यक्ष	संकायाध्यक्ष	पूरा
(इ) अन्य अध्यापक	केन्द्र के अध्यक्ष	पूरा
(ii) कर्तव्यावकाश :		
(अ) विद्यालयों के संकायाध्यक्ष	उपकुलपति	30 दिन तक
(आ) अन्य अध्यापक	संकायाध्यक्ष उपकुलपति	बिन तक 30 दिन तक
(iii) अर्जित छुट्टी/अर्द्धवेतन छुट्टी और प्रसूति छुट्टी :		
(अ) विद्यालयों के संकायाध्यक्ष	उपकुलपति	पूरा
(आ) केन्द्र के अध्यक्ष	संकायाध्यक्ष उपकुलपति	30 दिन तक पूरा
(इ) अन्य अध्यापक	विद्यालय के संकायाध्यक्ष उपकुलपति	90 दिन तक पूरा
(iii) असामान्य छुट्टी		
(अ) विद्यालयों के संकायाध्यक्ष	उपकुलपति	90 दिन तक
(आ) अन्य अध्यापक	विद्यालय के संकायाध्यक्ष उपकुलपति	14 दिन तक 90 दिन तक

(iii) छुट्टी वेतन :

23 (1) जिस अध्यापक को आकस्मिक अवकाश या विशेष आकस्मिक अवकाश की मंजूरी दी गई है उसे कर्तव्य

से अनुपस्थिति नहीं समझा जायेगा और उसका वेतन भी नहीं रोका जायेगा। यथायोग्य अध्यादेश 4, 10 और 11 के अधीन कर्तव्याकाश अध्ययनार्थ छुट्टी, प्रसूती छुट्टी का वेतन अध्यापक/अध्यापिका पाएंगे।

(2) अर्जित छुट्टी का उपभोग करने वाले अध्यापक छुट्टी पर जाने के पूर्व ग्रहण किया वेतन पाने के अधिकारी होंगे।

(3) संशोधित छुट्टी का उपभोग करने वाले अध्यापक उपखण्ड 23 (1) के अधीन स्वीकार्य अर्द्धवेतन के तुल्य की रकम पाने के अधिकारी होंगे।

(4) अर्द्धवेतन छुट्टी/छुट्टी शेष नहीं का उपभोग करने वाले अध्यापक उपखण्ड 23(1) के अधीन स्वीकार्य अर्द्धवेतन के तुल्य की रकम पाने के अधिकारी होंगे।

(5) असाधारण छुट्टी का उपभोग करने वाले अध्यापक किसी भी प्रकार के छुट्टी वेतन पाने के अधिकारी नहीं होंगे।

(6) विशेष अपंगता की छुट्टी का उपभोग करने वाले अध्यापक अध्यादेश 13 के अधीन स्वीकार्य छुट्टी-वेतन पाने के अधिकारी होंगे।

(7) प्रसूति छुट्टी व संरोध छुट्टी का उपभोग करने वाले अध्यापिका/अध्यापक छुट्टी के प्रारंभ का अनुमित वेतन पाने के अधिकारी होंगे।

(8) छुट्टी की अवधि में दिया जाने वाला महंगाई भत्ता, किराया भत्ता, नगर प्रतिकार भत्ता आदि इन भत्ताओं के संदाय नियमों के उपबंधों से शासित होंगे।

(9) जब किसी अध्यापक को वैसे निवृत्ति/अनिवार्य सेवा निवृत्ति/पद से पदत्याग करने के दिन के उपरान्त छुट्टी मंजूर की जाती है तब उस छुट्टी की अवधि में पेंशन (निवृत्तिक) और निवृत्तिक लाभ/अन्य निवृत्ति के फायदे अध्यादेश के अधीन घटाकर छुट्टी वेतन पाने के अध्यापक अधिकारी होंगे।

(10) जब उक्त अध्यापक उपरोक्त छुट्टी में, पुनर्नियुक्त होता है तब ग्राह्य उसके छुट्टी वेतन की रकम, अर्द्धवेतन के लिए लागू रकम को परिमित किया जाएगा और आगे पेंशन और निवृत्तिक के समकक्ष अन्य प्राप्य फायदे की रकम घटाकर दी जायेगी।

(11) पुनर्नियुक्तकाल में अर्जित छुट्टी मंजूर किये जाने पर, उसका छुट्टी वेतन उससे आहरित वेतन के आधार पर होगा जिनमें पेंशन और निवृत्तिक के समकक्ष अन्य लाभ शामिल नहीं होंगे।

(12) इन अध्यादेशों के अधीन नियमों का निर्माण उपकुलपति, प्रशिक्षण का उल्लेख कर इन उपबंधों के अधीन नियम बना सकते हैं :—

(i) छुट्टी के अवसान (समाप्ति) के पहले समर्पित करने व कर्तव्य के पुनर्ग्रहण की अनुमति का आवेदन पत्र बनाना

(ii) छुट्टी पर जाने या वापस आने पर छुट्टी मंजूर करना व डाक्टरी प्रमाण पत्र प्रस्तुत किया जाता।

(iii) छुट्टी वेतन का भुगतान

(iv) सेवा अभिलेख (वृत्त) का निर्वहण

(v) छुट्टी हिसाबों का निर्वहण

अल्पकालीन नियुक्ति के लिए लिखित संविदा का प्रपत्र :

पहले भाग में करार का ज्ञापन जो एक हजार नौ सौ वर्ष महीने दिन में में और के बीच में (इस में इसके पश्चात् अध्यापक कहा गया है) किया गया है दूसरे भाग में 1985 पाण्डिच्चेरी विश्वविद्यालय अधिनियम (1985 की संख्या 53) से संगठित निगमित निकाय होने की वजह से (इसमें इसके पश्चात् विश्वविद्यालय कहा गया है) निम्नोक्त प्रकारेण यह अनुबंध इकराय किया गया है।

1. विश्वविद्यालय एतद्वारा को विश्वविद्यालय के अध्यापक कार्यकर्ता के रूप में उक्त व्यक्ति के कार्यभार ग्रहण की तिथि से और उक्त इसके द्वारा, आबंध की स्वीकृति देकर शिक्षा के आयोजन अध्यापन अनुसंधान, विश्वविद्यालय की परीक्षाओं, विद्यार्थी अनुशासन तथा विद्यार्थी कल्याण के लिए विश्वविद्यालय से विनिर्मित अधिनियम सम्बन्धी और अध्यादेश व सामान्यतः विश्वविद्यालय के अधिकारियों से निर्देशित कार्यकलापों में भाग ग्रहण करेगा।

2. उपरोक्त को विश्वविद्यालय का पूर्णकालीन अध्यापक होना चाहिए और कार्यकारिणी समिति से या अध्यापक से संविदा की समाप्ति से या अध्यापक/संविदा की समाप्ति तक, अपनी नियुक्ति की अवधि पूरी होने तक विश्वविद्यालय की सेवा में रहेंगे।

3. विश्वविद्यालय को उसके कर्तव्य निर्वहण काल में उसकी सेवा के उपलक्ष्य में पारिश्रमिक के रूप में वेतन रुपये प्रति महीने वार्षिक वृद्धि के साथ अधिकतम रुपये का वेतन प्रति महीने दिया जाएगा।

कोई भी वार्षिक वेतन वृद्धि उपकुलपति के निर्देश पर कार्यकारिणी समिति अपने प्रस्ताव से अध्यापक को अपना प्रतिनिधित्व लिखित रूप से करने पर्याप्त अवकाश दिये बिना रोका न जाए और स्थगित भी न किया जाए।

4. विश्वविद्यालय के तत्काल तलु मंत्रिधि, अधिनियम और अध्यादेश का पालन करना हर अध्यापक के लिए बाध्य है। अध्यापकों की नियुक्ति के बाद पदनाम, वेतनमान, वेतन-वृद्धि निर्वाह आदि सेवा की बातों की शर्तों में कोई परिवर्तन नहीं किया जाए जिन से उन पर कोई प्रतिकूल प्रभाव पड़े।

5. विश्वविद्यालय की सेवा में अध्यापक अपना संपूर्ण समय लगावे और वह विश्वविद्यालय की अनुमति के बिना प्रत्यक्ष रूप से या अप्रत्यक्ष रूप से किसी भी तरह का कारोबार, व्यापार, गृह शिक्षण या अन्य कोई भी धंधा स्वीकार न करे, जिन के लिए पारिश्रमिक या मानदेय दिया जाए। लेकिन विश्वविद्यालय, विहत संस्था या लोक सेवा आयोग से आयोजित परीक्षाएं या साहित्यिक कार्य, आकाशवाणी भाषण, विस्तार व्याख्यान या कोई भी शैक्षिक कार्य उपकुलपति की अनुमति से स्वीकार किया जा सकता है।

6. आगे यह माना गया कि संविधि 26 (जो नीचे उद्धृत) का खण्ड 1, 2, 3, 4, 5, और 6 के आधार पर और उ में निरूपित प्रक्रिया को छोड़कर विश्वविद्यालय स्वयंसेव वचन बंध (आबंध) का निर्णय नहीं कर सकता।

(1) अगर किसी अध्यापक के प्रति अवचार (दुर्व्यवहार) का अभिकथन है तो उपकुलपति उचित समझने पर लिखित रूप से अध्यापक का निलंबन कर सकते हैं लेकिन कार्यकारिणी समिति को तत्काल उक्त आदेश के निर्गम के विध्यामान परिस्थिति का पूरा पैरा विवरण दिया जाना चाहिए।

अगर कार्यकारिणी समिति परिस्थिति का अध्ययन कर अध्यापक का निलंबन अनावश्यक समझने पर उस आदेश को प्रतिसंहत कर सकती है।

(2) सेवा की संविधा या नियुक्ति की शर्तों में किसी भी बात के होते हुए भी कार्यकारिणी समिति को अवचार (दुर्व्यवहार) के आधार पर किसी भी अध्यापक को नौकरी से हटाने का अधिकार है।

(3) समुचित कारण दिये बिना या तीन महीने की पूर्व सूचना लिखित रूप से दिये बिना या उसके बदले तीन महीने का वेतन दिये बिना उपरोक्त प्रकार से किसी भी अध्यापक को नौकरी से हटाने का अधिकार कार्यकारिणी समिति को नहीं है।

(4) किसी भी अध्यापक के प्रति जो कार्रवाई की जाने वाली है तत्सम्बन्ध में अध्यापक को अपना प्रतिनिधित्व करने पर्याप्त अवकाश दिये बिना खण्ड (2) या (3) के अधीन नौकरी से नहीं हटाया जा सकता।

(5) अध्यापक के विश्वविद्यालय की सेवा से हटाये जाने के लिए कार्यकारिणी समिति के उपस्थित सदस्यों के दो तिहाई बहुमत और मतदान जरूरी है।

(6) अध्यापक के सेवा से हटाने की तारीख हटाने के आदेश के चालू तारीख से प्रभावी होगी।

अगर कोई अध्यापक सेवा से हटाने समय निलंबन में है तो निलंबन जारी की गई तारीख से हटाने का आदेश प्रभावी होगा।

(7) नीचे उद्धृत अधिनियम की धारा (31) का भाग (2) के आधार पर संविधा पर पैदा होने वाले विवादों का समाधान होगा।

कार्यकर्ता और विश्वविद्यालय के बीच में पैदा होने वाले विवाद, कार्यकर्ता के अनुरोध पर "विवाचन न्यायाधिकरण" के विचारार्थ भेजा जाए, जिसका एक सदस्य कार्यकारिणी समिति से नियुक्त होंगे, एक सदस्य सम्बन्ध कर्मचारी से मनोनीत होंगे और एक अधि निर्णायक (पंच) कुलाध्यक्ष से नियुक्त होंगे। न्यायधिकरण का निर्णय अन्तिम होगा और उन विषयों पर दीवानी न्यायालय में कोई बाद दाखिल नहीं होगा। उपरोक्त अधिनियम की धारा के उपबंध के अधीन विवाचन विधि 1940 के अनुसार सब अनुरोध न्यायाधिकरण को समर्पित समझा जाएगा।

(8) अध्यापक जब चाहे तब कार्य कारिणी समिति को लिखित रूप से तीन महीने की सूचना देकर अपने कार्यभार को समाप्त कर सकता है, लेकिन कार्यकारिणी समिति स्वयंसेव से इस सूचना की अपेक्षा को ठीका कर सकती है।

(9) अपने कार्यभार की समाप्ति पर, कारण कुछ भी हो अध्यापक से विश्वविद्यालय को देय सब पुस्तकें साधित्र अभिलेख और विश्वविद्यालय के अन्य उपकरण और वस्तुयें विश्वविद्यालय को सौंपना चाहिए।

जिसके साक्षी स्वरूप पक्षकार अपना हस्ताक्षर और मुहर लगावे।

1. हस्ताक्षर

पदनाम

की उपस्थिति में

1. हस्ताक्षर

पदनाम

2 हस्ताक्षर

पदनाम

विश्वविद्यालय की ओर से कार्यकारिणी समिति के प्राधिकार से हस्ताक्षर और मुहर बंद किया जाता है।

1. हस्ताक्षर

पदनाम

की उपस्थिति में

1. हस्ताक्षर

पदनाम

2. हस्ताक्षर

पदनाम

अनुलग्नक—1

परीक्षा के लिए पारिश्रमिक वेतन मान और अन्य भत्ते (कार्यकारिणी समिति के प्रस्ताव सं० 88-178

दिनांक 18-6-1988 से संशोधित)

क्रम सं०	वर्ग	संस्तुत	पारिश्रमिक
1	2	3	
1.	मुख्य अधीक्षक	रुपये 30 प्रति सत्र	
2.	सहायक अधीक्षक	रुपये 15 प्रति सत्र (प्रति 25 उम्मीदवारों के लिए एक)	
3.	लिपिक सहायक	रु० 12 प्रति 100 उम्मीदवारों के लिए न्यूनतम रु० 12 प्रतिदिन अधिकतम रु० 96 प्रतिदिन	
4.	सेवक	रु० 5 प्रति सत्र (प्रति 50 या उससे अंशतः ज्यादा उम्मीदवारों के लिए)	
5.	जलहारक (कहार)	रु० 5 प्रति सत्र (प्रति 300 उम्मीदवारों के लिए)	
6.	सामान्य व्यवस्था (प्रारंभिक व्यवस्था) और परीक्षा के समय की व्यवस्था	रु० 12 प्रति 100 उम्मीदवारों के लिए या उससे अंशतः ज्यादा किसी एक सत्र की अधिकतम संख्या को लेकर उसकी गणना की जाएगी	
7.	कपड़े की संचाई की सिलाई व उत्तर पुस्तकों के संग्रहण का व्यय	रु० 1 प्रति संचे के लिए	
बी० एस० सी० वनस्पति विज्ञान और प्राणि विज्ञान :			
8.	नमूने का क्रय बी० एस० सी० (रसायन)	रु० 1.50 प्रति उम्मीदवार प्रति प्रायोगिक के लिए	
9.	रसायनिक का मूल्य, गैस (वाति) के उत्पादन के ईंधन का मूल्य	रुपये 4.00 प्रति उम्मीदवार प्रति प्रायोगिक के लिए	

1 2 3

बी० एस० सी०, एम० एस० सी० गृह विज्ञान :

10. खाद्य सामग्री और द्रव्य का रूपये 5.00 प्रति उम्मीदवार प्रति प्रायोगिक के लिए
11. नमूने का क्रय रु० 3.00 प्रति उम्मीदवार प्रति प्रायोगिक के लिए
12. रसायनिक का मूल्य, गैस रु० 4.00 प्रति उम्मीदवार (वाति) के उत्पादन के प्रति प्रायोगिक के लिए ईंधन का मूल्य

अनुलग्नक—II

प्रयोगिक

(कार्यकारिणी समिति के प्रस्ताव संख्या 88-178 तारीख 18-6-1988 से संशोधित)

क्रम सं०	वर्ग	संस्तुत	पारिश्रमिक
1	2	3	
बी० एस० सी० गैर अभियंत्रण			
1.	कुशल सहायक	रुपये 2.00 प्रति पंजीकृत उम्मीदवार के लिए	
2.	प्रशासन (महा कक्ष) अधीक्षक/सहायक अधीक्षक	रुपये 6.00 प्रति सत्र	
3.	परिष्कार	रुपये 5.00 प्रति सत्र	
4.	जलहारक (कहार)	रुपये 2.50 प्रति सत्र	
5.	मेहतर	रुपये 1.50 प्रति सत्र	
6.	धात्विक (सिर्फ भौतिक विज्ञान के लिए)	रुपये 5.00 प्रति सत्र	
7.	वाति (गैस) अधीक्षक (सिर्फ रसायन विज्ञान के लिए)	रुपये 5.00 प्रति सत्र	
एम० ए०, एम० एस० सी० :			
8.	कुशल सहायक		
	(अ) भौतिक, रसायन और भूगर्भ शास्त्र	रुपये 22.50 प्रति सत्र प्रति कुशल सहायक के लिए (2 व्यक्ति)	

1	2	3
(अ) वनस्पति विज्ञान, प्राणि विज्ञान भूगोल और गृह विज्ञान	रुपये 15.00 प्रति सत्र प्रति कुशल सहायक के लिए (व्यक्ति)	
9. महाकक्ष अधीक्षक/सहायक अधीक्षक	रुपये 9.00 प्रति सत्र	
10. परिचर	रुपये 5.00 प्रति सत्र	
11. यांत्रिक (सिर्फ भौतिक विज्ञान के लिए)	रुपये 5.00 प्रति सत्र	
12. जल हारक (कहार)	रुपये 2.50 प्रति सत्र	
13. मेहतर	रुपये 1.50 प्रति सत्र	
14. वाति (गैस) अधीक्षक (सिर्फ रसायन विज्ञान के लिए)	रुपये 5.00 प्रति सत्र	
एम० बी० बी० एस० (प्रथम वर्ष से अन्तिम वर्ष तक) बी० एस० सी० (एम० एल० टी० और बी० एम० आर० एम० सी०)		
15. कनिष्ठ परिचर	रुपये 3.00 प्रति सत्र	
16. जलहारक (कहार)	रुपये 2.50 प्रति सत्र	
17. मेहतर	रुपये 1.50 प्रति सत्र	
18. प्रधान निरीक्षक	रुपये 30.00 प्रति दिन	
19. कुशल सहायक	रुपये 20.00 प्रति दिन	
20. महाकक्ष अधीक्षक/सहायक अधीक्षक	रुपये 12.00 प्रति दिन	
21. उपचारिका (धाती)	रुपये 6.00 प्रति दिन	
22. प्रविधिज्ञ	रुपये 6.00 प्रति दिन	
23. जेयेष्ट परिचर	रुपये 6.00 प्रति दिन	
24. कनिष्ठ परिचर	रुपये 3.00 प्रति दिन	
25. कुली	रुपये 2.50 प्रति दिन	
26. एम० बी० एम० एस० मरीज	रुपये 2.50 प्रति दिन प्रति मरीज	
27. प्रधान निरीक्षक	रुपये 30.00 प्रति दिन	
28. कुशल सहायक	रुपये 20.00 प्रति दिन	

1	2	3
29. महा कक्ष अधीक्षक/सहायक अधीक्षक	रुपये 12.00 प्रति दिन	
30. उपचारिका (छात्री)	रुपये 6.00 प्रति दिन	
31. प्रविधिज्ञ	रुपये 6.00 प्रति दिन	
32. जेयेष्ट परिचर	रुपये 6.00 प्रति दिन	
33. कनिष्ठ परिचर	रुपये 3.00 प्रति दिन	
34. कुली	रुपये 2.50 प्रति दिन	
35. मरीज	रुपये 2.50 प्रति दिन	
36. जल हारक (कहार)	रुपये 2.50 प्रति दिन	
37. अहार व्यय	रुपये 8.00 प्रति मरीज के लिए	
अभियंत्रण		
38. बी० टेक/बीसी० ए० कुशल सहायक	रुपये 20.00 प्रति सत्र	
39. महाकक्ष अधीक्षक/सहायक अधीक्षक	रुपये 9.00 प्रति सत्र	
40. संग्रहगार अधीक्षक	रुपये 5.00 प्रति सत्र	
41. परिचर	रुपये 5.00 प्रति सत्र	
42. यांत्रिक	रुपये 5.00 प्रति सत्र	
43. विधुत्कार	रुपये 5.00 प्रति सत्र	
44. सफाई करने वाला	रुपये 1.50 प्रति सत्र	
45. जलहारक (कहार)	रुपये 2.50 प्रति सत्र	
अध्यायनार्थ छुट्टी मंजूर करने पर		
संकाय सदस्य निष्पादित करने का बंध पत्र		
पाण्डिचेरी विश्व विद्यालय, अधिनियम, 1985 की संख्या 53 से संगठित निगमित निकाय होने की वजह से (इसमें इसके पश्चात् भाग I को विश्व विद्यालय कहा गया है) करार का क्षापन जो एक हजार नौ सौ वर्ष महीने दिन		
i का निवासी (इसमें इसके पश्चात् दूसरे भाग का उपकर्ता कहा गया है)		
ii का निवासी और का निवासी		

(इसके पश्चात् तीसरे भाग का II और III संयुक्त प्रतिभूत कहा गया है) जबकि उपकर्ता ने निम्नलिखित तात्पर्या के लिए अध्ययनार्थ छुट्टी निवेदित किया है।

विश्व विद्यालय ने इस शर्त पर अध्ययनार्थ छुट्टी मंजूर की है कि उपकर्ता अध्ययनोपरांत विश्व विद्यालय में पुनः शामिल होगा और न्यूनतम वर्ष के लिए विश्व विद्यालय की सेवा करेगा। उपकर्ता ने इस शर्त को स्वीकार किया है और प्रतिभूतों ने विश्व विद्यालय को आश्वासन दिया है कि उपकर्ता ईमानदारी के साथ अपने दायित्व का पालन करेगा।

1. उपकर्ता इसका उत्तर दायित्व नेता है कि उपरोक्त अध्ययनोपरांत विश्व विद्यालय में पुनः शामिल होगा और न्यूनतम साल के लिए विश्व विद्यालय के अधीन काम करेगा।

2. अगर उपकर्ता अध्ययनार्थ छुट्टी की अवधि के अन्दर अध्ययन पूरा नहीं पाने पर या अध्ययनार्थ छुट्टी के उपरांत अपने पद पर पुनः शामिल नहीं होने पर या शामिल होने के बाद अनुबध पत्र में सहमति दी हुई अवधि के अन्दर विश्व विद्यालय सेवा को त्याग पत्र दिये जाने पर या उपरोक्त अवधि में विश्व विद्यालय सेवा में बरखास्तिगी (वियुक्त) —महान्तर सिंह II 449 जी० क्टाट्ट०/89 जकापी न० 140 से —143 तक दिनांक 23-2-1990 20 एम

किये जाने पर विश्व विद्यालय से निर्देशित आदेशानुसार अध्ययनार्थ विश्व विद्यालय को उपकर्ता पर हुआ व्यय परि निर्धारित हर्जाना (अपाकृतक्षाति), विश्व विद्यालय से प्राप्त अग्रिम धन (पें गि) उपकर्ता और प्रभूति को तुरन्त विश्व विद्यालय को अदा करना होगा, लेकिन अध्ययनार्थ छुट्टी के बाद पुनः सेवा में शामिल होने के बाद उपकर्ता से 18 महीने का सेवाकाश पूरा किये जाने पर, उपकर्ता और प्रभूति को परिनिर्धारित हर्जाने (अपाकृतक्षाति) की आधी रकम ही विश्व विद्यालय को अदा करना होगा।

3. उपकर्ता और प्रभूति को उपरोक्त खण्ड 2 में देय रकम के लिए 6०/० ब्याज (सूब) की दर से विश्व विद्यालय को अदा करना होगा।

4. विश्व विद्यालय को देय रकम जो अदा करने का दायित्व उपकर्ता और प्रभूति को है, वह संयुक्त या पृथक पृथक (अलग-अलग और मिलकर) होगा। वही रकम सबों से या किसी में से वसूल करने विश्व विद्यालय सक्षम होगा।

5. जिसका इसमें ऊपर उल्लेख किया गया प्रतिभूत बालू रहनेवाला है, किसी भी स्वीकृति, क्षमा विश्व विद्यालय का कोई नियम या भूल, उससे अधिकृत कोई नियम या भूल

उससे अधिकृत कोई व्यक्ति या उपकर्ता या प्रतिभूत के प्रति विश्व विद्यालय का कोई अनुग्रह या रियाया किसी भी कारण से किसी भी परिस्थिति में उन्मांचित नहीं किया जाएगा और इकरार नामे को (बंध पत्र को) या प्रतिभू को कोई क्षति नहीं पहुंचेगी और उसकी शर्तों को भी ढीला नहीं किया जाएगा।

6. विश्वविद्यालय अपने विवेकाधिकार से उपकर्ता के अध्ययनार्थ छुट्टी प्रतिभूत को किसी निर्देश के बिना समय-समय पर बढ़ा सकता है और ये प्रतिभूत विश्व विद्यालय को देय रकम के लिए सब तरह से मूल अवकाश और बढ़ायी गई अवधि में भी उत्तर दायी होंगे।

7. भारत के बाहर विश्व विद्यालय ने कोई रकम दिया हो तो, उपकर्ता और प्रतिभूत को, भुगतान के समय भारतीय मुद्रा में विद्यमान सरकारी विनियम दर पर अदा करना होगा।

जिसके साक्षी स्वरूप पक्षकार अपना हस्ताक्षर साक्षी के सामने लगावें :

साक्षी संख्या-1	हस्ताक्षर	हस्ताक्षर
(नाम)		उपकर्ता
संख्या-2	हस्ताक्षर	
(नाम)		
साक्षी संख्या-1]	हस्ताक्षर	हस्ताक्षर
(नाम)		(प्रतिभूत संख्या 1)
संख्या-2	हस्ताक्षर	
(नाम)		
साक्षी संख्या-1	हस्ताक्षर	हस्ताक्षर
(नाम)		प्रतिभूत संख्या 2
संख्या-2	हस्ताक्षर	
(नाम)		
साक्षी संख्या-1	हस्ताक्षर	विश्वविद्यालय का प्राधिकारी
(नाम)		
संख्या-2	हस्ताक्षर	
(नाम)		

RESERVE BANK OF INDIA

CENTRAL OFFICE

DEPARTMENT OF BANKING OPERATIONS AND DEVELOPMENT

Bombay-400 005, the 28th May 1990

No. Ch. 336/Fol. C. 102-90.—In pursuance of clause (c) of Sub-Section (6) of Section 42 of the Reserve Bank of India Act, 1934 (2 of 1934), the Reserve Bank of India hereby directs that the following alteration shall be made in the Second Schedule to the said Act, namely:

For the words 'The Mitsui Bank Ltd. the words 'The Mitsui Taiyo Kobe Bank Ltd. shall be substituted.

A. GHOSH
Deputy Governor

Bombay-400005, the 1st June 1990

No. Ret. 809/NC. 184(L)-90.—In pursuance of Sub-Section (2) of Section 36A of the Banking Regulation Act, 1949, the Reserve Bank of India hereby notifies that the Cooch Behar Banking Corporation Ltd., Cooch Behar, West Bengal ceased to be a banking company within the meaning of the said Act.

N. D. PARAMESWARAN
Additional Chief Officer

STATE BANK OF INDIA

Bombay, the 1st June 1990

NOTICE

The Thirty-Fifth Annual General Meeting of the Shareholders of the State Bank of India will be held at 'Soochana Bhavan' Secretariat Road, Bhubaneswar-751 009, on Thursday, the 26th July, 1990 at 4.00 p.m. for the transaction of the following business:

- (i) to receive the Central Board's Report, the Balance Sheet and Profit and Loss Account of the Bank made up to the 31st March, 1990 and the Auditor's Report on the Balance Sheet and Accounts; and
- (ii) to elect two Directors to the Central Board of the Bank under the provisions of Section 19 (1) (c) of the State Bank of India Act.

M. N. GOIPORIA
Chairman

NATIONAL BANK FOR AGRICULTURE AND RURAL DEVELOPMENT

Bombay-400018, the 30th May, 1990

ANNEXURE—I

No. NB. SECY. 105/C-7/90-91

CORRIGENDUM

Sr No.	Page No. of the Gazette	Reference	Errata	Correction
1.	888	Item No. 2(i), Column No. 5, Line No. 2		160, 30, 35, 700
2.	888	Item No. 2(i), Column No. 5, Line No. 3	160, 30, 35, 700	delete
3.	888	Item No. 2(v), Column No. 5, Line No. 3	3, 967	3,667
4.	890	Item No. 5, Column No. 3, Line No. 10	9, 61, 919	9, 61, 191
5.	890	Item No. 6(i), Column No. 4, Line No. 5	12, 05, 94, 4000	12, 05, 94, 400
6.	891	Item No. 5, Column No. 3, Line No. 2	34,18,20,393	34,18,20,493
7.	891	Item No. 6, Column No. 5, Line No. 11	1,10,65,16	1,10,65,167
8.	891	Item No. 7, Column No. 5, Line No. 10	87,04,25	87,04,258
9.	891	Item No. 9, Column No. 1, Line No. 3	(i)	(ii)
10.	891	Item No. 9, Column No. 1, Line No. 5	(ii)	(iii)
11.	891	Item No. 9, Column No. 1, Line No. 5	Rep-	Re-
12.	892	Item No. 10(iii), Column No. 1, Line No. 1	Discounted	Discounted
13.	892	Item No. 11, Column No. 1, Line No. 15	(ii)	(iii)
14.	892	Item No. 11(iv), Column No. 5, Line No. 3	11,61,618	11,99,618
15.	892	Item No. 11(v), Column No. 1, Line No. 1	mature	matured
16.	892	Column No. 3, Line No. 47 (heading)		Rs. in crores
17.	892	Column No. 5, Line No. 47, (heading)		Rs. in crores
18.	892	Column No. 1, Line No. 55 (below item (i))	(iii)	(ii)
19.	893	Item No. ix(b), Column No. 5, Line No. 2	8,02,28,665	5,02,28,665
20.	893	Item No. ix(c), Column No. 2, Line No. 3	2,96,13,30	2,96,13,300
21.	893	Item No. ix(d), Column No. 2, Line No. 2	5,78,033	5,78,033
22.	893	Item No. ix(e), Column No. 1, Line No. 1	Corporation	Co-operation
23.	893	Item No. ix(e), Column No. 1, Line No. 2	Operation	delete
24.	893	Item No. ix(e)(i), Column No. 5, Line No. 2	12,50,00,00	12,50,00,000
25.	893	Item No. ix(e)(ii), Column No. 5, Line No. 2	5,00,00	5,00,000
26.	893	Item No. (xiii), Column No. 1, Line No. 2	Credit	Credit
27.	894	Item No. 1(b), Column No. 1, Line No. 5	Bank	Bank
28.	894	Item No. 14, Column No. 4, Line No. 2	17,60,00	17,60,000
29.	894	Column No. 3, Line No. 51	37,87,58,561	36,87,58,561
30.	895	Column No. 3, Line No. 2	324,02,79,973	324,02,79,273
31.	895	Column No. 1, Line No. 4	1481	1981
32.	896	Column No. 2, Line No. 8	reort	report
33.	897	Column No. 3, Line No. 4	45,15,46,467	45,15,46,667
34.	898	Column No. 2, Line No. 65	A.A.BARRE	A.A.BARVE

EMPLOYEES' STATE INSURANCE CORPORATION

New Delhi, the 30th May 1990

No. U-16/53/85-Med. II (W.B).—In pursuance of the resolution passed at its meeting held on 25th April, 1951 conferring upon the Director General the powers of the Corporation under Regulation 105 of the FSI (General) Regulations 1950, and such powers having been further delegated to me vide Director General's Order No. 1024 (G) dated 23rd May, 1983, I hereby authorise following doctors to function as Medical Authority with effect from the date as mentioned below for a period of one year or till a full time Medical referee joins, whichever is earlier for

9—119GI/90

Calcutta area (West Bengal), (Areas to be allocated by the Dy. Medical Commissioner (East Zone), Calcutta on payment of monthly remuneration in accordance with the existing norms for the purpose of medical examination of the insured persons and grant of further certificates to them when the correctness of the original certificates is in doubt.

1. Lt. Col. (Dr) S. K. Das 1-7-90 to 30-6-91
2. Dr. N. M. Mukherjee, 16-6-90 to 15-6-91
3. Dr. S. K. Mukherjee, 21-7-90 to 20-7-91

DR. K. M. SAXENA
Medical Commissioner

CENTRAL PROVIDENT FUND COMMISSIONER

New Delhi, the 31st May, 1990

No. Conf. 4(1)83-88/13036.—In pursuance of sub-paragraph (1) of paragraph 4 read with paragraph 5 of the Employees' Provident Funds Scheme, 1952, the Chairman, Central Board of Trustees, Employees' Provident Fund hereby makes the following amendment in the notification of the Government of India in the Ministry of Labour N.O. S.O. 4914 dated the 19th October, 1985 published in the Gazette of India, Part II, Section 3, Sub-Section (ii) dated the 19th October, 1985.

In the said notification after Sl. No. 9, the following shall be inserted, namely:—

10. Shri N. Kannan,
Secretary,
Employers' Federation of
Southern India,
41, Kastura Ranga Road,
Alwarpet, Madras-600018.

Non-official member
of the CBT, EPP
ordinarily resident in the State of Tamil Nadu

The 5th June 1990

No. 2/1959/DLI/Exemp/89/pt. 1/3403.—WHEREAS the employers of the establishments mentioned in Schedule I (hereinafter referred to as the said establishments) have applied for exemption under sub-section 2 (A) of Section 17 of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952) hereinafter referred to as the said Act):

AND WHEREAS, I. B. N. SOM, Central Provident Fund Commissioner is satisfied that the employers of the said establishments are, without making any separate contribution or payment of premium in enjoyment of benefits under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance

which are more favourable to such employees than the benefits admissible under the Employees' Deposit Linked Insurance Scheme, 1976 (hereinafter referred to as the said Scheme):

NOW, THEREFORE, IN exercise of the power conferred by Sub-Section (2A) of Section 17 of the said Act and subject to the conditions specified in Schedule II annexed hereto, I, B. N. SOM hereby exempt each of the said establishment with retrospective effect from the date mentioned against each from which date relaxation order under para 28(7) of the said Scheme has been granted by the R.P.F.C. Rajasthan from the operation of the said scheme for and upto a period of three years. upto 28-2-90.

SCHEDULE—I

Sr. No.	Name & Address of the establishment	Code No.	effective date of exemption	C.P.F.C.'s File No.
1.	M/s Kishangarh Fabrics Limited, Bhilwara (Rajasthan)	RJ/4667	1-1-89	2/2759/90-DLI
2.	M/s Gangapur Co-operative Spg. Mills Ltd., Gangapur (Bhilwara)	RJ/4725	1-1-89	2/2760/90-DLI

SCHEDULE-II

1. The employer in relation to each of the said establishment (hereinafter referred to as the employer) shall submit such returns to the Regional Provident Fund Commissioner concerned and maintain such accounts and provide such facilities for inspection, as the Central Provident Fund Commissioner may direct from time to time.

2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time, direct under clause (a) of sub-section (3A) of Section 17 of the said Act, within 15 days from the close of every month.

3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme, including maintenance of accounts, submission of returns, payment of insurance premia transfer of accounts, payment of inspection charges etc. shall be borne by the employer.

4. The employer shall display on the Notice Board of the establishment, a copy of the rules of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government/Central Provident Fund Commissioner as and when amended, alongwith translation of the salient features thereof in the language of the majority of the employees.

5. Whereas an employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment exempted under the said Act, is employed in his establishment the employer shall immediately admit him as a member of the Group Insurance Scheme and pay necessary premium in respect of him to the Life Insurance Corporation of India.

6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under the Group Insurance Scheme appropriately if the benefits available to the employees under the said Scheme are enhanced so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are more favourable to the employees than the benefits admissible under the said Scheme.

7. Notwithstanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the death of an employee the

amounts payable under the Scheme be less than the amount that would be payable had the employees been covered under the said Scheme, the employer shall pay the difference to the nominee (s)/legal heir (s) of the employee as compensation.

8. No amendment of the provisions of the Group Insurance Scheme shall be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner concerned and where any amendment is likely to effect adversely the interest of the employees, the Regional Provident Fund Commissioner shall before giving his approval, give a reasonable opportunity to the employee to explain their point of view.

9. Where for any reason, the employees of the said establishment do not remain covered under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India as already adopted by the said establishment, or the benefits to the employees under this Scheme are reduced in any manner, the exemption shall be liable to be cancelled.

10. Where for any reason, the employer fails to pay the premium etc. within the due date, as fixed by the Life Insurance Corporation of India, and the policy is allowed to lapse, the exemption shall be liable to be cancelled.

11. In case of default, if any made by the employer in payment of premium the responsibility for payment of assurance benefits to the nominee(s) legal heir(s) of deceased member who would have been covered under the said Scheme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.

12. Upon the death of the member covered under the Group Insurance Scheme the Life Insurance Corporation of India shall ensure prompt payment of the sum assured to the nominee(s)/legal heir(s) of the deceased member entitled for it and in any case within one month from the receipt of claims complete in all respect.

B. N. SOM
Central Provident Fund Commissioner

PONDICHERRY UNIVERSITY PONDICHERRY

FIRST ORDINANCE
GOVERNING ACADEMIC MATTERS

(Vide letter No. F.21-10/87 Desk (U), dated 7-12-1987)

CHAPTER I

SCHOOLS OF STUDIES AND DEPARTMENTS/
CENTRES

[Sections 4 and 6 read with Statute 16 (1)]

Schools of Studies

1. The University shall have the following schools of studies :

- (i) Sri Aurobindo School of Eastern and Western Thoughts.
- (ii) Sri Subramania Bharathi School of Tamil Language and Literature.
- (iii) School of French Studies.
- (iv) School of Management.
- (v) C. V. Raman School of Physical and Chemical Sciences.
- (vi) J. C. Bose School of Life Sciences.
- (vii) School of Ocean Studies.
- (viii) School of Sanskrit and Other Indian Languages.
- (ix) School of Forestry Science.
- (x) School of Development Sciences.
- (xi) School of International Affairs.

2. The University shall also have the following schools of studies in order to provide for and cater to the subjects taught in the various colleges/institutions admitted to the privileges of the University and also in the University departments

- * (1) School of Humanities and Social Sciences.
- (2) Ramanujam School of Mathematics and Computer Sciences.
- (3) School of Law.
- (4) School of Medicine.
- (5) School of Engineering and Technology.
- (6) School of Education.
- ‡ (8) School of Fine Arts.
- (9) School of Physical Education.

Other school to be established may be determined later on

Colleges institutions admitted to the privileges of the University

3. The following colleges/institutions stand admitted to the privileges of the Pondicherry University :

- (1) Tagore Arts College, Pondicherry.
- (2) Dr. B. R. Ambedkar Government Law College, Pondicherry.
- (3) Bharathidasan Government College for Women, Pondicherry.
- (4) Arignar Anna Government Arts College, Karaikal.
- (5) Avvaiyar Government College for Women, Karaikal.

* Shall comprise the following departments of teaching :

English, Languages other than English forming part of the Arts (Humanities) Courses Philosophy, Psychology, History, Economics, Politics, Geography, Journalism and Sociology.

‡ Shall comprise the following departments of teaching :

Drawing, Painting, and Architecture; Indian Music and Western Music.

(6) Mahatma Gandhi Government Arts College, Mahe.

(7) Dr. S. R. K. Government Arts College, Yanam.

(8) Jawaharlal Institute of Post-graduate Medical Education and Research, Pondicherry.

(9) Pondicherry Engineering College, Pondicherry.

(10) Pope John Paul II College of Education, Pondicherry.

In addition to the above, the Vector Control Research Centre, Pondicherry, in so far as it relates to the courses conducted in M.Sc. (Medical Entomology) and Ph. D. (Botany, Zoology) also stands affiliated to the University.

Provided that students now pursuing various courses in these colleges/institutions shall be permitted to complete their courses for the Diploma/Degree or Certificate from the University of Madras, University of Calicut or Andhra University, as the case may be and such colleges/institutions shall provide for instruction and examination of such students in accordance with the syllabus of study under which a student was admitted to that course as contemplated in section 43.

Provided further that if these colleges/institutions propose to start any fresh course for any Degree/Diploma of the Pondicherry University as an affiliated college/institution, the provisions as contained in Statute 32 (1) of the Pondicherry University Act (No. 53 of 1985) shall apply.

4. The college/institution admitted to the privileges of the University shall not, without the prior permission of the Executive Council and Academic Council of the University, suspend instruction in any subject or course of study which the said college/institution is authorised to teach. [Statute 32 (1) (v)].

Assignment of Departments/Centres of Studies to Schools

5. (i) The following Departments of Studies shall be assigned to School of Management :

- (a) Department of Management Studies.
- (b) Department of Commerce.
- (c) Department of Economics and such other Department(s) as may be created in future.

(ii) The following Departments of Studies shall be assigned to the School of Life Sciences :

- (a) Department of Bio-Chemistry and Bio-Physics.
- (b) Department of Bio-Technology.
- (c) Department of Zoology.
- (d) Department of Botany/Marine Biology and such other Department (s) as may be created in future.

(iii) The following Departments of Studies shall be assigned to the School of Sanskrit and other Indian Languages :—

- (a) Department of Sanskrit;
- (b) Department of Modern Indian Languages;
- (c) Department of English and foreign languages/and such other Department (s) as may be created in future.

(iv) The School of Forestry Science shall be located in the campus of the University to be established at Andaman and Nicobar Islands.

(v) Departments to be assigned to other Schools shall be notified from time to time.

CHAPTER II
SCHOOL BOARD
[Statute 16 (2)]

Constitution

1. Every school shall have a School Board. On the expiry of the term of the first School Board constituted under Statute 16 (2) the School Board shall consist of the following members.

- (i) The Dean of the School (*ex-officio*).
- (ii) Heads of Departments in the School (*ex-officio*).
- (iii) All Professors in the School.
- (iv) One Reader and one Lecturer from each of the Departments by rotation according to seniority.
- (v) One representative from each of the Board of other Schools, which have inter-disciplinary work with the School, to be nominated by the Vice-Chancellor.
- (vi) Not more than two educationists preferably experts in the subject nominated by the Vice Chancellor.
- (vii) Not more than five persons nominated by the Academic Council for their special knowledge of or expertise in the concerned subject and who are not employees of the University or of any of its affiliated colleges/institutions.

Term of office

2. The term of office of the members other than *ex-officio* members shall be three years and they shall be eligible for re-nomination.

Chairman

3. The Dean of the school shall be the Chairman of the Board and shall convene the meetings of the Board.

Functions

4. The functions of the School Board shall be :

- (a) to co-ordinate the teaching and research work in the department assigned to the school.
- (b) to appoint Committees to organise the teaching and research work in subjects or areas which do not fall within the sphere of any department in the school and supervise the work of such Committees.
- (c) to approve the courses of study of various programmes including research degrees offered by the Departments.
- (d) to recommend to the Executive Council the names of examiners for the evaluation of these, for Ph.D. and other research degrees.
- (e) to recommend to the Academic Council, creation or abolition of teaching posts after considering proposals received from the Departments/Centres.
- (f) to recommend the suggestions of the Board of Post-graduate Studies to the Academic Council regarding the award of research degrees to candidates who have been adjudged to be fit to receive such degrees.
- (g) to frame the general time-table of the school.
- (h) to consider and act on any proposal regarding the welfare of the students of the school.
- (i) to consider schemes for the advancement of the standards of teaching and research and to submit proposals in this regard to the Academic Council.
- (j) to perform all other functions which may be prescribed by the Act, Statutes and Ordinances and to consider all such matters as may be referred to it by the Executive Council, the Academic Council of the Vice-Chancellor.

- (k) to delegate to the Dean or to any other member of the Board or to a Committee such powers, general or specific, as may, decided.

Meetings

5. Meetings of the Board shall either be ordinary or special.

Ordinary meetings shall be held twice in a year of which one shall be held in the first quarter of the academic session.

6. Special meetings may be called by the Dean on his own initiative or shall be called at the suggestion of the Vice-Chancellor or on a written request from at least one-fifth of the members of the Board.

Quorum

7. The quorum for a meeting of the Board shall be one-third of its total membership.

Notice

8. Notice for the ordinary meeting of the Board shall be issued at least ten days before the date fixed for the meeting, and for the special meeting, at least five days before the date fixed for the meeting.

Rules of Business

9. Rules of conduct of the meetings shall be as prescribed by regulations to be framed in this regard.

CHAPTER III

DEPARTMENTS

[Section 2 (g) read with Statute 16 (5) (c)]

Constitution

1. In addition to the members enumerated under Statute 16 (5) (c) (i) to (iv), the following shall also be the members of the department under Statute 16 (5) (c) (v) :

Two members having special knowledge and expertise and who are not employees of the University or of any of the affiliated colleges/institutions, nominated by the Vice-Chancellor.

Heads of the Departments-Appointment and their functions Statute 7 (i) to (v)

2. The Head of the Department shall convene and preside over the meetings of the department.

3. The Head of the Department, under the general guidance of the Dean of the School, shall—

- (a) organise the teaching and research work in the department;
- (b) allocate teaching work to the teachers in the department and assign to them such other duties as may be necessary for the proper functioning of the department;
- (c) co-ordinate the work of the Departmental Committees appointed for specific purposes; and
- (d) perform such other duties as may be assigned to him by the Dean, the Board of the School, the Academic Council, the Executive Council or the Vice-Chancellor.

CHAPTER IV

BOARD OF POST-GRADUATE STUDIES

(Statute 17)

Constitution

1. There shall be a Board of Post-graduate Studies for each department.

2. The Board of Post-graduate Studies shall consist of the following members :

- (i) Head of the Department.

CHAPTER V

BOARD OF UNDER-GRADUATE STUDIES

[Statute 17(1) and (4)]

1. There shall be a Board of Under-graduate Studies for each subject/discipline taught at the degree level.

Constitution

2. Each Board shall comprise not less than nine members. The constitution of the Board shall be as follows :

- (i) The Head of the University department teaching the subject who shall be the *ex-officio* Chairman.
- (ii) Professors in the Department.
- (iii) One Reader in the Department by rotation as per seniority.
- (iv) One Lecturer in the Department by rotation as per seniority.
- (v) Two teachers from the affiliated colleges/institutions engaged in teaching the subject concerned, to be nominated by the Vice-Chancellor.
- (vi) Two outside experts nominated by the Vice-Chancellor in consultation with the Head of the Department;

Provided that in respect of subjects/discipline not taught in the University Departments/Schools, e.g. Engineering, Medicine, Law, Education, etc. the Board of Studies shall consist of the following :

- (i) the Principal or the Head of the Department of the concerned discipline, as the case may be, who shall be the *ex-officio* Chairman of the Board of Studies.
- (ii) Not more than four teachers teaching allied or cognate subjects/discipline in similar Colleges/institutions, nominated by the Vice-Chancellor.
- (iii) Not more than three outside experts who have special knowledge in the discipline, to be nominated by the Vice-Chancellor.

Term of office

3. Members of the Board of Under-graduate Studies shall hold office for a period of 3 years and they shall be eligible for reappointment.

Powers and functions

4. The powers and functions of the Board shall be :

- (a) to recommend to the Executive Council panel of names suitable for appointment as examiners, paper setters, etc., in a subject with which it deals in accordance with the provisions of Regulations about the examinations of the University;
- (b) to recommend text-books where necessary;
- (c) to consult specialists who are not members of the Board, as and when necessary;
- (d) to make recommendations to the Academic Council in accordance with the syllabi of the courses of study and examinations in the subjects with which it deals;
- (e) to recommend to the School Board, steps/measures for improvement of the standard of under-graduate courses and teaching in the subject for making necessary recommendations to the Academic Council and to consider and report on any matter referred to it by the Executive Council, the Academic Council and the Dean of the School.

The Chairman shall have the power to co-opt experts to attend as observers at its specific meetings, as and when necessary, with prior permission of the Vice-Chancellor.

Meetings

5. Meetings of the Board shall be convened by the Chairman of the Board.

- (ii) All Professors of the department.
- (iii) Two Readers and two Lecturers, by rotation according to seniority, to be appointed by the Vice-Chancellor.
- (iv) One teacher each from other departments within the School having common courses with the department concerned.
- (v) Not more than four teachers teaching allied or cognate subject in other Schools or affiliated colleges/institutions, nominated by the Vice-Chancellor.
- (vi) Not more than three persons, nominated by the Board of the School who have special knowledge in the discipline of the concerned department and who are not employees of the University or of any of the affiliated colleges/institutions.
- (vii) In respect of the professional colleges, the Principal or the Head of the Department of the concerned discipline, as the case may be, shall be the *ex-officio* Chairman of the Board of Studies.
- (viii) The Chairman shall have the power to co-opt experts to attend as observers at its specific meetings, as and when necessary, with the prior permission of the Vice-chancellor.

Term of Office

3. The term of office of the members of the Board of Studies shall be for a period of three years and they shall be eligible for re-appointment.

Powers and functions

4. The functions of the Board shall be—

- (a) to approve subjects for research for various degrees and other requirements of research degrees;
- (b) to recommend to the School Board, courses of studies for the Post-graduate courses offered by the department or college/institution;
- (c) to recommend to the School Board, appointment of examiners to the Post-graduate courses, other than research degrees, in accordance with the provisions of the regulations governing examinations of the University;
- (d) to consider and recommend to department(s) concerned applications for admission to the M. Phil. course, Ph. D. and other research programmes and also to recommend the appointment of supervisors of Research Scholars to the School Board;
- (e) to recommend to the School Board measures for the improvement of the Post-graduate teaching and research in the department, affiliated colleges/institutions; and
- (f) to perform such other functions as may be assigned to it by the School Board, the Academic Council, the Executive Council and the Vice-Chancellor.

Quorum

5. The quorum for a meeting of the Board shall be one-third of the total membership of the Board.

Notice

6. Notice of the meetings of the Board shall be issued at least 14 days before the date fixed for the meeting.

Minutes

7. The Chairman of the Board shall keep the Minutes of the Meetings of the Board.

Rules and Business

8. The Rules of conduct of the meeting shall be as may be prescribed by regulations in this regard.

6. Special meetings may be called by the Chairman on his own or on the request of the Dean of the School or at the suggestion of the Vice-Chancellor or on written request from at least four members of the Board.

Notice

7. Notice of the meetings of the Board shall be issued by the Registrar's Office at least 3 weeks before the date fixed for the meetings.

Quorum

8. Four members of the Board shall form quorum.

Rules of Business

9. The rules of conduct of the meeting shall be as may be prescribed by the Regulations in this regard.

CHAPTER VI

DEAN OF SCHOOL OF STUDIES

[Statute 6(3)]

1. The Dean of the School shall :

- (a) co-ordinate and generally supervise the teaching and research work in the School through the Heads of Departments;
- (b) maintain discipline in the classrooms through the Heads of Departments;
- (c) keep a record of the evaluation of sessional work and the attendance of the students at lectures, tutorials or seminars wherever these are prescribed;
- (d) arrange for the examinations of the University in respect of the students of the School in accordance with such directions as may be given by the Academic Council;
- (e) convene and preside over the meetings of the Board of the School and keep the minutes of the meetings of the Board;
- (f) perform such other duties as may be assigned to him by the Academic Council, the Executive Council or the Vice-Chancellor.

CHAPTER VII

ADMISSION OF COLLEGES/INSTITUTIONS TO THE PRIVILEGES OF THE UNIVERSITY

[Section 5(17) of the Act read with Statute 32]

Definition

1. (a) 'College' means any college or any institution maintained or recognised by the University or admitted to the privileges of the University and providing courses of study for admission to the examinations of the University;

(b) 'Affiliated college/ institution means any college/ institution not maintained by the University and admitted to the privileges of the University and providing course of study for admission to the examinations for Degree/Diploma/Certificate of the University under the Pondicherry University Act, 1985.

(c) 'Post-graduate College' means a University institution or an affiliated College/institution providing post-graduate courses of study leading to the post-graduate degree of the University.

(d) 'Government College' means any College/institution maintained by Government (State or Central) or a Union Territory Administration.

(e) 'Private College' means any College/institution maintained by the University or a Government Agency.

2. An "autonomous College/institution" means any College/ institution designated as an 'autonomous College/institution' by the statutes of the University.

3. The Executive Council shall prescribe, in consultation with the Academic Council, the manner in which and the conditions subject to which a College/institution may be designated as an autonomous college and for withdrawal of such designation.

4. The Executive Council shall not propose the draft of any statute or amendment to a statute affecting the conditions of affiliation or approval of affiliated or approved College/institution with the University or by the University, as the case may be, or affecting the conditions of designation of any College/institution as an autonomous College/ institution except after consultation with the Academic Council.

Procedure for granting affiliation to College/Institution

5. (a) Wherever a proposal to start a new College is made, the sponsoring body, or in the case of a Government College, the Department of the Government concerned, shall submit an application to the Registrar in the prescribed form not later than August 15 of the preceding year in which it is intended to start the College. Applications should be accompanied by detailed report of the infrastructure and physical, financial and other facilities available to start such a College.

(b) The Colleges for the purpose of this Ordinance will be grouped into two categories; Under-graduate Colleges and Post-graduate Colleges. The procedure for admission to the privileges of the University for these two categories in dealt with here below :

(c) An Under-graduate College or a Post-graduate College, as the case may be, shall ordinarily be admitted to the privileges of the University, in the first instance, for providing instruction for the first year of the course. Such a College may be admitted to the further privilege of providing instruction at the subsequent years of study in accordance with the procedure and conditions prescribed by the University for the purpose.

(d) On receipt of the application, the Affiliation Committee constituted by the Academic Council shall scrutinize the application and where needed, seek further clarification from the sponsoring body. The Committee thereafter shall make its recommendations to the Academic Council.

(e) The Academic Council, after considering the report of the Affiliation Committee, shall appoint a Committee of Inspection of not less than three members of whom one shall be the Director of Studies, Educational Innovations and Rural Reconstruction.

(f) The Committee of Inspection may take necessary steps to examine the request, inspect the site and submit its report to the University on the need and feasibility of the proposed College the suitability of the site, the adequacy of the physical facilities and financial resources and then make suitable recommendations.

(g) The University shall make necessary arrangements to complete the process and intimate the decision to the sponsoring Body/Government Department concerned and college/ institution concerned normally two months prior to the commencement of the next academic session.

(h) (i) On receipt of the permission to start the college/ institution the sponsoring Body shall constitute the Governing Body/Advisory Committee and proceed to make appointment for the posts of Principal and other academic staff in accordance with the provisions of the Statutes, Ordinances and Regulations of the University about their composition, minimum qualifications, procedure for appointment, etc.

(ii) Further, the Governing Body/Advisory Committee shall make necessary arrangements to fulfil all the conditions and recommendations made by the Committee of Inspection in this regard.

(i) No person, who is not fully qualified as per the norms laid down by the University for the purpose, shall be appointed on the staff of the college or as Principal. In exceptional cases, however, if a fully qualified Principal is not readily available, one of the members of the staff, if existing, having the longest teaching experience, at college level, may be designated as Vice-Principal and the post of Principal may be kept vacant until such time a fully qualified person is appointed as Principal.

(j) In the case of affiliation to start new courses, the provisions contained in the foregoing clauses (a), (c), (d), (e), and (g) shall be observed.

(k) The Governing Body/Advisory Committee of a college/institution or the Government Department, as the case may be, shall at the earliest, but not later than 15 days from the date of the commencement of the academic session, inform the University about the staff in position with full particulars and also a clarification/acceptance regarding the fulfilment of the conditions, recommendations prescribed by the University.

(1) The affiliation Committee shall consist of the following :

Chairman

(i) Vice-Chancellor or his nominee.

Members

(ii) Two nominees of the Academic Council.

Member-Secretary

(iii) Registrar or any other officer nominated by the Vice-Chancellor.

(m) Provisional affiliation of a College/course shall be granted for a period of one year initially which may be extended to a further period as the University may deem fit and proper. Requests for renewal shall be submitted three months before the expiry of such provisional affiliation.

(n) The University may arrange for a review of the progress of the College/institution, its performance in general with particular reference to the course(s) started and then permit the renewal and the fact be reported to the Academic Council.

(o) The College/institution, which has been granted provisional affiliation for any course, after the lapse of three academic years may apply for permanent affiliation which may be granted on the recommendation of the Committee of Inspection appointed for the purpose. The College/institution shall submit a detailed report well before the time of inspection to facilitate the work of the Committee of Inspection.

Provided that in exceptional and outstanding cases, this condition may be waived by the Executive Council on the recommendation of the Academic Council and permanent affiliation granted earlier to any College/institution as per usual procedure governing such permanent affiliation as special categories.

(p) No College shall be dissolved or abolished by its Governing Body/Advisory Committee without making prior arrangement for admission of students in another affiliated College or Colleges and without making alternative arrangements for employment of the permanent members of the teaching staff and also without obtaining prior approval of the Government concerned, the University, the University Grants Commission, as may be necessary, regarding final settlement of any property including library books and laboratory equipment which might have been acquired by such a College with financial assistance from the University Grants Commission and/or Government.

Provided that no College shall be dissolved or abolished under any circumstances in the midst of an academic session.

(q) The Executive Council may lay down new conditions of affiliation, general or specific, regarding staff, buildings, equipment, library, laboratories, finance or other relevant matters and specify the date by which the conditions so stipulated be satisfied, failing which the College/institution may not be allowed to enjoy the privileges of the University.

(r) The report of the Inspection Committee of a College/institution shall not be communicated to the College/institution but shall be regarded as a confidential document until it has first been considered by the University. After a decision regarding affiliation has been taken, copies of the report may be sent, unless withheld under the orders of the Vice-Chancellor for any reason, to the college/institution and to the Director of Education/Department of the Government concerned for information, guidance and necessary action.

Inspection/Affiliation fee and creation of Endowments

6. A sponsoring body/Government Department seeking permission to open a new College/Institution or Colleges/institutions seeking to start new courses shall pay the fees/create the endowment at the rates as specified in the Appendix-I to this Chapter.

However, the provision relating to the creation of endowment shall not apply in the case of Colleges/Institutions maintained by a Government (State or Central) or a Union Territory Administration.

7. Such affiliated Colleges/institutions may levy such fees from students towards tuition fee, etc., payable to the College and also to the University as may be prescribed/approved by the University from time to time, with the prior concurrence of the University.

Withdrawal of affiliation

8. The Executive Council shall have power to withdraw any affiliation or permission from a College/institution at any time whenever, in the opinion of the Executive Council, such College/institution has failed to comply with the Rules, Regulations, Statutes, Ordinances or any other directives of the University, or if the College/institutions authorities have failed to maintain order and discipline in the College/institution or the normal, regular and proper functioning of the College/institution has become impossible due to mismanagement of the affairs of the College/institution or any other valid reason.

9. Work load of the teachers in such affiliated Colleges shall be as prescribed by the Regulations.

10. The time-table of a College/institution shall provide for the minimum number of classes per week in each subject taught as prescribed by Regulations.

11. The minimum staff requirement of a College/institution shall be as provided in the Regulations. No College/institution shall be granted affiliation if it fails to satisfy such minimum requirement.

12. Every College/institution shall provide suitable accommodation for class rooms, laboratories, library and administration, as prescribed by the University.

13. Every College/institution must have a well-equipped Library as per provisions of the Regulations in this regard.

14. Every College/institution should follow the norms laid down by the University about the size of cases which may be prescribed by Regulations.

15. Any difficulty arising in interpretation of, or giving effect to any provisions of this Ordinance, shall be referred to the Vice-Chancellor, whose interpretation or decision thereon, shall be final.

CHAPTER-VIII

ADMISSION OF STUDENTS TO THE UNIVERSITY AND TO THE COLLEGES/INSTITUTIONS ADMITTED TO THE PRIVILEGES OF THE UNIVERSITY

[Sections 5(19) and 27 (1) (a)]

Eligibility and Admission

1. Without prejudice to the provisions of the Act and the Statutes, and other rules of the University, no student shall be eligible for admission to any under-graduate or post-graduate course of study in the University unless he/she has passed the examination or examinations prescribed by the University for admission to the concerned course or courses.

2. Application for admission to the University shall be made to the Dean of the concerned School in such form as may be prescribed and within the last date fixed in respect of each course.

3. The applications so received shall be forwarded by the Dean to the Admission Committee of the Schools/Departments concerned as may be constituted by the Vice-Chancellor.

4. The processing of admission in respect of each course may be completed by the Admission Committee concerned

as per prescribed procedure and the list of candidates recommended for admission shall be forwarded to the Vice-Chancellor for approval.

5. All admission shall be provisional in the first instance and may be finalised within a time limit as may be fixed by the Vice-Chancellor.

No candidate shall claim admission as a matter of right.

6. Admission to the various courses in the colleges/institutions admitted to the privileges of the University shall be processed by the Admission Committee constituted by the colleges/institutions concerned and finalised subject to regulations prescribed in this regard.

Admission of French Nationals

7. French nationals of Indian origin who have been permitted long term residence in the Union Territory of Pondicherry under the provisions of the Treaty of Cession, shall be treated on par with Indian nationals for admission to the courses in the University and in colleges/institutions admitted to the privileges of the University.

Admission of Foreign Nationals

8. Admission of foreign nationals, other than those stipulated in para 7 above, shall be regulated in accordance with the guidelines issued from time to time by the Government of India.

Enrolment of students to the Doctor of Philosophy Degree in the University

9. The University may make admission/enrolment of students for Ph.D. Programmes in various subjects/disciplines both on part-time and full-time basis including external registration for the Ph.D. Degree, details of which shall be prescribed through regulations from time to time.

Normally, registration for Ph.D. Degree shall be done twice in a year (in April and October).

CHAPTER-IX

REGISTER OF MATRICULATES

Maintenance of Register of Matriculates Enrolments

1. The University shall maintain a Register of Matriculates in which the names of the following classes of persons shall be registered :

- (a) Candidates who have passed the Higher Secondary, Intermediate, Pre-Degree, S.S.C. of the respective Boards or any other examination approved as equivalent thereto, when admitted to a Course of Study in the University.
- (b) Holders of any degree, title, diploma or certificate, other than those specified in (a) above on first admission to a University Course of Study.
- (c) Persons, other than those specified in (a) or (b), who with or without exemption from attendance certificates, are permitted to appear for the first time for any examination of the University.
- (d) Persons, other than those specified in (a), (b) or (c) and who are candidates for admission to a Research Degree of the University.

CHAPTER-X

MIGRATION AND TRANSFER OF STUDENTS

Combination of attendance

1. It shall be open to the Principal of a college/institution to admit a student who has put in part attendance in another College within the University area and who seeks admission in the college/institution during the course of an academic year subject to the following conditions :

- (i) The subjects and the medium of instruction offered in both the colleges/institutions are the same.

- (ii) There must be a vacancy in the college/institution in the course of study concerned.
- (iii) The prescribed fees for such combination of attendance shall be collected from the students.
- (iv) A no objection certificate from the college/institution concerned shall be produced.
- (v) A certificate from the Principal of the college/institution in which last studied testifying to the record of attendance and conduct of the student shall be produced.

Note : Combination of attendance cannot be granted :

(a) if there is a change either in the language under Foundation course, or, in the optional subject under core course, and

(b) if the sanctioned strength is exceeded by such admission.

Inter University Transfer Migration

2. Students transferred from other Universities and seeking admission in the University may be permitted to be admitted to the corresponding branch of the concerned course provided, however,—

(a) Equivalence of the course concerned is approved by the University.

(b) They shall produce from the Head of the Institution in which they have last studied

(i) a certificate stating that they have earned necessary attendance and progress as prescribed by the University concerned till the date of their leaving that institution;

(ii) Transfer Certificate; and

(iii) a Conduct Certificate.

(c) They shall have passed all the examinations prescribed by the parent University for the duration of the course of study already put in and shall have to produce documentary evidence to that effect along with the application for admission.

(d) They shall pay the prescribed fees for such Migration to the University.

(e) They shall undergo the remaining course of study and and satisfactorily fulfil such other requirements as prescribed by the University.

They shall not be eligible for classification or ranking in the University examination concerned.

CHAPTER-XI

MEDIUM OF INSTRUCTION

[Section 27 (1) (c)]

The medium of instruction in respect of all courses conducted in the Schools and in the colleges/institutions admitted to the privileges of the University shall be English except in cases of studies/research in Languages :

Provided that the Vice-Chancellor may permit a student to write any examination in English or the regional language or the mother tongue of the student.

CHAPTER-XII

FEES PAYABLE BY THE STUDENTS OF THE UNIVERSITY AND THE AFFILIATED COLLEGES/INSTITUTIONS

[Section 27 (1) (e)]

Fees

1. Fees payable by the students of the University and the affiliated colleges/institutions, as the case may be, for various purposes, shall be as prescribed in Appendix-II which may be modified by the Executive Council from time to time.

Due date and Mode of Payment

2.(1) Students shall deposit tuition fees in two instalments, the first at the time of their admission and the next before 10th February.

Special fees and other deposits, if any, shall be paid in one instalment at the time of admission.

Examination fees shall be payable on or before the last day prescribed in this regard.

(2) Fees shall be payable in cash or through money order or by a crossed bank draft drawn in favour of "The Finance Officer, Pondicherry University" or in any other manner as may be decided by the University.

Delay of default in Payment

3.(1) If a student does not pay fee in time, late payment fee shall also be levied as follows at the time of payment :

(i) @ 50 paise per day for the first 10 days:

(ii) @ Two rupees per day thereafter upto the last day of the month in which the fee is due.

(2) The Vice-Chancellor, or on his behalf, any other officer to whom this power has been delegated, may relax any of the conditions for payment of fees in special cases.

(3) Names of the defaulters shall be removed from the rolls of the University with effect from the first day of the following month.

(4) A student whose name has been struck off the rolls of the University, under the above clause, may be re-admitted on the recommendation of the Dean of the School concerned and on payment of arrears of fees in full and other dues, together with a re-admission fee of Rs. 10.

(5) Whenever a student proposes to withdraw from the University, he shall submit an application to the Dean of the School concerned through the Head of the Department/Centre intimating the date of his/her withdrawal. If he/she fails to do so, his/her name shall continue to be kept on the rolls of the University for a maximum period of one month, following the month up to which he/she has paid the fees. He/she shall also be required to pay all fees/charges that may fall due during this period.

Blind Students exempted

4. Blind students shall be exempted from payment of tuition fees.

Concession in fee : Award of constitution of university level committee.

5.(1) A committee constituted for the purpose, consisting of the following, shall recommend grant of freeships up to a percentage which may be prescribed as per the guidelines of the University Grants Commission from time to time in this regard :

Chairman

(i) One of the Deans in the University, to be nominated by the Vice-chancellor

Members

(ii) Three Heads of Departments/Centres nominated by the Executive Council

(iii) Three students of the University nominated by the Vice-Chancellor

(2) If the number of applicants for freeships is more than the number of freeships available, the Committee referred to in sub-Clause (1), may recommend half freeships to some of the applicants ensuring at the same time that the total number of freeships does not exceed the prescribed limit.

(3) Applications for concession in fees shall be submitted in the prescribed form to the Dean of the School concerned through the Head of the Department/Centre by 31st August or by such other date as may be specified by the Dean. Applications received after that date shall not ordinarily be entertained.

(4) Each School shall forward the applications thus received to the Registrar, who shall further process the same and place them before the Committee referred to under Clause 5(1) above for making necessary recommendations.

(5) The following factors shall be taken into account while making recommendations on the applications of students for grant of freeships.

(i) Academic record of the student;

(ii) His/her financial position;

(iii) Any other relevant factor relating to the financial position of the student or of his/her parents/guardian.

The list of the students to whom concessions have been awarded shall ordinarily be notified by 30th September.

(6) Freeships granted during the preceding academic year shall not be renewed automatically in the following year. The student in need of such concession shall submit fresh applications every year which shall be considered along with new applications received in that year.

(7) A freeship granted to a student may be cancelled if his/her conduct or progress in studies is found to be unsatisfactory or if his/her financial condition improves and he/she is no longer in need of such fee concession.

Refund of fees, security deposits, etc.

6. (i) Security deposits, library caution money are refundable, on an application from the student on his/her leaving the University, after deducting all dues against him/her.

(ii) If any student does not claim the refund of any amount lying to his/her credit within one calendar year of his/her leaving the University, it shall be deemed to have been donated by him/her to the Students' Aid Fund.

Explanation

The period of one year shall be reckoned from the date of announcement of the result of the examination due to be taken by the student or the date from which his/her name is struck off from the rolls of the University whichever is earlier.

(iii) If, after having paid the fees a candidate desires his/her admission to be cancelled, he/she shall be refunded all fees and deposits, except tuition fee admission, Matriculate, and recognition fees, provided his/her application for withdrawal is received by the Registrar at least five clear days before the commencement of the academic session concerned or within five clear days after the completion of admission.

(iv) If, after having paid his/her fees, a candidate does not join the University, only the sports fee and security deposit(s) shall be refunded provided his/her application for withdrawal is received by the Registrar not later than fifteen clear days after the commencement of the academic session concerned.

(v) Application for withdrawal received after the expiry of fifteen days from the commencement of the academic session would entitle a student for the refund of security deposit/caution money only.

(vi) If a student owes any money to the University on account of any damage he/she may have caused to the University property, it shall along with outstanding tuition fees and fines, if any, be deducted from the security deposit due to him/her :

Provided that these provisions shall not apply to students in the affiliated colleges.

7. Students shall not be issued hall tickets or allowed to appear at the examination unless they have cleared their dues, paid the prescribed examination fee, and produced a "No-dues" certificate.

CHAPTER XIII

AWARD OF SCHOLARSHIPS, STUDENTSHIPS, FELLOWSHIPS, MEDALS, PRIZES, ENDOWMENT, ETC.

[Section 5(14)]

In order to encourage meritorious and deserving students to pursue courses of studies and research in the University without great financial strain, the University shall strive to provide for adequate number of scholarships, fellowships, studentships and freeships, for financial help, and also provide for award of Medals and Prizes on the pattern obtaining in other Central Universities in the country.

Award of Scholarship

2. The University shall institute scholarships in every subject to be awarded to the students of the University/Affiliated Colleges.

Freeship

There shall be fee concession in the form of half and full-freeships of tuition fees in each School and teaching departments as per norms of the UGC.

There shall also be a scheme of merit scholarship where the first and second rank holders in every subject will be awarded scholarship the quantum of which shall be decided by the University from time to time.

All types of Scholarships and Freeships shall be administered at the University level by a Committee to be constituted by the Vice-Chancellor and referred to under Chapter XII.

Fellowship

3. There shall be fellowships instituted in the University for studies or research as approved under the norms of the UGC or other funding Agencies from time to time.

Studentship

4. There shall be a scheme to award medals/prizes to the meritorious students of the University and Affiliated Colleges/Institutions for their best performance in various University Examinations.

Endowment vide Section 5(25)

5. The University shall have power to institute endowments from time to time in accordance with the Pondicherry University Act.

There shall also be a Committee constituted by the Vice-Chancellor for administration of each endowment and implement to the objects of the endowment.

Detailed guidelines shall be framed from time to time by the Executive Council governing the administration of such endowments created in the University.

CHAPTER XIV

DISCIPLINE OF STUDENTS

(Statutes 30 and 31)

Of University Students

1. All powers relating to discipline and disciplinary action in relation to students of the University shall vest in the Vice-Chancellor. Of Students of affiliated Colleges/Institutions.

Of Students of affiliated Colleges/Institutions

2. All powers relating to the discipline and disciplinary action in relation to students of a College or an Institution not maintained by the University shall vest in the Principal/Head of the Institution as the case may be.

3. All disciplinary action in relation to the students of the University shall be taken in accordance with the procedure outlined in the Act and Regulations made from time to time.

4. A student of an affiliated College/Institution would come within the disciplinary jurisdiction of the University,

Institution at the time of conduct of University Examinations or any other University activity and he/she shall be subject to any penalty that may be imposed by the competent authority of the University for having committed such indisciplinary act.

5. All acts unbecoming of a student of the University or a College or Institution would make such student(s) liable for disciplinary action.

6. There shall be a Discipline Committee to be constituted by the Vice-Chancellor which shall perform such functions and exercise such powers as may be delegated to it by the Vice-Chancellor from time to time.

7. The Principal or the Head of the Institution may inflict the following punishments :

- (1) Suspension
- (2) Expulsion
- (3) Rustication for a specified period
- (4) Denial of admission to courses of study in the College/Institution concerned
- (5) Denial of admission to the hostel maintained by the University/College or Institution
- (6) Withdrawal of scholarship or freeship
- (7) Fine for an amount to be specified by order or any other amount which the competent authority deems fit and proper in the circumstances of the case

Provided that the Principal/Head of the Institution shall not inflict any such punishment before satisfying himself as to the necessity of the penalty after giving the student(s) concerned an adequate opportunity for being heard and considering such representation as may be made on behalf of the student(s).

CHAPTER XV

EXAMINATIONS

[Section 27(g)]

Eligibility

1. Examinations of the University other than the doctorate examinations, shall be open to regular students, i.e., candidates who have undergone a regular course of study in the University or in a college or institution admitted to the privileges of the University for a period specified for that course of study.

Attendance/Condonation of shortage in attendance

2. A candidate shall be deemed to have undergone a regular course of study for the period specified for the course if he/she has fulfilled the requirements as given below :

(a) All candidates must put in 75% of attendance in Arts (Humanities), Science, Commerce and Law and 80% in Medical and Technological Courses for each semester/year, as the case may be. The attendance should be reckoned in terms of number of working days only and not subject-wise.

(b) The Principals of affiliated colleges/institutions and the Heads of Department of University are authorised to condone deficiency in attendance up to a maximum of 15% of the number of days for each semester/year, as the case may be, it being assumed that colleges/institutions will normally put in not less than 90/180 working days per semester/year, as the case may be.

The prescribed fees for condonation of shortage in attendance shall be collected by the Principal of the college/institution and the Dean/Heads of the Departments of the University, as the case may be, and remitted to the University.

(c) All candidates prior to their permission to appear at the examination should produce a certificate of attendance, certificate of satisfactory conduct, certificate of satisfactory conduct, certificate of progress, clearance of dues from the

Dean of the School or Head of the college/institution concerned, as the case may be.

Private candidates

3. The following candidates may also be permitted to appear at the examinations of the University, after private study, subject to their being eligible for admission to the course of study concerned and on payment of the prescribed exemption fees.

1. Bona fide teachers :

Candidates who have completed not less than three years of service as whole-time teachers on 31st July of the relevant year in—

- (i) Colleges recognised by the Pondicherry University, Pondicherry;

OR

- (ii) Elementary or Middle or high or Higher Secondary or Oriental Schools recognised by the State Government;

OR

- (iii) Junior Technical Schools or Technical Higher Secondary Schools or Polytechnics recognised by the State Government;

OR

- (iv) Schools situated in the University area and recognised by the Central Board of Secondary Education, New Delhi.

OR

- (v) Schools situated in the University area and recognised by the Council for Indian School Certificate Examination, New Delhi.

situated within the jurisdiction of Pondicherry University.

II. Bona fide Librarians :

Bona fide Librarians holding a certificate or Diploma in Librarianship of the University of Madras or an equivalent qualification and duly recognised by the University and employed in the institutions mentioned under (I) above, and in Branch/Central Libraries in the Union Territory of Pondicherry provided that they have completed three years of service as on 31st July of the relevant year as whole-time Librarians or are working as whole-time Librarians in any one of the said institutions situated in the area of jurisdiction of the Pondicherry University.

III. Defence service Personnel :

Teachers serving in the Indian Army Educational Corps and persons employed in Defence Departments anywhere in the Indian Union (irrespective of the place of employment) provided that they have completed not less than three years (36 months) of service in Indian Army Educational Corps or in a Defence Department as on 31st July.

The above three categories of candidates are eligible to apply for exemption from the production of Attendance Certificates to appear at the B.A., B.Sc., B.Com., M.A., M.Sc., and M.Com. degree examinations after private study in subjects not involving practical/Lab. work.

IV. Bona fide Blind Candidates :

Bona fide blind candidates, duly declared so by a competent medical officer, who are ordinarily residents in the area of jurisdiction of Pondicherry University for a period of not less than three years may also apply for exemption from the production of attendance certificate to appear at the B.A., B.Sc., and M.A., Degree Examinations in subjects not involving practical/Lab. work subject to their eligibility for the course of study concerned. Applicants of this category should submit the following Certificates/Documents in original.—

- (a) Certificates of the qualifying examinations.

(b) Certificate from a Medical Officer not below the rank of a Civil Surgeon stating that the applicant for the examination is a *bona fide* blind candidate.

(c) A certificate of residence issued by an Officer of the Revenue Department not below the rank of a Tahsildar stating that the applicant is ordinarily a resident in the area of jurisdiction of Pondicherry University for a period of not less than three years.

Such blind candidate may be allowed a writer to answer the question papers as per practice in other Universities.

4. The conditions regarding manner of applying, certificates/resumeons to be sent along with the application, exemption examination fees etc., shall be as may be prescribed from time to time.

5. Application for permission to appear at an examination shall be submitted along with such fees, resumeons etc., within the time limit as may be prescribed. Candidate who fails to appear at an examination shall not be entitled to refund of the examination fees paid by him/her.

6. A candidate whose application has been accepted shall be given a hall ticket. Admission to the examination hall shall be only on the production of the above mentioned hall ticket.

7. Question papers of all examinations shall be set and answered in English language subject to the following conditions:

Question papers of all examinations in languages shall be set and answered in the respective languages:

Provided that candidates appearing at an examination in languages other than English may be permitted to answer a part of the question paper in English and the rest in the language concerned.

Provided also that the Vice-Chancellor may permit the students to write any examinations in English or the regional language or the mother tongue of the students.

8. All examinations of the University shall be held at various centres approved by the University within local limits of the University.

9. The schedule of various examinations, probable dates of such examination, publication of results thereof shall be as indicated in Appendix-III.

CHAPTER XVI

EXAMINERS

[Section 27(g)]

Appointment

1. Appointment of Examiners shall be made by the Executive Council in accordance with the rules as may be framed by the Executive Council from time to time for selection and appointment of Examiners.

2. The Executive Council may at any time cancel the appointment of any examiner.

3. The Examiners appointed by the Executive Council may be of the following categories :

- Examiners (Question paper-setters) who will set the question papers for various examinations;
- Examiners for the purpose of carrying out valuation of answer books;

The Chief Examiner

(iii) His duties shall be—

- to distribute the work of valuation;
- to set standard of valuation;
- to value answer papers;
- to set the papers for and to conduct practical examinations, if any;
- to report upon the result of the examinations;

- (f) to supervise the work of the Examiners; and
- (g) such other work as may be assigned to him by the Executive Council.

Boards

4. There shall be two Boards of Examiners, one for setting and moderating the question paper (Board of paper-setters) and the other, for valuation of answer books and tabulating the results (Boards of valuers).

Each Board shall have a Chairman.

The Board of Examiners shall forward the consolidated results to the Controller of Examinations.

The Controller of Examinations shall place such consolidated results before the Examination Committee.

Question Paper-Setters

5. Question paper-setters shall ordinarily be from outside the University area and who are not working in the affiliated colleges/institutions in respect of the subjects for which they set papers.

Question paper-setters shall be appointed for one year and shall be eligible for re-appointment.

Persons not eligible to be Examiners

6. The following persons shall not ordinarily be eligible for appointment as Examiners:

- (a) Persons with less than four years' teaching experience in a college/institution, to any examinership in Arts (Humanities) and Science subjects;
- (b) Persons with less than seven years' teaching experience in a College/institution, and without previous experience in examining to the conducting Boards in Arts (Humanities) and Sciences; and
- (c) Members of the Executive Council except for special reasons which shall be recorded in writing.

Examiners shall be appointed for one year and shall be eligible for re-appointment.

A list shall be prepared annually by the Registrar/Controller of Examinations showing those who have been question Paper-Setters and Examiners during the preceding five years subject/discipline-wise.

Remuneration

7. The remuneration and allowances payable to the Examiners and Chairman of Boards appointed under Clause 1 of this Chapter shall be as indicated in the Appendix IV and as modified by the Executive Council from time to time.

The total remuneration payable to any single person for all the examination work done in an academic year (July to June) shall not be less than Rs. 30 and not more than Rs. 2,000.

The above maximum does not include remuneration for setting question papers. The Chairman's fee shall not be taken into account towards the maximum admissible.

All Examiners shall carry out the instructions which the Executive Council may issue from time to time.

CHAPTER XVII

EXAMINATION COMMITTEE

[Section 32(1)]

Constitution and Composition

- 1. There shall be an Examination Committee in the University.
- 2. The Committee shall consist of the following persons:

Chairman

- (i) The Vice-Chancellor or his nominee Member (*Ex-officio*)
- (ii) The Director of Studies, Educational Innovations and Rural Reconstruction
- (iii) Director of Physical Education, Sports, National Service and Students Welfare
- (iv) Three Deans of Schools, to be appointed by the Vice-Chancellor
- (v) Three Principals of affiliated colleges/institutions to be nominated by the Vice-Chancellor
- (vi) Two persons appointed by the Academic Council Member Secretary (*Ex-officio*)
- (vii) The Controller of Examinations

Term of Office

3. The nominated members and the members appointed by the Academic Council shall hold office for a period of three years and shall be eligible for re-nomination/re-appointment.

Quorum, Powers and functions

4. Four members shall form quorum for meeting of the Committee.

5. The Committee shall consider the consolidated results forwarded by the various Boards of Examiners, approve the same and arrange for the declaration of all examination results in the University.

6. The Committee shall have power to award grace marks in deserving cases according to the rules framed in this regard.

7. The Committee shall submit a report every year to the Academic Council on the working of the University examinations and make recommendations for effecting improvement.

8. The Committee shall also make recommendations regarding disciplinary action to be taken against candidates using unfair means in examinations or contravening in any manner the rules for the conduct of examinations.

9. It shall perform such other duties and functions as may be assigned to it by the Academic Council:

Provided that the Examination Committee may delegate any or all of its powers mentioned above to any officer of the University.

CHAPTER XVIII

AWARD OF DEGREES, DIPLOMAS, CERTIFICATES AND OTHER DISTINCTIONS

[Section 5(5), Section 27(1)(d) read with Statute 28]

1. Degrees, diplomas, certificates and other academic distinctions shall be conferred by the University on students who have been duly certified to be qualified for such award by the Academic Council.

2. The Executive Council may, on the recommendation of the Academic Council and by a majority of not less than two-thirds of the members present and voting, make proposals to the Visitor for the conferment of honorary degrees:

Provided that in case of emergency, the Executive Council may on its own, make such proposals. The following honorary degrees may be conferred upon a person on the ground that he/she is, by reason of eminent position and attainments or by virtue of his/her contribution to learning or eminent services to the cause of Education or Society, a fit and proper person to receive such degree(s):

Doctor of Laws (LL.D.)

Doctor of Literature (D.Litt.)

Doctor of Science (D.Sc.)

3. Honorary Degrees shall be conferred only at a convocation and may be taken in person or in *absentia*.

CHAPTER XIX

CONVOCATION FOR CONFERRING DEGREES

(Statute 33)

Annual Convocation

1. A Convocation for the purpose of conferring degrees shall ordinarily be held once in a year on such date and place as may be fixed by the Vice-Chancellor with prior approval of the Chancellor.

Special Convocation

2. A special convocation for the purpose of conferring Honorary degrees may also be held at such time as may be decided by the Executive Council.

3. The Convocation shall consist of the body corporate of the University.

4. The Chancellor shall, if present, preside at the Convocations of the University for conferring degrees. In the absence of the Chancellor, the Vice-Chancellor shall preside at the Convocation.

Notice

5. Not less than four weeks notice shall be given by Registrar of all meetings of the Convocation.

6. The Registrar shall, with the notice, issue to each member of the Convocation, a programme of the procedure to be observed thereat.

7. The candidates who have passed their examinations in the year for which the Convocation is held shall be eligible to be admitted to the Convocation :

Provided that this will not be applicable to the First Convocation at which candidates of all the preceding years shall also be admitted to their respective degrees :

Provided also that in case the Convocation is not held in a particular year, the Vice-Chancellor shall be competent to authorise admission of all eligible candidates in the year when a Convocation is held to their respective degrees *in absentia* and conferment of degrees on payment of the prescribed fees.

Application

8. A candidate for the degree must submit to the Registrar his/her application on or before the date prescribed for the purpose, for admission to the degree at the Convocation in person, along with the prescribed fees.

9. Such candidates as are unable to present themselves in person at a Convocation shall be admitted to the degree *in absentia* by the Chancellor or in his/her absence by the Vice-Chancellor and their Diplomas shall be given by the Registrar on application and payment of the prescribed fees.

Fees

10. The fees for admission to the degree at the Convocation in person shall be as prescribed from time to time.

Honorary Degree

11. Honorary degree shall be conferred only at a Convocation and may be taken in person or *in absentia*.

12. The presentation of the persons at the convocation on whom honorary degrees are to be conferred shall be made by the Dean of the relevant School concerned in the University or Principal of the affiliated College/Head of the institution concerned.

13. Candidates at the Convocation shall wear gowns and hoods appropriate to their respective degrees as may be

specified by executive orders. No candidate shall be admitted to the Convocation who is not in proper academic dress as prescribed by the University.

Convocation Procedure

14. For the award of degrees at the Convocation candidates present shall be formally presented to the Chancellor or in his/her absence to the Vice-Chancellor for admission to their respective degrees as follows : The Heads of respective Post-graduate departments will present the Master of Arts and Master of Science candidates. The Principals or affiliated Colleges/institutions, nominated for the purpose by the Vice-Chancellor will present, in the following order, the candidates for the degree of LL.B., B.Ed., B.A., (Honours and Pass) B.Sc., (Honours and Pass) B.Com. (Honours and Pass).

The names of the recipients of medals and prizes shall be read by the Registrar.

The Registrar or the person appointed for the purpose, will present the candidates for conferment of degrees *in absentia*.

Degree certificates shall be supplied to the candidates in a manner prescribed by the Vice-Chancellor after the Convocation is over.

15. The Chancellor, the Chief Rector, the Chief Guest, the Vice-Chancellor, the Directors, the Registrar, the Finance Officer, the Deans of Schools and the members of the University, authorities shall wear their special robes prescribed by the University and further procedure for the conduct of the Convocation shall be prescribed by executive orders.

CHAPTER XX

CLASSIFICATION, EMOLUMENTS, QUALIFICATIONS AND OTHER TERMS AND CONDITIONS OF SERVICE OF THE TEACHERS AND OTHER ACADEMIC STAFF OF THE UNIVERSITY

[Section 27(1)(n) read with Statute 24(1)]

Teachers of the University

1. "Teachers of the University" means Professors, Readers, Lecturers and such other persons as may be appointed for imparting instruction or conducting research in the University or in any college or institution maintained by the University and are designated as teachers by the Ordinances.

Qualifications

2. Minimum qualifications for appointment to the post of Professors, Readers and Lecturers in the Faculties/Schools of Arts (Humanities), Social Sciences, Commerce, Management Studies and Sciences in the University shall be :

(1) PROFESSOR

An eminent scholar with published work of high quality and actively engaged in research. About ten years' experience of teaching and/or research. Experience of guiding research at doctorate level.

OR

An outstanding scholar with established reputation and who has made significant contribution to knowledge.

(2) READER

Good academic record with a doctorate degree or equivalent published work. Evidence of being actively engaged in (i) research or (ii) innovation in teaching methods, or (iii) production of teaching materials.

About five years, experience of teaching and/or research provided that at least three of these years were as Lecturer or in an equivalent position.

This condition may be relaxed in the case of candidates with outstanding record of teaching/research.

Explanation

For determining "good academic record" the following criteria shall be adopted :

READER

- (a) A candidate holding a Ph.D. degree should possess at least a second class Master's degree; or
- (b) A candidate without Ph.D. degree should possess a high second class Master's degree and second class in the Bachelor's degree; or
- (c) A candidate not possessing Ph.D. degree but possessing second class Master's degree, should have obtained first class in the Bachelor's degree.

3. Minimum Qualifications prescribed for appointment to the posts of Lecturers in the University

General :

- (a) A Doctorate's degree or research work of an equally high standard; and
- (b) Good academic record with at least second class (C in the seven-point scale) Master's degree in a relevant subject from an Indian University or an equivalent degree from a foreign University. Having regard to the need for developing inter-disciplinary programmes, the degrees in (a) and (b) above may be in relevant subject(s) :

Provided that if the Vice-Chancellor is of the view that the research work or a candidate as evident either from his/her thesis or from his/her published work is of very high standard, he may relax any of the qualifications prescribed in (b) above, and call such candidates also for the interview :

Provided further that if a candidate possessing a Doctorate degree or equivalent research work is not available or is not considered suitable, a person possessing a good academic record, (weightage being given to M.Phil. or equivalent degree or research work of quality) may be appointed provided he/she has done research work for at least two years or has practical experience in a research laboratory/organisation on the condition that he/she will obtain a Doctorate degree or give evidence of research or high standard within eight years of his/her appointment, failing which he/she will not be able to earn future increments until he/she fulfils these requirements.

Explanation :

For determining "good academic record" the following criteria shall be adopted :

- (i) A candidate holding a Ph.D. degree should possess at least a second class Master's degree; or
- (ii) A candidate without a Ph.D. degree should possess a high second class Master's degree and second class in the Bachelor's degree; or
- (iii) A candidate not possessing Ph.D. degree but possessing second class Master's degree, should have obtained first class in the Bachelor's degree.

4. Minimum Qualifications for appointment to the post of Lecturers in Education,—

- (a) A Doctorate degree in Education or research work of an equally high standard; and
- (b) Good academic record with at least second class (C in the seven-point scale) Master's degree in a relevant subject from an Indian University or an equivalent degree from a foreign University.

OR

- (a) Doctorate degree in any University discipline or research work of an equally high standard; and
- (b) Good academic record with an M.Phil. degree in Education (which may be acquired while in service) from an Indian University or an equivalent degree from a foreign University.

Having regard to the need for developing inter-disciplinary programmes one of the degrees in (a) and (b) above may be in relevant subjects, the other being in Education :

Provided that if the Vice-Chancellor is of the view that the research work or a candidate as evident either from his/her thesis or from his/her published work is of very high standard, he may relax any of the qualifications prescribed in (b) above, and call such candidates also for the interview :

Provided further that if a candidate possessing a Doctorate degree or equivalent research work is not available or is not considered suitable, a person possessing a good academic record (weightage being given to M.Phil. or equivalent degree or research work of quality) may be appointed provided he/she has done research work for atleast two years or has practical experience in research laboratory/organisation on the condition that he/she will have to obtain a Doctorate degree or give evidence of research work of equivalent high standard within eight years of his/her appointment failing which he/she will not be able to earn future increments until he/she fulfils these requirements.

5. Minimum qualifications for appointment to the posts of Lecturer in the Faculties of Music and Fine Arts.—(a) Good academic record with at least second class (C in the seven-point scale) Master's degree in a relevant subject or an equivalent degree or diploma recognised by the University; and

- (b) Two years' research or professional experience or evidence of creative work and achievement in his/her field of specialisation or a combined research and professional experience of three years in the field as an artist of outstanding talent.

OR

A traditional or a professional artist with highly commendable professional achievement in the subject concerned.

Explanation

For determining "good academic record", the following criteria shall be adopted :

- (i) A candidate holding a Ph.D. degree should possess at least a second class Master's degree; or
- (ii) A candidate without a Ph.D. degree should possess a high second class Master's degree and second class in the Bachelor's degree; or
- (iii) A candidate not possessing a Ph.D. degree but possessing second class Master's degree should have obtained first class in the Bachelor's degree.

6. Minimum qualifications for appointment to the post of Lecturers in Physical Education.—(a) An M.Phil. degree or a recognised degree beyond Master's level or published work indicating the capacity of the candidate for independent/research work; and

- (b) Good academic record with at least second class (C in the seven-point scale) Master's degree in Physical Education from an Indian University or an equivalent degree from a foreign University.

Desirable

A Doctorate degree in a relevant subject or research work of an equally high standard :

Provided that if the Vice-Chancellor is of the view that the research work of a candidate as evident either from his/her thesis or from his/her published work is of very high standard, he may relax any of the qualifications prescribed in (b) above and call such candidates also for interview :

Provided further that if a Lecturer in a discipline other than Physical Education is required to be appointed in the faculty School of Physical Education, the qualifications prescribed for recruitment to the post of Lecturer in the parent discipline may be insisted upon :

Provided further that if a candidate possessing a M.Phil. degree or equivalent research work is not available or is not considered suitable, a person possessing a good academic record may be appointed provided he/she has done research work for at least one year or has practical experience in a

research laboratory, organisation on the condition that he/she will obtain M.Phil. degree or recognised degree beyond Master's degree or give evidence of research work of equivalent high standard within eight years of his/her appointment failing which he/she will not be able to earn future increments until he/she fulfils these requirements.

Explanation

For determining "good academic record" the following criteria shall be adopted :

- (i) A candidate holding a Ph.D. degree, should possess at least a second class Master's degree; or
- (ii) A candidate without a Ph.D. degree should possess a high second class Master's degree and second class in the Bachelor's degree; or
- (iii) A candidate not possessing Ph.D. degree but possessing second class Master's degree, should have obtained first class in the Bachelor's degree.

7. Minimum qualifications for appointment to the posts of Lecturers in English :—

- (a) A Doctorate degree or research work of an equally high standard; and
- (b) Good academic record with at least second class (C in the seven-point scale) Master's degree in a relevant subject from an Indian University or an equivalent degree from a foreign University.

Having regard to the need for developing inter-disciplinary programmes, the degrees in (a) and (b) above may be in relevant subjects :

Provided that if the Vice-Chancellor is of the view that the research work of a candidate as evident either from his/her thesis or from his/her published work is of a very high standard, he may relax any of qualifications prescribed in (b) above, and call such candidates also for the interview :

Provided further that if a candidate possessing a Doctorate degree or equivalent research work is not available or is not considered suitable, a person possessing a good academic record (weightage being given to M.Phil. or equivalent degree or research work of quality) may be appointed provided he/she has done research work for at least two years of the condition that he/she will have to obtain a Doctorate degree or give evidence of research work of equivalent high standard within eight years of his/her appointment, failing which he/she will not be able to earn future increments until he/she fulfils these requirements.

Explanation :

For determining "good academic record" the following criteria shall be adopted :

- (i) A candidate holding a Ph. D. degree should possess at least a second class Master's degree; or
- (ii) A candidate without a Ph.D. degree should possess a high second class Master's degree and second class in the Bachelor's degree; or
- (iii) A candidate not possessing Ph.D. degree but possessing second class Master's degree, should have obtained first class in the Bachelor's degree.

8. Minimum qualifications for appointment to the posts of Lecturers in Foreign Languages :—

- (a) A Doctorate degree or research work of an equally high standard; and

- (b) Good academic record with at least second class (C in the seven-point scale) Master's degree from an Indian University or an equivalent degree from a foreign University.

Having regard to the need for developing inter-disciplinary programme the degrees in (a) and (b) above may be in relevant subjects :

Provided that if the Vice-Chancellor is of the view that the research work of a candidate as evident either from his/her thesis or from his/her published work is of very high standard,

he may relax any of the qualifications prescribed in (b) above, and call such candidates also for the interview :

Provided further that if a candidate possessing a Doctorate degree or equivalent research work is not available or is not considered suitable, a person possessing a good academic record may be appointed provided he/she has done one year post M.A. diploma course in the teaching of foreign language concerned from a University on the condition that he/she will have to obtain a Doctorate degree or give evidence of research work of equivalent high standard within eight years of his/her appointment failing which he/she will not be able to earn future increments until he/she fulfils these requirements.

Explanation :

For determining "good academic record" the following criteria shall be adopted :

- (i) A candidate holding a Ph.D. degree should possess at least a second class Master's degree; or
- (ii) A candidate without a Ph.D. degree should possess a high second class Master's degree and second class in the Bachelor's degree; or
- (iii) A candidate not possessing Ph.D. degree but possessing second class Master's degree, should have obtained first class in the Bachelor's degree.

9. Minimum qualifications for Lecturers in the Schools/Faculties of Management Studies.—

A Master's degree in Business Administration or M. Tech. in Engineering Technology with first class with the provision that the incumbent would acquire a doctorate degree within a period of eight years.

In the case of allied subjects like Industrial Psychology, Personnel Management, Business Statistics, Cost Accountancy etc. where Lecturers are required to be recruited with qualifications other than M.B.A. or M. Tech. the minimum qualification shall be the same as prescribed in the faculties/Schools of Arts (Humanities), Social Sciences including Commerce and Sciences.

10. Minimum qualifications for appointment to the posts of Lecturers in departments/faculties in Law in the Universities.—LL.M. Degree with good academic record.

Note : These qualifications may not be insisted upon where it is proposed to appoint a practising Advocate as part-time Lecturer.

Explanation :

For determining "good academic record" the following criteria shall be adopted :

- (i) A candidate holding a Ph.D. degree should possess at least a second class Master's degree; or
- (ii) A candidate without a Ph.D. degree should possess a high second class Master's degree and second class in the Bachelor's degree; or
- (iii) A candidate not possessing Ph.D. degree but possessing second class Master's degree should have obtained first class in the Bachelor's degree.

Emoluments

11. The classification and emoluments of the Teachers of the University in the Schools of Studies shall be as under subject to such revision or modification as may be approved from time to time :

Professors Rs. 1500-60-1800-100-2000-125/2-2500

Readers Rs. 1200-50-1300-60-1900

Lecturers Rs. 700-40-1100-50-1600

In addition to pay the emoluments of a teacher may include such allowances as may be admissible under the rules:

Provided that a University teacher on his first appointment may, in a special case, and on the recommendation of the selection Committee, be sanctioned such advance increments as the Selection Committee may recommend and as approved by the Executive Council/University Grants Commission :

Provided further that the emoluments of teachers other than those mentioned above and designated as teachers by Ordinances may be determined by the Executive Council on the recommendations of the Academic Council.

Service conditions relating to appointment of teachers of the University

12. Teacher to be a whole-time employee.—No whole-time salaried teacher of the University shall, without the permission of the Executive Council, engage directly or indirectly in any trade or business whatsoever or any private tuition or other work to which any emolument or honorarium is attached:

Provided that nothing contained herein shall apply to the work undertaken in connection with the examination of Universities or learned bodies or Public Service Commissions or to any literary work or publication or radio talk or extension lectures or, with the permission of the Vice-Chancellor, to any other academic work.

Explanation :

For purposes of this Ordinance, "teacher" means a whole-time salaried teacher of the University and does not include honorary, visiting or part-time teachers.

Nature of duties

13. Every teacher shall undertake to take such part in the activities of the University and perform such duties in the University as may be required by and in accordance with the Act, the Statutes and Ordinances framed thereunder, for the time being in force whether the same relate to organisation of instruction, or teaching or research or the examination of students or their discipline or their welfare and generally to act under the direction of authorities of the University.

Probation

14. Professors, Readers and Lecturers shall ordinarily be appointed on probation for a period of twenty-four months :

Provided that the Executive Council may, for reasons to be recorded in each case, waive the condition of probation :

Provided further that the conditions of probation shall not apply in the case of teachers appointed by the Executive Council under the provisions of Statutes 20 and 21 as per model written contract detailed in Appendix-V.

Explanation

The Executive Council shall have the right to assess the suitability of a teacher for confirmation even before the expiry of the period of twenty-four months, from the date of his/her appointment but not earlier than nine months from the date.

Confirmation

15. (a) It shall be the duty of the Registrar to place before the Executive Council the case of confirmation of a teacher on probation, not later than forty days before the end of the prescribed period of probation.

(b) The Executive Council may then either confirm the teacher or decide not to confirm his/her, or extend the period of probation so as not to exceed twenty-four months in all. In case the Executive Council decides not to confirm the teacher, whether before the end of the twelve months or before the end of the extended period of probation, as the case may be, he/she shall be informed in writing to that effect not later than thirty days before the expiration of that period :

Provided that the decision not to confirm a teacher shall require a two-third majority of the members of the Executive Council present and voting.

(c) A teacher appointed by the Executive Council under Statutes 20 and 21 shall be deemed to be confirmed with effect from the date he/she joins duty.

Increments

16. Every teacher shall draw increments in his/her scale of pay, unless it is withheld or postponed by a Resolution of the Executive Council on a reference by the Vice-Chancellor and after the teacher has been given sufficient opportunity to make his/her written representation.

Age of retirement

17. Subject to the provision in the Statutes, every teacher confirmed in the service of the University, shall continue in such service until he/she attains the age of 60 years :

Provided that if the Executive Council is satisfied that such an appointment is in the interest of the University it may, on the recommendation of the Vice-Chancellor, make *ex-cadre* appointment in respect of a teacher of the University in sound health who has attained the age of 60 years and is able to perform his/her duties satisfactorily, on such terms and conditions as the Executive Council may specify, for a period not exceeding three years in the first instance :

Provided further that no further contract or extension shall be granted to a teacher who has attained the age of 65 years :

Provided further that the teacher re-employed by the University after attaining the age of 60 years shall not hold the appointment of Head of the Centre/Department or Dean of the School or any other administrative post such as Chief Proctor, Provost, etc.

Variations in terms and conditions of Service

18. Every teacher of the University, shall be bound by the Statutes, Ordinances and Regulations for the time being in force in the University.

Provided that no change in the terms and conditions of service of a teacher shall be made after his/her appointment in regard to designations, scale of pay, increment, provident fund, retirement benefits, age of retirement, probation, confirmation, leave, leave salary and removal from service, etc., so as to adversely affect him/her.

Resignation

19. (a) A permanent teacher may at any time, terminate his/her engagement by giving the Executive Council three months' notice in writing.

(b) In case of other teachers, notice period is one month :

Provided that the Executive Council may waive the requirement of notice at its discretion.

Fixation of pay of re-employed pensioners

20. The initial pay of a pensioner including officers pensioned off and retired on Contributory Provident Fund, and from the service of State Government, Railways and Defence Establishments, etc. re-employed in the University shall be fixed at the minimum stage of the scale of pay prescribed for the post in which the individual is re-employed. In addition, he/she may be permitted to draw separately any pension sanctioned to him/her and to retain any other form of retirement benefit (C.P. Fund, gratuity, commuted value of Pension, etc.), provided that the total amount of initial pay plus the gross amount of pension and or the pension equivalent of other forms of retirement benefits does not exceed :—

(i) the pay he/she drew before his/her retirement (pre-retirement pay);

(ii) Rs. 3,500 per month whichever is less.

NOTE : 1. In all cases where either of these limits is exceeded, the pension and other retirement benefits may be paid in full and the necessary adjustment made in the pay so as to ensure that the total of pay and pensionary benefits is within the prescribed limits.

Where after the pay is fixed at the minimum or any higher stage, it is reduced below the minimum as a result of the

said adjustments, increase in pay may be allowed after each year of service at the rate of increments admissible, as if the pay had been fixed at the minimum or the higher stage as the case may be

2. Pay last drawn before retirement will be taken to be substantive pay *plus* special pay, if any: pay drawn in an officiating appointment may be taken into account if it was drawn continuously for at least one year before retirement.

In case where the minimum pay of the post in which the officer is re-employed is more than the last pay drawn the officer concerned may be allowed the minimum of the prescribed scale of the post *less* pension and pension equivalent of other retirement benefits.

Once the initial pay of a re-employed pensioner has been fixed in the manner indicated above, he/she may be allowed to draw normal increments in the time scale of the post to which he/she is appointed provided that the pay and gross pension/pension equivalent of other retirement benefits taken together does not at any time exceed Rs. 3,500 p.m.

In case where the pay is proposed to be fixed at a stage higher than that admissible under the above provisions, each such case should be referred to the Union Ministry of Education/University Grants Commission and approval obtained. No such reference, however, need be made in respect of academic or non-academic staff member of the University whose pay is proposed to be fixed in accordance with the normal rules on their re-employment after retirement.

Leave

21. Various kinds of leave are admissible to a teacher of the University as per provisions enumerated hereunder in Appendix-VI.

Contract

22. The written contract between a teacher and the University required to be entered into as per Clause (2) of Statute 24 shall be in the form as given in Appendix-VII or as nearly or substantially to like effect.

Special Contracts

23. Notwithstanding anything contained in these Ordinances, the Executive Council may, in special cases, appoint teachers on contract on such terms and conditions as it may deem fit as per model written contract detailed in Appendix-V.

Provided that no appointment shall be made under this clause for a period exceeding five years at a time.

Amended as per approval of the Ministry of Human Resource Development, Government of India vide L.R. No. F.21-10/87 Desk (v), dated 10th November 1988

1. **Coverage :** These ordinances shall apply to all teachers of the University except to those who are drawing pay in their existing scales of pay against erstwhile posts on absorption from the erstwhile Non-medical Departments of JIPMER as per Government of India Letter No. A. 11018/1/87-M(F&S)/ME(PG), from Ministry of Health & Family Welfare, (Department of Health), Government of India, New Delhi to the Director of Health and others working in the School of Management who are not covered by the present revision of scales of pay circulated under UGC's Letter No. F.1-3/87(PS Cell), dated 20-6-1987.

The term "Teachers of the University" shall have the same meaning as assigned to it in section 2(r) of the Pondicherry University Act (53 of 1985).

2. **Emoluments :** The emoluments of the teachers shall be as follows :—

(i) They will be paid salary in the revised scales of pay mentioned below, effective from 1st January 1986 :—

Lecturer—Rs. 2,200-75-2,800-100-4,000.

Lecturer (Senior Scale)—Rs. 3,000-100-3,500-125-5,000.

Lecturer (Selection Grade)—Rs. 3,700-125-4,950-150-5,700.

11—119 GI/90

Reader—Rs. 3,700-125-4,950-150-5,700.

Professor—Rs. 4,500-150-5,700-200-7,300.

The emoluments of a teacher will, in addition to pay, include dearness allowances and other allowances as are applicable to Central Government employees drawing corresponding pay.

The appointment of a teacher on direct recruitment is to be made on the minimum of the scale prescribed for that post. However, on the recommendation of the selection committee and on the approval of the Executive Council, the pay of a teacher may be fixed at a higher stage :

Provided that the number of increments so sanctioned shall not exceed the maximum prescribed by the University Grants Commission.

3. Recruitment and qualifications.

(1) Recruitment to the posts of Lecturers, Readers and Professors in the University shall be on the basis of merit through all-India advertisement and selection. There shall be no fresh recruitment to the category of Tutors and Demonstrators.

(2) The minimum qualifications required for appointment to the posts of Lecturers, Readers and Professors will be those prescribed by the UGC from time to time.

(3) **Lecturers :** The minimum qualifications for appointment to the post of Lecturer shall be Master's degree in the relevant subject with at least 55% marks or its equivalent grade and good academic record.

(4) Only those candidates who, besides fulfilling the minimum academic qualifications prescribed for the post of Lecturer, have qualified in a comprehensive test, to be specially conducted for the purpose, will be eligible for appointment as Lecturers. The detailed scheme for conducting the test including its design, content and administration will be such as may be prescribed by the UGC.

(5) In order to encourage research, in continuation of Post-graduate studies, candidates who, at the time of their recruitment as Lecturers, possess Ph.D. or M.Phil. degree, will be sanctioned three and one advance increments respectively in the scale of Rs. 2,200-4,000 along with the benefit of corresponding years of service for the purpose of promotion. The existing Lecturers without research degrees, and those similarly situated recruited in future will be eligible for a similar benefit in service for the purpose of promotion as and when they acquire research degrees, but will not be eligible for advance increments. Existing Lecturers with research degrees will also be eligible for a similar benefit.

(6) **Reader :** Good academic record with a doctoral degree or equivalent published work. Evidence of being actively engaged in (i) research or (ii) innovation in teaching methods or (iii) production of teaching materials.

Five years' experience of teaching and/or research provided that at least three of these years were as Lecturer or in an equivalent position.

This condition may be relaxed in the case of candidates with outstanding record of teaching/research.

Explanation : For determining "good academic record" the following criteria shall be adopted in the case of Reader :

(i) A candidate holding a Ph.D. Degree should possess at least a second-class Master's Degree; or

(ii) A candidate without Ph.D. Degree should possess a high second class Master's Degree and second-class in the Bachelor's Degree; or

(iii) A candidate not possessing Ph.D. Degree but possessing second class Master's Degree, should have obtained first class in the Bachelor's Degree.

(7) Every Lecturer in the senior scale will be eligible for promotion to the post of Reader in the scale of pay of Rs. 3,700-5,700 if he/she has :

(a) completed 8 years of service in the senior scale, provided that the requirement of 8 years will be

relaxed if the total service of the lecturer is not less than 16 years;

- (b) obtained a Ph.D. Degree or an equivalent published work;
- (c) made some mark in the areas of scholarship and research as evidenced by self-assessment, reports of referees, quality of publications, contribution to educational innovation, design of new courses and curricula, etc.
- (d) participated in two refresher courses/summer institutes each of approximately 4 weeks' duration or engaged in other appropriate continuing education programmes of comparable quality as may be specified by the UGC, after placement in the senior scale; and
- (e) Consistently good performance appraisal reports.

(8) Promotion to the post of Reader will be through a process of selection by a selection committee to be set up under the Statutes/Ordinances of the University.

(9) Those Lecturers in the senior scale who do not have Ph.D. Degree or equivalent published work and who do not meet the scholarship and research standards of a Reader but fulfil the other criteria mentioned in para 7, and have a good record in teaching and/or participation in extension activities, will be placed in the grade of Rs. 3700-5700 subject to the recommendations of the committee mentioned in para 8 above. They will be designated as Lecturer in the Selection Grade. Posts in the Selection Grade will be created for this purpose by upgrading the posts held by them. They could offer themselves for a fresh assessment after obtaining Ph.D. and or fulfilling other requirements for promotion as Reader and if found suitable, could be given the designation of Reader.

(10) Participation of teachers at regular intervals in appropriate continuing education programmes is envisaged as an integral part of the professional development of teachers. While there cannot and need not be any rigid requirement of participation in formal programmes, evidence of commitment to continuing education of any recognised means, as may be specified by the UGC will be an essential requirement for career advancement. Pending the organisation of such programmes on the quality and scale required for giving effect to the implementation of the measures of this scheme, relaxation from the requirement of participation in such programmes for specific period and for specific categories of posts, will be granted by the University concerned in accordance with guidelines to be laid down by the UGC.

(11) Regular and systematic appraisal of performance of teacher is to be an essential element in the management of education. Till it becomes operational, the existing screening mechanism/selection procedures or those prescribed on a provisional basis by the University/State Government concerned will apply to all placements/promotion referred to above.

(12) *Professor*: An eminent scholar with published work of high quality actively engaged in research. About ten years' experience of teaching and/or research experience of guiding research at doctoral level.

OR

An outstanding scholar with established reputation who has made significant contribution to knowledge.

(13) *Career Advancement*: (1) Every Lecturer will be eligible for placement in a senior scale of Rs. 3,000-5,000 if he/she has:

- (a) completed 8 years of service after regular appointment with relaxation as provided in para 3(5) above;
- (b) participated in two refresher courses/summer institutes each of approximately four weeks durations or engaged in other appropriate continuing education programmes of comparable quality as may be specified by the UGC; and
- (c) consistently satisfactory performance appraisal reports.

(14) *Probation*: The period of probation of a teacher shall not exceed a period of 24 months. A Lecturer appointed on probation should be confirmed only after he/she has completed an appropriate short-term orientation programme and his/her performance appraisal reports are satisfactory. The UGC will make arrangements to ensure that facilities are available for organising orientation programmes to cover all Lecturers appointed in and after 1988-89. Until such provisions are made, the existing procedures for completion of probation will apply.

(15) *Superannuation and re-employment*: The age of superannuation for teachers should be 60 years and, there after no extension in service shall be given. However it will be open to a University to re-employ a superannuated teacher according to the existing guidelines framed by the UGC up to the age of 65 years.

(16) *Grievance redressal mechanism*: Appropriate mechanism for the redressal of teachers' grievances will be established in the University as per the guidelines that will be issued by the UGC.

(17) *General conditions of service*: (1) No teacher of the University shall, without the permission of the Executive Council, engaged directly or indirectly in any trade or business whatsoever or any private tuition or other work to which any emolument or honorarium is attached. Provided that nothing contained herein shall apply to the work undertaken in connection with the examination of Universities or learned bodies or Public Service Commission or to any literary work or publication or radio talk or extension lectures or with the permission of the Vice-Chancellor, to any other academic work.

(2) Every teacher shall undertake to take such part in the activities of the University and perform such duties in the University as may be required by and in accordance with the Act, the Statutes and Ordinances framed thereunder for the time being in force whether the same relates to organisation of instruction or teaching, or research or the examination of students or their discipline or their welfare, and generally to act under the direction of the authorities of the University.

(18) *Code of professional ethics*: All teachers shall be governed by the code of professional ethics on its formulation by the UGC.

(19) *Confirmation*: (1) (a) It shall be the duty of the Registrar to place before the Executive Council the case of confirmation of a teacher on probation not later than forty days before the end of the prescribed period of probation.

(b) The Executive Council may then either confirm the teacher or decide not to confirm him/her or extend the period of probation for a period of six months/twelve months:

Provided that the total period of probation shall not exceed forty-eight months in all. In case the Executive Council decides not to confirm the teacher, whether before the end of the 24 months or before the end of the extended period of probation as the case may be, he/she shall be informed in writing to that effect, not later than thirty days before the expiration of that period. Provided that decision not to confirm a teacher shall require a two-thirds majority of the members of the Executive Council, present and voting.

(c) A teacher appointed by the Executive Council under Statutes 20 and 21 shall be deemed to be confirmed with effect from the date he/she joins duty.

(2) Where a teacher appointed to a post under the University on probation is during his period of probation, found unsuitable for holding that post or has not completed his period of probation satisfactorily, the appointing authority may:

- (i) In the case of a teacher appointed by promotion revert him to the post held by him immediately before such appointment; and
- (ii) In the case of a teacher appointed by direct recruitment terminate his services under the University without notice.

(20) *Increment*: Every teacher shall draw increment in his/her scale of pay, unless it is withheld or postponed by a

Resolution of the Executive Council on a reference by Vice-Chancellor and after the teacher has been given sufficient opportunity to make his/her written representation.

(21) *Resignation*: (a) A permanent teacher of the University may, at any time, resign from his post by giving three months notice in writing to the Executive Council.

(b) In the case of a temporary teacher, the period of notice shall be one month.

Provided that the Executive Council may waive the requirement of notice period at its discretion.

(22) *Fixation of pay of re-employed pensioners*: The fixation of initial pay of re-employed teachers shall be regulated under the provisions of Central Civil Services (Fixation of Pay of Re-employed Pensioners) Orders, 1986 as adopted.

(23) *Leave*: The various kinds of leave admissible to a teacher of the University and other provisions relating thereto are given in Appendix VI of the First Ordinances governing academic matters approved by Department of Education Government of India, New Delhi vide their Letter No. F.21-10/87 Desk (U), dated 7-12-1987.

(24) *Contract*: The written contract between a teacher and the University required to be entered into as per clause (2) of Statute 20 of the University shall be in the form given in Appendix-VII of the First Ordinances governing Academic matters approved by Department of Education, Government of India, New Delhi vide their letter No. F.21-10/87 Desk (U), dated 7-12-1987.

(25) *Special contracts*: Notwithstanding anything contained in these Ordinances the Executive Council may, in special cases, appoint teachers on contract basis on such terms and conditions as it may deem fit. The model of the contract, in this regard, is given in Appendix-V of the First Ordinances governing Academic matters approved by the Department of Education, Government of India, New Delhi vide their Letter No. F.21-10/87 Desk (U), dated 7-12-1987.

Provided that no appointment shall be made under this clause for a period exceeding five years at a time.

(26) The terms and conditions of appointment and the pay scales applicable to Librarians, Deputy Librarians, Assistant Librarians and Physical Education Personnel are as given in Annexure-1.

CHAPTER-XXI

CLASSIFICATION, EMOLEMENTS, QUALIFICATIONS AND OTHER TERMS AND CONDITIONS OF SERVICE OF TEACHERS IN COLLEGES/INSTITUTIONS ADMITTED TO THE PRIVILEGES OF THE UNIVERSITY

[Statute 32(2)]

(a) GOVERNMENT COLLEGES/INSTITUTIONS

Classification

1. Teachers in affiliated college/institutions under the control of a Government Agency (State, Central or Union Territory) shall be classified as under:

- Head of the institution— as Principal or Director or as may be designated by the respective Government Agency.
- Professors—who are heads of Departments in the affiliated college/institution as may be designated by the respective Government Agency.
- Associate Professors/Readers— as designated by the respective Government Agency from time to time.
- Assistant Professors/Lecturers—as designated by the respective Government Agency from time to time; or
- such other teaching posts designated as Tutor, Demonstrator, etc. and engaged in teaching and lab.

work as per decisions of the Government Agency concerned.

Emoluments

2. As may be decided from time to time by the Government Agency concerned.

Other service conditions including leave etc.

3. As may be decided by the respective Government Agency from time to time.

Qualification

4. For the subjects of Arts (Humanities) and Sciences.

(A) PROFESSOR—General

An eminent scholar with published work of high quality and actively engaged in research. About ten years' experience of teaching and/or research. Experience of guiding research at doctorate level.

OR

An outstanding scholar with established reputation and who has made significant contribution to knowledge.

(B) READER—General

Good academic record with a doctorate degree or equivalent published work. Evidence of being actively engaged in (i) research or (ii) innovation in teaching methods, or (iii) production of teaching materials.

About five years' experience of teaching and/or research provided that at least three of these years were as Lecturer or in an equivalent position.

This condition may be relaxed in the case of candidates with outstanding record of Teaching Research.

(C) LECTURER—General

(a) An M.Phil. degree or a recognised degree beyond the Master's level or published work of merit indicating the capacity of a candidate for independent research work; and

(b) Good academic record with at least second class (C in the seven-point scale) master's degree in a relevant subject from an Indian University or equivalent degree from a foreign University.

Provided that if the Vice-Chancellor is of the view that the research work of a candidate as evident either from his/her thesis or from his/her published work is of a very high standard, he may relax any of the qualifications prescribed in (b) above and approve his/her being called for the interview.

Provided further that if a candidate possessing the qualifications as at (a) above is not available or not considered suitable, the college on the recommendation of the Selection Committee may appoint a person possessing a good academic record on the condition that he/she will obtain M.Phil. degree or a recognised degree beyond the Masters level within eight years of his/her appointment failing which he/she will not be able to earn future increments till he/she obtains that degree or gives evidence of equivalent published work of high standard.

Explanation

For determining "good academic record" the following criteria shall be adopted:

- A candidate holding an M.Phil. degree or a recognised degree beyond the Master's level should possess at least a second class Master's degree; or
- A candidate not holding an M.Phil. degree or a recognised degree beyond the Master's level, should possess a high second class Master's degree and a second class at the first-degree level (B.A./B.Sc. B.Com.) examination; or
- A candidate not holding an M.Phil. or a recognised degree beyond the Master's level but possessing a

second class Master's degree should have obtained a first-class at the first-degree level (B.A./B.Sc./B.Com.) examination.

Persons having secured marks more than the mid-point of the prescribed minimum marks for passing an examination in the second division and the prescribed minimum marks for passing an examination in the first division by a University shall be deemed to have passed that examination in the high second class.

5. Minimum qualifications for appointment to the post of Lecturers in Education :

- (i) A candidate holding an M.Phil. degree or a recognised degree beyond the Master's degree; or
- (ii) A candidate not holding an M.Phil. degree or a recognised degree beyond the Master's level, should possess a high second class Master's degree and a second class at the first-degree (B.A./B.Sc./B.Com.) level or
- (iii) A candidate not holding an M.Phil. or a recognised degree beyond a Master's level, but possessing a second class Master's degree should have obtained a first class in the first degree (B.A./B.Sc./B.Com.) examination.

Persons having secured marks more than the mid-point of the prescribed minimum marks for passing an examination in the second division and the prescribed minimum marks for passing an examination in the first division by a University shall be deemed to have passed that examination in high second class.

6. Minimum qualifications for appointment to the posts of Lecturers in the faculties of music and fine arts : (a) Good academic record with at least second class (C in the seven-point scale) Master's degree in a relevant subject or an equivalent degree or diploma recognised by the University; and

(b) Two years' research or professional experience or evidence of creative work and achievement in his/her field of specialisation or a combined research and professional experience of three years in the field as an artist of outstanding talent.

OR

A traditional or a professional artiste with highly commendable professional achievements in the subjects concerned.

Explanation :

For determining "good academic record", the following criteria shall be adopted :

- (i) A candidate holding a Ph.D. degree should possess at least a second class Master's degree; or
- (ii) A candidate without a Ph.D. degree should possess a high second class Master's degree and second class in the Bachelor's degree; or
- (iii) A candidate not possessing Ph.D. degree but possessing second class Master's degree should have obtained first-class in the Bachelor's degree.

7. Minimum qualifications for appointment to the posts of lecturers in physical education : (a) An M.Phil. degree or a recognised degree beyond Master's level or published work indicating the capacity of the candidate for independent research work; and

(b) Good academic record with at least second class (C in the seven-point scale) Master's degree in Physical Education from an Indian University or an equivalent degree from a foreign University ;

Provided that if the selection committee is of the view that the research work of a candidate as evident either from his/her thesis or from his/her published work is of very high standard, it may relax any of the qualifications prescribed in (b) above :

Provided further that if a lecturer in a discipline other than Physical Education is required to be appointed in the faculty of Physical Education, the qualifications prescribed for recruitment to the post of Lecturer in the parent discipline may be insisted upon.

Provided also that if a candidate possessing qualifications as at (a) above, is not available or is not considered suitable, the college on the recommendation of the selection committee may appoint a person possessing a good academic record on the condition that he/she will have to obtain an M.Phil. degree or recognised degree beyond the Master's degree within eight years of his/her appointment, failing which he/she will not be able to earn future increments till he obtains that degree or gives evidence of equivalent published work of high standard.

Explanation :

For determining "good academic record" the following criteria shall be adopted—

- (i) A candidate holding an M.Phil. degree or a recognised degree beyond the Master's level should possess at least a second class Master's degree; or
- (ii) A candidate not holding an M.Phil. degree or a recognised degree beyond the Master's level should possess a high second class Master's degree and a second class in first degree (B.A./B.Sc./B.Com.) examination;
- (iii) A candidate not holding an M.Phil. or a recognised degree beyond a Master's level but possessing second class Master's degree should have obtained a first class in the first degree (B.A./B.Sc./B.Com.) examination.

Persons having secured marks more than the mid-point of the prescribed minimum marks for passing an examination in the second division and the prescribed minimum marks for passing an examination in the first division by a University shall be deemed to have passed that examination in high second class.

8. Minimum qualifications prescribed for appointment to the posts of Lecturers in English : (a) An M.Phil. degree or a recognised degree or diploma in the teaching of English/English studies beyond the Master's level or published work indicating the capacity of a candidate for independent research work; and

(b) Good academic record with at least second class (C in the seven-point scale) Master's degree from an Indian University or an equivalent degree from a foreign University. Provided that if the Selection Committee is of the view that the research work of a candidate as evident from his/her thesis or from his/her published work is of a very high standard, it may relax any of the qualifications prescribed in (b) above.

Provided further that if a candidate possessing the qualifications as at (a) above is not available or not considered suitable, the college, on the recommendation of the selection committee may appoint a person possessing a good academic record on the condition that he/she will have to obtain an M.Phil. degree or a recognised Degree or Diploma in the teaching of English/English studies beyond the Master's level within eight years of his/her appointment, failing which he/she will not be able to earn future increments till he/she obtains that degree or gives evidence of equivalent published work of high standard.

Explanation :

- (i) A candidate holding an M.Phil. degree or a recognised degree beyond the Master's level should possess at least a second class Master's degree; or
- (ii) A candidate not holding an M.Phil. degree or a recognised degree beyond the Master's level should possess a high second class Master's degree and a second class in first degree (B.A./B.Sc./B.Com.) examination;
- (iii) A candidate not holding an M.Phil. or a recognised degree beyond a Master's level, but possessing a second class Master's degree should have obtained a first class at the first degree (B.A./B.Sc./B.Com.) level.

Persons having secured marks more than the mid-point of the prescribed minimum marks for passing an examination in the second division and the prescribed minimum marks for passing an examination in the first division by a University shall be deemed to have passed that examination in the high second class.

9. Minimum qualifications prescribed for appointment to the posts of Lecturers in Foreign Languages :

(a) An M.Phil. degree or a recognised degree/diploma of one year duration in the teaching of the language concerned beyond the Master's level or published work indicating the capacity of a candidate for independent research work; and

(b) Good academic record with at least second class (C in the seven point scale) Master's degree from an Indian University or an equivalent degree from a foreign University.

Provided that if the Selection Committee is of the view that the research work of a candidate as evident either from his/her thesis or from his/her published work is of a very high standard, it may relax any of the qualifications prescribed in (b) above.

Provided further that if a candidate possessing the qualifications as at (a) above is not available or not considered suitable, the college, on the recommendation of the Selection Committee, may appoint a person possessing a good academic record on the condition that he/she will have to obtain an M.Phil. degree or a recognised degree/diploma of one year duration beyond the Master's level within eight years of his/her appointment, failing which he/she will not be able to earn future increments till he/she obtains that degree or gives evidence of equivalent published work of high standard.

Explanation :

For determining "good academic record" the following criteria shall be adopted.

- (i) A candidate holding an M.Phil. degree or a recognised degree or beyond the Master's level should possess at least a second class Master's degree or
- (ii) A candidate not holding an M.Phil. degree or a recognised degree beyond the Master's level should possess a high second class Master's degree and a second class in first degree (B.A./B.Sc./B.(Com.)) examination; or
- (iii) A candidate not holding an M.Phil. or a recognised degree beyond the Master's level but possessing a second class Master's degree, should have obtained a first class in the first degree (B.A./B.Sc./B.Com.) examination.

Persons having secured marks more than the mid-point of the prescribed minimum marks for passing an examination in the second division and the prescribed minimum marks for passing an examination in the first division by a University shall be deemed to have passed that examination in high second class.

Professional Colleges

10. (a) Lecturers in Medical Colleges.

The qualifications for Lecturers in medical colleges would be as prescribed by the Medical Council of India from time to time.

(b) Professor : Requisite recognised Post graduate qualification with 4 years' experience as Reader in the concerned Department in a medical college and such other higher qualification as may be prescribed by the Medical Council of India from time to time.

(c) Reader/Associate Professor : Requisite recognised Post-graduate qualification with 5 years' experience as a Lecturer in a medical college and such other higher qualification as may be prescribed by the Medical Council of India from time to time.

(d) Lecturer/Assistant Professor : Requisite recognised Post-graduate qualification in the subject and such other

higher qualification as may be prescribed by the Medical Council of India from time to time.

(e) Tutor/Registrar/Demonstrator/Resident : M.B.B.S.

11. Lecturers in Engineering Colleges.—The qualifications prescribed for the Lecturers in Engineering colleges would be as prescribed from time to time.

12. Lecturers in Law Colleges.—LL.M. Degree with good academic record.

Note : The above qualification may not be insisted upon where a University appoints a practising advocate as part-time Lecturer.

Principals of Professional Colleges (Medical)

13. Principal/Dean/Director.—The candidate should possess the basic professional and other academic qualifications plus a minimum of 10 years teaching experience as Professor/Associate Professor/Reader of which at least 5 years should be as Professor in a department.

14. Qualifications prescribed for Principal in affiliated colleges (Arts/Humanities/Social Sciences/Sciences).—The person to be appointed to the post of Principal in an affiliated College having Post-graduate teaching/research programmes in Arts/Humanities/Social Sciences/Sciences should possess in addition to the educational qualifications prescribed for college Lecturers should have ten years teaching experience (at Degree/Post-graduate level out of which four years should be as head of the department).

Law

15. Principal/Director of Legal Studies.—The qualifications be as prescribed for Lecturers in Law Colleges with 10 years experience in teaching.

(b) COLLEGES/INSTITUTIONS ADMITTED TO THE PRIVILEGES OF THE UNIVERSITY AND NOT MAINTAINED BY ANY GOVERNMENT AGENCY

Classification

1. Teachers in such colleges shall be classified as under :

- (a) Head of the institution.—as Principal or as Director or as may be designated by whatever name as the governing body of the college/institution concerned may decide with prior approval of the University.
- (b) Professor.—As Heads of Departments in various disciplines in the affiliated colleges/institutions as may be designated by the respective college/institution.
- (c) Lecturers.—as designated by the Management Committee of the college/institution concerned.
- (d) Such other teaching posts as may be designated as Tutor, Demonstrator, etc., and engaged in teaching and laboratory work as per the decision of the governing body of college/institution concerned.

Emoluments

2. As may be decided from time to time the governing body of the affiliated college or institution concerned with prior approval of the University.

Note : The emoluments of teachers shall be more or less on par with those approved by the University Grants Commission from time to time for corresponding cadres of teachers in Colleges/Universities.

Qualifications General

3. Normally no person shall be appointed to a teaching post in a University or in an institution including constituent or affiliated colleges recognised/to be recognised under clause (f) of section 2 of the University Grants Commission Act, 1956 in a subject if he/she does not fulfil the requirements of qualifications for the appropriate subject as provided hereunder.

Provided that any relaxation in the prescribed qualifications can only be made by a University in regard to the posts under

it or any of the institutions including constituent or affiliated colleges recognised/to be recognised under clause (f) of section 2 of the aforesaid Act with the prior approval of the University Grants Commission.

4. Minimum qualifications prescribed for appointment to the posts of Professors, Readers and Lecturers—As the case may be in the faculties/departments/schools of arts (Humanities, Social Sciences, Commerce, Management) in affiliated colleges/institutions not maintained by a Government agency.

PROFESSOR :

An eminent scholar with published work of high quality actively engaged in research. About ten years' experience of teaching and or research. Experience of guiding research at doctoral level.

OR

An outstanding scholar with established reputation who has made significant contribution to knowledge.

READER

Good academic record with a doctoral degree or equivalent published work. Evidence of being actively engaged in (i) research or (ii) innovation in teaching methods or (iii) production of teaching materials.

About five years experience of teaching and/or research provided that at least three of these years were as Lecturer or in an equivalent position.

This condition may be relaxed in the case of candidates with outstanding record of Teaching/Research.

Explanation :

For determining "good academic record" the following criteria shall be adopted :

- (i) A candidate holding a Ph.D. degree should possess at least a second class Master's degree; or
- (ii) A candidate without a Ph.D. degree should possess a high second class Master's degree; and second class in the Bachelor's degree; or
- (iii) A candidate not possessing Ph.D. degree but possessing second class Master's degree should have obtained first class in the Bachelor's degree.

University Lecturers

(a) A Doctorate's degree or research work of an equally high standard; and

(b) Good academic record with atleast second class (C in the seven point scale) Master's degree in a relevant subject from an Indian University or an equivalent degree from a foreign University.

Having regard to the need for developing inter-disciplinary programmes, the degrees in (a) and (b) above may be in relevant subjects :

Provided that if the Selection Committee is of the view that the research work of a candidate as evident either from his thesis or from his published work is of very high standard, it may relax any of the qualifications prescribed in (b) above.

Provided further that if a candidate possessing a Doctor's degree or equivalent research work is not available or is not considered suitable, a person possessing a good academic record, (weightage being given to M.Phil. or equivalent degree or research work of quality) may be appointed provided he/she has done research work for at least two years or has practical experience in a research laboratory/organisation on the condition that he/she will have to obtain a Doctor's degree or give evidence of research of high standard with eight years of his/her appointment, failing which he/she will not be able to earn future increment until he/she fulfills these requirements.

COLLEGE LECTURERS

(a) An M.Phil. degree or a recognised degree beyond the Master's level or published work indicating the capacity of a candidate for independent research work; and

(b) Good academic record with at least second class (C in the seven point scale) Master's degree in a relevant subject from an Indian University or equivalent degree from a foreign University;

Provided that if the Selection Committee is of the view that the research work of a candidate as evident either from his/her thesis or from his/her published work is of a very high standard, it may relax any of the qualifications prescribed in (b) above;

Provided further that if a candidate possessing the qualifications as at (a) above is not available or not considered suitable, the college on the recommendation of the Selection Committee may appoint a person possessing a good academic record on the condition that he/she will have to obtain an M.Phil. degree or a recognised degree beyond the Master's level within eight years of his/her appointment failing which he will not be able to earn future increments till he obtains that degree or gives evidence of equivalent published work of high standard.

Explanation :

For determining "good academic record" the following criteria shall be adopted.

- (i) A candidate holding an M.Phil. degree or a recognised Degree beyond the Master's level should possess at least a second class Master's degree or
- (ii) A candidate not holding an M.Phil. degree or a recognised degree beyond the Master's level should possess a high second class Master's degree and a second class in first degree (B.A./B.Sc./B.Com.) examination.

Persons having secured marks more than the third-point of the prescribed minimum marks for passing an examination in the second division and the prescribed minimum marks for passing an examination in the first division by a University shall be deemed to have passed that examination in high second class.

5. Minimum qualifications prescribed for appointment to the post of Lecturers in Education,—

COLLEGE LECTURERS :

- (i) A candidate holding an M.Phil. degree or a recognised degree beyond the Master's level should possess at least a second class Master's degree; or
- (ii) A candidate not holding an M.Phil. degree or a recognised degree beyond the Master's level should possess a high second class Master's degree and a second class in first degree (B.A./B.Sc./B.Com.) examination; or
- (iii) A candidate not holding an M.Phil. or a recognised degree beyond a Master's level, but possessing a second class Master's degree should have obtained a first class in the first degree (B.A./B.Sc./B.Com.) examination.

Persons having secured marks more than the mid-point of the prescribed minimum marks for passing an examination in the second division and the prescribed minimum marks for passing an examination in the first division by a University shall be deemed to have passed that examination in high second class.

6. Minimum qualifications prescribed for appointment to the posts of Lecturers in the Faculties of Music and Fine Arts :

UNIVERSITY AND COLLEGE LECTURERS :

(a) Good academic record with at least second class (C in the seven-point scale) Master's degree in a relevant subject or an equivalent degree or diploma recognised by the University; and

(b) Two years research or professional experience or evidence of creative work and achievement in his field of specialisation or a combined research and professional experience or three years in the field as an artist of outstanding talent.

OR

A traditional or a professional artist with highly commendable professional achievement in the subject concerned.

Explanation :

For determining "good academic record" the following criteria shall be adopted :

- (i) A candidate holding a Ph.D. degree should possess at least a second class Master's degree; or
- (ii) A candidate without a Ph.D. degree should possess a high second class Master's degree and second class in the Bachelor's degree; or
- (iii) A candidate not possessing Ph.D. degree but possessing second class Master's degree should have obtained first class in the Bachelor's degree.

7. Minimum qualifications prescribed for appointment to the posts of Lecturers in Physical Education :

(a) An M.Phil. degree or a recognised degree beyond Master's level or published work indicating the capacity of the candidate for independent research work; and

(b) Good academic record with at least second class (C in the seven point scale) Master's degree in Physical Education from an Indian University or an equivalent degree from a foreign University.

Provided that if the Selection Committee is of the view that the research work of a candidate as evident either from his/her thesis or from his/her published work is of very high standard, it may relax any of the qualifications prescribed in (b) above.

Provided further that if a Lecturer in a discipline other than Physical Education is required to be appointed in Physical Education, the qualifications prescribed for recruitment to the post of Lecturer in the parent discipline may be insisted upon.

Provided also that if a candidate possessing qualifications as at (a) above, is not available or is not considered suitable, the college on the recommendation of the Selection Committee may appoint a person possessing a good academic record on the condition that he will have to obtain an M.Phil. degree or recognised degree beyond Master's degree within eight years of his/her appointment, failing which he/she will not be able to earn future increments till he/she obtains that degree or gives evidence of equivalent published work of high standard.

Explanation :

For determining "good academic record" the following criteria shall be adopted :

- (i) A candidate holding an M.Phil. degree or a recognised degree beyond the Master's level should possess at least a second class Master's degree; or
- (ii) A candidate not holding an M.Phil. degree or a recognised degree beyond the Master's level should possess a high second class Master's degree and a second class in first degree (B.A./B.Sc./B.Com.) examination; or
- (iii) A candidate not holding an M.Phil. or a recognised degree beyond a Master's level, but possessing second class Master's degree should have obtained a first class in the first degree (B.A./B.Sc./B.Com.) examination.

Persons having secured marks more than the mid-point of the prescribed minimum marks for passing an examination in the second division and the prescribed minimum marks for passing an examination in the first division by a

University shall be deemed to have passed that examination in high second class.

8. Minimum qualifications prescribed for appointment to the posts of Lecturers in English :

COLLEGE LECTURERS :

(a) An M.Phil. degree or a recognised degree or diploma in the teaching of English/English studies beyond the Master's level or published work indicating the capacity of a candidate for independent research work; and

(b) Good academic record with at least second class (C in the seven point scale) Master's degree from an Indian University or an equivalent degree from a foreign University.

Provided that if the Selection Committee is of the view that the research work of a candidate as evident either from his/her thesis or from his/her published work is of a very high standard, it may relax any of the qualifications prescribed in (b) above.

Provided further that if a candidate possessing the qualifications as at (a) above is not available or not considered suitable, the college/institution, on the recommendation of the Selection Committee, may appoint a person possessing a good academic record on the condition that he/she will have to obtain an M.Phil. degree or a recognised degree or Diploma in the teaching of English/English studies beyond the Master's level within eight years of his/her appointment, failing which he/she will not be able to earn future increments till he/she obtains that degree or gives evidence of equivalent published work of high standard.

Explanation :

For determining "good academic record" the following criteria shall be adopted.

- (i) A candidate holding an M.Phil. degree or a recognised degree beyond the Master's level should possess at least a second class Master's degree; or
- (ii) A candidate not holding an M.Phil. degree or a recognised degree beyond the Master's level should possess a high second class Master's degree and a second class in first degree (B.A./B.Sc./B.Com.) examination; or
- (iii) A candidate not holding an M.Phil. or a recognised degree beyond a Master's level, but possessing a second class Master's degree should have obtained a first class in the first degree (B.A./B.Sc./B.Com.) examination.

Persons having secured marks more than the mid-point of the prescribed minimum marks for passing an examination in the second division and the prescribed minimum marks for passing an examination in the first division by a University shall be deemed to have passed that examination in high second class.

9. Minimum qualifications prescribed for appointment to the posts of Lecturers in foreign Languages :

COLLEGE LECTURERS :

(a) An M.Phil. degree or a recognised degree/diploma of one year duration in the teaching of the language concerned beyond the Master's level or a published work indicating the capacity of a candidate for independent research work; and

(b) Good academic record with at least second class (C in the seven-point scale) Master's degree from an Indian University or an equivalent degree from a foreign University :

Provided that if the Selection Committee is of the view that the research work of a candidate as evident either from his/her thesis or from his/her published work is of a very high standard, it may relax any of the qualifications prescribed in (b) above :

Provided further that if a candidate possessing the qualifications as at (a) above is not available or not considered

suitable the college/institution, on the recommendation of the selection committee, may appoint a person possessing a good academic record on the condition that he/she will have to obtain an M.Phil. degree or a recognised degree/diploma of one year duration beyond the Master's level within eight years of his/her appointment, failing which he/she will not be able to earn future increments till he/she obtains that degree or gives evidence of equivalent published work of high standard.

Explanation :

For determining "good academic record" the following criteria shall be adopted :

- (i) A candidate holding an M.Phil. degree or a recognised degree beyond the Master's level should possess at least a second class Master's degree; or
- (ii) A candidate not holding an M.Phil. degree or a recognised degree beyond the Master's level should possess a high second class Master's degree and a second class in first degree (B.A./B.Sc./B.Com.) examination; or
- (iii) A candidate not holding an M.Phil. or a recognised degree beyond the Master's level but possessing a second class Master's degree should have obtained a first class in the first degree (B.A./B.Sc./B.Com.) examination.

Persons having secured marks more than the mid-point of the prescribed minimum marks for passing an examination in the second division and the prescribed minimum marks for passing an examination in the first division by a University shall be deemed to have passed that examination in high second class.

CHAPTER—XXII

PROCEDURE FOR ESTABLISHING ADDITIONAL CAMPUSES, SPECIAL CENTRES, SPECIALISED LABORATORIES OR OTHER UNITS FOR RESEARCH AND INSTRUCTION

[Sections 5(13) and 27(k)]

1. The University shall establish such campuses, special centres, specialised laboratories or other units for research and instructions from time to time as and when in the opinion of the University, necessary for the furtherance of its objects.

2. The decision regarding the establishment of such campuses, centres, etc. enumerated in para (1) above shall be taken by the Executive Council in consultation with the Academic Council.

3. Necessary regulations shall be framed prior to the establishment of such campuses, centres, etc.

ANNEXURE

REVISION OF PAY SCALES OF LIBRARIANS AND PHYSICAL EDUCATION PERSONNEL IN THE UNIVERSITY (VIDE LETTER NO. F.1-21/87-U.1, DATED 22ND JULY 1988)

1. *Terms and conditions* : All the terms and conditions for revision of pay scales made applicable for the teachers of this University shall also apply to the revision of pay scales of Librarians and Physical Education Personnel in Universities except to the extent indicated in the following paragraphs.

2. *Pay scales* : The revised scales of pay effective from 1-1-1986 for Librarians and Physical Education Personnel are those mentioned in Annexures A and B respectively.

3. *Recruitment and qualifications* : Recruitment to the posts of Assistant Librarian, Deputy Librarian and Librarian as well as Assistant Director, Deputy Director and Director of Physical Education in the University shall be on the basis of merit through all-India advertisement and selection

provided that Assistant Librarians and Assistant Directors of Physical Education who fulfil the criteria prescribed hereinafter will be eligible for promotion to the posts of Deputy Librarian and Deputy Director of Physical Education respectively. Recruitment to the posts of Librarians and Director/Instructor of Physical Education in Universities shall be on the basis of merit through all-India advertisement and selection.

4. The minimum qualifications required for appointment to the posts mentioned in para 3 above will be those prescribed by the UGC from time to time.

5. As in the case of recruitment of Lecturers only those candidates who besides fulfilling the minimum academic qualifications prescribed for the post of Assistant Librarian/Assistant Director of Physical Education in the University have qualified in a comprehensive test, will be eligible for appointment to these posts. The detailed schemes for conducting the test including its design, the agencies to be employed for conducting the tests, etc., will be as worked out and communicated by the University Grants Commission.

6. Candidates who, at the time of their recruitment as Assistant Librarians and Assistant Directors of Physical Education in Universities, possess M.Phil. or Ph.D. degree in Library Science or Physical Education, as the case may be, will be sanctioned one and three advance increments respectively in the scale of Rs. 2,200—4,000 along with the benefit of corresponding years of service for the purpose of promotion. The existing incumbents without research degrees and those similarly situated recruited in future, will be eligible for a similar benefit in service for the purpose of promotion as and when they acquire research degrees, but will not be eligible for advance increments. Existing incumbents with research degrees will also be eligible for a similar benefit.

7. *Career advancement* : Every Assistant Librarian and Assistant Director of Physical Education in the University who is in the scale of pay of Rs. 2,200—4,000 will be placed in a Senior scale of Rs. 3,000—5,000 if he/she has :

(a) completed 8 years service after regular appointment, with relaxation as provided in para 6 above;

(b) participated in two refresher courses/summer institutes, each of approximately four weeks duration or engaged in other appropriate continuing education programme of comparable quality as may be specified by the UGC; and

(c) consistently satisfactory performance appraisal reports.

8. Every Assistant Librarian and Assistant Director of Physical Education in the University who has been placed in the senior scale will be eligible for promotion to the post of Deputy Librarian and Deputy Director of Physical Education respectively in the scale of pay of Rs. 3,700—5,700 if he/she has :

(a) completed 8 years of service in the senior scales provided that the requirement of 8 years will be relaxed if his/her total service is not less than 16 years;

(b) obtained a Ph.D. degree or an equivalent published work;

(c) made significant contributions to the development of Library services/Physical Education in the University as evidenced by self-assessment, reports of referees, professional improvement in the Library services/Physical education activities, etc., as the case may be;

(d) participated in two refresher courses/summer institutes each of approximately 4 weeks duration, or engaged in other appropriate continuing education programmes of comparable quality as may be specified by the UGC after placement in the senior scale; and

(e) consistently good performance appraisal reports.

9. Promotion to the post for Deputy Librarian/Deputy Director or Physical Education will be through a process of selection by a selection committee as in the case of promotion to the posts of Readers.

10. Those Assistant Librarians and Assistant Directors of Physical Education in the Universities in the senior scale

who do not have Ph.D. degree or equivalent published work, but fulfil the other criteria mentioned in para 8 above will be placed in the grade of Rs. 3,700—5,700 subject to the recommendations of the committee mentioned in para 9 above. They will be designated as Assistant Librarian and Assistant Director of Physical Education in the Selection Grade.

Revised Pay Scales of Librarians in the University from 1-1-1986

Sl. No.	Designation	Existing Scales of Pay	Revised Scales of Pay
(1)	(2)	(3)	(4)
1.	Assistant Librarian/Documentation Officer	Rs. 700—1,600	Rs. 2,200-75-2,800-100-4,000
2.	Assistant Librarian/Documentation Officer (Senior Scale)	Not existing	Rs. 3,000-100-3,500-125-5,000
3.	Assistant Librarian/Documentation Officer (Selection Grade)	Not existing	Rs. 3,700-125-4,950-150-5,700
4.	Deputy Librarian	Rs. 1,200-1,900	Rs. 3,700-125-4,950-150-5,700
5.	Librarian	Rs. 1,500-2,500	Rs. 4,500-150-5,700-200-7,300

Revised Pay Scales of Physical Education Personnel in Universities from 1-1-1986

Sl. No.	Designation	Existing Scales of Pay	Revised Scales
(1)	(2)	(3)	(4)
1.	Assistant Director of Physical Education	Rs. 700-1,600	Rs. 2,200-75-2,800-100-4,000
2.	Assistant Director of Physical Education (Senior scale)	Not existing	Rs. 3,000-100-3,500-125-5,000
3.	Assistant Director of Physical Education (Selection Grade)	Not existing	Rs. 3,700-125-4,950-150-5,700
4.	Deputy Director of Physical Education	Rs. 1,200-1,900	Rs. 3,700-125-4,950-150-5,700
5.	Director of Physical Education	Rs. 1,500-2,500	Rs. 4,500-150-5,700-200-7,300

APPENDIX-I

Inspection Committee fees, affiliation fees, endowments, etc.

Inspection Committee fee at the rate of Rs. 1,000 per member.

Affiliation fee at the rate of Rs. 2,500 per course per College/Institution.

Endowment: The details of Endowments to be created to open new College or by Colleges seeking to start new course shall be as given below:

(A) ARTS (HUMANITIES) AND SCIENCES:

(For starting of new college at degree level)

Endowment: An endowment of Rs. 10 lakhs should be provided, out of which Rs. 5 lakhs should be shown in the

form of fixed deposit invested in a nationalised bank or scheduled bank in the joint names of the Registrar, Pondicherry University and the Management of College and the balance endowment of Rs. 5 lakhs may be shown by the Management of the College in the form of property. This should be in the form of un-encumbered assets fetching an annual income of about Rs. 60,000. Both the income, i.e., annual interest from the fixed deposit and the annual income from the un-encumbered asset should be spent only for the maintenance of the College. The endowment will cover five course in all at major level comprising two or three courses in Humanities and two or three courses in Science and Commerce.

Land: The campus for a College situated in an urban area, recognised as such by the University, should have a

total of 20 acres and the campus for a College situated in the rural area, recognised as such by the University, should have a total of 30 acres for Men's College and 20 acres for Women's College.

Endowment required for further courses: (The endowment may be paid in instalments two instalments for under graduate courses and four instalments for Post-graduate courses, if such requests are received from the Management.)

	Rupees
B.A.—any main subject	50,000
B.Sc.—any main subject	1,00,000
B. Com.—Degree course	50,000
M.A.—any subject	1,00,000
M.Sc. any subject	2,00,000
M. Com.—Degree course	1,00,000

Note: For Home Science (at under-graduate) each branch shall be treated as separate course for purpose of endowment. The requirement of endowment for starting courses by established Colleges may be exempted provided they show adequate income for running the new courses.

be in the form of unencumbered assets fetching an annual income of about Rs. 3 lakhs. Both the income i.e. annual interest from the fixed deposit and annual income from the unencumbered assets should be spent only for the maintenance of the College.

"Established College" shall mean, a college satisfying the following norms:—

The endowment required for each Post-graduate Degree/Diploma/Super Speciality Course is Rs. 10 lakhs.

- A College having been established for the past 25 years;
- A College having a minimum student strength of 1,000;
- A College having a minimum of 10 departments (Under-graduate and Post-graduate);
- A College having assets* worth Rs. 20 lakhs.

Land: The campus for a College situated in an urban area, recognised as such by the University should have a total of 100 acres of land and the campus for a College situated in a rural area, recognised as such by the University should have a total of 150 acres of land.

(ii) *Engineering:*

For starting of a fresh college:

Endowment: An endowment of Rs. 50 lakhs should be provided, out of which Rs. 25 lakhs should be in the form of fixed deposit invested in a nationalised bank or scheduled bank in the joint names of the Registrar, Pondicherry University and the Management of the College and the balance endowment of Rs. 25 lakhs may be shown by the Management of the College, in the form of property. This should be in the form of unencumbered assets fetching an annual income of about Rs. 3 lakhs. Both the income i.e., annual interest from fixed deposit and annual income from the unencumbered assets should be spent only for the maintenance of the College.

(B) *Professional:*

(i) *Medical:*

For starting of a fresh Medical College:

Endowment: An endowment of Rs. 50 lakhs should be provided, out of which Rs. 25 lakhs should be in the form of fixed deposit invested in a nationalised bank or scheduled bank in the joint names of the Registrar, Pondicherry University and the Management of the College and the balance endowment of Rs. 25 lakhs may be shown by the Management of the College, in the form of property. This should

Endowment required for further courses:

(i) For each branch at Under-graduate level	Rs. 2.00 lakhs
(ii) For each branch at Post-graduate level	Rs. 2.50 lakhs

Definition of Assets Unencumbered properties such as College Buildings, staff Quarters, Hostels
Agricultural Lands:—

Land: The campus for a College situated in an urban area recognised as such by the University should have a total of 100 acres of land and the campus for a College situated in a rural area, recognised as such by the University should have a total of 150 acres of land.

total of 20 acres of land and the campus for a College situated in the rural area, recognised as such by the University should have a total of 30 acres of land.

(iii) *For starting a new Dental College, College of Pharmacy, College of Nursing and Law College:*

(iv) *For starting a fresh College/Institution of Education with one Graduate B.Ed. Degree course:*

Endowment: An endowment of Rs. 20 lakhs should be provided out of which Rs. 10 lakhs should be in the form of fixed deposit invested in a nationalised bank or scheduled bank in the joint names of the Registrar, Pondicherry University and the Management of the College and the balance endowment of Rs. 10 lakhs may be shown by the Management of the College, in the form of property. This should be in the form of unencumbered assets fetching an annual income of about Rs. 1.20 lakhs. Both the income i.e., annual interest from the fixed deposit and annual income from the unencumbered assets should be spent only for the maintenance of the College.

Endowment: An endowment of Rs. 6 lakhs should be provided, out of which Rs. 3 lakhs should be in the form of fixed deposit invested in a nationalised bank or scheduled bank in the joint names of the Registrar, Pondicherry University and the Management of the College and the balance endowment of Rs. 3 lakhs may be shown by the Management of the College, in the form of property. This should be in the form of unencumbered assets fetching an annual income of about Rs. 36,000. Both the income i.e. annual interest from the fixed deposit and annual income from the unencumbered assets should be spent only for the maintenance of the College.

The endowment required for M.Ed. Degree Course is Rs. 2 lakhs.

Land: The campus for a College situated in an urban area, recognised as such by the University should have a

Land: The campus for a College situated in an urban area, recognised as such by the University should have a

total of 20 acres of land and the campus for a college situated in a rural area, recognised as such by the University should have a total of 30 acres of land.

(v) *For starting a fresh College of Physical education with one under-graduate B. P. Ed. course :*

Endowment : An endowment of Rs. 10 lakhs should be provided, out of which Rs. 5 lakhs should be in the form of fixed deposit receipts invested in a nationalised bank or scheduled bank in the joint names of the Registrar, Pondicherry University and the Management of the College and the balance endowment of 5 lakhs may be shown by the Management of the College, in the form of property. This should be in the form of unencumbered assets fetching an annual income of about Rs. 60,000. Both the income i.e. annual interest from the fixed deposit and annual income from the unencumbered assets should be spent only for the maintenance of the College/Institution.

The endowment required for M.Ed. Degree course in 2 lakhs.

Land : The campus for a College situated in an urban area recognised as such by the University should have a total of 80 acres of land and the campus for a College/Institution situated in a rural area recognised as such by the University should have a total of 120 acres of land.

APPENDIX-II

Schedule of fees for various examinations and for other other various general purposes

Examination fee for various examinations under the faculty of Arts, Science, Engineering, Law, Teaching, Medicine, Certified and Diploma courses conducted by the Pondicherry University.

(A) Arts and Science courses :

1. B.A. B.Sc., and B. Com. Degree Courses	
Semester and Non-Semester system)	Rs.
Each written paper	20
Each practical	25
2. M.A., M.Sc., M.com., and M.C.A. Degree Courses	
Each written paper	40
Each Practical	50
Dissertation/Project	75

(B) Engineering course :

1. Engineering examinations	
Each written paper	30
Each practical paper	50
Project work	60

(C) Law courses:

1. LL.B. (Non-Semester)	
Each written paper	
2. Pre-law (Five year course)	20
Each written paper	20
3. LL.M. (Non-Semester and Semester)	
Each written paper	75
Dissertation	100

(D) Teaching courses:

1. B.Ed. (Non-Semester)	Rs.
Each paper	50
Practical	75
2. M.Ed. (Non-Semester)	
Each paper	75
Practical	150

(E) Medical courses :

1 D.M.M.Ch. (Higher specialities)	800
2 M.Ch. (Five years course)	
Part I (one paper, viva and clinical)	300
Part II (one paper and viva)	300
Part III (two papers, viva, clinical and dissertation)	500

3. M.D./M.S.	Rs
Each paper	200
Dissertation	200
4. M.Sc. in the faculty of Medicine (for Science graduates)	
Preliminary whole examination	200
Preliminary each paper	100
Final	200
5. Diploma examinations.	
D.G.O., D.C.H., D.T.C.D., D.V., D.D., D.A., D.O., D. Orth., D.C.P., Diploma in Physical, Medical, Diploma in Leprosy and Diploma in Diabetology	160
D.M.R.D., D.M.R.T., D.L.O. Part I	60
Part II	100
D.P.M. Part I	100
	130
D.P.H. Part I	130
Part II	130
6. M.B.B.S. each paper	60
7. B.M.R.Sc. each paper	40
8. B.Sc. in Medical Laboratory Technology	85
Each paper or each practical	20
9. M.Sc. Medical Entomology	
Each written paper	40
Each practical	50
Dissertation/Project/Thesis	75
(F) Master of Business Administration	
Each written paper	150
Project report and viva	300
(G) Research courses:	
M. Phil.	
Each written paper	75
Dissertation	200
(H) Certificate and diploma examinations:	
1. Certificate in Language Examinations	
Each written paper	30
2. Diploma in Language Examinations	
Each written paper/practical	30
3. Diploma fee (for taking degree at a convocation in person for the candidates who have been awarded research degree and winners of prize and medals)	15
4. Diploma fee (for taking degree from the college where they have undergone the course)	25
5. Diploma fee <i>in absentia</i> (for the candidates who have opted to receive their degree from the University)	25
6. Post-graduate Diploma in Law	
Each written paper	40

II. (A) Fees from Research Students and Fellows permitted to work in the departments of the University. Research students and fellows (Stipendiary and non-Stipendiary) admitted to the department of the University shall pay the following fees:

	Rs
Persons working in Humanities Department	300
(Mathematics will come under Humanities for this purpose)	per month
Persons working in Science Department	500
	per annum
(B) Fees for Matriculation, Diploma courses, etc.—(1) For registration as a candidate for a University Course of Studies conducted in a College or in a University Department or any other institution recognised by the University for presenting/preparing a candidate to an examination or a Research Degree of the University:—	
(i) For Under-graduate Courses	25
(ii) For Post-graduate Courses	35
2. Extract from the Return of Matriculates (Age extract)	25
3. For registration as a candidate for the M. Litt., or Ph.D. Degree	200
4. For registration for the Degree of M.D., M.S. D.M., M.Ch., Post-graduate Diploma in Medicine and Surgery and Dentistry	300
5. Research Fee for Ph.D.	
For Humanities	300
	per annum
For Sciences	500
	per annum
Valuation of Thesis (Synopsis fees)	250
6. Extension of time to submit Ph.D. Thesis will be granted on payment of penalty fees as follows:	
Submission of Ph.D. Thesis within 6 months after the lapse of stipulated period with a penalty fee of	50
Submission of Ph.D. Thesis within 12 months after the lapse of stipulated period with a penalty fee of	100
Submission of Ph.D. Thesis within 18 months after the lapse of stipulated period with a penalty fees of	150
Submission of Ph.D. Thesis within 24 months after the lapse of stipulated period with a penalty fees of	200
In the case of the candidates already registered for the Ph.D. degree, submission of Ph.D. Thesis beyond 24 months after the lapse of stipulated period with a penalty fees of	300
7. Penalty fee for late submission of Thesis and Dissertation for Students and Scholars going in for M.Phil. and M.Ed. degree	150
8. Submission of Ph.D. Thesis beyond six months allowed after the submission of synopsis:	
Delay by six months after submission of synopsis	100
Delay by another six months	150
Delay by one year	150
After one year, the candidate will have to re-register.	
9. For registration as a candidate for the M. Phil. Degree Course	100
10. For undergoing the M. Phil. Degree Course (Full-time and Part-time)	
For Humanities	600
	per annum
For Science (including laboratory fee)	1,000
	per annum
11. Master of Business Administration—	
For registration of application for admission	50
For undergoing the course—Full—time	1,000
For undergoing the course—Part—time	

(C) Other Fees—

	Rs.
1. (i) Condonation fee for attendance	50
(ii) Application for exemption from candidates after private study (non-collegiate) for all examination viz. B.A., B.Sc., B.Com., M.A., M.Sc., M.Com.	
(i) For Under-graduate	100
(ii) For Post-graduate	100
(iii) For considering application for recognition of higher secondary examination conducted by the Government of Tamil Nadu, Andhra or other State Government or pre-degree examination of Calicut University	50
(iv) For considering application for recognition of Higher Secondary Examination or a similar examination or any other examination conducted by other accredited, statutory agencies/University in India for admission to a course of study in this University	100
(v) For considering application for recognition of an examination conducted by Universities or other accredited bodies outside India for admission to a course of study in this University	250
2. (A) For Arts and Science Courses—	
1. For considering application for combination of attendance earned by a candidate in two different colleges affiliated to this University during the middle of a course	100
2. For considering application for combination of attendance earned by a candidate in a college affiliated to some other University in India and joining further studies in this University during the middle of the course	40
3. For considering application for combination of attendance earned by a candidate in a day college affiliated to this University and joining further studies in Evening College during the middle of the course and vice versa	200
4. Condonation in break of studies in Arts and Science Courses and for permission for rejoining	200
(B) For Professional Courses—	
1. For considering application for combination of attendance earned by a candidate in two different colleges (not within the same city) affiliated to this University	400
2. For considering application for transfer of a candidate from college affiliated to some other University in India and joining further studies in this University	1,000
3. For considering application for transfer of a candidate from a Day College affiliated to this University and joining further studies in Evening College and vice versa (for Law course for which Evening Colleges are functioning)	400
4. For considering application for transfer of a candidate from a college affiliated to some other University outside India and joining further studies in this University	1,500
5. Condonation in break of studies in professional courses and for permission for re-joining	500
3.	
1. Fee for effecting change of names of candidates in the records of the University and in certificate/diplomas	50
2. For endorsing in the University records in regard to the change in the date of birth whether due to clerical errors or otherwise	50
3. For obtaining a duplicate Diploma or Certificate	100
4. For obtaining a Provisional Certificate	30
5. For obtaining a Migration Certificate	25
6. For obtaining duplicate Migration Certificate	50
7. For issue of duplicate statement of marks for all the University examinations	30
8. For issuing a statement of marks each examination each appearance	5
9. Search fee of each previous year for issue of duplicate mark statement	10
10. For checking the addition of the marks in each paper of a candidate for any University examination (for each paper)	50
11. For issue of Rank Certificate	25
12. Issue of Certificate indicating last date of examination	50

Rs.

13. Cost of Application Form	5*
14. For considering application for undergoing a course of studies in a language under an approved private teacher if the language is not offered in the college concerned . .	100
15. Recognising qualification of professional examinations such as AMIE as equivalent to our degree course in professional subject	100

*Subject to variation depending upon the courses as indicated in the regulations/advertisement notifications.

APPENDIX III

Schedule of various examinations, probable dates, publication of results, etc.

B.Sc. (MLT)	I Semester/ 1 year	II Semester/ Arrears Examination
(1) Last date for the receipt of Ist year examination application	1st October	15th February
(2) Last date for the receipt of attendance certificate from Colleges	20th November	10th April
(3) Probable date of commencement of examination	1st December	20th April
(4) Probable date of publication of results	1st week of January	3rd week of June
B.M.R.Sc.		
(1) Last date for the receipt of Ist year examination application	1st October	15th February
(2) Last date for the receipt of attendance certificate from Colleges	20th November	20th April
(3) Probable date of commencement of examination	1st December	1st May
(4) Probable date of publication of results	1st week of January	3rd week of June
1 Year M.B.B.S.		
(1) Last date for the receipt of Ist year examination application	1st October	1st February
(2) Last date for the receipt of attendance certificate from Colleges	20th November	5th April
(3) Probable date of commencement of examination	15th April	1st December
(4) Probable date of publication of results	Last week of May	Last week of January
M.D./M.S. (Non-Semester)	I Semester 1 year	II Semester/ Arrears Examination
(1) Last date for the receipt of Ist year examination application	10th January	1st September
(2) Last date for the receipt of attendance certificate from Colleges	5th March	20th September
(3) Probable date of commencement of examination	15th March	1st October
(4) Probable date of publication of results	3rd week of May	2nd week of December
MEDICAL POST-GRADUATE DIPLOMA (Non-Semester)		
(1) Last date for the receipt of Ist year examination application	10th August	20th January
(2) Last date for the receipt of attendance certificate from Colleges	20th March	5th October

M.D./M.S. (Non-Semester)	I Semester 1 Year	II Semester Arrears Examination
(3) Probable date of commencement of examination	1st April	15th October
(4) Probable date of publication of results	Last week of May	Last week of December

M.Sc. BIO-CHEMISTRY
(Non-Semester)

(1) Last date for the receipt of 1st year examination application	1st September	15th February
(2) Last date for the receipt of attendance certificate from Colleges	5th April	
(3) Probable date of commencement of examination	15th April	1st October (Supplementary)
(4) Probable date of publication of results	1st week of June	Last week of November

B.TECH

(1) Last date for the receipt of 1st year examination application	1st October	1st March
(2) Last date for the receipt of attendance certificate from Colleges	1st December	1st May
(3) Probable date of commencement of examination	10th December	11th May
(4) Probable date of publication of results	1st week of February	3rd week of June

M.C.A. and D.C.A.	I Semester/ 1 year	II Semester/ Arrears Examination
(1) Last date for the receipt of 1st year examination application	1st October	1st March
(2) Last date for the receipt of attendance certificate from Colleges	1st December	1st May
(3) Probable date of commencement of examination	10th December	11th May
(4) Probable date of publication of results	1st week of February	3rd week of June

1 YEAR PRE-LAW

(1) Last date for the receipt of 1st year examination application	1st October	1st March
(2) Last date for the receipt of attendance certificate from Colleges	5th December	5th May
(3) Probable date of commencement of examination	15th December	15th May
(4) Probable date of publication of results	1st week of February	1st week of June

1 YEAR B.G.L.

(1) Last date for the receipt of 1st year examination application	1st October	1st March
(2) Last date for the receipt of attendance certificate from Colleges	5th December	5th May
(3) Probable date of commencement of examination	15th December	15th May
(4) Probable date of publication of results	1st week of February	3rd week of June

M.L. (Non-Semester)

(1) Last date for the receipt of 1st year examination application	25th March
(2) Last date for the receipt of attendance certificate from Colleges	25th May
(3) Probable date of commencement of examination	5th June
(4) Probable date of publication of results	2nd week of July

B.A./B.S.C./B.Com Non-semester	I Semester/ 1 Year	II Semester Arrears Examination
(1) Last date for the receipt of 1st year examination application	10th January	5th July
(2) Last date for the receipt of attendance certificate from College	25th March	
(3) Probable date of commencement of examination	5th April	15th September (Supplementary)
(4) Probable date of publication of results M.A./M.Sc./M. Com. (Non-Semester)	2nd week of June	Last week of October
(1) Last date for the receipt of 1st Year examination application	20th January	10th July
(2) Last date for the receipt of attendance certificate from Colleges	1st April	
(3) Probable date of commencement of examination	10th April	20th September (Supplementary)
(4) Probable date of publication of results	2nd week of June	Last week of October
B.Ed. (Non-Semester)		
(1) Last date for the receipt of 1st year examination application	10th January	5th July
(2) Last date for the receipt of attendance certificate from Colleges	25th March	
(3) Probable date of commencement of examination	5th April	15th September (Supplementary)
(4) Probable date of publication of results	2nd week of June	Last week of October
M. Phil. (Non-Semester)		
(1) Last date of the receipt of 1st year examination application	1st October	
(2) Last date for the receipt of attendance certificate from Colleges	5th December	
(3) Probable date of commencement of examination	15th December	
(4) Probable date of publication of results	Last week of February	
Note 1. Examination for the M.B.A. (Semester) course offered by the School of Management, Purdicherry University, for the Certificate/Diploma/Higher Diploma course in French offered by JIPMER will be conducted internally.		
Note 2. Dates in respect of the final examination for the M.Sc. Medical Entomology (Trimester) offered by the V.C.R.C. will be notified by the Institute.		

APPENDIX IV

Fees for Valuation and Paper Setting

Sl. No.	Category	Fee for valuation	Fee for setting
(1)	(2)	(3)	(4)
		Rs. P.	Rs. P.
1.	All Under-graduate examinations (Arts, Science, Commerce and Professional)	4.00	100.00
2.	All Certificate and Diploma except Medical	4.00	60.00
3. (a)	Post-graduate examination (Arts, Science, and Commerce)	5.00	125.00
(b)	Post-graduate examination in Professional Course including Post-graduate Diploma	5.00	125.00

(1)	(2)	(3)	(4)
4. Medical—Under-graduate	Rs. 12 per paper to be equally shared by the number of Examiners valuing the papers with a minimum of Rs. 30 for each examiner	Rs. 250 with a minimum of Rs. 125 per paper for each paper setter	
Post-graduate including super specialities in Medicines	Rs. 25 per paper to be equally shared by the number of Examiners valuing the papers with a minimum of Rs. 30 for each examiner	Rs. 250 with a minimum of Rs. 125 per paper for each paper setter	
5. M.Phil./Pre Ph.D.	5.00	125.00	
	B.A. and B.Sc.		Practicals
1. Prescribing work:			
For one batch only			50.00
For more than one batch (Equally divided by number of examiners engaged)			50.00 (per batch)
2. (a) Preparation :			1.50
Per candidate per examiner (Number of candidates registered)			
(b) Evaluation :			4.00
Per candidate per examiner (Number of candidates actually examined)			
Valuation of major records only			1.50 (per record per examiner)
	M.A., M.Sc.,		Practicals
1. Prescribing work:			Rs. P.
For one batch only			50.00
For more than one batch (Equally divided by number of examiners engaged)			50.00 (per batch)
2. (a) Preparation:			2.00
Per candidate per examiner (Number of candidates registered)			
(b) Evaluation:			5.00
Per candidate per examiner (Number of candidates actually examined)			
(c) Valuation of M.A./M.Sc. records			5.00 (Per record per examiner)
Engineering (Both Non-Engineering and Engineering subjects)			
(i) Prescribing work		Rs. 50 per batch divided by number of Examiners engaged	
(ii) Preparation		Rs. 2 per candidate per Examiner (Registered candidates)	
(iii) Evaluation		Rs. 4 per candidate per Examiner (Actually examined)	
(iv) Record		Rs. 4 per record per Examiner	
Medical:			
Practical:	(Per candidate per examiner)	Under-graduate Rs. 10	Post-graduate
Oral:	(per candidate per examiner)	Rs. 5 subject to a minimum of Rs. 150 per each day of examinations	Rs. 30 subject to a minimum of Rs. 150 per each day of examinations
Clinical:	(per candidate per examiner)		

Dissertation and Thesis Valuation

Sl. No. (1)	Category (2)	Dissertation/Thesis (3)	Viva-Voce (4)
1.	M.A., M.Sc., M.Com., M.A. Social Work, M.B.A.	Rs. 20 per Dissertation per examiner	Rs. 2 per candidate per examiner
2.	Under-Graduate and Post-Graduate Degree/Diploma in Medical M.P.Ed., M.Phil., M.L., M.E., and M.Ed.	Rs. 100 for Diploma Rs. 150 for Degree Rs. 50 per dissertation per examiner	— Rs. 3 per candidate per examiner
3.	M.T.P./Ph.D.	Thesis and Viva Rs. 200 per examiner	—
4.	M.Sc. Medical Entomology and Medical Bio-Chemistry	Rs. 100 (only for External Examiner)	—

Chairman fee for Question paper setting

Sl. No. (1)	Category (2)	Remuneration (3)
1.	Upto 19 Question papers	Rs. 50
2.	Upto 39 Question papers	
3.	More than 39 Question papers	(irrespective of no. of papers)
4.	To the Chairman of Board who does not set or value any paper	

Chairman fee for valuation

Sl. No. (1)	Category (2)	Remuneration (3)
1.	B.A. History, Economics and English	Rs. 60 (for all courses including co-ordinator in Engineering course)
2.	For other subjects	
3.	B.Sc. for all courses	
4.	Geology	
5.	M.A./M.Sc. (Semester)	
6.	M.A./M.Sc. (Non-Semester)	
7.	M.Phil	
8.	B.G.L./L.L.B.	
9.	B.Ed./M.Ed./B.P.Ed./M.P.Ed.	
10.	B.E.	
11.	Part-time B.E.	
12.	M.B., B.S.	
13.	M.D./M.S./M.Ch.	
14.	M.Sc. (Engg.)/M.Tech.	
15.	All other courses	

Clerical Assistance to Chairman

I. M.B., B.S.	Rs. 15
II. and III M.B., B.S.	Rs. 15
Final M.B., B.S.	Rs. 50

Instruction fee to Chief Examiner

For B.A./B.Sc./B.Com., etc., per paper	Rs. 50
--	--------

Minimum remuneration payable to the Examiner for each examination (valuation/viva voce/practical)

Sl. No.	Category	Minimum
(1)	(2)	(3)
1. L.L.M., M.E., M.E.D. P.G. Dip in Law		Rs. 100
2. M.Phil./Pre Ph.D.		Rs. 50
3. Medical for all U.G./P.G. Courses General minimum for an examiner if he is involved with only one part of the examination (Theory or practical)		Rs. 150
4. For all other Examinations		Rs. 30

For preparing manuscript copies of question paper of the written examination Rs. 5 per set of 3 copies will be paid.

For translation of question papers Rs. 35 per paper will be paid.

Conduct of Examinations

- | | |
|----------------------------------|--------------------|
| 1. Chief Superintendent/Observer | Rs. 30 per session |
| 2. Invigilator | Rs. 15 per session |
| 3. Stitching of bags | Re, 1 per bag |

Central Valuation

Lunch allowance

Rs. 10 per examiner per day

In addition refreshments will be provided in F.N. and A.N. to every member, the total cost not exceeding Rs. 5 per day per Examiner.

(Amended as per Executive Council's resolution No. 88-178 dated 18-6-88)

APPENDIX V*Form of written Contract*

Memorandum of Agreement made this the _____ day of _____ One thousand nine hundred and _____ between _____ (hereinafter called the 'Teacher') of the first part and the Pondicherry University being a body corporate constituted under Pondicherry University Act, 1985 (No. 53 of 1985) (hereinafter called the 'University') of the second part. It is hereby agreed as follows :

1. That the University hereby appoints _____ to be a member of the teaching staff of the University with effect from the date the said _____ takes charge of the duties of his/her post and he said _____ hereby accepts the engagement and undertakes to take such part in the activities of the University and perform such duties in the University as may be required by and in accordance with the said Act, the Statutes and Ordinances framed thereunder, for the time being in force, whether the same relate to organisation of instruction or teaching, or research or the examination of students or their discipline or their welfare, and generally to act under the direction of the authorities of the University.

2. (a) The teacher shall be on probation for a period of 12 months/24 months which may be extended so as not to exceed 24 months in all.

(b) The University shall have the power to relax the provisions contained in sub-paragraph (1) and shall also have the right to assess the suitability of the teacher for confirmation even before the expiry of the period of 12/24 months from the date of his/her appointment but not earlier than 9 months from that date.

(c) If the University is satisfied with the suitability of the teacher for confirmation he/she shall be confirmed in the post to which he/she was appointed at the end of the period of his/her probation.

(d) In case the University decided not to confirm the teacher whether at the end of the 12/24 months' period of his/her probation or at the end of the extended period of probation as the case may be the teacher shall be informed in writing at least 30 days before the expiration of that period that he/she would not be confirmed and would, consequently cease to be in the service of the University at the end of the period of his/her probation.

3. That the said _____ shall be a whole-time teacher of the University and unless the contract

is terminated by the Executive Council or by the teacher as hereinafter provided, shall continue in the service of the University until he/she completes the age of sixty years.

4. That the University shall pay _____ during the continuance of his/her engagement hereunder as remuneration for his/her service a salary of Rs. _____ per mensem, raising by annual increment of Rs. _____ to a maximum salary of Rs. _____ per mensem :

Provided that whenever there is any change in the nature of the appointment or the emoluments of the teacher, particulars of the change shall be recorded in the Schedule annexed hereto, under the signature of both the parties and the terms of this agreement shall apply *mutatis mutandis* to the new post and the terms and conditions attached to that post :

Provided further that no increment shall be withheld or postponed save by a resolution of the Executive Council on a reference by the Vice-Chancellor to it and after the teacher has been given sufficient opportunity to make his/her written representation.

5. That the said teacher agrees to be bound by the Statutes, Ordinances, Regulations and Rules for the time being in force in the University, provided that no change in the terms and conditions of a service of the teacher shall be made after his/her appointment in regard to designation scale of pay, increment, provident fund, retirement benefits, age of retirement, probation, confirmation, leave salary and removal from service so as to adversely affect him/her.

6. That the teacher shall devote his/her whole-time to the service of the University and shall not, without the written permission of the University, engage, directly or indirectly any trade or business whatsoever, or in any private tuition or other work to which any emolument or honorarium is attached but this prohibition shall not apply to work undertaken in connection with the examination of Universities or learned bodies or Public Service Commission, or to any literary work or publication or radio talk or extension lectures, or, with the permission of the Vice-Chancellor, to any other academic work.

7. It is further agreed that this engagement shall not be liable to be determined by the University except on the grounds specified and in accordance with the procedure laid down in Clauses (1), (2), (3), (4), (5) and (6) of Statute 26 (reproduced below) :

(1) Where there is an allegation of misconduct against a teacher, the Vice-Chancellor may, if he thinks fit by order in writing, place the teacher under suspension and shall forthwith report to the Executive Council the circumstances in which the order was made :

Provided that the Executive Council may, if it is of the opinion, that the circumstances of the case do not warrant the suspension of the teacher, revoke that order.

(2) Notwithstanding anything contained in the terms of his contract of service or of his appointment, the Executive Council shall be entitled to remove a teacher on the ground of misconduct.

(3) Save as aforesaid, the Executive Council shall not be entitled to remove a teacher except for good cause and after giving three months' notice in writing or payment of three months' salary *in lieu* of notice.

(4) No teacher shall be removed under Clause (2) or under Clause (3) until he has been given a reasonable opportunity of showing cause against the action proposed to be taken in regard to him.

(5) The removal of a teacher shall require a two-thirds majority of the members of the Executive Council present and voting.

(6) The removal of a teacher shall take effect from the date on which the order of removal is made :

In witness whereof the parties hereto affix their hands and seal.

1. Signature

Designation

In the presence of

1. Signature

Designation

2. Signature

Designation

Signed and sealed on behalf of the University under the authority of the Executive Council by:—

1. Signature

Designation

In the presence of

1. Signature

Designation

2. Signature

Designation

SCHEDULE

Name of teacher in full.....
Address
Designation
Salary Rs. in the grade of.....

Note: The change in grade, salary or designation should be briefly described.

Change of designation or grade	Date of approval of E.C.	Date from which change takes effect	Signature of teacher	Signature of Officer of the University
--------------------------------	--------------------------	-------------------------------------	----------------------	--

APPENDIX-VI

Leave to teachers of the University

(A) PERMANANT TEACHERS

Kinds of leave admissible :

1. The following kinds of leave would be admissible to permanent teachers :

(i) Leave treated as duty—

Casual leave
Special Casual leave
Duty leave

(ii) Leave earned by duty—

Earned leave
Half Pay leave
Commuted leave

(iii) Leave not earned by duty—

Extraordinary leave
Leave not due

(iv) Leave not debited to leave account—

(a) Leave for academic pursuits—

Study leave
Sabbatical leave

(b) Leave on grounds of health—

Maternity leave
Special Disability leave
Quarantine leave

The Executive Council may, in exceptional cases, grant, for the reasons to be recorded, any other kind of leave, subject to such terms and conditions as it may deem fit to impose.

Casual leave :

2. (i) Casual leave is not earned by duty. Total casual leave granted to a teacher shall not exceed ten days in an academic year.

(ii) Casual leave cannot be combined with any other kind of leave except special casual leave. It may be combined with holidays including Sundays. Holidays or Sundays falling within the period of casual leave shall not be counted as casual leave.

Special casual leave :

3. (a) Special casual leave not exceeding ten days in an academic year may be granted to a teacher—

- to conduct examination of a University, Public Service Commission, Board of Examination or other similar Bodies/Institutes.
- to inspect academic institutions attached to a Statutory Board etc;
- to participate in a literary, scientific or educational conference, symposium or seminar or cultural or athletic activities conducted by Bodies recognised by the University authorities;
- to do such other work as may be approved by the Vice-Chancellor as academic work.

NOTE :—(i) In computing the ten days leave admissible, the days of actual journey, if any, to and from the places where such Conference/activity takes place will be excluded.

(ii) In addition, special casual leave to the extent mentioned below may also be granted—

- to undergo sterilization operation (Vasectomy or Salpinxectomy) under Family Planning Programme. Leave in this case will be restricted to six working days.
- to a female teacher who undergoes non puerperal sterilization. Leave in this case will be restricted to fourteen days.

(iii) Special casual leave cannot be accumulated nor can it be combined with any other kind of leave except casual leave. It may be granted in combination with holidays.

Duty leave :

4. (i) Duty leave may be granted for—

- attending conferences/congresses/symposia/seminars and other activities of similar nature, on behalf of the University or where invitations are accepted with prior approval of the University;
- delivering lectures in Institutions and Universities at the invitation of such Institutions or Universities, received by this University and accepted by the Vice-Chancellor;
- working in another Indian or foreign University, any other agency, institution or organisation when so deputed by the University, or for performing any other duty for the University; and
- working on a delegation or Committee appointed by the Government of India, State Governments, University Grants Commission, or any other central bodies like DST, CSIR, ICAR & ICMR other Universities or any other academic or public body. (Amended as per Executive Council resolution No. 82-267, dated 19-11-1988).

(c) teachers deputed abroad under cultural/bilateral exchange programme in which it is condition that the teacher deputed will have to go on duty leave.

(f) undertaking field work in India up to a maximum period of five weeks in a semester and up to a maximum period of five weeks abroad in one academic year. In case a faculty member desires to prefix or suffix work to the duty leave sanctioned for attending a conference, the total period of absence abroad at a stretch will not be more than five weeks in the semester and those who avail duty leave for field work in India shall not be eligible for duty leave for field work abroad during the same semester.

(ii) The duration of leave should be such as may be considered necessary by the sanctioning authority on each occasion, taking into account the normal academic programmes of the University and subject to a maximum period of one year.

(iii) The leave may be granted on full pay. Provided that if the teacher receives a fellowship or honorarium or any other financial assistance beyond the amount needed for normal expenses, he will be sanctioned duty leave on reduced pay and allowances as per University regulations in this regard.

(iv) Duty leave may be combined with earned leave, half pay leave or extraordinary leave.

Note : Leave to the teacher for attending conferences/field work, etc., should not exceed two weeks in a semester (where existing) and four weeks in cases of non-semester pattern of teaching.

Earned Leave :

5. (i) Earned leave admissible to a teacher shall be :—

- 1/30th of actual service including vacation plus;
- 1/2rd of the period, if any, during which he is required to perform duty during vacation.

Note :—For purposes of computation of period of actual service, all periods of leave except casual, special casual and duty leave shall be excluded.

(ii) Earned leave at the credit of a teacher shall not accumulate beyond 180 days. The maximum earned leave that may be sanctioned at a time shall not exceed 120 days. Earned leave exceeding 120 days may, however, be sanctioned in the case of higher study or training or leave on medical certificate or when the entire leave or a portion thereof is spent outside India.

Note 1.—When a teacher combines vacation with earned leave the period of vacation shall be reckoned as leave in calculating the maximum amount of leave on average pay which may be included in the particular period of leave.

Note 2.—In case where only a portion of the leave is spent outside India, the grant of leave in excess of 120 days shall be subject to the condition that the portion of the leave spent in India shall not in the aggregate exceed 120 days.

Half pay leave

6. Half pay leave admissible to a permanent teacher shall be 20 days for each completed year of service. Such leave may be granted on medical certificate, private affairs or for academic purposes.

Note :—A "Completed year of service" means continuous service of specified duration under the University and includes periods spent on duty as well as leave including extraordinary leave.

Commuted Leave

7. Commuted leave not exceeding half the amount of half pay leave due may be granted on medical certificate to a permanent teacher subject to the following conditions :—

(i) When commuted leave is granted, twice the amount of such leave shall be debited against the half pay leave due.

(ii) No commuted leave shall be granted under this Ordinance unless the authority competent to sanction leave has reason to believe that the teacher will return to duty on its expiry.

(iii) Where a teacher who has been granted commuted leave resigns from service or at his request is permitted to retire voluntarily without returning to duty, the commuted leave shall be treated as half pay leave and the difference between the leave salary in respect of commuted leave and half pay leave shall be recovered :

Provided that no such recovery shall be made if the retirement is by reason of ill health incapacitating the teacher for further service or in the event of his death.

(iv) Half pay leave up to a maximum of 180 days may be allowed to be commuted during the entire service (without production of medical certificate) where such leave is utilised for an approved course of study certified to be in the University's interest by the leave sanctioning authority.

Note : Commuted leave may be granted at the request of the teacher even when earned leave is due to him.

Extraordinary leave :

8. (i) A permanent teacher may be granted extraordinary leave—

(a) When no other leave is admissible; or

(b) When other leave is admissible, the teacher applies in writing for the grant of extraordinary leave;

Provided, however, that save under the provisions of sub-clauses (ii) to (iv) below, no extraordinary leave shall be granted to a teacher for holding an appointment or a fellowship outside the University.

(ii) The Executive Council may grant on the request from the institution concerned and on application of the teacher, extraordinary leave to hold an appointment or a fellowship under a Government, a University, a Research Institute or other similar important institution, if in the opinion of Executive Council, such leave does not prejudice the interest of the University. This leave can be allowed only to a teacher who has been confirmed in the post held by him and has served the University for a period of at least two years. Provided further that such leave shall not be granted until after the expiry of leave sanctioned under this sub-clause and sub-clause (iii) below.

The application for such leave shall be sent through the Dean of the School concerned and the latter shall give his recommendations taking into account the strength of teaching staff of the particular subject. Except in very special cases, at no time more than 20% of the strength of teachers on rolls of a Centre shall be allowed to be absent from the Centre on extraordinary leave, study leave and/or sabbatical leave.

In case of his failure to return to duty immediately at the end of the period of leave sanctioned to him the services of a teacher shall be liable to be terminated from the date of commencement of the period of leave granted to him. He shall also refund to the University pay and allowances, if any received by him during the leave (including other kinds of leave taken in continuation) sanctioned to him for the purpose.

(iii) The Executive Council may also grant, at its discretion, extraordinary leave to a permanent teacher who has been selected for a teaching or research assignment in a University, a Research Institute or other similar important institution provided he has served the University for a period of at least two years and the application had been sent through and forwarded by the University. The leave in such cases shall not exceed a maximum period of two years. Notwithstanding any other leave which may be due to a teacher, the entire period for which the teacher holds the appointment outside the University shall be without pay. The period so spent shall count for seniority. The period shall not count for pensionary/Contributory Provident Fund benefits unless the pensionary contributory provident fund contributions are paid by the teacher or the foreign employer.

If the teacher does not resume his duties in the University at the end of the period of extraordinary leave granted to him,

he shall be treated as having resigned the post held by him in the University.

(iv) Subject to the provisions of sub-clause (vii) below, the total amount of extraordinary leave granted to a teacher under sub-clauses (ii) and (iii) above shall not exceed five years during his entire service. Provided that the teachers of the University who are given career Award will be eligible for grant of extraordinary leave for the period of award in addition to the above provisions on the condition that they stay on in the University during the period of this award.

(v) Extraordinary leave shall always be without pay. Payment of allowances during the period of extraordinary leave shall be governed by the relevant rules.

(vi) Extraordinary leave shall not count for increment except in the following cases :—

(a) Leave taken on medical certificate.

(b) Cases where the Vice-Chancellor is satisfied that the leave was taken due to causes beyond the control of the teacher, such as inability to join or rejoin duty due to civil commotion or a natural calamity, provided the teacher has no other kind of leave to his credit.

(c) Leave taken for prosecuting higher studies.

(d) Leave granted to accept a teaching post or fellowship or research-cum-teaching post or an assignment for technical or academic work of importance.

(vii) Extraordinary leave may be combined with any other leave except casual leave and special casual leave provided that the total period of continuous absence from duty on leave (including periods of vacation when such vacation is taken in conjunction with leave) shall not exceed three years except in cases where leave is taken on medical certificate. The total period of continuous absence from duty shall in no case exceed five years in all.

(viii) The authority empowered to grant leave may commute retrospectively periods of absence without leave into extraordinary leave.

Leave not due

9. (i) Leave not due may, at the discretion of the Vice-Chancellor be granted to a permanent teacher for a period not exceeding 360 days during the entire service, out of which not more than 90 days at a time and 180 days in all may be otherwise more than on medical certificate. Such leave shall be debited against the half pay leave earned by him subsequently.

(ii) Leave not due shall not be granted unless the Vice-Chancellor is satisfied that as far as can reasonably be foreseen, the teacher will return to duty on the expiry of the leave and earn the leave amount.

(iii) A teacher to whom 'Leave not due' is granted shall not be permitted to tender his resignation from service so long as the debit balance in his leave account is not wiped off by active service, or he refunds the amount paid to him as pay and allowance for the period not so earned. In a case where retirement is unavoidable on account of reason of ill health incapacitating the teacher for further service refund of leave salary for the period of leave to be earned may be waived by the Executive Council :

Provided further the Executive Council may, in any other exceptional case waive, for reasons to be recorded, the refund of leave salary for the period of leave still to be earned.

Study Leave

10. (i) (a) Study leave may be granted to a permanent whole-time Professor/Associate Professor with not less than three years continuous service to pursue a special line of study or research or to make a special study of the various aspects of University Organisation and methods of education, if the University is likely to benefit by the

course of study or programme of research which the applicant wishes to undertake :

Provided that the Executive Council may, in the special circumstances of the case, waive the condition of three years service being continuous.

- (b) Study leave may be granted to a permanent whole-time Assistant Professor with not less than two years continuous service, to pursue a special line of study or research directly related to his work in the University Organisation and methods of education giving full plan of work.

Explanation :—In computing the length of service, the time during which a person was on probation or engaged as a research assistant may be reckoned provided—

- (a) the person is a teacher on the date of the application; and
(b) there is no break in service.

(ii) Study leave to a teacher of a Department/School shall be granted on recommendation of the School Board concerned. The leave shall not be granted for more than two years save in very exceptional cases in which the Executive Council is satisfied that such extension is unavoidable on academic grounds and necessary in the interest of the University. The period of study leave shall in no case exceed three years.

(iii) Study leave shall not be granted to a teacher who is due to retire within three years of the date on which he is expected to return to duty after the expiry of study leave.

(iv) Study leave may be granted more than once provided that not less than five years have elapsed after the teacher returned to duty on completion of earlier spell of Study Leave or Sabbatical Leave. For subsequent spell of Study Leave, the teacher shall indicate the work done during the period of earlier leave as also give details of work to be done during the proposed spell of Study Leave.

(v) No teacher who has been granted Study Leave shall be permitted to alter substantially the course of study or the programme of research without the permission of the Executive Council. When the course of study falls short of the study leave sanctioned, the teacher shall resume duty on the conclusion of the course of study unless the previous approval of the Executive Council to treat the period of shortfall as ordinary leave has been obtained.

(vi)(a) Subject to the provisions of sub-clause (vii) and (viii) below, Study Leave may be granted on full pay for the first year and on half pay for the second year and no pay shall be admissible thereafter to Professors and Readers. The Lecturers granted Study Leave would be entitled to continue to draw their total emoluments for the duration of the Study Leave as are applicable to teachers granted fellowship under the Faculty Improvement Programme of the UGC except the Living Expenses Allowance of Rs. 250 per month.

Note : The term 'pay' refers to average pay and shall be calculated as mentioned under the head "Leave Salary" below :

(b) The teacher shall not ordinarily be entitled to house rent allowance or city compensatory allowance during the period of study leave. Provided that the Vice-Chancellor may, in view of the special circumstances of a case, sanction the payment of such allowances in part or in full.

(vii) The amount of scholarship, fellowship or other financial assistance that a teacher granted study leave has been awarded will not preclude his being granted study leave with pay and allowances but the scholarship etc., so received shall be taken into account in determining the pay and allowances on which the study leave may be granted.

(viii) If a teacher, who is granted study leave is permitted to receive and retain any remuneration in respect of part-time employment during the period of study leave, he shall ordinarily not be granted any study leave salary, but in cases, where the amount of remuneration received in respect of part-time employment is not considered adequate, the Executive Council may determine the study leave salary payable in each case,

Note : It shall be the duty of the teacher granted study leave to communicate immediately to the University financial assistance in any form received by him during the course of study leave from any person or institution whatsoever.

(ix) Subject to the maximum period of absence from duty on leave not exceeding three years, study leave may be combined with earned leave, half pay leave, extraordinary leave or vacation provided that the earned leave at the credit of the teacher shall be availed of at the commencement of the study leave. When study leave is taken in continuation of a vacation, the period of study leave shall be deemed to begin to run on the expiry of the vacation.

(x) The teachers granted study leave will also be sanctioned necessary increment(s) as and when due. However the amount of emoluments payable to the teachers on study leave shall be reduced subject to the provisions of sub-clauses (vii) and (viii) above.

(xi) Study leave shall count as service for pension/contribution provident fund provided the teacher rejoins the University on the expiry of his study leave and serves for the period for which Bond has been executed.

(xii) Study leave granted to a teacher shall be deemed to be cancelled, in case it is not availed of within 12 months of its sanction. Provided that where study leave granted has been so cancelled the teacher may apply again for such leave.

(xiii) A teacher availing of study leave shall undertake that he shall serve the University continuously for double the period of study leave or for a period of three years whichever is less, to be calculated from the date of resuming duty after expiry of the study leave.

(xiv) A teacher—

- (a) who is unable to complete his studies within the period of study leave granted to him; or
(b) who fails to rejoin the service of the University on the expiry of his study leave; or
(c) who rejoins the University but leaves the service without completing the prescribed period of service after rejoining the service; or
(d) who within the said period is dismissed or removed from service by the University shall be liable to refund to the University the amount of leave salary and allowances and other expenses, incurred on the teacher or paid to him or on his behalf in connection with the course of study :

Provided that if a teacher has served the University for a period of not less than half the period of service under the Bond on return from study leave, he shall refund to the University half of the amount calculated as above. In case the teacher has been granted study leave without pay and allowances, he shall be liable to pay the University an amount equivalent to his four month pay and allowances last drawn as well as other expenses incurred by the University during the course of study.

Explanation : If a teacher asks for extension of study leave and is not granted the extension but does not rejoin on the expiry of the leave originally sanctioned, he/she will be deemed to have failed to rejoin the service on the expiry of his leave for the purpose of recovery of the dues under this ordinance :

(a) Notwithstanding the above, the Executive Council may order that nothing in this Ordinance shall apply to a teacher who within the prescribed period of service under the bond is permitted to retire from the service on medical grounds. Provided further that the Executive Council may, in any other exceptional case, waive or reduce, for reasons to be recorded, the amount refundable by a teacher under this clause.

(xv) After the leave has been sanctioned the teacher shall, before availing of the leave execute a bond* in favour of the University binding himself for the fulfilment of the conditions laid down in sub-clauses (xiii) and (xiv) above and give

*as per Form of Bond given in Annexure (iii)

security of immovable property to the satisfaction of the Finance Officer or a Fidelity Bond of an Insurance Company, or a Guarantee by a Scheduled Bank or furnish security of two permanent teachers for the amount which might become refundable to the University in accordance with sub-clause (xiv) above.

(xvi) The teacher shall submit to the Registrar six monthly reports of progress in his/her studies from his/her Supervisor or the Head of the Institution. This report shall reach the Registrar within one month of the expiry of every six months of the study leave. If the report does not reach the Registrar within the time specified, payment of leave salary may be deferred till the receipt of such report.

Sabbatical leave : 11.(i) Permanent wholetime teachers of the University who have completed three years of service may be granted sabbatical leave to undertake study or research or other academic pursuits solely for the object of increasing their proficiency and usefulness to the University. This leave shall not be granted to a teacher who has less than one year of service in the University to retire.

(ii) The duration of leave shall not exceed one or two semesters according as the teacher has actually worked in the University for not less than six or twelve semesters respectively since his return from the earlier spell of sabbatical leave. Provided further that sabbatical leave shall not be granted until after the expiry of six semesters from the date of the teacher's return from the previous study leave or any other kind of training programme.

(iii) A teacher shall, during the period of sabbatical leave be paid full pay and allowances (subject to the prescribed conditions being fulfilled) at the rates applicable to him/her immediately prior to his proceeding on sabbatical leave. The University shall not, however, fill up his/her post or make other alternative arrangements involving additional expenditure.

(iv) A teacher on sabbatical leave shall not take up during the period of that leave, any regular appointment under another organisation in India or abroad. She/he may, however, be allowed to accept a fellowship or Research Scholarship or ad-hoc teaching and research assignment with honorarium or any other form of assistance, other than a regular employment in an institution of advance studies, provided that in such cases, the Executive Council may, if it so desires, sanction sabbatical leave on reduced pay and allowances.

(v) During the period of sabbatical leave the teacher shall be allowed to draw the increment on the due date. The period of leave shall also count as service for purposes of pension/contributory provident fund provided the teacher rejoins the University on the expiry of his leave.

Note : 1. The programme to be followed during sabbatical leave shall be submitted to the University for approval alongwith the application for grant of leave.

2. On return from leave the teacher shall report to the University the nature of studies, research or other work undertaken during the period of leave.

Maternity leave : 12.(i) Maternity Leave on full pay may be granted to a Woman teacher for a period of 90 days from the date of commencement.

(ii) Maternity leave may also be granted in case of miscarriage, including abortion, subject to the condition that the leave applied for does not exceed six weeks and the application for leave is supported by a medical certificate.

(iii) Maternity leave may be combined with earned leave, half pay leave or extraordinary leave but any leave applied for in continuation of maternity leave may be granted if the request is supported by a medical certificate.

(iv) Notwithstanding the provision contained in Clause 12 (iii) any leave including commuted leave for a period not exceeding sixty days, applied for in continuation of maternity leave may be granted without production of medical certificate.

(v) Leave in further continuation of the leave granted under Clause 12 (iv) may be granted on production of a medical certificate for the illness of the female University teacher. Such leave may also be granted in case of illness of a newly born baby, subject to production of medical certificate to the effect that the condition of the ailing baby warrants mother's personal attention and that her presence by the body's side is absolutely necessary.

Special disability leave :

(a) Special disability leave for injury intentionally inflicted—

13.(i) Special disability leave may be granted to a teacher who is disabled by injury intentionally inflicted or caused in, or in consequence of the due performance of his official duties or in consequence of his official position.

(ii) Such leave shall not be granted unless the disability manifested in itself within three months of the occurrence to which it is attributed and the person disabled acted with due promptitude in bringing it to notice :

Provided that the authority competent to grant leave may, if it is satisfied, as to the cause of the disability, permit leave to be granted in cases where the disability manifested itself more than three months after the occurrence of its cause.

(iii) The period of leave granted shall be such as is certified by an Authorised Medical Attendant and shall in no case exceed 24 months.

(iv) Special disability leave may be combined with leave of any other kind.

(v) Special disability leave may be granted more than once if the disability is aggravated or re-manifests in similar circumstances at a later date but not more than 24 months of such leave shall be granted in consequence of any one disability.

(vi) Special disability leave shall be counted as duty in calculating service for pension and shall not, except the leave granted under the provision to Clause (b) of sub-clause (vii) of this Ordinance be debited against the leave account.

(vii) Leave salary during such leave shall—

(a) for the first 120 days of any period of such leave including a period of such leave granted under sub-clause (v) above be equal to leave salary while on earned leave; and

(b) for the remaining period of any such leave, be equal to leave salary during half pay leave. Provided that a member of the staff, may at his option, be allowed leave salary as in sub-clause (a) above for a period not exceeding another 120 days, and in that event the period of such leave shall be debited to his half pay leave account.

(b) Special disability leave for accidental injury—

(viii) The provisions in part (A) above shall apply also to a teacher who is disabled by injury accidentally incurred in, or in consequence of, the due performance of his official duties or in consequence of his official position, or by illness incurred in the performance of any particular duty which has the effect of increasing his liability to illness or injury beyond the ordinary risk attaching to the post which he holds.

(ix) The grant of special disability leave in such cases shall be subject to the further conditions :—

(a) that the disability, if due to disease, must be certified by an Authorised Medical Attendant to be directly due to the performance of the particular duty;

(b) that, if the teacher has contracted such disability during service, it must be, in the opinion of the authority competent to sanction leave, exceptional in character; and

(c) that the period of absence recommended by an Authorised Medical Attendant may be covered in part by leave under the ordinance and in part by

any other kind of leave, and that the amount of special disability leave granted on leave salary equal to that admissible on earned leave shall not exceed 120 days.

14.(i) Quarantine leave is leave of absence from duty necessitated in consequence of presence of an infectious disease in the family or household of a teacher.

(ii) Quarantine leave may be granted on medical certificate for a period not exceeding 21 days. In exceptional cases this limit may be raised to thirty days. Any leave necessary for quarantine purposes in excess of this period shall be treated as ordinary leave. Quarantine leave may be combined with earned leave, half pay leave or extraordinary leave.

(iii) A teacher on quarantine leave is not treated as absent from duty and his pay is not affected.

Vacation :

15.(i) Vacation may be taken in combination with any kind of leave except casual and special casual leave provided that vacation shall not be both prefixed and suffixed to leave.

(ii) Except in special circumstances vacation and earned leave taken together shall not extend beyond one semester.

(iii) When a vacation falls between two periods of leave so as to result in a continuous period of absence from duty during the entire period, such vacation shall be treated as part of the leave.

(iv) For the vacation period, a teacher shall be entitled to the same pay as when on duty. A teacher will, however, be entitled only to half of such pay if he/she has given notice of resignation and the period of such notice expires during vacation or within one month from the last day thereof.

(B) TEACHERS APPOINTED ON PROBATION

16. A teacher appointed as a probationer against a substantive vacancy and with definite terms of probation shall during the period of probation be granted leave which would be admissible to him/her if he held his/her post substantively otherwise than on probation. If for any reason it is proposed to terminate the services of a probationer, any leave granted to him/her should not extend beyond the date on which the probationary period expires or any earlier date on which his services are terminated by the orders of the Executive Council. On the other hand, a teacher appointed on probation to a post, not substantively vacant to assess his suitability to the post, shall until he is substantively confirmed, be treated as a temporary teacher for purposes of grant of leave. If a person in the permanent service of the University is appointed 'on probation' to a higher post he/she shall not, during probation, be deprived of the benefit of leave rules applicable to his permanent post.

(C) TEACHERS RE-EMPLOYED AFTER RETIREMENT

17. In the case of a teacher re-employed after retirement the provisions of these ordinances shall apply as if he/she had entered service for the first time on the date of his/her re-employment. Re-employed pensioners who are treated as new entrants in the matter of leave may also be granted terminal leave under sub-clause 12 of the clause 21 below, subject to the condition that they will not be entitled to draw their pension during the terminal leave if the pension was held in abeyance during the period of re-employment.

(D) TEMPORARY TEACHERS

18. Temporary teachers shall be governed by the provisions of part (A) of these Ordinances subject to the following conditions and exceptions.

(1) Earned leave :

(a) A temporary teacher shall be entitled to earned leave as a permanent teacher as follows :

(i) 1/30th of the period of actual service including vacation plus;

(ii) 1/3rd of the period, if any, during which he is required to perform duty during vacation.

(2) Half pay leave :

No half pay leave may be granted to a temporary teacher unless the authority competent to sanction leave has reason to believe that the teacher will return to duty on the expiry of such leave.

(3) Commuted leave :

Temporary teachers shall not be entitled to commute any portion of the half pay leave.

(4) Extraordinary leave :

In the case of a temporary teacher the duration of extraordinary leave on any occasion shall not exceed the following limits :—

(a) Three months at a time;

(b) Six months in case where the teacher has completed three years continuous service and the leave application is supported by a medical certificate;

(c) Eighteen months where the teacher is undergoing treatment in a recognised hospital for tuberculosis, cancer or leprosy;

(d) (i) 24 months in cases where the leave is required for prosecuting studies, certified to be in the University interest, provided that the teacher has completed three years, continuous service on the date of commencement of extraordinary leave. In cases, where this condition is not satisfied, extraordinary leave to this extent may be sanctioned in continuation of any other kind of leave due and applied for [including three months extraordinary leave under (a) above, if the teacher completes three years continuous service on the date of expiry of such leave].

(ii) When a temporary teacher fails to resume duty on the expiry of the maximum period of extraordinary leave granted to him/her or where a teacher who is granted a lesser amount of leave remains absent from duty for any period which together with the extraordinary leave granted exceeds the limit up to which he/she could have been granted such leave under (i) above, he/she shall unless the Executive Council, in view of the exceptional circumstances of the case otherwise determines, be deemed to have resigned his/her appointment and shall accordingly cease to be in the University employ.

(5) Leave not due, study leave and sabbatical leave :

Temporary teachers shall not be entitled for the grant of leave not due, study leave and sabbatical leave.

(6) Vacation :

(i) A teacher who is appointed as a temporary measure shall be entitled to pay for the following summer vacation only if he joined duty within two months of the beginning of the academic year and has worked continuously and satisfactorily from the date of joining up to the last working day of the session.

(ii) In other cases, the vacation salary may be paid to the teacher, if the temporary appointment continues for a part or whole of the next academic year and the teacher joins on the opening day and has also served on the last working day before the vacation.

(E) TEACHERS APPOINTED ON CONTRACT

19. Teachers appointed on contract will be granted leave in accordance with the terms of the contract.

(F) HONORARY AND PART-TIME TEACHERS

20. Honorary and part-time teachers of the University shall be entitled to leave on the same terms as are applicable to whole-time temporary teachers of the University.

(G) GENERAL

(1) General Conditions :

21. (1) *Leave how earned.*—Leave is earned by duty only. The period spent in foreign service counts as duty if contribution towards leave salary is paid for such period.

(2) *Right to leave.*—(a) Leave cannot be claimed as a matter of right. Leave of any kind may be refused or revoked by the competent authority empowered to grant it without assigning any reason, if that authority considers such action to be in the interest of the University.

(b) No leave shall be granted to a teacher whom a competent authority has decided to dismiss, remove or compulsorily retire from service nor shall any leave be granted to a teacher when he is under suspension.

(3) *Maximum period of absence from duty on leave.*—(a) No teacher shall be granted leave of any kind for a continuous period exceeding five years.

(b) Where a teacher does not resume duty after remaining on leave for a continuous period, of five years or where a teacher after the expiry of his leave remains absent from duty otherwise than on foreign service or on account of suspension, for any period which together with the period of leave granted to

him/her exceeds five years, he/she shall unless the Executive Council in view of the exceptional circumstances of the case otherwise determines, be removed from service after following the prescribed procedure.

(4) *Application for leave.*—Leave should always be applied for in advance and the sanction of the competent authority obtained before it is availed of except in cases of emergency and for satisfactory reasons.

NOTE : Faculty member should not leave station till the order sanctioning leave has been issued.

(5) *Commencement and termination of leave.*—(a) Leave ordinarily begins from the date on which leave as such as actually availed of and ends on the day, the teacher resumes his duty.

(b) Sunday and other recognised holidays be prefixed and/or suffixed to leave with the permission of the authority competent to sanction the leave. Vacation may be combined with leave subject to the provisions of Ordinances 5, 8 and 14.

(6) *Rejoining of duty before the expiry of the leave.*—(a) A teacher on leave may not return to duty before the expiry of the period of leave granted to him unless he/she is permitted to do so by the authority which sanctioned him/her the leave.

(b) Notwithstanding anything contained in (a) above, a teacher on leave preparatory to retirement shall be precluded from withdrawing his request for permission to retire and from returning to duty, save with the consent of the Executive Council.

(7) *Leave on medical grounds to be supported by medical certificate.*—A teacher who applies for leave on medical grounds shall support his/her application with a medical certificate from an Authorised Medical Officer of the University or where no such Medical Officer has been appointed, from a Registered Medical Practitioner. The authority competent to sanction leave may, however, require the applicant to appear before a Medical Board.

Leave or extension of leave on medical certificate shall not be granted beyond the date on which a teacher is pronounced by a Medical Officer or Board to be permanently incapacitated for further service.

(8) *Rejoining duty on return from leave on medical grounds.*—No teacher who has been granted leave (other than casual leave) on medical certificate shall be allowed to return to duty without producing a medical certificate of fitness.

(9) *Employment during leave.*—A teacher on leave shall not, without the written permission of the University, engage directly or indirectly in any trade or business whatsoever or in any private tuition or other work to which any emolument or honorarium is attached, but this prohibition shall not

apply to work under taken in connection with the examination of a University, Public Service Commission, Board of Education or similar Bodies/Institutions or to any literary work or publication or radio or extension lectures or with the permission of the Vice-Chancellor, or any other academic work.

The leave salary of a teacher who is permitted to take up any employment during leave shall be subject to such restrictions as the Executive Council may prescribe.

(10) *Absence without leave or overstaying of leave.*—A teacher who absents himself/herself without leave or remains absent without leave after the expiry of the leave granted to him/her, shall be entitled to no leave allowance or salary for period of such absence. Such period shall be debited against his/her leave account as leave without pay unless his/her leave is extended by the authority empowered to grant the leave. Willful absence from duty may be treated as misconduct.

(11) *Leave beyond the date of retirement.*—(a) No leave shall be granted beyond the date on which a teacher must compulsorily retire. Provided that if, in sufficient time before the date of retirement on superannuation, a teacher has been, in the interest of the University, denied in whole or in part any leave which was due to him and applied for as preparatory to retirement then he/she may be granted after the date of retirement the amount of earned leave due to him/her on the date of superannuation subject to a maximum of 120 days. This limit may be extended up to 180 days if the entire leave or any portion thereof is spent outside India. Provided that when earned leave exceeding 120 days is granted under this Ordinance, the period of such leave spent in India shall not in the aggregate exceed 120 days. The leave so granted including the leave granted to him/her between the date from which the leave preparatory to retirement was to commence and the date of retirement, shall not exceed the amount of leave preparatory to retirement actually denied: the half pay leave, if any, applied for as preparatory to retirement and denied in the exigencies of the University service may be exchanged with earned leave to the extent such leave was earned between the date from which the leave preparatory to retirement was to commence and the date of retirement.

(b) Provided further that a teacher :

(i) who after having been under suspension is reinstated within 120 or 180 days, as the case may be, preceding the date of his retirement on superannuation and was prevented by reason of having been under suspension from applying for leave preparatory to retirement, shall be allowed to avail of such leave as he/she was prevented from applying, subject to a maximum of 120 or 180 days as the case may be, reduced by the period between the date of reinstatement and the date of retirement.

(ii) who attained the age of superannuation while under suspension and was thus prevented from applying for leave preparatory to retirement, shall be allowed to avail of the leave of his credit, subject to a maximum of 120 or 180 days, as the case may be, after termination of proceedings as if it had been refused as aforesaid, if in the opinion of the authority competent to order reinstatement, he/she has been fully exonerated and the suspension was wholly unjustified.

(c) Provided further that a teacher whose service has been extended in the interest of the University beyond the date of his superannuation may be granted leave as under :

(i) During the period of extension any leave due in respect of the period of such extension and to the extent necessary, earned leave which would have been granted to him under sub-clause (a) above had he/she retired on the date of superannuation :

Explanation : In determining the quantum of earned leave that could accumulate during the period of extension, the leave, if any, admissible under sub-clause (a) above shall also be taken into account.

(ii) After the expiry of the period of extension :

- (a) the earned leave which could have been granted to him under sub-clause (a) above had he retired on the date of superannuation, diminished by the amount of such leave as was availed of during the period of extension; and
- (b) Earned leave earned during the period of extension and formally applied for as leave preparatory to retirement in sufficient time before the date of final cessation of his duties and refused in the interest of the University.

Note : A teacher who avails himself/herself of the refused leave in full or in part immediately after the date of his superannuation or on the expiry of extension of service will deemed for purposes other than pensionary/Contributory Provident Fund benefits and lien, to be in service till the expiry of the refused leave. He will retire and become eligible for all pensionary benefits as due to him on the date of superannuation (or on such other later date if any extension of service is granted) from the date of expiry of such leave only.

(12) *Leave to a teacher whose services are no longer needed (Terminal leave).*—(i) The earned leave to the extent due (but not exceeding 120 days) may be granted at the discretion of the Vice-Chancellor as terminal benefit to a teacher not employed on a contract basis whose services are terminated by the University on account of retrenchment or abolition of post before his attaining the age of superannuation, even if it has not been applied for and refused in the University interim. In cases where the teacher is relieved before the expiry of the notice period, such notice or the unexpired portion thereof should run concurrently with the leave granted.

(ii) If a teacher resigns his/her post, he/she may not normally be granted either prior or subsequent to his resignation any leave. In cases, however, where the resignation is for reasons of health or for other reasons beyond his control, earned leave at his/her credit, but not exceeding 120 days, may be granted to him at the discretion of the Vice-Chancellor. In other cases of resignation half the amount of earned leave at his/her credit but not exceeding 60 days may be allowed at the discretion of the Vice-Chancellor.

In cases in which a prescribed period of notice is required to be given, the leave will be so granted as to cover as far as possible the period of notice required to be given.

(iii) No terminal leave shall, however, be admissible in a case of dismissal or removal from service.

(iv) *Leave at the credit of teachers who dies in harness.*—In case a teacher dies in harness, the cash equivalent of

the leave salary that the deceased teacher would have got, had he gone on earned leave, but for the death, due and admissible on the date immediately following the date of death subject to a maximum of leave salary for 180 days shall be paid to his/her family. Further such cash equivalent shall not be subject to reduction on account of pension equivalent of death-cum-retirement gratuity.

Note : 1. The above provision is applicable in case of re-employed pensioners also. However, in their case no deduction on account of pension equivalent of DCR gratuity need be made from the cash equivalent in respect of the leave earned during re-employment which has to be calculated on the basis of pay drawn by him/her during the period of re-employment (exclusive of pension and pension equivalent of other retirement benefits).

Note : 2. In the case of teachers governed by the contributory provident fund rules no reduction need be made out of cash equivalent of leave salary on account of University contribution of C. P. Fund.

(13) *Conversion of one kind of leave to another.*—(a) At the request of the teacher concerned the University may convert retrospectively any kind of leave including extraordinary leave into a leave of different kind which was admissible to him/her at the time the leave was originally taken; but he cannot claim such conversion as a matter of right.

(b) If one kind of leave is converted into another, the amount of leave salary and the allowance admissible shall be recalculated and arrears of leave salary and allowances paid or the amount overdrawn recovered as the case may be.

(14) *Increment during leave.*—If increment of pay falls during any leave other than casual leave, special casual leave, duty leave, study leave or sabbatical leave, the effect of increase of pay will be given from the date the teacher resumes duty without prejudice to the normal date of his increment, except in those cases where the leave does not count for increment.

(15) *Leave year.*—For the purpose of these Ordinances, unless otherwise specified the terms 'year' shall mean an academic year running from the commencement of the academic session to the end of the academic session.

(ii) *Authorities Empowered to Sanction Leave :*

22. The authorities specified in column (2) of the table below, are empowered to sanction leave to the extent shown in column (3) thereof. Cases for sanction of leave in excess of these limits or of leave not mentioned below shall be submitted to the Executive Council. Before sanctioning the leave, the sanctioning authority shall ensure that leave asked for is admissible and is at the credit of the teacher concerned.

<i>Kind of leave</i>	<i>Sanctioning Authority</i>	<i>Extent of power</i>
(i) Casual /Special Casual Leave to—		
(a) Deans of Schools	Vice-Chancellor	Full
(b) Heads of Centres/Departments	Deans of Schools	Full
(c) Other teachers	Head of the Centre	Full
(ii) Duty leave to—		
(a) Deans of Schools	Vice-Chancellor	Upto 30 days
(b) Other teachers	Dean Vice-Chancellor	Upto 10 days Upto 30 days
(iii) Earned leave/half pay leave/commuted leave and maternity leave to—		
(a) Deans of Schools	Vice-Chancellor	Full
(b) Heads of Centres	Deans of the School Vice-Chancellor	Upto 30 days Full
(c) Other teachers	Dean of the Schools Vice-Chancellor	Upto 90 days Full
(iv) Extraordinary leave—		
(a) Deans of Schools	Vice-Chancellor	Upto 90 days
(b) Other teachers	Dean of the School Vice-Chancellor	Upto 14 days Upto 90 days

(iii) *Leave salary :*

23. (1) A teacher granted casual leave or special casual leave is not treated as absent from duty and his pay is not interrupted. During duty leave, study leave and sabbatical leave, a teacher will draw pay under the provisions of Ordinance 4, 10 and 11 respectively.

(2) A teacher on earned leave is entitled to leave salary equivalent to the pay drawn immediately before proceeding on leave.

(3) A teacher on commuted leave is entitled to leave salary equal to the amount admissible under sub-clause 23 (1).

(4) A teacher on half pay leave or leave not due is entitled to leave salary equal to half the amount specified in sub-clause 23 (1).

(5) A teacher on extraordinary leave shall not be entitled to any leave salary.

(6) A teacher on special disability leave is entitled to leave salary as admissible under Ordinance 13.

(7) A teacher on maternity leave and quarantine leave is entitled to draw pay at the time of proceeding on leave.

(8) Payment of dearness, house rent and city compensatory allowances during leave shall be governed by the provision of the rules regarding the payment of those allowances.

(9) A teacher who is granted leave beyond the date of compulsory retirement/retirement or quitting of service as the case may be, as provided under Ordinance 21 (11) shall be entitled during such leave, leave salary as admissible under this Ordinance reduced by the amount of pension and pensionary equivalent of other retirement benefits.

(10) Where such teacher is re-employed during such leave, the leave salary shall be restricted to the amount of leave salary admissible while on half pay leave and further reduced by the amount of pension and pension equivalent of other retirement benefits. Provided that it shall be open to the University teacher not to avail himself/herself of the leave but to avail of full pension.

(11) If during such re-employment he/she is granted leave earned by him/her during period of re-employment, the leave salary shall be based on the pay drawn by him/her exclusive of the pension and pension equivalent of other retirement benefits.

(iv) *Making of rules under these Ordinances :*

24. The Vice-Chancellor may make rules under these provisions prescribing the procedure to be followed in—

- (i) making application for leave and for permission to return to duty before the expiry of the leave;
- (ii) granting leave and submission of medical certificate while proceeding or returning from leave;
- (iii) the payment of leave salary;
- (iv) the maintenance of records of service; and
- (v) the maintenance of leave accounts.

APPENDIX—VII

Form of contract for short-term appointment of Teachers
 memorandum of Agreement made this the day of one thousand nine hundred and between (hereinafter called the 'Teacher') of the first part, and the Pondicherry University being a body corporate constituted under the Pondicherry University Act, 1985 (No. 53 of 1985) (hereinafter called the 'University') of the second part.

It is hereby agreed as follows :

1. That the University hereby appoints to be a member of the teaching staff of the University with effect from the and the said hereby accept the engagement

and undertakes to take such part in the activities of the University and perform such duties in the University as may be required by and in accordance with the said Act, Statutes and Ordinances framed thereunder, for the time being in force, whether the same relate to organisation of instruction; or teaching, or research or the examination of students or their discipline or their welfare, and generally to act under the direction of the authorities of the University.

2. That the said shall be a whole time teacher of the University and unless the contract is terminated by the Executive Council or by the teacher before the expiry of the term of his appointment for which he is appointed or is terminated as hereinafter provided, shall continue in the service of the University for the period of his appointment as aforesaid.

3. That the University shall pay during the continuance of his/her service a salary of Rs. plus usual allowances per mensem, raising by annual increments of Rs. to a maximum salary of Rs. per mensem :

Provided that no increment shall be withheld or postponed save by a resolution of the Executive Council on a reference by the Vice-Chancellor to it, and after the teacher has been given sufficient opportunity to make his/her written representation.

4. That the said teacher agrees to be bound by the Statutes Ordinances, Regulations and Rules for the time being in force in the University, provided that no change in the terms and conditions of service of teacher shall be made after his/her appointment in regard to designation, scale of pay increment and provident fund so as to adversely affect his/her.

5. That the teacher shall devote his/her whole-time to the service of the University and shall not, without the written permission of the University, engage directly or indirectly, in any trade or business whatsoever, or in any private tuition or other work of which any emolument or honorarium is attached by this prohibition shall not apply to work undertaken in connection with the examination of Universities or learned bodies or Public Service Commissions, or to any literary work or publication or radio talk or extension lectures, or, with the permission of the Vice-Chancellor, to any other academic work.

6. It is further agreed that his engagement shall not be liable to be determined before expiry of the aforesaid period of appointment by the University except on the grounds specified and in accordance with the procedure laid down in clauses (1), (2), (3), (4), (5) and (6) of Statute 26 (reproduced below) :

- (1) Where there is an allegation of misconduct against a teacher, the Vice-Chancellor may, if he thinks fit, by order in writing, place the teacher under suspension and shall forthwith report to the Executive Council the circumstances in which the order was made :

Provided that the Executive Council may if it is of the opinion, that the circumstances of the case do not warrant the suspension of the teacher, revoke that order.

- (2) Notwithstanding anything contained in the terms of his/her contract of service or of his/her appointment the Executive Council shall be entitled to remove a teacher on the ground of misconduct.
- (3) Save of aforesaid, the Executive Council shall not be entitled to remove a teacher except for good cause and after giving three months' notice in writing or payment of three months' salary in lieu of notice.
- (4) No teacher shall be removed under clause (2) or under clause (3) until he has been given a reasonable opportunity of showing cause against the action proposed to be taken in regard to him.
- (5) The removal of a teacher shall require a two-thirds majority of the members of the Executive Council present and voting.

- (6) The removal of teacher shall take effect from the date on which the order of removal is made :

Provided that where a teacher is under suspension at the time of his removal, the removal shall take effect on the date on which he was placed under suspension.

7. Any dispute arising of this contract shall be settled of in accordance with the provisions of Clause(2), Section 31 (reproduced below) :

"Any dispute arising out of a contract between the University and any employee shall, at the request of the employee, be referred to a Tribunal of Arbitration consisting of one member appointed by the Executive Council, one member nominated by the employee concerned and an umpire appointed by the Visitor. The decision of the Tribunal shall be final, and no suit shall lie in any civil court in respect of the matters decided by the Tribunal. Every such request shall be deemed to be a submission to arbitration upon the terms of this section within the meaning of the Arbitration Act, 1940".

8. The teacher may, at any time, terminate his/her engagement by giving the Executive Council three months' notice in writing, provided that he Executive Council may waive the requirement of notice at its discretion.

9. On the termination of this engagement, from whatever cause, the teacher shall deliver up to the University all books, apparatus, records and such other articles belonging to the University as may be due from him/her.

In witness whereof the parties here to affix hands and seal.

Signature :

Designation :

In the presence of

1. Signature
Designation

2. Signature
Designation

Signed and sealed on behalf of the University under the authority of the Executive Council by

Signature
Designation

In the presence of

1. Signature
Designation

2. Signature
Designation

ANNEXURE—I

Scale of remuneration and Other allowances for examination purposes (Amended as per Executive Council resolution No. 88-178 dated 18-6-88)

Sl. No.	Category	Remuneration Recommended
(1)	(2)	(3)
1. Chief Superintendent		Rs. 30 per session
2. Assistant Superintendent		Rs. 15 per session (One for every 25 candidates)
3. Clerical Assistant		Rs. 12 per 100 candidates Minimum : Rs. 12. Maximum: Rs. 96. per day
4. Servant		Rs. 5 per session (for every 50 candidates or part thereof)
5. Waterman		Rs. 5 per session (one for every 300 candidates or part thereof)
6. General Arrangements (including preliminary arrangements and arrangements during the examination)		Rs. 12 per 100 candidates or part thereof calculated on the largest number of candidates who sat on any one session of the examination
7. Charges for sewing, cloth bags for despatch of answer books <i>B.Sc. (Botany and Zoology)</i>		Rs. 1 per bag
8. Purchase of specimens <i>B.Sc. (Chemistry)</i>		Rs. 1.50 per candidates per practical
9. Cost of Chemicals including fuel for making gas <i>B.Sc./M.Sc. (Home Science)</i>		Rs. 4 per candidate per practical
10. Cost of provisions and materials <i>M.Sc. (Botany & Zoology)</i>		Rs. 5 per candidate per practical.
11. Purchase of specimens <i>M.Sc. (Chemistry)</i>		Rs. 3 per candidate per practical.
12. Cost of chemicals including fuel for making gas		Rs. 4 per candidate per practical.

ANNEXURE—II

Practicals

(Amended as per Executive Council resolution No. 88-178 dated 18-6-88)

Sl.No.	Category	Remuneration Recommended
(1)	(2)	(3)
B.Sc. Non-Engineering		
1. Skilled Assistant		Rs. 2 per candidate for number registered
2. Hall Superintendent/Assistant Superintendent		Rs. 6 per session
3. Attender		Rs. 5 per session.
4. Waterman		Rs. 2.50 per session
5. Sweeper		Rs. 1.50 per session
6. Mechanic (for Physics only)		Rs. 5 per session
7. Gas Superintendent (for Chemistry only)		Rs. 5 per session
M.A./M.Sc.		
8. Skilled Assistant—		
(a) Physics, Chemistry and Geology		Rs. 22.50 per session for each Skilled Assistant (2 persons)
(b) Botany Zoology, Geography and Home Science		Rs. 15 per session for each Skilled Assistant (2 persons)
9. Hall Superintendent/Assistant Superintendent		Rs. 9 per session
10. Attender		Rs. 5 per session
11. Mechanic (for Physics only)		Rs. 5 per session
12. Waterman		Rs. 2.50 per session
13. Sweeper		Rs. 1.50 per session
14. Gas Superintendent (for Chemistry only)		Rs. 5.00 per session
M.B.B.S. (First to final year), B.Sc. (MLT) and BMRSC		
15. Junior Attender		Rs. 3 per session
16. Waterman		Rs. 2.50 session
17. Sweeper		Rs. 1.50 per session
18. Chief Supervisor		Rs. 30 per day
19. Skilled Assistant		Rs. 20 per day
20. Hall Superintendent/Assistant Superintendent		Rs. 12 per day
21. Nurse		Rs. 6 per day
22. Technician		Rs. 6 per day
23. Senior Attender		Rs. 6 per day
24. Junior Attender		Rs. 3 per day
25. Cooly		Rs. 2.50 per day
26. Patient M.D. and M.S.		Rs. 2.50 per day per patient
27. Chief Supervisor		Rs. 30 per day
28. Skilled Assistant		Rs. 20 per day
29. Hall Superintendent Assistant Superintendent		Rs. 12 per day
30. Nurse		Rs. 6 per day
31. Technician		Rs. 6 per day
32. Senior Attender		Rs. 6 per day
33. Junior Attender		Rs. 3 per day
34. Cooly		Rs. 2.50 per day
35. Patient		Rs. 2.50 per day
36. Waterman		Rs. 2.50 per day
37. Diet Charge		Rs. 2 per patient

Sl.No.	Category	Remuneration Recommended
(1)	(2)	(3)
ENGINEERING		
38. B. Tech/DCA/MCA/Skilled Assistant		Rs. 20 per session
39. Hall Superintendent/Asstt. Superintendent		Rs. 9 per session
40. Store Superintendent		Rs. 5 per session
41. Attender		Rs. 5 per session
42. Mechanic		Rs. 5 per session
43. Electrician		Rs. 5 per session
44. Cleaner		Rs. 1.50 per session
45. Waterman		Rs. 2.50 per session

ANNEXURE-III

Bond to be executed by the faculty members when granted study leave

The agreement made on this day of 19 between the Pondicherry University being a body corporate constituted under the Pondicherry University Act, 1985 (No. 53 of 1985) (hereinafter called the University of the one part) and

(i)
resident of
(hereinafter called the Obliger of the second part) :

(ii)
resident of
(iii)
resident of
(hereinafter called (ii) and (iii) jointly the sureties of the third part) :

Whereas the Obliger is employed in the Pondicherry University in the

And whereas the Obliger has applied for study leave for the following purpose :

And whereas the University has agree to grant study leave on the condition that after the completion of studies, the Obliger will rejoin the University and serve the University for a minimum period of years. The Obliger has agreed to this condition and the sureties have also assured the University that the Obliger will perform these obligations faithfully.

1. That the obliger undertakes that after completion of studies as aforesaid shall rejoin the University and shall serve under the University for a minimum period of years.

2. That in case of Obliger fails to complete studies with in the period of study leave or fails to rejoin the service of the University on the expiry of study leave or resigns from the service of the University at any time before the expiry

of the agreed period of service after return to duty at the University being dismissed or removed from the service by the University within the period aforesaid the Obliger and the sureties shall forthwith pay to the University or as may be directed by the University a sum of Rs. a liquidated damages and refund the advances received by the Obliger from University and shall pay all the expenses incurred by the University on the Obliger consequent on the grant of study leave, provided always that if the Obliger completes 18 months service after return from study leave, then the sureties and the Obliger shall be liable to pay only half the amount of the liquidated damages.

3. That the Obliger and the sureties shall pay interest at the rate of 6% per annum on the amount payable as per clause 2 above.

4. That the liability of the Obliger and the sureties to pay the amount due to the University shall be join and several and the University shall be competent to recover the amount due from all or either of them.

5. That the hereinabove given is a continuing surety and shall not be impaired or discharged by reason of any time being granted or by any forbearance, act or omission of the University or any person authorised by it or any other indulgence or concession shown by the University to the Obliger or to anyone surety and the University shall be competent to recover the amount due from all or either of them.

6. That the University may at its discretion extend the study leave of the Obliger from time to time without any reference to the sureties and the sureties shall remain liable in all respects for the amounts payable under these presents during the original period as well as during the extended period.

7. That if any amount is paid by the University outside India then the Obliger and the sureties shall be liable to pay the equivalent amount in Indian Currency according to the prevalent official rate of exchange at the time of payment.

Inwitness whereof the parties have set their hands hereto in presence of witness :

Witness	No. 1	Signature	Signature
		(Name:)	Obliger
	No. 2	Signature	
		(Name:)	
Witness	No. 1	Signature	Signature
		(Name:)	(Surety No. 1)
	No. 2	Signature	
		(Name:)	

Witness	No. 1	Signature (Name:)	Signature (Surety No. 2)
	No. 2	Signature (Name:)	
Witness	No. 1	Signature (Name:)	Officer of the University
	No. 2	Signature (Name:)	

